

सुबोध काव्य-माला

(२)

सम्पादक
रामलोचनशरण बिहारी

निर्माल्य

रचयिता—फरिद मोहनलाल महतो गयावाल

यदि आप विश्वकवि श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीताजलि' के दंग की मौलिक कविता पुस्तक देखना चाहते हैं तो इसे एक बार अवश्य पढ़िये । इसके शब्द शब्द में आध्यात्मिक तल्लीनता टपकती है ।

हिंदी के सुप्रसिद्ध समालोचक पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी इसकी भूमिका में लिखते हैं—

'श्री गया राम के गौरव, गयावाक वशावर्तस, ललित कला कुशल', 'वियोगी पंडित श्री मोहनलाल महतो के लिये लम्बी चौड़ी भूमिका की आवश्यकता नहीं, क्योंकि यग्यचित्रों की विचित्रता के कारण यह राय प्रसिद्धि प्राप्त कर चुक है । महतोजी की महत्ता की सत्ता या ही गम गई है और उनकी प्रतिभा का परिचय ३ पत्र पत्रिकाओं के द्वारा प्रायः सबको मिल चुका है । 'निराल्य' कहना केवल यही है कि इस नवीन 'निर्माल्य' के निरीक्षण ५ सुरमियों को सत्ताय हुए बिना न रहेगा । निरवयव पद्य रचना चातुर्य और माधुर्य के अतिरिक्त सुन्दर सूझ, कमनीय कल्पना, भव्य भाव तथा नूतनत्व के निदानीय दर्शन स्थान स्थान पर हाँ जाते हैं । सचमुच यह सग्रह सुन्दर और मरादना के योग्य हुआ है ।

लगभग १४० पृष्ठ । दो चित्र । मोटे कागज पर सुन्दर छपाई पढ़ी जिल्द । मूल्य केवल १)

पुस्तक भंडार, लहेरियासराय और पटना ।

प्रकाशक
पुस्तक-भंडार, लहेरियासराय

प्रथम संस्करण पौष १९८२ वि०

मूल्य २)

द्वितीय संस्करण, वैशाख १९८८ वि०

उद्धरण—दुनुमान प्रसाद, विद्यापति प्रस, लहेरियासराय

समर्पण

हिन्दी के उन सफल समालोचकों के कुशल करें मैं
जो अपने पत्रों को अकादमिक और अलघनीय साधित करने के लिये

‘नवरात्र’ में दम रक्त घुसेद सकते हैं,
जो ‘देव’ को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिये ‘विहारी’ की,
पर विहारी को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिये
कितने अन्य कवियों की
कीर्ति पर

सफाई के साथ पर्दा डाल सकते हैं,
जो किसी विशेष कवि के श्रद्धालु समर्थकों को
नीचा दिखाने के लिये
दास को आकाश पर चढ़ा सकते हैं

तथा

जो केशव की कविता में तुलसी की कविता से
अधिक काव्य गुण पाते हैं—

अमिनव जयदेव

मैथिल कोकिल

विद्यापति की पदावली

का

यह संक्षिप्त संकलन

उसके नौमिथे संकलयिता द्वारा

सादर, सविनय और समय समर्पित

हमारी सर्व-प्रशंसित पुस्तक-मालायें

राष्ट्रभाषा हिन्दी के सभी विभागों को उत्तमोत्तम ग्रन्थ रत्नों से पूर्ण करने के लिये हमने निम्नलिखित पुस्तक मालायें पुराना आरम्भ किया है।

आपका कर्त्तव्य

हे कि हमारी इन मालाओं को अपना कर राष्ट्रभाषा की अधिकाधिक सेवा करने को हमें उत्साहित करें। आपके सुभीते के लिय हमने यह प्रयत्न किया है कि जो महाशय ॥) कीस भेजकर हमारे स्थायी ग्राहक हो जायेंगे, उन्हें

सभी मालाओं की पुस्तकें पौने मूल्य में ही मिलेंगी। हमें पूरा विश्वास है, कि आप यह मौका न चूकेंगे।

हमारी सर्वांगसुन्दर मालायें—

- | | |
|-----------------------|---------------------|
| १ सुबोध काव्य माला | ४ महिला मनोरजन माला |
| २ सुन्दर साहित्य माला | ५ नवयुवक हृदय द्वार |
| ३ बाल मनोरजन-माला | ६ सरल पद्य-माला |

७ चारु चरित माला

पुस्तक भंडार, लहेरियासराय पटना

मैथिल कोकिल



कोकिल की कलकटता कितनी मधुर, कितनी सरस और कितनी हृदय-प्राहिणी होती है, इसका परिचय इसीमें मिलता है कि जन ससृष्ट के सद्दय विद्वानों को कविकुल-गुरु महर्षि वाल्मीकि की वदना के लिये जिह्वा खोलना पड़ी तो उन्होंने यही कहा—

कृजन्तं रामरामेति मधुर मधुराक्षरम् ।

आरह्य कविता शाखा बन्दे वाल्मीकि-कोकिलम् ॥

इस एक श्लोक ही में जो समस्त गुण आदिकवि की रचनाओं में हैं, उनका व्यापक निरूपण है, थोड़े से शब्दों में ही बहुत कुछ कह दिया गया है। इसी प्रकार भारती के वरपुत्र विद्यापति की लोकोत्तर रचनाओं का परिचय देने, उनके माधुर्य, प्रसाद, सरमता और मनोमुग्धकारिता की व्याख्या करने के लिये उनको 'मैथिल कोकिल' कह देना ही पर्याप्त है। आप मैथिलीभाषा-राकारजनी के राकेश और कविताकामिनी के कमनीयकान्त हैं। आपकी कोकिल-काकली-कलित मधुमयता, कोमल-कान्त पदावली, भावुक-हृदय-विमोहिनी भावुकता, और नव नव भावोन्मेषिनी प्रतिभा देखकर चित्त विमुग्ध हो जाता है। आपके इन्हीं गुणों की आकर्षिणी शक्ति का यह प्रभाव है, कि केवल मैथिलीभाषा

को ही आपका गर्व नहीं है, बगभाषा और हिन्दीभाषा भाषी भी आपको अपनाने में अपना गौरव समझते हैं, और आज भी हृदय से आपका अभिनन्दन करते हैं। तीन-तीन प्रान्तों में समान भाव से समादृत होने का गुण यदि किसी कविता में है, तो आपकी ही कविता में है, अन्य किसीकी कविता को आज तक यह महत्व नहीं प्राप्त हुआ। ग़ैद है, ऐसी अपूर्व रचना का समुचित प्रचार अत्र तक प्रत्येक प्रान्त में नहीं हुआ। इसी उद्देश की पूर्ति के लिये यह सग्रह तैयार किया गया है। सग्रह-कर्त्ता ने उनकी उत्तमोत्तम रचना-कुसुमावली में मे सरस-म-सरस सुमनों के सग्रह करने में जिस मधुप-वृत्ति का परिचय दिया है, उसकी भूयसी प्रशंसा की जा सकती है। पाद-टिप्पणियाँ तो सोने में सुगन्ध हैं। यदि आप लोगों ने इसका समुचित समादर किया, तो अतीव सुन्दर आकार-प्रकार में उक्त कविपु गव की अधिकांश रचना आप लोगों के कर-कमलों में आपित की जावेगी। उस समय मैं एक बृहत् भूमिका द्वारा इस महान् कवि की रचनाओं पर समुचित प्रकाश डालने की चेष्टा करूँगा। आज इन कतिपय पक्तियों को लिखकर ही मतोप ग्रहण करता हूँ।

हिन्दू विश्व विद्यालय }
काशी

अयोध्यासिंह उपाध्याय
'हरिर्बोध'

द्वितीय-संस्करण

हिन्दी भाषा के प्रेमियों ने जिम प्रकार विद्याभित्ति की पदावली के इस सचित्र मटीक-सुन्दर सङ्कलन के प्रथम संस्करण को अपनाया है उसका अनुभव कर मैं नितान्त सुखी हूँ । आज इस सङ्कलन का दूसरा संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है । इस उपलक्ष्य में सहृदय प्रकाशक महोदय तथा सङ्कलयिताजी को मैं बधाई देता हूँ ।

प्रकाशकजी के अनुरोध से वाध्य होकर सशोधन करने की दृष्टि में मैंने इसकी पुनरावृत्ति की । मुख्यतः यह ध्यायुत नगोदनाथ गुप्त के सङ्कलन पर अवलम्बित है । जब तक उस सङ्कलन की परीक्षा प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के सहारे न की जायगी तब तक मूल पदों पर कलम लगाना अनुचित होगा । पर इसके लिये जितना अवकाश चाहिये वह मुझे नहीं मिल सका । इस सङ्कलन की बड़ी माँग है अतएव अधिक दिनों तक इसे अप्रकाशित रखना भी उचित नहीं है । मूल पदों के पाठ को मैंने ज्यों का त्यों रहने दिया है क्योंकि इसमें शुद्ध पाठ अब तक पाठकों को देखने का मौभाग्य नहीं हुआ है और व इसमें अभ्यस्त-मा हो गये हैं । बिना प्रमाण के इसमें यदि हेरफेर की जाय तो कैसे ? हाँ, कई स्थानों में मुझे सन्देह उत्पन्न हुआ था पर उनका निराकरण तब तक नहीं हो सकेगा जब तक हस्तलिखित प्राचीन पुस्तकों को मैं न देखूँगा ।

टीका में मैंने जहाँ-तहाँ कुछ हेरफेर की है । समकालीन साहित्य के अभाव के कारण विद्याभित्ति की पदावली का अर्थ लगाना सब स्थानों में सर्वथा विराद गून्व नहीं रह सकती । लोग समझते

होंग कि मैथिल इन मैथिली पदों को अच्छी तरह समझते होंग । यद्यपि साधारणतया यह ठीक है, पर सम्पूर्णतया नहीं । आधुनिक मैथिली विद्यार्थी के काल की मैथिली नहीं है । दोनों में बहुत अंतर हो गया है । कहीं कहीं तो ऐसा मालूम पड़ता है कि इस महाकवि ने अपने अनूठे भावों को संगीत बद्ध करने के लिये अनूठे शब्दों का निर्माण किया है । ऐसी अवस्था में जितनी टीकाएँ प्रकाशित हुई हैं और हागी उनके सम्बन्ध में समालोचना की गुआइश है और रहेगी । इन बातों को दृष्टि में रखते हुए मैंने प्रथम संस्करण में की टीका का संशोधन उन स्थानों में किया है जहाँ भाषा का यथार्थ भाव व्यक्त करने के लिये वैसा करना मुझे नितांत आवश्यक प्रतीत हुआ । यह मानना होगा कि इस प्रकार के गुणके संस्करण में टीका के लिये यथेष्ट स्थान मिलना असंभव है । यदि अपन काम से मुझे कुछ भी संतोष है तो इसीलिये कि इसमें अधिक संशोधन में इस संस्करण में नहीं कर सकता था ।

मैं तो एक ऐसे संस्करण की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जिसमें पदों के पाठ निर्विवाद हो और टीका विस्तृत समालोचनात्मक और प्रामाणिक । देखूँ, यह मधुर स्वप्न कब तक चरितार्थ होता है । तब तक के लिये सहृदय पाठकों से मेरा अनुरोध है कि ऐसे अधूरे प्रयत्नों से संतोष करें । यदि इससे उनकी तृप्ति न हो तो शिष्ट समालोचना द्वारा तथ्य निरूपण करके हूँ । वे अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हों ।

श्रीगङ्गानन्द सिंह

धन्यवाद

इस पुस्तक के पदों के सकलन में मुझे नगान्द्रनाथ गुप्त द्वारा सम्पादित और जस्टिस भारद्वाज मिश्र द्वारा प्रकाशित बंगला 'विद्यापतिर पदावली' से अधिक सहायता मिली है, अतः इन भज्जनो का मैं अत्यन्त अनुग्रहीत हूँ । 'विद्यापति का परिचय' लिखने में, एक पुस्तक, 'मैथिल कोकिल विद्यापति', हिन्दी ऑफ़ तिरहुत एवं 'मिथिला-दर्शन' से सहायता मिली है, अतः इनके लेखक भी मेरे धन्यवाद के पात्र हैं । हिन्दू विश्वविद्यालय के अध्यापन एवं कविता रचना में अपना अमूल्य समय बचाकर इस छोटे से संग्रह के लिये एक छोटी-किन्तु खोली-भूमिका लिख देने के लिये प० अयोध्यासिंह उपाध्यायजी का मैं विभ्रण्णी हूँ । सुहृद्वर धातु शिवपूजन सहाय, श्रद्धेय प० जनार्दन झा श्री जगदीश्वर ओझा 'मैथिली' सम्पादक धातु उदितनारायण लालदास, मिश्र रामनाथ लाल 'सुमन' मिश्र 'त्रिकल' आदि ने इस संग्रह को उपयोगी बनाने में मेरी सहायता की है, इनके प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ । मयम अधिक धन्यवाद के पात्र हैं हिन्दी पुस्तक भण्डार के प्राण धातु रामलोचन नारायणी, जिनके उत्साह-दान से ही यह पुस्तक लिखी गई है और जिन्होंने इसे सुलभ और सुन्दर बनाने में कुछ भी उठा नहीं रखा है ।

—श्री घेनीपुरी

विमाता

लेखक—श्रीयुत अवधनारायण

घटे हुए की बात है कि 'विमाता' हिन्दी-साहित्य के मौलिक उपन्यासों में स्थान पा गई। इसके ऐसा दृश्यग्राही प्लॉट हिन्दी के बहुत ही कम उपन्यासों को नसीब हुआ है। हजारों कापियाँ थोड़े ही समय में विक्रि जाना इसकी उपयोगिता का साटिफिकेट है। 'सरस्वती' न जब इसकी प्रशंसा की है, तब अधिक लिखना व्यर्थ है। लेखक ने समाज के चरित्रों का जीता जागता स्वरूप सामने ला रखा है। पढ़ते जाइये और सामाजिक चरित्रों पर विचार कर देखिये कि सचमुच भारतवर्ष में यह यथार्थ घटता है कि नहीं। पुत्र के रहने हुए भी, केवल अपनी पार्श्विक तृष्णा को शांत करने के लिये दूसरी शादी करने से कैसे कैसे अनर्थ होते हैं, किन प्रकार पुत्र का जीवन बर्बाद होता है और घर नरक कुंड बन जाता है, इसका करुण रसात्मक वर्णन पढ़कर आँसू बहने लगते हैं।

सरल मुद्राचरेदार भाषा पृष्ठ संख्या ३०८, पक्की जिल्द २)

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
१ कवि परिचय	१-४५	११ कौतुक	१३५
✓ १ घन्दना	१	१२ अभिसार	१४५
२ वय सन्धि	५	१३ छलना	१६६
३ नखशिख	१५	१४ मान	१७७
४ सद्य स्नाता	३३	१५ मान भंग	२०६
५ प्रेम प्रसंग	३६	१६ त्रिदग्ध विलास	२१६
६ दूती	६५	✓ १७ घसत	२३१
७ नौकभौक	८३	१८ विरह	२४७
८ सखी शिक्षा	८६	१९ भायोत्लास	२८७
९ मिलन	१०१	✓ २० प्रार्थना और नजारी	२६६
१० सखी सम्भाषण	१२१	२१ विविध	३१६

कामना

लेखक—श्रीयुत थाबू जयशकर 'प्रसाद'

कानपुर का स्वनामधन्य राष्ट्रीय साप्ताहिक 'प्रताप' लिखता है—
 'प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी के एक लघुप्रतिष्ठ लेखक की कृति—
 'नाटक है। लेखक ने इस नाटक में एक शैली द्वारा, एक नये
 त्सार—टापू—के कावापकट की रोचक षणंन किया है। 'कामना'
 'मन्तोष', 'दम्भ' 'लालसा' आदि मानव-हृदय के अन्ते और गुरे
 भाव नाटक के पात्र भार पात्रियाँ हैं, और बतलाया गया है कि
 यत्मान नवीन सम्पत्ता से एक त्रिस्तुल्य मद्गत, शान्त एवं सुखमय
 देश (टापू) किस प्रकार इस सम्पत्ता के सम्पर्क में आकर त्रिपैला,
 सम्पत्तिवादी, क्रूर और स्वाधरत दु समय हो जाता है, और वहाँ
 कैसा दाहाकार मच जाता है, तथा कि उमरा अन्त किस प्रकार
 होता है। पुस्तक की भाषा आरूपक पर गरम है। श्रीयुत जय
 गार प्रमादनी हिन्दी के नवयुग प्रररका में अग्रगण्य हैं। उनकी
 हलम में मीकुमाण भात्र, मालिकता और तापू है। 'कामना' शुद्ध
 कला का र्दयमाहा एव चातुगमहिन प्रतिबिम्ब है। हम प्रत्यक
 साहित्यप्रेमी न हम नाटक के पढ़न का अनुरोध करत हैं। जिन्द
 और एताह—मार्तन, मान तथा सुन्दर।' हाश्यरसप्रधान
 साप्ताहिक 'मतजाला' लिखता है—“हमने इसे गूब पयड किया—
 कय्या भाषा, भात्र, और सुन्दर पत्रिनाथ—मभी दलियों म।
 प्रमादनी युगा से मानृमया की माहार सुत्र सुन्दर रत्ना न भर
 रह हैं। मभी आंग वाला की उनपर आंग है। हमारा आन्तरिक
 कामना है कि प्रमादनी की 'कामना' लोग के हृदय में स्थान पात्र।

मनहमे रुपये की रमीन जिन्द—मू० १।

पुस्तक भंडार—लहेरियासराय, पटना

विद्यापति का परिचय

विद्यापति का परिचय



भारतीय प्राचीन महापुरुषों का जीवन वृत्त लिखना कठिन है। भारत में इतिहास वा जीवनी लिखने की वेमी प्रथा नहीं थी। अतएव, अपने प्राचीन पुरुषों की जीवनी लिखने में हमें विशेषतः किंवदन्तियों या परम्परा से चली आती हुई जनश्रुतियों का आधार लेना पड़ता है। यदि किसी महापुरुष की चर्चा प्रसंगशः किसी पुस्तक में आ गई हो, तो वह हमारे लिये एक बहुमूल्य ऐतिहासिक सामग्री हो जाती है। ताम्रपत्र या सिक्के भी इतिहास संकलन में बहुत सहायता करते हैं। यहाँ एक बात और ध्यान में रखने की है। जो राजा हो गये हैं, जिन्होंने राजवंश में जन्म लिया था या जिन्होंने किसी राजा का आश्रय लिया था, प्राचीन पुस्तका में प्रायः उन्हींकी अधिक चर्चा है—सिक्के और ताम्रपत्र हम उन्हींके इतिहास संकलन में सहायक होते हैं। जिनका जन्म साधारण घराने में हुआ था, जिन्होंने किसी राजा का आश्रय नहीं लिया था, उनके जीवन वृत्त लिखने में तो विशेषतः किंवदन्तियाँ ही सहायक होती हैं। सूर और तुलसी इतने धड़े कवि हो गये हैं, किन्तु इनके विषय में जो कुछ हम जानकारी रखते हैं, वह केवल किंवदन्तियों के ही आधार पर। जनश्रुति या किंवदन्ती सर्वथा अमूलक नहीं हुआ करती। उममें बहुत कुछ ऐतिहासिक तथ्य रहते हैं—हाँ, हम यह स्वीकार करेंगे, कि उसमें ऐतिहासिक तथ्यों पर बहुत-कुछ परदा पड़ा हुआ रहता है।

विद्यापति के विषय में सूर या तुलसी से अधिक सौभाग्यशाली हैं। इनका जन्म सूर-तुलसी के लगभग दो सौ वर्ष पूर्व होने

विद्यापति का

७३७३६६६६

पर भी इनके जीवनी-लेखक को बहुत कुछ ऐतिहासिक सामग्रियाँ मिलती हैं। उसका खास कारण यह है, कि ये एक राजवंश के आश्रित थे। उस राजवंश के इतिहास के साथ इनका इतिहास भी सम्मिलित है। कई प्राचीन पुस्तकों में प्रसंग क्रम से इनकी चर्चा आ गई है। एक ताम्रपत्र भी इनके सम्बन्ध में मिला है।

विद्यापति का निवास-स्थान

बहुत दिनों तक विद्यापति के जन्मस्थान के विषय में विवाद चला आ रहा था, किन्तु अब उस विवाद का अन्त हो गया। अब यह बात निश्चित हो गई है कि विद्यापति पंगाली नहीं, मैथिल थे। उनका जन्म दरभंगा जिले के बेनीपट्टी थाने के अन्तर्गत 'त्रिपरी' गाँव में हुआ था। दरभंगा से जो रेलगाड़ी उत्तर पश्चिम की ओर जाती है, उसका तीमरा स्टेशन कमसौल है। कमसौल से लगभग चार मील पर यह गाँव है। विद्यापति के पूर्वज बहुत दिनों से यहीं वास करते थे—इस गाँव का पहला नाम गढ़ त्रिपरी था। विद्यापति को यह गाँव उनके आश्रय दाता राजा शिवसिंह की ओर से उपहारस्वरूप मिला था। इस दान का ताम्रपत्र भी प्राप्त हुआ है। उस ताम्रपत्र का कुछ अंश यहाँ दिया जाता है—

स्वस्ति श्री गङ्गाधरपुराद समस्त प्रकिया विराजमान श्रीमद्रामेश्वरीवरलब्धप्रसाद भवानीभक्तभक्तिभावनापरायण रूपनारायण महा राजाधिराज श्रीमच्छिवसिंह देवपादसमरविजयिनो जरैल तप्याया दिव्यो ग्राम वास्तव्य सकल लोकान् भूकर्षकाश्च समादिशति ।
न तुमस्तुभजताम् । ग्रामोऽयमस्माभिः सक्रियाभिनवजयदेव महाराजपठित ठाकुर श्रीविद्यापतिभ्यः शायनीकृत्य प्रदत्तोऽतोऽय मेतेर्पा वचनकी भूकर्षणादिकर्मकरिष्यथेति ॥ ल० सं० २१३
आवग शुदि ७ गुरौ ।

विद्यापति के वंशधर बहुत दिनों तरु इसी गाँव में बसते रहे। किन्तु अभी, चार पुस्त पहले, वे इस गाँव को छोड़कर इसी जिले के सौराठ नामक गाँव में बस गये हैं। अंगरेजी राज्य के पहले तक वे लोग इस गाँव का उपभोग लाक्षिराज के रूप में करते थे। किन्तु अंगरेजी सरकार द्वारा सर्वे होने के समय इस गाँव का स्वाव इनके वंशधरों से छीन लिया गया। उस समय विद्यापति के वंशधरों ने अपना स्वाव सिद्ध करने के लिये उपयुक्त ताम्रपत्र पेश किया था। इस ताम्रपत्र को लेकर कुछ दिनों तक लूप विवाद चला। मिर्भरसन साहब इसे जाली बताते रहे। किन्तु महामहोपाध्याय हरप्रसाद वाघी तथा अन्य वंशीय अनुसन्धान कर्त्ताओं ने इस दान पत्र को प्रामाणिक माना है। विसपी गाँव विद्यापति को शिवसिंह ने अवश्य दिया था। विद्यापति के प्रपिछ विद्वेषी पंडित केशव मिश्र इसी दान की ओर लक्ष्य कर “अति लुब्ध नगर पाचक” नाम से इनका उपहास किया करते थे।

इन्हें पंगदेशीय सिद्ध करने के लिये जो कोशिश हुई थी उस विषय में भी कुछ जान लेना अशस्यमय न होगा। यात यों है, कि विद्यापति की अधिकांश रचनाएँ गृहार-रस से भरी भरी हैं। भारतीय गृहारी कवियों के प्रधान उपास्य देव हैं—राधाकृष्ण। रसकृत और भाषा का गृहारसाहित्य राधाकृष्ण की कल-कीड़ाओं से भरा पड़ा है। विद्यापति ने भी अपने पदों में राधाकृष्ण की छीलाओं का वर्णन किया है और खूब किया है। इस विषय के देवे मधुर और कोमल पद भाषा-साहित्य में कहीं अन्यत्र मिलना कठिन है। जिस समय बंगाल में चैनन्य महाप्रभु का आविर्भाव हुआ, उस समय इस कवि-कोटिल की काकली मिथिला की गली-गली को रसशक्ति कर बंगाल के श्यामल श्याम महल को

विद्यापति का

००००००००००

गुँज रही थी। चैतन्यदेव के कानों में भी इसकी मधुर ध्वनि पड़ी। सुनते ही वे मग्न मुग्ध हो गये। वे ढूँढ़-ढूँढ़कर विद्यापति के पद गाने लगे। विद्यापति के अलौकिक पदा को गाते-गाते, प्रेमावेन में, वे मूर्छित हो जाते थे। (चैतन्यदेव भारत के अवतारी पुरवों में हैं—ऐसा सौभाग्य प्राप्त करना विद्यापति के लिये कितने गौरव की बात है।) अजब्या था, चैतन्यदेव की शिष्य परम्परा में विद्यापति के पद गाने की प्रथा अनुदिन बढ़ती गई। यही नहीं, विद्यापति के ही अनुकरण पर कृष्णदास, नरोत्तमदास, गोविन्ददास, ज्ञानदास श्री निवास, नरहरिदास आदि वगीश कविया ने कविताओं का यनाना प्रारम्भ किया। बाबू नगेन्द्रनाथ गुप्त लिखते हैं— 'विद्यापतिर जे रूप अनुकरण हइआछिल, सोध हय कोन देशे कोन कतिर तद्रूप हय नाइ। ताहारई भाषा भाँगिया चूरिया, गढ़िया गठियो, रूप-रस, छन्दोबन्ध, ठामभगी, शब्द, उल्लेख, उपमा, ताँहारइ पदावली हइते लइया लोकमनो मोहन वैष्णव काव्यसमूह सृजित हरल।' ग्रैकोक्यनाथ भट्टाचार्य

एम० ए० पी० ए० एल० ने जो लिखा था उसका भाव देखिये—
"विद्यापति और चण्डीदास की अनुत्तरीय प्रतिभा से समस्त वा-साहित्य उज्ज्वल और सजीव हुआ है। वैष्णव गोविन्ददास और ज्ञानदास से लेकर हिन्दू यक्षिमचन्द्र और बाबा रवीन्द्रनाथ ठाकुर तक सब ही उन लोगों की आभा से आलोकित हैं, और उन लोगों का अनुकरण करके कविता रचना में 'यस्त पाये जाते हैं।' -

फल यह हुआ कि विद्यापति वगालियों के रगरग में प्रवेश कर गये। सैन्धुओं वर्षों तक लगातार वगालिया द्वारा गाये जान के कारण विद्यापति के वगदेशीय पदों का रूप भी टेढ़ धँगला हो

• पदा जाता है कि ये भी मैथिल ही थे—लेखक।

गया। अब तो बंगाली लोग यह एकपक्ष ही भूल गये कि विद्यापति बंगाली नहीं, मैथिल थे। बंगाली अपनी कुशाग्र बुद्धि के लिये प्रसिद्ध हैं उन लोगों ने विद्यापति का निवास-स्थान भी बंगाल ही में ढूँढ़ निकाला। यही नहीं, शिवसिंह नामक एक बंगाली राजा भी कहीं से टपक पड़े—रानी लखिमा देवी भी मिल गई। यों सब प्रकार से सिद्ध हो गया कि विद्यापति ठेठ बंगाली थे। यही कारण है कि बंगला १२८२ साल में स्वर्गीय राजकृष्ण मुखोपाध्याय ने सब पहले पहले 'वङ्गदशन' नामक पत्र में यह प्रकाशित किया कि विद्यापति बंगाली नहीं, मैथिल थे, और इसके प्रमाण में उन्होंने उपसुक्त साधन आदि पेश किये, तो समूचे बंगाल में कोलाहल मच गया। विद्यापति पर वे लोग इतने क्रोधाग्नेय थे कि उन्हें अभ्यदेशीय सिद्ध होना वे सुनना नहीं चाहते थे। उस समय एक प्रसिद्ध बंगला-लेखक ने यह अन्दाज लगाया था कि विद्यापति बंगाली ही थे, पहले बंगाली लोग मिथिला में विद्याध्ययन को जाते थे सम्भव है विद्यापति यहाँ से विद्याध्ययन को गये हों और वहाँ अपनी प्रतिभा से राजा शिवसिंह को प्रसन्न कर गेले प्राप्त किया हो और बस गये हों। किन्तु ये सब गपों के याज्ञिकों अथ गलत साधित हो चुकी हैं। महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री, जस्टिस सारदा चरण मिश्र, बाबू नगेन्द्रनाथ गुप्त सभी बंगाली विद्वानों ने यह कबूल कर लिया है कि ये मिथिला-निवासी थे और इन्होंने मैथिली भाषा में कविता की है। हमें धन्यवाद देना चाहिये श्रीयुक्त मिश्रसरन माह्व को, जिन्होंने सबसे पहले विद्यापति का विहारी होना सिद्ध किया था।

विद्यापति का समय

प्राचीन कवियों की तरह विद्यापति के जन्म और मृत्यु के

विद्यापति का

७७६६६६

समय भी निश्चित नहीं हैं। किंवदन्ती तथा स्फुट पदों के आधार पर ही इसकी विवेचना करना सम्प्रति समझ है। पता लगता तो फवल इसीका है कि कदमण्ड २६३ या शक्राब्द १३२४ में देवसिंह मरे थे, उसी साल शिवसिंह राजगद्दी पर बैठे थे, और, राजगद्दी पर बैठने के छ महीने के अन्दर उन्होंने विद्यापति को बिसफी गाव उपहार में दिया था। बिसफी गाव के ताम्रपत्र की प्रतिलिपि दी जा चुकी है, शिवसिंह के पिता देवसिंह की मृत्यु के विषय में विद्यापति का एक पद यों है—

अनल रन्ध्रे करै लखन नखइ सक समुह करै अग्नि समी ।
बैत कारि छठि जेठा मिलिओ बार वेहण्य जाहु लखी ॥
देवसिंह जू पुहुमि छडिअ अद्वासन सुरराज सरू । इत्यादि ।

बाबू प्रजनन्दन सहाय ने 'मैथिल कोकिल विद्यापति' ग्रंथ में लिखा है कि बिसफी गाव प्राप्त करने के समय विद्यापति का अवस्था केवल बीम वप की थी। हमके पहले विद्यापति ने 'कीर्ति-लता' नाम की पुस्तक लिखी थी। सहायजी ने उसे १६ की अवस्था में लिखी हुई बताते हैं। सहायजी का यह कथन अनुमान विरुद्ध तथा ऐतिहासिक प्रमाणों से असत्य सिद्ध होता है। सबसे प्रधान कारण तो यह है कि शिवसिंह गद्दी पर बैठने के तीन वर्ष के बाद ही मुमलमार्जा ने युद्ध करते हुए पराजित होकर किसी अज्ञात स्थान में चले गये, जहाँ सब पुन नहीं लौटे—सम्भवत वे उसी युद्ध में मारे गये। इतिहास से यह सिद्ध है, और स्वयं सहायजी ने भी इसे स्वीकार किया है। इससे तो यही सिद्ध होता है कि कुल तेहम वप की अवस्था तक ही विद्यापति और

• 'मिथिला-दर्पण' के रचयिता ने देवसिंह के बाद शिवसिंह का ४६ वर्षों तक राज्य करने की बात लिखी है। किन्तु 'मिथिला-दर्पण' का बाल-निष्पन्न निताल अशुद्ध जान पड़ता है। यहाँ तक कि उममे दो हरे राजाओं की बराबरी भी अशुद्ध है।—लेखक ।

शिवसिंह की संगति रही। विद्यापति के अधिकांश पदों में शिवसिंह का नाम है। क्या यह कभी सम्भव हो सकता है कि केवल तीन-चार वर्षों के अन्दर ही इतने पद लिखे गये हों? अनुमान की बात जाने दीजिये। इतिहास भी इसके विश्व है। सहायजी ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि विद्यापति बचपन में अपने पिता गणपति ठाकुर के साथ राजा गणेश्वर के दरबार में भाते जाते थे। नैपाल-दरबार के पुस्तकालय में विद्यापति-रचित 'कीर्ति छत्ता' की पूरी पुस्तक महामहोपाध्याय प० हरमसाद शास्त्रीजी ने देखी थी और उसकी नकल भी इन्होंने करा ली थी। उस कीर्ति छत्ता में लिखा हुआ है कि २५२ लक्ष्मणाब्द में राजा गणेश्वर की मृत्यु हुई थी। अतः राजा गणेश्वर की मृत्यु के पहले ही विद्यापति का जन्म अवश्य हो गया होगा वे ऐसी अवस्था के जरूर रहे होंगे कि दरबार में अपने पिता के साथ जा सकें। २५२ लक्ष्मणाब्द में यदि विद्यापति केवल २० वर्ष के थे तो २५२ लक्ष्मणाब्द में व राजा गणेश्वर के दरबार में कैसे आ जा सकते थे—उस समय तो उनका जन्म भी न हुआ होगा।

बात यह है कि बाबू मजनन्दन सहायजी को बाबू अयोध्या प्रसाद खत्री लिखित मिथिला-राज्य की वंशावली ने धोखा दिया है। बाबू अयोध्या प्रसाद खत्री के कथनानुसार शिवसिंह के पिता देवसिंह की मृत्यु १४४६ ईस्वी में हुई थी, जो लक्ष्मणाब्द २४७ होता है *। सहायजी ने स्वयं इसका खटन किया है। क्योंकि

• लक्ष्मणाब्द और ईसवी सन् के तारतम्य में भिन्न भिन्न ऐतिहासिकों ने भिन्न भिन्न मत हैं। सहायजी ने शिवसिंह के राज्यारोहण काल २६३ ल० स० को १४०० ई० माना है, बिस्फी आफ लिस्बुल के रचयिता ने इसे १४१२ ई० लिखा है, और मेरे हिसाब से यह १४०२ ई० पड़ता है।—लेखक।

विद्यारति के कथनानुसार छद्मणाद २९३ म देवसिंह की मृत्यु हुई थी। या भयाव्या प्रमादजी ने सहायजी की गणनानुसार ४६ वर्ष की भूल की है। किन्तु एक जगह खत्रीजी के समय की गलत मान कर भी दूसरी जगह सहायजी ने उसे प्रामाणिक मान लिया है। दुर्गाभक्ति सरगिणी नामक पुस्तक विद्यापति ने राजा नरसिंहदेव के समय में लिखना शुरू किया था, और उसके बाद के राजा धीरसिंह के समय में समाप्त किया था। नरसिंह देव का समय खत्रीजी ने १४७० ई० लिखा है। सहायजी ने इस समय का प्रामाणिक मान लिया है। जब १४७० ई० के बाद तक विद्यापति के जीवित रहने की बात स्वीकार कर ली गई, तब उनके जन्म साल को भागे बढ़ाना सहायजी के लिये जरूरी था। किन्तु सोचना तो यह था कि जिस प्रकार देवसिंह की मृत्यु के विषय में खत्रीजी ने ४६ वर्ष की भूल की है वही ४६ वर्ष की भूल यहाँ भी की होगी। खत्रीजी की यह भूल भी इतिहास सिद्ध है। स्वयं सहायजी ने अपनी पुस्तक के २० पृष्ठ में लिखा है कि नरसिंहदेव के पुत्र धीर सिंह के राजत्वकाल में 'सेतुबंध' नामक नाकृत ग्रंथ की 'सेतुदर्पणो' नामक टीका लिखी गई थी। जिस के अनुसार ३२१ छद्मणाद में धीरसिंह सिंहासन पर विराजमान बतलाये गये हैं। ३२१ छद्मणाद १४२८ ई० में पड़ता है। सोचने की बात है कि जब पुत्र १४२८ ई० में राजगद्दी पर बैठा था तो उसका पिता १४७० म कैसे राजा हुआ? इस साफ प्रष्ट है कि खत्रीजी ने यहाँ भी ४६ वर्ष की गलती की है। १४७० में ४६ घटा देने पर १४२४ ई० में नरसिंहदेव का राजा होना सिद्ध होता है। नरसिंहदेव ने, सहायजी के ही कथनानुसार,

• सहायजी की गणना के अनुसार—लेखक

एक ही वर्ष तक राज किया था। सम्भव है १४२५ में वे मर गये हों और १४२८ में उनका पुत्र धीरसिंह राजगद्दी पर विराजमान रहे हो। 'मेतुदपिणी' से भी यही पता चलता है। इसी ४६ वर्ष के वर में पश्कर जहां महायजी न केवल २० वर्ष की अवस्था में शिवसिंह और विद्यापति की भेंट कराकर तीन ही वर्षों में उनका विधायोग कराया, वहां विद्यापति की सात अधिक वर्ष की अवस्था का भी भ्रम रह-रह कर गया था—जिसे का आधिक्य प्रमाणित करने के लिये आपने जमीन आस्मान का कुलाया मिलाया है, निजी और सार्वजनिक सब प्रमाणों को पेश किया है।

महायजी को एक और तिथि ने भी धोखा दिया है। आपने २३ पृष्ठ में लिखा है कि ३४९ लक्ष्मणाब्द में इनके मरने काय से आठवत् पोधी की नकल करना सिद्ध होता है। यह गलत है। नगोद्वनाथ गुप्त ने मैथिल कविराज चंद्रा का के साथ स्वयं सौनी जाकर उस पुस्तक को देखा था। उस पुस्तक के अंत में लिखा है—“सुममस्तु सर्वांगता ल० स० ३०९ आषाढ सुदि १५ बुधे रजाबनोमी प्राप्ते श्री विद्यापतिलिपिरियमिति।” हम ३०९ की ही महायजी न भ्रमवश ३४९ मान लिया है।

अब यथार्थ बात सुनिये। यह इतिहास और जनश्रुति दोनों पर अवलम्बित है और आपको युक्तियुक्त भी मान्य पड़ेगी।

पुस्तिकाटिक सोपाहटी में एक प्राचीन हस्तलिखित पोधी है जो १३२२ शाकाब्द (= २९० लक्ष्मणाब्द) की लिखी हुई है। यह पोधी शिवसिंह की राजधानी गजरथपुर में विद्यापति की प्रेरणा से लिखी गई थी। दो ब्राह्मणों ने इसे लिखा था। उसमें विद्यापति को 'सप्रज्ञिय मधुपाध्याय ठाकुर श्री विद्यापति' ऐसा लिखा है और शिवसिंह का नाम महाराजा की उपाधि से युक्त है। इससे दो

विद्यापति का

७७७७७७७७

बाता का पता चलता है। एक यह कि शिवसिंह अपने पिता के जीवनकाल में ही महाराजा कहलाते थे। [मालूम होता है, वृद्ध पिता ने अपना शासन भार पुत्र को ही सौंप दिया था और जनता शिवसिंह को ही अपना अधिपति मानती थी।] दूसरी बात हम पोथी में यह प्रगट होती है कि शिवसिंह के सिंहासनारोहण के पहले से ही विद्यापति दरबार में रहते थे। देवसिंह के नाम से विद्यापति ने कुछ पद भी बनाये हैं।

हा, तो यह सिद्ध है कि पिता की मृत्यु के पहले से ही शिवसिंह राज्य शासन करते थे। मिथिला में यह जनश्रुति है कि शिवसिंह पचास वर्ष की अवस्था में राजगढ़ी पर बैठे थे और विद्यापति उनसे दो वर्ष बड़े थे। अतः शिवसिंह के राज्यारोहण के समय विद्यापति की अवस्था ५२ वर्ष की थी। यदि इस जनश्रुति को तथ्यपूर्ण मान लिया जाय तो प्रायः हम सत्य के निकट पहुंच सकेंगे। क्योंकि विद्यापति को उपयुक्त तात्पर्य में 'अभिनव जयदेव' लिखा गया है। उस समय तक विद्यापति की कीर्ति चारा ओर फैल गई रही होगी। उनकी कविता के माधुर्य पर मुग्ध होकर लोग उन्हें 'अभिनव जयदेव' कहने लगेंगे। विद्यापति की कविता राजा के अन्तःपुर से लेकर गरीबा की झोपड़ी तक में गूंज रही थी। राजसिंहासन पर बैठने के समय शिवसिंह अपने प्यारे सहचर विद्यापति को कैसे भूल सकते थे। जिसकी कविता सुधा को पानकर व मस्त बने थे, जिसकी कविता उन्हें और उनकी सहधर्मिणी 'ललिता' को अमर कर चुकी थी, उसे वे कैसे कुछ परस्कार न देते। अतः राजगढ़ी पर बैठने के कुछ ही दिनों के बाद उन्होंने विद्यापति को विसयी गाँव प्रदान किया। जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, बिसयी गाँव २९३ छद्मनाम्न में विद्यापति को दिया गया था, उस समय

उनकी अवस्था लगभग ५२ वर्ष की होगी। अतः उनका जन्म २४१ लक्ष्मणाब्द में या सन् १४०७ विक्रमीय में होना सम्भव है (= सन् १३५० ई०)। इस कथन की परिपुष्टता पूर्वोक्त राजा गणेश्वरसिंह के दरबार में विद्यापति के आन जाने वाली बात से भी होती है। 'कीर्ति-कता' के अनुसार राजा गणेश्वर २५२ लक्ष्मणाब्द में परलोकगामी हुए थे। उस समय विद्यापति १०—११ वर्ष के रहे होंगे। तभी तो उनके पिता उन्हें राज दरबार में ले जाते थे।

विद्यापति का वंश

विद्यापति मैथिल ब्राह्मण थे। इनका मूल विमलद्वार और भास्कर ठाकुर था। मैथिलों में पत्नी प्रथा का प्रचलन है। जितने मैथिल ब्राह्मण और कर्णकायस्थ हैं, सभी के नाम, पुस्त दरपुस्त, एक पोथी में लिखी हुई है। इस पोथी को 'पत्नी' कहते हैं। पत्नी से पता चलता है कि गङ्गाबिन्दी में कर्मादित्य त्रिपाठी नामक ब्राह्मण रहते थे। आप राजमन्त्री थे। ये महाशय विद्यापति के पश के आदिपुरुष त्रिगुणार्मा ठाकुर के पोते थे। कर्मादित्य के बाद इनके खानदान में जितने महापुरुषों ने जन्म लिया, सभी तत्कालीन मिथिला के राजा के दरबार में उच्च पदां पर काम करते रहे। कोई राजमन्त्री थे, कोई राजपटित। किसीको महामहत्तक की उपाधि प्राप्त हुई तो किसीको सान्धिविग्रहीक की। इनका खानदान अपनी विद्वत्ता और बुद्धिमत्ता के मन्मुख उस समय मिथिला में जोड़ नहीं रखता था। इनके खानदान में कितने ही लेखक और कवि भी हो गये हैं। कर्मादित्य के पोते श्रीरेश्वर ठाकुर ने, जो न्यान्य घंशीय राजा शत्रु सिंह एवं उनके पुत्र

विद्यापति का

००००००००

हरिसिंह देव के * राजमन्त्री भी थे, “छान्दोग्य दशपद्धति” का रचना की थी। अभी तक इसी पुस्तक के अनुसार बिहार में दशकर्म किये जाते हैं। इनके मोदर भाई धीरेधर, जो विद्यापति के निज प्रपितामह थे, ‘महावार्तिकनैबन्धिक’ नाम से प्रख्यात थे। धीरेधर के पुत्र चण्डेश्वर ने ‘कृत्य चिन्तामणि तथा ‘विद्यादरशान्तर’ राजनीति रत्नाकर आदि सप्त रत्नाकरों की रचना की थी। राजनीति रत्नाकर एक बहुत ही उद्भूतग्रन्थ है। प्राचीन भारतीय राजनीति पर इसमें बहुत कुछ प्रकाश डाला जा सकता है। आप उपर्युक्त हरिसिंह देव के मन्त्री एवं महामहत्तक सान्धिविप्रहीन थे। विद्यापति के पिता पण्डित गणपति ठाकुर भी राजमन्त्री थे। आपन गंगाभक्ति तरङ्गिणी नाम की एक पुस्तक की रचना की थी।

यों देखा जाता है कि विद्यापति का खानदान ही सरस्वती का अपूर्व कृपापात्र रहा है। जिस प्रकार उनका पूर्वजों ने राज्यकर्म में अपनी अपूर्व चातुरी दिखलाई थी, उसी प्रकार सरस्वती सेवा में भी वे कोग पीछे नहीं रहे हैं। ऐसे प्रतिभावान् कुल में उत्पन्न होकर विद्यापति ने जो कुछ काव्य कुशलता दिखलाई है, वह स्वाभाविक ही है।

विद्यापति का प्रारम्भिक जीवन

विद्यापति के पिता का नाम था पण्डित गणपति ठाकुर। गणपति ठाकुर राजा गणेश्वर के सम्पादित थे। इनकी माता का नाम था हापिनी देवी। वह पिता धन्य है, जिन्हें ऐसा पुत्र उत्पन्न

* हरिसिंहदेव शिवसिंह से बहुत पहले प्रसिद्ध मिर्जापुर गं क अपिपति थे। उन्होंने नैयान को जीना था।—लेखक

प्राप्त हुआ था, वह माता भी धन्य है, जिन्होंने ऐसे पुरस्कार को अपने गर्म में धारण किया था। विषयी गाँव की प्रत्येक कण पुण्यमय और धन्य है, जहाँ ऐसे कविकोकिल ने अपना जीवन व्यतीत किया था। कहा जाता है, गणपति ठाकुर ने कपिलेश्वर महादेव की भाराधना कर के विद्यापति ऐसा पुत्र रख प्राप्त किया था।

विद्यापति ने सुप्रसिद्ध हरिमिथ से विद्याध्ययन किया था और उनके भतीजे सुख्यात पक्षधर मिथ इनके सहपाठी थे। विद्यापति अपने पिता के साथ राजा गणेश्वर के दरबार में बचपन से ही भाषा जाया करते थे। गणेश्वर के बाद कीर्तिसिंह राजा हुए। विद्यापति राजा कीर्तिसिंह के दरबार में आने जाने लगे। प्रारम्भ से ही इनमें प्रतिभा की झलक दीख पड़ती थी। राजा कीर्तिसिंह के दरबार में मालूम होता है, वे कुछ अधिक काल तक रहे होंगे। क्योंकि इन्हीं राजा कीर्तिसिंह के नाम पर इन्होंने अपना पहला ग्रंथ 'कीर्तिलता' का निर्माण किया था। यह पूरी पुस्तक नैपाल के राज पुस्तकालय में है। मिथिला में इस ग्रन्थ का केवल फुटकर अंश मिलता है। 'कीर्तिलता' कवि के तरुण वयस की रचना है। इस ग्रंथ की भाषा संस्कृत, प्राकृत मिश्रित मैथिली है। कवि ने इस भाषा का नामकरण 'भवद्वंद्व' भाषा किया है। 'कीर्तिलता' के प्रथम पल्लव में कविने रयय कहा है—

देसिल घन्नना सय जन मिट्टा।

ते तेसन जम्पओ अपहट्टा ॥

'देशी भाषा समो को मोठी लगनी है, यही जानकर अपहट्ट भाषा में इनकी मैने रचना की है। किन्तु इस पुस्तक की रचना के समय, मालूम होता है, कवि अपनी कार्य कुशलता के लिये

बहुत प्रसिद्ध हो गये थे। उनकी भाषा पर सभी मुग्ध थे।
उनका प्रतिद्वंद्वी उसी अवस्था में कोई नहीं था। वे अभिमान
के साथ उस पुस्तक में लिखते हैं—

बालचन्द्र विज्जावह भाषा ।

हुहु नहिं लग्गइ दुज्जन हासा ॥

ओ परमेसर हर सिर सोहइ

॥ निचय नायर मन मोहइ ॥

—कीर्ति लता, प्रथम पहलव ।

बालचन्द्रमा और विद्यापति की भाषा—इन दोनों पर
हुहो की हँसी लग नहीं सकती। वह (बालचन्द्रमा) देवता के
रूप में शिव के सिर पर सोहता है और यह (विद्यापति की
भाषा) निश्चय पूरक नागरो का—सुखतुर भाषाविज्ञा का—
मन मोहती है। हुप पद के एक-एक शब्द से कवि का अभिमान
टपकता है। जयदेव के समान इन्हें भी अपनी भाषा पर नाज थी।
चात भी ठीक है। हम दाव के साथ कह सकते हैं कि भाषा की
मिठाव और कोमलता की दृष्टि से तो इन कवि का कोई भी
प्रतिद्वंद्वी हिन्दी साहित्य में नहीं है।

कीर्ति सिंह के बाद शिवसिंह के पिता देवसिंह राजा हुए।
देवसिंह के समय में राज्यशासन का भार शिवसिंह के ही हाथ में
था। उसी अवसर पर विद्यापति और शिवसिंह में घनिष्ठता हुई।
तब से विद्यापति शिवसिंह के अन्तिम समय तक उन्हींके पास रहे।

विद्वत्ता, सस्कृत-रचनायें

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, इन्होंने सुप्रसिद्ध विद्वान्
हरिप्रिय ने विद्याप्ययन किया था। इनका खानदान ही सरस्वती

की कृपापात्र रहों है। इनके पिता गणपति ठाकुर स्वयं कवि थे। अतएव, इसमें सन्देह नहीं कि संस्कृत साहित्य का त्रिधापति ने पूरी तरह से अनुशीलन किया था। इसका प्रमाण इनकी लिखी हुई संस्कृत की अनेकानेक पोथियाँ हैं। यहाँ पर यदि हम इनके लिखे हुए संस्कृत ग्रंथों का कुछ परिचय दे दें, तो अस्समयिक नहीं होगा। उनसे हम इनकी विद्वत्ता का कुछ अन्दाज लगा सकेंगे।

त्रिधापति की प्रथम रचना 'कीर्त्ति लता' है। इसके विषय में कुछ यहाँ हो चुकी है। दूसरी पोथी 'भू परिक्रमा' है। यह पोथी राजा देवसिंह की आज्ञा से लिखी गई थी। इसमें भक्ति कहानियाँ हैं। इसीका उद्धृत रूप 'पुरष-परीक्षा' है। इनकी तीसरी पोथी है—'पुरुष परीक्षा'। यह पोथी, भास्कर होता है, उस समय की रचना है जब इनके मस्तिष्क का पूरा विकास हो चुका था। यह राजा शिवसिंह की आज्ञा से उन्हींके राजस्वकाल में लिखी गई थी। इसमें कथाओं के दम से धार्मिक एवं राजनीतिक उपयोगी विषयों का वर्णन है। राजनीतिक और धार्मिक विषयों में भी कवि ने शृङ्गार रस को विस्मरण नहीं किया है। कवि ने शृङ्गार-रस के परदे में राजनीति और धर्म की शिक्षा दी है। इस पुस्तक का बहुत मान है। १८३० ईस्वी में इसका अँगरेजी में अनुवाद हुआ था। यह अनुवाद लाइब्रियन टर्नर के परामर्श से राजा कालीकृष्ण घहादुर ने किया था। फोर्ट विलियम कालेज में पहले यह पाठ्य पुस्तक की तरह पढ़ाई जाती थी। उक्त कालेज के घट्टभापा के अध्यापक हरप्रसाद राय ने १८१५ ई० में इसका भाषानुवाद किया था।

इनकी चौथी पुस्तक 'कीर्त्ति पताका' है। इसमें मैथिली

मापा में लिखी गई प्रेम कविताएँ हैं। पाँचवीं 'लिखनावली' है, जिसमें सस्कृत में पत्र-व्यवहार करने की रीति वर्णित है। लिखनावली रजायनौली के अधिपति पुरादित्य के लिये २९९ लक्ष्मणाब्द में लिखी गई थी। इसी रजायनौली में विद्यापति ने ३०९ लक्ष्मणाब्द में अपने हाथ से भागवत लिखकर समाप्त की थी। छठी पुस्तक 'शैव-सर्वस्व सार' है। यह पुस्तक शिवसिंह की मृत्यु के बहुत दिनों के बाद रामी त्रिभामदेवी के समय में लिखी गई थी। इस पुस्तक में भवसिंह ने लेकर विभामदेवी तक के समय के राजाओं की कीर्ति कथा है, एवं शिव की पूजा की विधि लिखी हुई है। सातवीं पुस्तक 'गंगा-आस्थावलि' है, जो विभास-देवी के ही लिये लिखी गई थी। आठवीं पुस्तक है 'दान-घाफ़्या-वलि'। यह राजा नरसिंह देव की स्त्री धीरमति को समर्पित की गई है। नवीं पुस्तक 'दुर्गा-भक्ति-तरंगिणी' दुर्गा पूजा के प्रमाण और प्रयोग पर लिखी गई है। इसका निर्माण नरसिंह देव के कहने से हुआ था। धीरसिंह के समय में यह पूरी हुई थी। इसमें धीरसिंह के भाई भैरवसिंह और चन्द्रसिंह का भी नाम आया है। इसके अतिरिक्त विभाग सार (स्मृति प्रथ) अपकृत्य और गया पतन नामक सस्कृत पुस्तकें भी आपकी ही लिखी हैं। अब तक मिथिला में योज का काम कुछ नहीं हुआ है। सम्भव है, इनकी लिखी और भी सस्कृत पुस्तकें हों, जो अभी तक छिपी पड़ी होंगी, क्योंकि विद्यापति दीर्घजीवी पुरुष थे। किन्तु, केवल इ हाँ पुस्तकों के देखने से ही विद्यापति के प्रगाढ़ पादित्य का परिचय मिलता है। हिन्दी के लिये तो यह नितांत गौरव की बात है कि उसका एक प्रथम श्रेणी का द्रवि सस्कृत साहित्य में भी अपना छाप स्थापन रखता है।

विद्यापति की उपाधियाँ

हिन्दी में आजकल यह प्रथा विशेष रूप से पाई जाती है कि प्रत्येक कवि अपना एक-न एक उपनाम रखता है। हिन्दीवालों ने यह प्रथा विशेषतः उर्दूवालों से ली है, ऐसा कहा जाता है। किन्तु प्राचीन हिन्दी कवियों में भी उपनाम देखे जाते हैं। हा, आजकल के उपनाम और उस समय के उपनाम में एक गहरा भेद है। किसी राजा या प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा, उनकी काव्य कुशलता देखकर उसीके अनुसार प्रदान की हुई उपाधियाँ ही, उस समय कवियों के उपनाम होते थे। आजकल जिसके जी में जो आता है, भगना उपनाम घर लेता है। प्राचीन कवियों में 'विहारी भूषण' आदि उपनाम जो देखे जाते हैं, वे सब राज प्रदत्त उपाधियाँ हैं।

विद्यापति को भी कई उपाधियाँ प्राप्त हुई थीं। 'अभिनव जयदेव' की उपाधि तो सब प्रसिद्ध है। बिस्फी गाँव का जो तान्त्रपत्र है, उसमें भी विद्यापति को 'अभिनव जयदेव' कहा गया है। मालूम होता है यह उपाधि स्वयं शिवसिंह ने दी थी। विद्यापति इस उपाधि के सर्वथा योग्य भी थे। जिस प्रकार सस्कृत साहित्य में मधुर शृङ्गार वर्णन में जयदेव की जोड़ नहीं है, उसी प्रकार, इस विषय में विद्यापति भी भाषा-साहित्य में अपनी जोड़ नहीं रखते? इस उपनाम से इन्होंने कुछ कविताये भी की हैं। एक पद यों है—

सुकवि नव जयदेव अनिश रे ।

देवसिंह नरेन्द नन्दन

सेतु तरंग कुल निरुन्दन

सिंह सम सिवसिंह राया
सकल गुनक निधान गनिअ रे ॥

इनकी दूसरी उपाधि 'कविशेखर' है। कविशेखरनाम से भी इनकी बहुत सी रचनाएँ हैं। न मालूम यह उपाधि किसने दी थी। दिल्ली ग्राम के दानपत्र में यह उपाधि नहीं है। कविकठहार, कविरत्न इन दो नामों से भी अधिक कविताएँ हैं। दुशावधान और पञ्चानन की उपाधियाँ भी इनकी कही जाती हैं। कुछ कविताएँ चम्पति वा विद्यापति चम्पई नाम से भी हैं। 'दशावधान' नाम से कुछ कविताएँ भी हैं। यह उपाधि, कहा जाता है, दिल्ली शहर ने दी थी।

विद्यापति का सम्प्रदाय

अभी तक यह विषय भी सदहप्रद रहा है। इनकी कविताये विरोपत राधाकृष्ण विषयक हैं। अतः लोगों की धारणा है कि ये वैष्णव रहे होंगे। बंगाल में भी पहले यही धारणा थी। बाबू प्रजनन्दन सहाय ने अपने समर्पणपत्र में इन्हें 'वैष्णव कवि चूडामणि' लिखा है। किन्तु जनश्रुति और प्रमाण इसके विरुद्ध है। बात यों ही कि विद्यापति शृङ्गारिक कवि थे। शृङ्गार के आराध्य देव श्रीकृष्णजी ठहरे। अतः शृङ्गारिक वर्णन में राधाकृष्ण के विलास ही वर्णन किये जाते हैं—सभी भारतीय शृङ्गारिक कवियों ने इसी युगल मूर्ति को उद्घृत कर शृङ्गारिक रचनाये की हैं। किन्तु इसीसे किसी कवि को वैष्णव मान लेना ठीक नहीं। विद्यापति के पिता गणपति ठाकुर शैव थे। आपने शिव की उपासना के बाद ही यह पुनरन्तन प्राप्त किया था। ऐसी अवस्था में विद्यापति का शैव होना बहुत सम्भव है। जनश्रुति भी ऐसी ॥ है। यही नहीं, विद्यापति का एक पद यों ही—

श्रान चान गन हरि कमलासन
सय परिहरि हम देवा ।

भक्त बल्लल प्रभु बान महेसर
जानि कपलि सुअ सेवा ।

‘कोई षट्र की पूजा करते हैं । कोई विष्णु की पूजा करते हैं । किन्तु मैंने सबको छोड़ दिया । हे बाण महेश्वर, भक्तवत्सल जानकर मैंने तुम्हारी ही सेवा की ।’ ये बाण महेश्वर का है ? विद्यापति के गाँव बिसफी से उत्तर भेड़वा नामक एक गाँव में बाणेश्वर महादेव हैं । प्रवाद है कि विद्यापति उसी महादेव की उपासना करते थे । यही नहीं, विद्यापति के बनाये हुए अनेकानेक ‘नित्यगीत या नचारियाँ हैं जो मिथिला में उनकी पदावली से भी अधिक प्रसिद्ध हैं । मिथिला में उनकी पदावली तो विशेषतः स्त्रियों में प्रचलित है—विशेषतः स्त्रियाँ ही उनके पद गाती हैं । पुरुषों में तो नचारियाँ ही प्रसिद्ध हैं । मुझ के मुझ कोकिलकंठी तमगिया जिय प्रकार तीर्थस्थानों को जाती हुई विद्यापति के तमसुर पद गाती श्रुमती जाती हैं, उसी प्रकार ताथवात्री पुरेण के मुझ प्रेम मे नचारियाँ गाते हैं ।

अब कहने हैं, स्वयं महादेव इनकी भक्ति पर मुग्ध थे । एक दिन एक अपरिचित आदमी इनके निकट आया और इनसे नौकरी मिलाने की अनुमति माँगी । विद्यापति ने उसे रख लिया । उसका नाम ही ‘उगना’ था—कोई कोई ‘उदना’ भी कहते हैं । यह स्वयं महादेवजी की सेवा में ‘उगना’ इनके यहाँ रहने लगा । वह सदा इनकी परमावादादी में रहता । एक दिन ‘उगना’ के साथ विद्यापति कहीं जा रहे थे । रास्ते में इन्हें प्यास लगी । उगना से कहा । उगना चल पड़ा । तेजी ही देर में वह एक लोग पानी लेकर लौटा । विद्यापति

जे मोर कहता उगता उदेस ।

ताहि देवआ कर कंगना बेस ॥

नन्दन यन में भेटल महेस ।

गोरि मन हरखित भेटल फलेस ॥

विद्यापति भन उगना सों काज ।

नहि हित कर मोर त्रिभुवन राज ॥

इस तरह के कई पद हैं । यद्यपि इस नास्तिकवाद क वैज्ञानिक युग में इस कथा पर लोगो को विश्वास न होगा, किन्तु ऐसी घटनाओं से प्राचीन भारतीय इतिहास भरा-परा है ।

इन सब बातों से यही सिद्ध होता है कि विद्यापति वैष्णव नहीं, वरन् शैव थे । हाँ, यह बात निस्सन्देह सत्य है कि वे आज कल के शैवों की तरह विष्णु प्रोक्षी नहीं थे । वे शिव और विष्णु को एक ही रूप की दो कलाओं मानते थे । आशुका यह पद है—

भल हरि भल हर भल तुभ्र कला ।

जन पित घसन जनहि वचछला ।—इत्यादि

साथ ही साथ देवियों (खास कर दुर्गा) की स्तुति जिस प्रकार इ होने को है उससे लोगो के मन में जरा भी सन्देह इनके शाक्त होने के विषय में नहीं रह सकता है । इनकी अलोचना करने पर ऐसा ही सिद्धास द्रु होता है कि आधुनिक मैथिलों की तरह ये शिव, विद्या तथा चण्डी तीनों को मानते थे, पर किसी एक विशेष सम्प्रदाय के अनुयायी नहीं थे । यदि आज भी मैथिलों के घर का चन्दन देखेंगे तो बात स्पष्ट हो जायगी । वे एक ही साथ भस्म भी धारण करते, श्रीगण्ड

विद्यापति का

७७७७७७७७

चन्दन भी और सिन्दूर की बिंदु । उपयुक्त तीनों देवताओं की ये तीनों निशानियाँ हैं । वह तीना को समान आदर की दृष्टि से देखता है पर किसी एक सम्प्रदाय का नहीं है ।

विद्यापति के आश्रयदाता शिवसिंह

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, विद्यापति के प्रधान आश्रय दाता राजा शिवसिंह हैं । इन्हींकी छत्रछाया में रहकर विद्यापति ने अपने अधिकांश पदा की रचना की थी । जिस प्रकार शिवसिंह ने प्रचुर सम्पत्ति देकर इन्हें सांपारिक झझटों से मुक्त कर दिया था, उसी प्रकार, बदले में विद्यापति ने उनका और उनकी धर्मपत्नी छत्तिमा देवी का नाम अपने पदों में देकर उन्हें अजर अमर बना दिया है । शिवसिंह का भौतिक दान तो थोड़े ही दिनों में विहीन हो गया, किंतु विद्यापति ने उन्हें जो यश का दान दिया वह अनन्त काल तक समार में विद्यमान रहेगा ।

छोटी को स्वभारत यह उत्कटा होगी, कि ये शिवसिंह कौन थे ? मिथिला के नवीन युग के शापकी में तिमरौं और सुगाँव ये दो राजघराने अधिक प्रसिद्ध हैं । राजा शिवसिंह सुगाँव राजघराने में हुए थे । सुगाँव राजघराने के पहले तिमरौं राजघराने के लोग शासन करते थे । इनकी राजधानी तिमरौं गढ़ में थी—जो वर्तमान धर्मारण जिले में है । तिमरौं के राजा क्षत्रिय थे । इस राज्य के संस्थापक नान्यदेव थे । इसी राजकुल में सुप्रसिद्ध हरिसिंह देव हुए थे, जिन्होंने नेपाल विजय किया था । हरिसिंह देव के मंत्री विद्यापति के पूज्य चरित्र थे और उनका राज्यद्वितीय कामेधर ठाकुर ।

कहा जाता है कि एक समय हरिसिंह देव ने एक बृहद् यज्ञ न किया था। किन्तु अन्य राजाओं को देव ने यज्ञभ्रष्ट कर दिया, जिससे विरक्त होकर वे जंगल में चले गये। इसी समय पर पाकर दिल्ली के बादशाह ने मिथिला पर चढ़ाई की। मिथिला में उस समय भ्रातृकता फैल रही थी। दिल्लीधर का मनोरथ पूरा हुआ—मिथिला का शासन सुप्रमुसलमानों के हाथ आया। हम अवसर पर राजपंडित कामेश्वर ठाकुर नवाबशाह से की। बादशाह उनके गुण से अत्यन्त सन्तुष्ट हुए। उनके भरपूर करने पर भी उन्हींको मिथिला प्रदेश का शासक नियुक्त किया। तभी से मिथिला का शासन ब्राह्मणों के हाथ में आया। कामेश्वर ठाकुर भोजनधार ब्राह्मण थे। उन के पूर्वपुरुष प० भोजन धर ने किसी राजा से (सम्भवतः नान्यदेव से) 'भोजनी' नामक उपहार में पाया था। 'भोजनी' गाँव दमहता जिले में पुरा-स्थान के निकट है। 'भोजनी' गाँव में वसने के कारण हम को 'भोजनधार वंश' कहते हैं।

भोजनधार वंश के सबसे प्रथम राजा यही प० कामेश्वर ठाकुर भोजनधार वंश के बाद उनके पुत्र भोजनधार ठाकुर भोजनधार वंश के दो बेटे थे—वीरलिंग देव और कीर्तिसिंह। इन्हीं कीर्तिसिंह के दरबार में विद्यापति ने कीर्तिलता का वर्णन किया था। कीर्तिसिंह और उनके भाई वीरलिंग नि मन्तान तब भोजनधार के भाई भोजनधार के बेटे देवसिंह राजा हुए। राजा शिवसिंह महाराज देवसिंह के पुत्र हैं। इनका राजधानी

विद्यापति का

६६७७६६६६

गजरथपुर नामक नगर म बागमती के किनारे थी। विद्यार्थी आश्रयदाता राजा शिवसिंह की राजधानी गजरथपुर में।

यह गजरथपुर कहाँ है? दरभंगे से ४-५ मील दक्षिण कोने पर 'मिथिलासिंहपुर' नामक एक गाँव है, का कहना है उसीका दूसरा नाम गजरथपुर था। वहाँ का पता लगाने पर एक बृद्ध ब्राह्मण से मालूम हुआ कि यहीं शिवसिंह की राजधानी थी। बृद्ध ने बतलाया कि इधर भी उमरगाँव खोदने से कभी कभी सोना चाँदी आदि ग्रन्थ मिलते थे। किन्तु गड़ का कही पता नहीं है—जहाँ पहले गड़ था, वहाँ खेत लगा रहे हैं। शिवसिंह के प्रति विद्यापति की इतनी अनुरक्ति दलित मालूम होता है ये बड़े ही रसिक आर का यममञ्जरी पुरष प विद्यापति के पदा में इनके नाम के साथ—माथ इनकी प्रागप्रिय महाराणी लखिमा देवी का भी नाम है। इस प्रकार रानी का नाम पदों में देने से कोणा ने उल्टा सीधा बहुत कुछ अनुमान किया है। किन्तु यथाथ यात तो या है कि विद्यापति ने जहाँ कहीं किसी राजा का नाम दिया है, वहाँ साथ ही माथ साधारणतया उसकी स्त्री का नाम भी दिया है।

शिवसिंह और लखिमा देवी के नाम पदों में हान

विद्यापति के ही समान जय कृतिने कवि भी शिवसिंह के दर में थे। उन्होंने से एक वे उमापति, 'जा पारिजातदरश' "रविनयनी परिणय" नामक माथ—नाट्यों के रचयिता बड़े जाने लोग पहले इन दोनों नाट्यों के रचयिता विद्यापति को मानते थे

त्रिपय में मिथिला में एक प्रगद है। यह यह है, कि विद्यापति
नित पदों का रचना करते थे वे सत्र राजा के अन्त पुर में गाये जाते
थे। राजा रानी दोनों अंत पुर में एकत्र बैठते, उनसे चारों ओर
छिरियाँ आ बैठतीं उस समय केटी (चेरी) नाम की गायिकाओं की
श्रेणी शिरमिह और लखिमा देवी की भणिता युक्त विद्यापति के
पद गाने लगतीं। 'केटी' छिरियाँ गानविद्या में निपुण होती थीं।
वे महल में किसी काम के लिये नियुक्त की जातीं। विद्यापति
के पदों में लखिमा के अतिरिक्त शिवसिंह की अन्य रानियों की-
भी नाम आये हैं। सम्भवतः लखिमादेवी ही पटरानी रही हो,
या इन्हींपर राजा की अधिक आसक्ति रही हो।

शिवसिंह जिन प्रकार कलाविद् थे, उन्हीं प्रकार धीर योद्धा
भी थे। उनको यह बात बहुत अलखती रही कि यवना के न
अधीन हैं। पिता के जीवन में ही एक बार उन-हाने दिल्ली कर
भेजना बन्द कर दिया, निसपर मुसलमानों की फौज मिथिला आइ।
द्वैत-दुर्विपाक से शिवसिंह कैद करके दिल्ली के जाये गये। देव
सिंह ने अधीनता स्वीकार कर अपना राज्य तो प्राप्त कर लिया
कि तु पुत्रशोक से क्षीबित रहने लगे। इधर विद्यापति को भी
शिवसिंह के पिता घेन कहाँ? लखिमा की दशा का क्या पूछना?
विद्यापति अपनी जान पर खेलकर शिवसिंह का उद्धार करने पर
तुल गये। कविजी दिल्ली पहुँचे। वहाँ जाकर आना परिचय
दिया। सुल्तान ने हुक्म दिया कि अगर शायर हो, तो कुछ
करामात दिखाओ। विद्यापति ने कहा कि मैं अष्टक का दृष्टान्त
वर्णन कर सकता हूँ। सुल्तान ने एक सद्यस्नाता सुन्दरी का
वर्णन करने को कहा। विद्यापति गाने लगे—

कामिनी करण सनाने ।

हेरितहि हृदय हनए पचवाने । आदि

सुलतानको इसमे भी सतुष्टि नहीं हुई । विद्यापति एक फाँट के सन्दूक में बंद ठिये गये और वह सन्दूक कुर्पे में लटका दिया गया । ऊपर एक सुन्दरी स्त्री अग (फूँकती हुई खड़ी) की गई । तब विद्यापति से कहा गया, कि ऊपर जो कुछ है उसका वर्णन करो । विद्यापति सन्दूक के अन्दर से गाने लगे—

सजनि निहुरि फुकु आगि ।

तोहर कमल भमर मोर देखल

मदन ऊठल जागि ।

जो तौहे मामिनि भवन जण्यह

पचह कोनह बेला ।

जो ए संकट सौं जो बाँचत

होयत लोचन मेला ॥

यादशाह अत्यन्त प्रसन्न हुआ । राजा शिवसिंह ठोड़ दिये गये । तब विद्यापति ने निम्नलिखित पद कहा—

भन विद्यापति चाहयि जे त्रिधि

करयि से से लोला ।

राजा शिवसिंह रूधन मौंचल

तयग सुकवि जोला ॥

राजा शिवसिंह की दासीलता की कहानियाँ अभी तक मिथिला में प्रचलित हैं । इन्होंने अपने पिता का सुलतान कराया था । अतः ही राज्य इन्होंने सुदगने में । प्राचीन कमला नदी

के किनारे लहेरा नामक गाँव में इन्होंने 'धौददीव' नामक एक
तालाब खुदवाया था। फहत है, इन्होंने अपना निवासस्थान
भी बनवाया था। इसका अभावशेष अभी तक पाया जाता है।
मधुबनी से दक्षिण पत्तोक नामक गाँव में इनका खुदवाया हुआ
एक तालाब है, जिसके त्रिपथ में यह कहावत प्रसिद्ध है—

पोखरि रजोखरि और सब पोखरा

राजा शिवसिंह और सब छोकरा ॥

राजा शिवसिंह बहुत दिनों तक युवराज के रूप में कार्य करते
थे, किंतु प्रभा इन्हें ही अपना राजा समझती थी। देवसिंह
तो केवल नाम मात्र का राजा थे। युवराजवस्था में ही वे महाराज
कहे जाते थे, जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है। १७२९३ में देवसिंह
की मृत्यु हुई। ठीक उसी समय दिल्लीशहर ने भी मिथिला पर
चढ़ाई कर दी। दिल्लीशहर के साथ प्रताप के नवाब भी थे।
शिवसिंह के लिये बड़े संकट का समय था। एक ओर पिता का
आज्ञादि कर्म, दूसरी ओर युद्ध का आयोजन। विद्यापति ने प्राकृत
मिश्रित एक पद में शिवसिंह की इस विजय की चर्चा यों की है—
अल रंध कर लपयन नरपद, सक समुह कर अगिनि ससो।
चैत कारि छठि जेठा मिलिओ वार चेहण्य जाहु लसी॥
देवसिंह जू पुहमी छद्मि अस्त्रासन सुरराय सरू।
दुहु सुरतान नीद अय सोअओ तपन हीन जग तिमिर भरू ॥
देखहु ओ पृथिवी के राजा, पौरुस माक पुन्न बालिओ।
सत बले गगा मिलिअ कलेवर देवसिंह सुरपुर चलिओ ॥
एरुदिस सकल जवन बल चलिओ ओकादिस से जमराय चरू

दूधश्री दलटि मनोरथ पुरश्री, गरुश्री दाप सिवसिंह क
सुरनरु कुसुम घालि दिसि पूरिश्री, दुन्दुभिसुन्दरसाद ध
वीर छत्त देखन को कारन सुरगन सते गगन भर
आरम्भिए अन्तेष्टि महामय राजसूत्र असमेध जहाँ
पंडित घर अचार घर धानिज जाचरु काँ घर दान कहा
विज्जाबइ कविउर यह गावण मानय मन आनन्द भश्री
सिंहासन सिवसिंह चइठो, उच्छ्रवै बैरस विसरि गश्री

शिवसिंह न राजगद्दी पर बैठे ही विद्यापति को बिसरी गत
उपहार में दे दिया। रान्यारोहण के तीन ही वर्ष बाद पुन यव
सेना मिथिला पर आ चढ़ी। पहली बार पराजित हान के कार
स्वभावत ही घादनाह ने बड़ी सैयारी की थी। शिवसिंह दूरदर्श
ये, भविष्य समझ गये? किन्तु तौ भी अवीनता स्वीकार करना
उ हें नापस द हुआ। आपने अपनी बिया को विद्यापति के साथ
अपने मित्र राजा पुरादित्य के पाप रत्नापनीली (नपाल ताराई)
भेज दिया। राजा शिवसिंह के मित्र राजा पुरादित्य के विषय में
भी कुछ विशेष बात मालूम हुई हैं। आप द्वाणवार कुल के माह्व
य। आप वड़े ही प्रतापशाली थे और अपने पाहुणल में ससरी-पर
गना जीतकर उसमें अपना राज्य स्थापित किया था। विद्यापति
अपनी छिपनावली में लिखते हैं—

जितया शत्रुकुल तदीय वसुभिर्यनार्थिनस्तपिता
दोदवाजित ससरी जापदे राज्य स्थितिः कारिता ।
समामेऽज्जुन भूपतिर्निहतो बन्धोनृशसायितः ।
नेनेय लिखनावली नृपपुरादित्येन निर्मापिता ॥
२८

शिवसिंह सेना के साथ बादशाह से जा भिड़े । शिवसिंह शाही सेना का ब्यूट भेदकर बादशाह के निकट पहुँच गये और अपनी तलवार से उसका शिरस्त्राण उड़ाते हुए दरबार बाहर निकल भागे । इनकी वीरता पर बादशाह मुग्ध हो गया । यवन-सेना इनके पीछे दौड़ी, तो उसने मना कर दिया । शिवसिंह वहाँ से नेपाल की ओर जंगल में चले गये और वहाँ अपने राज्य में न लौटे । कोई-कोई कहते हैं, वे मारे गये ।

शिवसिंह की मृत्यु (अथवा पलायन) के बाद मालूम होता है विद्यापति बहुत दिना तक छत्रिमा देवीक्षेत्र के साथ रजारावली में ही रहे । क्योंकि यहीं पर २९९ लक्ष्मणाब्द में यहाँ के राजा पुरादित्य के लिये आपने 'छत्रिमावली' लिखी । यही नहीं, ३०९ लक्ष्मणाब्द में आपने हस्तलिखित भागवत की पोथी भी यहीं समाप्त की । 'छत्रिमावली' के बाद आपने शिवसिंह के भाई पद्मसिंह की खी विश्राम देवी के लिये दो ग्रन्थ लिखे । इन दोनों ग्रन्थों में समय नहीं दिये गये हैं । पद्मसिंह के उत्तराधिकारी हरिसिंह के लिये आपने 'विभागसागर' की रचना की थी । उनकी खी धीरमती के लिये 'दान वाक्यावली' लिखी गई थी । जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, इनकी अन्तिम रचना दुर्गा भक्ति तरंगिणी है । यह नर-

• छत्रिमा देवी की विद्वत्ता, चतुरता और प्रत्युत्पन्नमत्तित्व की अनेक जन श्रुतियाँ मिथिला में प्रचलित हैं । किन्ती किमी ऐतिहासिक के मत से उन्होंने शिव सिंह के बाद ६ वर्ष तक राज्य भी किया था । किन्तु स्वयं विद्यापति ने भी यही इसकी ओर इरादा तर्क नहीं किया है । अतः यह बात अप्रामाणिक मालूम होती है—लेखक ।

सिमट्टु सिमट्टु निअ लोचन नीर ।
ककरहु काल न राखथि थीर ॥
विद्यापति सुगतिक प्रस्ताव ।
त्याग के करुना रसक सुभाव ॥

इसमें पता चलता है कि शिवसिंह की मृत्यु के यत्तीस वर्ष बाद विद्यापति ने उन्ह स्वप्न में देखा था । ऐसी प्राचीन धारणा है कि बहुत दिनों पर यदि अपना कोई मृत प्रेम पात्र मलिन 'वेप' में दीख पड़े, तो मृत्यु निकट समझना चाहिये । यही भाव बड़े ही काल्पनिक शब्दा में उपर्युक्त पद में वर्णन किया गया है । शिवसिंह २६६ लक्ष्मणाब्द में मरे थे, अतः ३२८ लक्ष्मणाब्द में विद्यापति ने एक स्वप्न देखा होगा, जो विक्रमीय सवत् १४९२ पड़ता है । यदि हम इस स्वप्न के तीन वर्ष के बाद विद्यापति की मृत्यु मान लें तो ये नव्वे वर्ष की अवस्था में सवत् १४९७ वि० में (या १४४० ईस्वी में) मरे थे । श्री जगन्नाथगुरु ने भी इसी समय का प्रामाणिक माना है ।

उस समय विद्यापति बूढ़े हो चले थे । जन्मभर मृद गार रचना में व्यस्त रहने के कारण अन्तिम समय में ससार के प्रति उन्हें अत्यन्त उदासीनता हो गई थी । उन्ह अपना भविष्य अधिकारमय प्रतीत होता था—निराशा की काली घटा न उनके हृदय-न्याम को भाँगादित कर लिया था । भाष अत्यन्त करुण स्वर ॥ गात हैं—
तातल सैकत चारि बूंद सम, मुत मित रमनि समाज ।
तोहँ विसरि मन ताहि समरपिनु अय मभु हय कान काज ॥

माधव, हम परिनाम निरासा ।

तुह जगतारन दीन दयामय अतए तोहर विसवासा ।
आध जनम हम नौद गमायनु जरा सिसु कत दिन गेला ।
निधुवन रमनि रभसरंग मातनु तोहे भजव कअनो न घेला ॥

आपने अपनी कवितारचना द्वारा प्रचुर सम्पत्ति प्राप्त की थी । वृद्धावस्था में आप इस धन को देख देकर कहते हैं—
जतन जतेरु धन पापे बटोरल मिलि मिलि परिजन खाए
मरनरु बेरि हरि कोइ न पूछए करम संग।चलि जाए
ए हरि बन्दों तुअ पद नाथ ।

तुअ पद परिहरि पाप पयोनित्रि पारक कअनो उपाय
जाउत जनम नहिं तुअ पद सेबिनु जुगती मतिमय मेलि
अमृत तजि त्रिप हलाहल पीअनु सम्पद अपदहिं भेलि ।
विद्यापति अपनी उमर की ओर उद्देश्य कर कहते हैं—

ययस, कतह चल गेला ।

तोह सेउइत जनम यहल, तइयो न ग्रपन भेला ॥

ययस, तुव कहा चले गय । तुम्हें मेवत हुए अपना नाम बित्त
दिया, किन्तु तुम अपने न हुए ।

कहा जाता है, अपना मृत्यु समय निकट आया जान विद्यापति
अपने घर के लोगों से बिदा लेकर गंगा सवन को चले । गंगा-सवन
की प्रथा मिथिला में अद्यावधि प्रचुर रूप से प्रचलित
है । गंगा यात्रा के अवसर पर आपने अपने पुत्र का
पहुत कुछ उपदेश दिया । उससे कहा—वेटा, प्रजार जन कन,
भतिधि मरकार म कभी नहीं चूकना, दूसरे की खो को माता के

तुल्य जानना। पश्चात् विद्यापति अपनी कुछ देवी विश्वेश्वरी के निकट गये। देवी से आपने जाने की अनुमति मागी—कहा, माँ, अब गगा जा रहा हूँ। जन्म भर शिव की आराधना की। अब बिदा दो। घर पर सभी को संतोष दे पालकी पर चढ़कर गगा की ओर चले। राह में जब गगा से कुछ दूर पर ही थे, तो आपने अपनी पालकी रखवा दी। एक अभिमाना भक्त की तरह कहा—मैं इतना दूर से मैया के निकट आया, क्या मैया मेरे लिये दो कोम आगे नहीं चढ़ आती? रात घीठी। दूसरे ही दिन लोग दृश्य देखकर अवाक् रह गये। गगा अपनी धारा छोड़, दो कोम की दूरी पर पहुँच गई थी। अभी तक उस स्थान पर गगा की धारा देखी नजर आती है। उस स्थान का नाम 'मऊ धाजितपुर' है। यह मुजफ्फरपुर जिले में है। यहीं विद्यापति की मृत्यु हुई। इनकी धिता पर एक शिव मन्दिर की स्थापना की गई। यह शिव मन्दिर अभी तक विद्यमान है। विद्यापति की मृत्यु तिथि के विषय में एक पद प्रचलित है—

विद्यापतिक आशु अरसान।

कार्तिक धवल त्रयोदसि जान ॥

इसके अनुसार विद्यापति की मृत्यु कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को हुई। यह तिथि प्रामाणिक समझ पड़ती है। कार्तिक महीना में गगासेवन करने का हिन्दू शास्त्र के अनुसार बड़ा महत्व है। विद्यापति की मृत्यु गगा तट पर हुई थी—जब कि वे गगा-पेवन करने गये थे। अतः, इस तिथि को अप्रामाणिक मानने का कोई कारण नहीं। तुलसीदास के विषय में भी ऐसा ही एक दोहा

प्रसिद्ध है। जब वह दोहा प्रामाणिक माना जाता है, तो कोई कारण नहीं, कि यह पद प्रामाणिक न माना जाय।

विद्यापति का हस्ताक्षर

हिन्दी में ऐसे बहुत ही कम सौभाग्यशाली प्राचीन कवि हैं जिनकी हस्त लिपि प्राप्त होती है। विशेषतः विद्यापति ऐसे प्राचीन कवि की—जो शब्द को छोड़कर सभी प्रसिद्ध हिन्दी कवियों से पहले हुए थे—हस्तलिपि प्राप्त होना, तो हम लोग को किये उदा ही सौभाग्य का विषय है। विद्यापति के हाथ से लिखी हुई उनकी निज रचना, पदावली या संस्कृत पोथियाँ, नहीं पाई जाती। हाँ एक मटीक भागवत की पोथी विद्यापति के हाथ की लिखी हुई अवश्य पाई जाती है। यह पुस्तक दरभंगा में पारस कोम तराणी नामक गाँव में जयनारायण झा की विधवा पत्नी के पास सुरक्षित है। दरभंगा जिले की पण्डितमंडली का पूरा विश्वास है, और अनुसूति से भी यह सिद्ध है कि यह पुस्तक विद्यापति के हाथ से लिखी गई थी। यह पुस्तक ताल पत्र पर लिखी हुई है। प्रत्येक पत्र की लम्बाई दो फुट और चौड़ाई छह इंच तथा चौड़ाई सत्रा दो इंच के लगभग है। पत्र की संख्या ५७६ है। पत्र की दोनों ओर लिखावट है। प्रत्येक पत्र में छ पंक्तियाँ हैं। लिपि स्पष्ट, अक्षर की आकृति बड़ी, प्रत्येक अक्षर अलग अलग और स्पष्ट, विराम और विभाग का चिह्न सबत्र विद्यमान। लिखावट सुन्दर, कहा भी एक अशुद्धि अथवा लिपि दोष नहीं। रोजनाई प्रायः सबत्र स्पष्ट। अन्तिम पत्र

काष्ठ के बटन के घर्पण और बन्धन के कारण जीण होगया है और लिखावट भी अस्पष्ट हो गई है। ग्रन्थ के शेष में लिखा है—

“शुभमस्तु सन्त्रार्थगता सरथा ल० सं० ३०६ ध्यापणशुक्ल १५ कुजे रजात्रनौली ग्रामे श्री विद्यापतिलिपिरियमिति।”

अन्तिम दो अक्षर ‘मिति पत्राश से टिन्न हो गया है। ‘रजात्रनौली’ गाँव दरभंगा से प्राय १५ कोस उत्तर है। शिवसिंह २९३ लक्ष्मणाब्द में राज्यासन पर बैठे थे। उनकी मृत्यु उसके तीसरे साल हुई थी। इस तरह उनकी मृत्यु के तेरह साल बाद की यह पोथी है। मालूम होता है, शिवसिंह की मृत्यु के बाद विद्यापति का जी सामारिक कार्यों से उचट गया था—कम से कम श्रद्धांशु रचनाओं की ओर से। मित्र-वियोग पर ऐसा होना सम्भव भी है। उसी साकाशस्था में अपनी चित्त की शान्ति के लिये विद्यापति ने यह कष्टकर कार्य प्रारम्भ किया हो।

विद्यापति का परिवार

विद्यापति के बेटे का नाम दुरपति था—विद्यापति रचित एक पद में इनका नाम आया है। विद्यापति की एक कन्या भी थी। मिथिला में यह प्रवाद है कि इनकी लड़की का नाम दुलही था। विद्यापति ने कितने पद ऐसे बनाये हैं, जिनमें पति गृह गमन के समय कन्या को उपदेश दिया गया है। उन पदों में दुलही शब्द आया है। कहते हैं, ये पद विद्यापति ने अपनी पुत्री को ही सम्बोधित कर लिखे थे। दुलही का अर्थ नववधू भी होता है। न मालूम क्या रहस्य है? मिथिला के एक वृद्ध ब्राह्मण के घर में एक पद

विद्यापति का

०३०३६६६६

प्राप्त हुआ है, जिसमें सिद्ध होता है कि इनकी लक्ष्मी का नाम दुलही था। अन्तिम काल में विद्यापति कहते हैं—

दुलहि, तोहर कतए छयि माय ।

कहुन ओ आवथु एसन नहाय ॥

‘दुलही तुम्हारी, माँ कहा है, कहो न, वे इस समय स्नान कर आयीं।

दरभंग के वर्तमान राजघराने में नरपति ठाकुर नामक राम हो गये हैं। उनके दरबार में लोचन नामक एक कवि थे। लोचन ने ‘रागतरंगिणी’ नामक एक पुस्तक का संकलन किया था। उसमें उसने विद्यापति के बहुत से पद रखे हैं। ‘रागतरंगिणी’ में एक कविता चन्द्रकला नामक एक रमणी की बनाई हुई पाई जाती है। लोचन ने इस कविता पर टिप्पणी की है—“इति श्री विद्यापतिपुत्रवध्या”। इसमें मालूम होता है, चन्द्रकला विद्यापति की पत्नी थी। यहाँ पर चन्द्रकला की उस कविता को उद्धृत करने का लोभ हम सवरण नहीं कर सकते—

स्निग्ध कुञ्चित कोमल कच गडमंडित कोमलम् ।

अधर विभ्र समान सुन्दर शरदचन्द्र निभाननम् ॥

जय कम्पु कठ विशाल लोचन सारमुज्ज्वल सौरभम् ।

बाहु बलिल मृणाल पंख द्वार शोभित तं शुभम् ॥

शोभय सुन्दरि मन हृदयम् ।

गदगद हास सुदति निपुणम् ॥

उर पौन कठिन विशाल कोमल याति युग्म निरन्तरम् ।

धी पला कमला विचित्र विधातु निमल कुच वरम् ॥

श्यामा सुवेपा त्रिवलिरेखा जघन भार विलम्बिते ।
मत्त गज-कर जघन युगलर गमन गति चरटा-जिते ॥

सुललित म द गमन करई ।

जनि पति संग चरटा भमई ॥

अति रूप यौवन प्रथम सम्भव किं कृथा कथया प्रिये ।
तेजह रूप विमोह परिहर शोक चिन्तित चिन्तये ॥
उपयात मदन-न्याधि दुसह दहए पावक से वनम् ।
पवन दिसे दिसे दहए पावक युग्मदारज सम्बरम् ॥
श्यामा सचन्दिते ।

अति समय गीत सुशोभिते ॥

आत्म दान समान सुन्दरि धार वपति सिञ्चये ।

सिञ्चह सुन्दरि मम हृदयम् ।

अधर सुधा मधु पानमियम् ॥

चन्द्र करि जयदेव मुद्रित मान तज तोहें रात्रिके ।

वचन मम धर कृष्णमनुसर किन्तु काम कला शुभे ॥

चन्द्रकला हे वचन करसी ।

मानिनि माधवमनुसरसी ॥

विद्यापती और पद्मधर मिश्र

पद्मधर मिश्र मिथिला के प्रकाण्ड विद्वान् हा गये हैं । आप
विद्यापति के सहपाठी थे । विद्यापति ने बिसफी गात्र में एक अतिथि
शाला निर्माण कर रखी थी । प्रतिदिन भोजन के पश्चात् स्वयं
विद्यापति अतिथिशाला में जात और अतिथिया से वार्त्तालाप करते ।

प्रवाद है कि एक दिन जब विद्यापति अतिथिशाला में गये तब सभी अतिथि इनकी अम्ययंत्रा में रखे हो गये । कबल कोने में एक अत्यन्त वृद्ध पुरुष बैठा ही रहा । विद्यापति के पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि इन्होंने भोजन नहीं किया है । उस पुरुष की बुद्धि और कृपा पर इनके मुख से सहसा निकल गया—

“प्राघृता घुणवत् कोणे सूक्ष्मस्यान्तोपलक्षित ।”

‘घर के कोने में सूक्ष्म कीट (घुन) वत् अतिथि सूक्ष्म वस्तु नहीं दीख पड़े ।’

यैठे हुए पुरुष ने तुरन्त उस श्लोक की पूर्ति करते हुए उत्तर दिया

“नहि स्थूलधिष पुंस सूक्ष्मे दृष्टि प्रदीयते ॥”

‘स्थूलबुद्धि पुरुष को सूक्ष्म पदार्थ नहीं दीख पड़ता । विद्यापति थोड़ी सुनते ही अपने सहपाठी को पहचान गये । उन्हें भारी पुरक भजने पर मंजूर गये । पक्षधर मिथ सम्भवतः विद्यापति से कुछ छोटे थे । उनका स्वस्त्यलिखित एक त्रिगुपुराण में ३५३ अक्षरों का लिखा हुआ है ।

विद्यापति के प्रति विद्वेष

यह छाया के प्रति उनका अक्षोषपक्षीय वाक्य तब १९५३ ई. में लिखा गया है । विद्यापति के भी कुछ लोग विद्वेष थे । विद्यापति शिरभङ्ग थे । निर की पूजा करते समय, भागवत में, निर प्रकाश नृपति गान गाते, वे जाफन ठक लगाते थे । इस कारण कुछ लोग उन्हें ‘मलक’ नाम से पितार थे । अन्य प्रकार से विद्यापति के एक भारी विद्वेष विद्वन्नी ही तब है ।

नका नाम है केशव मिश्र । इनकी समय ४७३ एहमणान्द है,
थात् विद्यापति के लगभग सौ वर्ष पश्चात् । ये प्रसिद्ध शाक्त थे ।
द्वैत परिशिष्ट नामक स्वरचित ग्रन्थ में इन्होंने देवीभागवत को
आत्मिक ग्रन्थ प्रतिपादित किया है । विद्यापति ने अपने हाथ से
मिमंसाशास्त्र लिखा था, इसलिये ये उनसे चिद से गंध थे । केशव
मिश्र विद्यापति को 'अतिलुप्त नगयाचक' नाम से उपहास
करते थे । विद्यापति ने त्रिपरी गाँव उपहार रूप में ग्रहण किया था-
सी लिये वे 'नगयाचक' थे । द्वेष का कोई ठिकाना है । ये महा-
त्मा शिवसिंह के कुल की दौहित्र सत्तान थे । राजकुमार के पुरप
' । अतएव ऐसी उद्वेगता स्वाभाविक भी है ।

पदावली

यद्यपि विद्यापति ने लगभग एक दजन साकृत ग्रंथों का निर्माण किया था, तथापि उनकी प्रसिद्धि का खास कारण उनकी पदावली है। गाने योग्य छंद 'पद' कहे जाते हैं। विद्यापति ने जितने छन्द बनाये, सभी संगीत के सुर त्य से घँघे हुए हैं। विद्यापति ने कविता में अपना आदर्श जयदेव को माना है—काहें 'अभिनव जयदेव' कहते भी थे। अतः, जयदेव के ही स्तर पर संगीत पूर्ण कोमल वान्त पदावली में श्रुति गारिक रचना करत थे जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, दरभंगा के वर्तमान अधिपति के पूर्वपुरुष नरपति ठाकुर के समय में 'शोबन' नामक एक कवि हो गये हैं। उन्होंने अपनी 'रागतरंगिणी' नामक पुस्तक में लिखा है कि सुमति नामक एक कलाविदु कायस्थ कथक के लड़के को राजा शिवसिंह ने विद्यापति के निकट रख दिया था। विद्यापति पद तैयार करते थे, जयत उमका 'सुर' ठीक करता था—

सुमति सुतोदय जन्मा जयत शिवसिंहदेवन ।

पंडितचर करि शेषर विद्यापतये तु सन्नुस्त ॥

विद्यापति संगीत का मर्म जाने संगीत की रचना नहीं की जा सकती। मालूम होता है, विद्यापति स्वयं भी गान विद्या में पारंगत थे। विद्यापति के पदों में कहीं कहीं छंदोभंग से दोष पड़ता है। सुरदास के पदों में यही बात पाई जाती है। किंतु यथावत ऐसी बात नहीं है। संगीत के सरल्य के अनुसार जो पद बनाये जाते हैं उनमें ध्वनि का ही विचार किया जाता है अंतर भ्रम मात्रा का नहीं। इसीसे संगीत में भारिजित व्यक्तियों को पदों में छंदोभंग का आभास हो जाता है।

पदावली का रूप

विद्यापति ने कितने पद बनाये थे, इसका भी अभी तक पता नहीं चला है। श्री नगान्द्रनाथ गुप्त ने ९४५ पदों का समग्र प्रकाशित किया था। काव्य मञ्जानन्दन सहायजी का समग्र इससे बहुत छोटा है, तथापि उसमें कुछ ऐसे पद हैं, जो नगान्द्रनाथ गुप्त वाले संस्करण में नहीं हैं। सहायजी के नये पदों में नवचारियों की प्रधानता है। किन्तु अभी तक विद्यापति के बहुत से अनूठे पद प्रकाशित ही हैं। मिथिला की स्त्रियाँ जिन पदों का विवाह के अवसर पर गाती हैं उनका, तथा बहुत सी नवचारियों का, अभी पकड़न नहीं हुआ है।

पदावली के प्राचीन संस्करणों को देखने से पता चलता है, कि विद्यापति ने पदों की रचना त्रिपय विभाग के अनुसार नहीं की थी। बिहारी के ही समान विद्यापति भी, जहाँ उभय में आतं प्रेम, रचना कर डालत था। पीछे लोगो ने उन्हें भलग भलग विभाग कर बना लिया।

पदावली की हस्तलिखित पोथियाँ

ये तो विद्यापतिक अधिकांश पद शायद ही हैं और उन्हींका समग्र 'पदकल्पतरु' आदि बैंगला के प्राचीन समग्र ग्रन्थों में है, किन्तु हाल में तीन प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ मिले हैं, जिनमें से विद्यापति के कितने नवीन पद प्राप्त हुए हैं, जो पदावली का प्रामाणिकता का पूरा पता चला है।

उन ग्रन्थों में सबसे प्राचीन और प्रामाणिक तात्पर्य यह लिखी हुई एक पोथी है। यह पोथी में विद्यापति लिखित 'नागवत' के साथ तरांनी ग्राम के स्वर्गीय पंडित छोकनाथ झा के घर में सुरक्षित

पाई गई है। कहा जाता है कि विद्यापति के अपौत्र ने इसे
या। इस पोथी की लिखावट और उसके तालपत्र को देखने
मालूम होता है कि कम से कम तीन सौ वर्षों का यह प्राचीन
छापरवाह से रखने के कारण यह पोथी जीण शीण हो गई
पहला और दूसरा पत्र गायब है। फिर नवाँ नहीं है। इसके
८१ से लेकर ९९ पत्र एकगार ही नहीं है। १०३ नम्बर का
भी गायब है। १३२ पत्र के बाद का कुछ भी अंश नहीं मिलता
सम्पूर्ण पोथी न होने के कारण यह पता नहीं चलता कि यह
लिखी गई, किन्तु इसे लिखा और कुल कितने पद इसमें
हम पोथी में लगभग ३५० पद यचे हुए हैं।

दूसरी पोथी नेपाल में पाई गई है महामहोपाध्याय हरप्रसाद
शास्त्री ने प्रथम प्रथम इसे नेपाल दरबार के पुस्तकालय में रखा
था। यह पोथी बहुत सुरक्षित है। किन्तु इस पोथी की भाषा
नेपाल तराई (मोरँग) की बोली की छाप स्पष्ट दीख पड़ती है
मालूम होता है इसे किसी मोरँग निवासी ने छोगा से मुन
लिखा था जिसमें ऐसी गलती हुई है। इस पोथी में लगभग ३०
पद हैं। तीसरी पोथी है रागनरगिणी। इसकी चर्चा पहले
शुकी है। हम में छोचन ने विद्यापति के बहुत से पद एकत्र
प्रत्येक पद के राग का निगम भी किया है। छंद के नियम
मात्राभा की सहायता भी दी है। राग तरगिणी दाईं सौ वर्ष
प्राचीन पोथी है। छोचन ने लिखा है—अपभ्रंश भाषा की रचना
प्रथम प्रथम विद्यापति ने ही की।

पदावली की भाषा

पदावली की भाषा भी अब तक विवाद प्रस्त रही है। यगल
विद्यापति को वैगला का प्रथम कवि या यगभाषा का प्रवर्तक
४२

। नते हैं। इसी लिये उन्होंने विद्यापति को बंगाली सिद्ध करने की चेष्टा की थी। किन्तु अब तो यह सब प्रकार सिद्ध हो गया कि विद्यापति मैथिल थे। मैथिलों की एक खास बोली है—उसे 'मैथिली' कहते हैं। विद्यापति भी मैथिल थे, अतः मैथिल लोग इन्हें अपनी बोली मैथिली का प्रथम कवि मानते हैं। यथार्थ में यही ठीक है। किन्तु यह मैथिली बोली किस भाषा की शाखा है—यगभाषा को या हिन्दी भाषा की। बाबु नगेन्द्रनाथ गुप्त ने मैथिली या वज्जीली (या हिन्दी) की एक शाखा माना है। गुप्त जी 'प्राचीन विद्या महार्णव' कहे जाते हैं। उनका निर्णय अधिक भूल्य प्रकृता है। हमारी राय भी गुप्तजी से मिलती है। मिथिला रंग देश से लड़ी हुई है—विद्यापति का जन्म दरभंगा में हुआ था, जो 'द्वारवग' या बंगाल का द्वार है—इसलिये मैथिली पर यगभाषा का प्रभाव जरूर पड़ा है। यदि हम कह सकें, तो कह सकते हैं कि मैथिली का शरीर हिन्दी का है, और उसकी पोशाक बंगाल की। जिस प्रकार कोई हिन्दुस्तानी अंगरेजी पोशाक पहनकर अंगरेज नहीं बन जाता, उसी प्रकार मैथिलों हिन्दी को छोड़कर यगभाषा की नहीं हो सकती। हा, यगभाषा के ससंग से इसमें मिठास अवश्य आ गई है।

पदावली की भाषा आज कल की मैथिली से कुछ भिन्न है। यह स्वाभाविक भी है। विद्यापति का हुए पाँच सौ वर्ष हुए। इन पाँच सौ वर्षों में भाषा में अवश्य कुछ न कुछ परिवर्तन होना सम्भव है। कुछ मैथिल महान्याय विद्यापति के पदों की भाषा को तोड़ फोड़कर आज कल की मैथिली बोली से मिश्रण का अनुचित

प्रयत्न करते हैं। किन्तु नया व समझने की चेष्टा करेंगे, बिना ठाँके वे विद्यापति की सर्गाव्य भाषा को कितना फट पहुँचा रहे हैं।
विद्यापति की भाषा का दुदशा भी तब हुई है। बंगाल के उमे ठेठ गंगा रूप दे दिया है, मोरंग वालों ने मोरंग का चढ़ाया है यादु ब्रजनन्दन महाय जी ने उसरर भोजपुरी की चढ़ाई की है और आज कल के मैथिल उमपर आधुनिक मैथिली रौगन चढ़ा रहे हैं। भगवान विद्यापति की कोमलकान्त पराधीनता की रक्षा करें।

पदावली की विशेषता

विद्यापति की पदावली अपना खाम स्वरूप, अपना खास रस रखती है। वह कहीं भी रहे, आप उसे कितने की कविताओं छिपाकर रखिये वह स्वयं चित्तवा उठेगी—मैं हिन्दीकोकिल काकली हूँ। जिस प्रकार हजारों पक्षियाँ के कण्ठों को चारों ओर, कोकिल की काकली, आकाश पाताल को रसझावित करती अलग से अलग अपना स्वतन्त्र अस्तित्व प्रकट करती है, उसी प्रकार विद्यापति की कविता भी अपना परिचय आप देती है। बंगाल के यहाँ हर जिले में उसतराय नामक एक कवि हो गये हैं विद्यापति के पदावली का प्रचार देखकर आपने भी विद्यापति के नाम से कविता फल प्रारम्भ कर दिया था। किन्तु वे अपनी कविताय विद्यापति की कविता से नहीं खपा सके। विद्यापति की भाषा उनकी खास अरर भाषा है, उनकी वणनप्रणाली उनकी खास वणनप्रणाली है, उनका भाव स्वयं उनका है। उनकी पदावली पर 'खास' की मुहर लगी हुई है। बंगाल के सैकड़ों कवियों ने इनके अनुकरण पर कविताय की, किन्तु कोई भी इनकी छाया न छू सके।

विद्यापति एक अजीब कवि हो गये हैं। राजा की गान चुम्बी शलिका से लेकर गरीबा की टूटी हुई फूँफ की शोपड़ी तक मे उनके हो का आदर है। भूतनाथ के मन्दिर और 'कोहर घर' में इनके हो का समान रूप से सम्मान है। काई मिथिला में जाकर तमाशा ले। एक शिवपुजारी डमरु हाथ में लिये त्रिपुण्ड्र चढ़ाये, जिस फार "कछन हरष दुख मोर है भोलानाथ" गाते गाते तन्मय हो न अपने आप को भूल जाता है, उसी प्रकार फलफली कामिनियाँ यवधू को कोहर मे ले जाती हुई "सुन्दरि चललिहुँ पहु घर ना, गइतहि लागु परम डर ना" गाकर नव-नयु के हृदय को एक नयक आनन्द स्रोत में डुबो देती हैं। जिस प्रकार नवयुवक 'सतन-मरस खसु अम्बर रे देखलि धनि देह' पढ़ता हुआ एक मधुर कल्पना से रोमांचित हो जाता है, उसी प्रकार एक वृद्ध 'तातल तैकत बारिबुन्द सम सुत मित रमनि समाज, तोहे बिसारि मन तोहि तमरपिलु अर मधु हय कौन फाज, माधव, हम परिनाम निरासा गाता हुआ अपने नयना से शत शत अभ्रवृंद गिराने लगता है। विद्वद्वर प्रियसंन का यह कहना कितना सत्य है—

Even when the sun of Hindu religion is set, when belief and faith in Krishna, and in that medicine of 'disease of existence' the hymns of Krishna's love, are extinct, still the love borne for songs of Vidyapati in which he tells of Krishna & Radha will never diminished

डाक्टर प्रियसंन के कथन का प्रमाण बंगाल में जाकर देखिये।

सहस्र सहस्र हिन्दू आज तक विद्यापति के साधारण विपरीत पदों का कीर्तन करते हुए अपने आपको विस्मरण कर देते हैं—
एक जगह पुनः आप लिखते हैं—

The glowing stanzas of Vidyapati are read by the devout Hindu with a little of the best part of the human sensuousness as the songs of the Solomon by the Christian priests

विद्यापति की उपमाय अनूठी और भट्टती है, उनकी जयमल कवना का उत्कृष्ट विकास के उदाहरण हैं, रूपक का इन्होंने खूब कर दिया है। स्वभावोक्ति से इनकी सारी रचनाएँ आश्रित हैं, श्रुत्यानुमाय इनके पदों का स्वाभाविक आभूषण है, प्रायः काव्यगुण प्रसाद और माधुर्य इनके पद पद से टपकते हैं, प्रकृति वर्णन में तो इन्होंने कमाल किया है—इनका वसंत और पावस काव्य का वर्णन पढ़कर मग्न मुग्ध हो जाना पड़ता है। इनके वसंत और पावस में मिथिला का रस छाप है। वसंत के समय मिथिला की शय्यश्यामला मही जिस प्रकार अलकृत और आभूषित हो जाती है, वह दर्शनीय है। पावस में, हिमालय निकट होने के कारण, यहाँ बिजलियाँ बड़ी जोर से कड़कती हैं—प्रायः कुडिमान होता है। विद्यापति ने इसका यथा ही अपूर्व वर्णन किया है। विद्यापति का मिलन और विरह का वर्णन भी देखने योग्य है। हिन्दी कविता ने विरह के नाम पर, हाय-हाय का ही चउदर बढाया है—उनके विरह-वर्णन में, घनआनन्द आदि दो चार को छोड़कर हृदय वेदना का सूक्ष्म विश्लेषण प्रायः नहीं देखा जाता। विद्या

पति का विरह-वर्णन प्रेमिका के हृदय की तस्वीर है—उपमें वेदना है, व्याकुलता है, प्रियतम के प्रति तन्वीनता है। कोरी हाम हाय वहाँ है नहीं।

उपसंहार

‘विद्यापति’ नाम से हम एक समालोचनात्मक ग्रन्थ दीर्घ छिलने का विचार कर रहे हैं। उसमें विद्यापति की कविताओं की तुलनात्मक समालोचना रहेगी—विशेषतः हिन्दी के सुप्रसिद्ध गारिक कवियों की रचनाओं से विद्यापति की पदावली की तुलना की जायगी। इस समय हम अपनी यह कुछ सवा राष्ट्र-भाषा के प्रेमियों के निकट उपस्थित करत हुए विनम्र शब्दा में प्रार्थना करने हैं, कि जिस कविता की माधुरी पर मुग्ध होकर महामनु चैतन्यदेव गात-गाते मूर्च्छित हो जाते थे, जिस कविता की लूबिया पर विदेशी विद्वान् अभिसर्जन छोट पोट थे, जिस कविता के आधार पर मैथिली बोली आज कलकत्ता विश्वविद्यालय में यह स्थान प्राप्त कर सकी है, जिस स्थान की प्राप्ति के लिये, हिन्दी भाषी प्रान्तों के विश्वविद्यालय में ही, माँ हिन्दी तप रही है, हिन्दी के जयदेव, मैथिल-कोकिल विद्यापति की उस कविता को—
इस कोमल-कान्त-पदावली को—आप उपेक्षा की दृष्टि से न देखिये। हिन्दी में क्या नहीं है—सूर्य हैं चन्द्र हैं, तारे हैं, एक हीन ‘नभ मण्डल’ भी प्राप्त हुए हैं, किन्तु आपका काव्योद्योग आज काकिल विहीन है—नहीं नहीं कोकिल है अश्य, किन्तु आप अभी तक अनजाने उसे भूल चुके हैं। अहा हा ! सुनिये, सुनिये, उस कोकिल की वह काकली ! दलिये काव्य उद्यान का स्मन्त प्रभात ॥



विद्यापति की पदावली

(सटिप्पण)



वन्दना

(१)

नन्द क नन्दन कदम्ब क तर-तर
 , धिरे धिरे मुरलि बजाव ।
 समय सँकेत-निकेतन बइसल
 बरि बरि बोलि पठाव ॥२॥
 सामरि, तोरा लागि
 अनुखन बिकल मुरारि ॥३॥

- १-नन्द क नन्दन=नन्द के बेटे, धीकृष्ण । तर=तले, नीचे ।
 २-सँकेत निकेतन=मिलने का निर्दिष्ट स्थान । बइसल=बैठे हुए ।
 बरि बरि=बार बार । (सन्नेव स्थान में बैठ कर मिलन का समय
 आया जान) बार बार मुला रहे हैं (बरसी में पुकार रहे हैं)—
 नामसमेतम् कुत्रसकेतम् वादयते मृदुवेषुम्”—गीतगोविन्द ।
 ३-सामरि=वयामा, सुन्दरी,— शीते सुखोष्णसर्वांगी धीमे च
 सुखरीणला । वत्सवान्धन-वर्णाभा सा स्त्री श्यामेति कथ्यते ॥’
 तोरा लागि=तुम्हारे वास्ते । अनुखन=प्रतिघण ।

जमुना क तिर उपवन उदवेगल
 फिरि फिरि ततहि निहारि ।
 गोरस बेंचण श्रवइत जाइत
 जनि जनि पुछ वनमारि ॥५॥
 तौहे मतिमान, सुमति, मधुसूदन
 बचन सुनह किछु मोरा ।
 भनइ विद्यापति सुन घरजौवति
 बन्दह नन्द किसोरा ॥७॥

४-५ तिर=तट । उदवेगल=उद्विग्न हुआ, व्याकुल । ततहि=उसी तरफ । जनि जनि=प्रत्येक स्त्री से (पुल्लिग जन स्त्री० जनि)
 यमुना के किनारे उपवन में (भ्रमण करते हुए) व्याकुल होकर
 पुन पुन उसी ओर (तुम्हारे आगमन पथ की ओर) दखते हैं
 और दूध दही बेचने की आने-जाने वाली प्रत्येक रमणी से वनमाल
 श्रावण (तुम्हारे विषय में) पूछते हैं । ६-मतिमान=अनुरक्त ।
 हे सुमति । मेरी कुछ बातें सुनो मधुसूदन तुमपर अनुरक्त हैं ।
 ७-भनइ=बहते हैं । जौवति=बुधता । बन्दह=बदना करा ।



हे सुखी रस-मिद बनि बदनीय जग माँहि ।
 जिनके मुनस-सरीर बहैं जरा मरन भय नाँहि ॥''

(२)

(राधा की वन्दना)

देख देख राधा रूप अपार ।
अपुरुष के विहि आनि मिलाओल
सिति-तल लावनि सार ॥२॥
अगहि अग अनंग मुखायत
हेरण पटण अधीर ।
मनमथ कोटि-मथन कर जे जन
से हेरि महि-मधि गीर ॥४॥
कत कत लखिमी चरन-तल नेओछए
रंगिनि हेरि विभोरि ।
करु अभिलाष मनहि पदपंकज
अहोनिशि कोर अगोरि ॥६॥

२-अपुरुष=अपूर्व । विहि=विधि, मन्त्र । आनि मिला-
ओल=(भू पर) ला मिलाया रच दिखाया । सिति=चिति पृथ्वी ।
लावनि=लावण्य । ३-अनंग=समदव । हेरण=दखकर । अधीर=अस्थिर,
चंचल । ४ मनमथ=समदव । मधि=मे । जो बरोड़ों वामदेव का (अपन
सौदार्य स) मथन करते हैं (वह श्रीकृष्ण भी) जिसे देखकर (मूर्च्छित
हो पृथ्वी पर गिर पड़े हैं । ५-लखिमी=वदमी । नेओछए=न्यौछावर
करते हैं । रंगिनि=सुन्दरी । विभोरि=बेसुध होकर । ६-अहोनिशि=अहर्निश,
दिन रात । कोर=जोद । अगोरि=(मैमिलो) कत पूर्वकर रखना । ६-मन
में अभिलाषा होना है कि इस पद-कमल का रात दिन गोदी में अगोर कर' रखे ।

(३)
(देवी-वदना)

जय जय भैरवि असुर-भयाउनि
पसुपति भामिनि माया ।
सहज सुमति वरदिअओ गोसाउनि
अनुगति गति तुअ पाया ॥२॥
वासर-रेनि सवासन सोभित
चरन, चन्द्रमनि चूडा ।
कतओक दैत्य मारि मुंह मेलल,
कतओ उगिल कैल कूडा ॥४॥
सामर चरन, नयन अनुरजित,
जलद जोग फुल कोका ।
कट कट विकट ओठ-पुट पाँडरि
लिधुर-फेन उठ फोका ॥६॥
घन घन घनए धुधुर कत बाजए,
हन हन कर तुअ काता ।
विद्यापति कवि तुअ पद सेधक,
पुन विसर जनि माता ॥८॥

- २—दिअओ=दा । गोसाउनि=गोखामिनी । पाया=पैर ।
३—वासर=दिन । रेनि=रगत । सवासन=सवासन=मुर्दे पर आसन ।
चन्द्रमनि = चन्द्रान्तमणि । चूडा = सिर । ४—कतओक = बिनना ही ।
मेलल = रखा । कूल कैल=चूर चूर कर दिया । अनुरजित=रंगा हुआ
लाल । जलद जोग फुल कोका=बादल में कमल फूले हों । पाँडरि=एक लाल
फूल । फोका=पुड़पुड़ । ७ काता=जता, कटार ।

वयःसन्धि



(४)

सेसत्र जौवन दुहु मिलि गेल ।

स्रजन क पथ दुहु लोचन लेल ॥२॥

वचन क चातुरि लहु लहु हाम ।

घरनिये चाद कपल परगास ॥३॥

मुकुर लई अच करई सिंगार ।

सखि प्रछइ फइसे सुरत विहार ॥६॥

निरजन उरज हेरइ कत वेरि ।

हसइ से अपन पयोधर हेरि ॥८॥

पहिल बदरि-सम पुन नगरग ।

दिन दिन अनंगअगोरल अग ॥१०॥

माधव पेखल अपुरुष धाला ।

सैसव जौवन दुहु एक भेला ॥१२॥

विद्यापति कह तुहु अगेआनि ।

दुहु एक जोग हइ के कह सयानि ॥१४॥

१—सैमव=शिमुता, बचपन । जौवन=जवानी । २—दोनों भासों ने बानों की राह पकड़ी=बगल करना प्रारम्भ किया । ३—लहु=लघु, मन्द । हाम=हैंसी । ४—परगाम=प्रकाश । ५—मुकुर=भाइना । ६—सुरत विहार=काम-मोटा । ७—निरजन=एकान्त में । उरज=पयोधर=मन । हेरइ=देखती है । ८—सिमत किनिदक सरलतरला दृष्टिविभव । परिस्पन्दो वाचमपि नवविलामोक्तिसरम । गतीना भारम्भ विमलकिन्तलापरिकर । स्थित्यास्ताम्य किमिद न क्षिरम्य मृगदृश ॥” ९—बदरि=बैर का पत्र । नगरग=नारंगी, नींद ।

(६)

सैसव जौवन दरसन भेल ।

दुहु पथ हेरइत मनसिज गेल ॥२॥

मदन क भाव पहिल परचार ।

भिन जन देल भिन्न अधिकार ॥३॥

कटि क गोरव पाओल नितम्ब ।

एक क खोन अओक अवलम्ब ॥४॥

प्रगट हास अय गोपत भेल ।

उरज प्रगट अय तन्हिक लेल ॥५॥

चरन दपल गति लोचन पाव ।

लोचन क धैरज पदतल जाव ॥६॥

नव कविसेखर कि कहइत पार ।

भिन भिन राज भिन्न बेवहार ॥७॥

२—मनमिज=वाम । दोनों की राह में देखते हुए कामदेव ने (गला के शरीर में) गमन किया । ३—पहिल परचार=प्रथम प्रचारित हुआ । ४—कटि क=कमर का । गोरव=गुरुता । नितम्ब=छूत । ५—खोन=छाँछ, पतला । अओक=अन्य का=दूसरे का । ७, ८—गोपत=गुप्त । तन्हिक=उमका । प्रगट हँसी अब गुप्त हुई और उसकी प्रगटता अब कुछों से ले ली । ९—धैरज=धीरता । 'काव्यप्रकाश' में कहा है—श्रीखीवधस्यवति तनुतां सेवने मध्यमाय । पदभ्यां मुक्तास्तरलग्नय स्रितालोचनाभ्याम् ॥ वक्ष प्राप्ता कुच सचिवतामद्वितीयन्तु वक्त्र । तदुगानाया गुणविनिमय कल्पिता यौवनेन । ११—नव कविसेखर=विद्यापति का उपनाम ।

(७)

किछु किछु उतपति अकुर मेल ।

चरन चपल-गति लोचन लेल ॥२॥

अब सब दान र आंचर हात ।

लाजे सखिगन न पुछए बात ॥४॥

कि कहव माधव वयस क सधि ।

हेरइत मनसिज मन रहु वधि ॥६॥

तइअओ काम हृदय अनुपाम ।

रोपल घट ऊचल कए ठाम ॥८॥

सुनइत रस कथा थापय चीत ।

जइसे कुरंगिनी सुनए संगीत ॥१०॥

सैसव जौयन उपजल बाद ।

फेओ न मानए जय अवसाद ॥१२॥

विद्यापति कौतुक बलिहारि ।

सैसव से तनु छोडनहि पारि ॥१४॥

अकुर=कुछों के अंकुरे । ३ गन=छण । हात=हाथ ।
 ४ ६ माधव ! वयस क (की बातें) क्या कहूँ, देखते ही पानमेव क
 मन भी बँध गया । ७ = तथापि (बन्दी होने पर भी) काम ने ऊँच
 अनुपम हृदय पर घट स्थापित कर उस स्थान को ऊँचा कर दिया ।
 ८ थापय=स्थापित करती है । १०—कुरंगिनी=हरिणी । ११—
 उपजल बाद=होइ मची । १२—कओ=काम । अवसाद=परान्नय । १४—
 शरीर को उमका शरीर छोड़ना ही पड़ेगा ।

(८)

पहिल बर्दार कुच पुन नररंग ।

दिन दिन चाढ्य पिडण अनंग ॥ २ ॥

से पुन भण गेल बीज क पोर ।

अर कुच बाढल सिरिफल जोर ॥ ४ ॥

माधव पेखल रमनि सधान ।

घाटहि भेटल करत सिनान ॥ ६ ॥

तनसुक सुबसन हिरदय लागि ।

जे पुरख देणव तेकर भाणि ॥ ८ ॥

उर हिलोलित चाँचर केस ।

चामर भाँपल कनक महेस ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति सुनह मुरारि ।

सुपुण्य बिलसण से बरनारि ॥ १२ ॥

१—बरि=बैर (फल) । नररंग=नारंगी । २—पिडण=पीड़ा देता है । ३—बीजव पार=बीजपूर बड़ा नीबू, जैसे बीज क्रमशः बढ़ने बढते पार (कुछ ही मुगई नीर गाँठ) बनता है उमीतरह कुच भी दूर और मोट हो चल । ४—सिरिफल = शोषण, बल । १-४ एवं ससृज स्मारक है—उद्भेद प्रनिपक्षककारी भाव समता क्रमान् । पुन्यागतिमाप्य पूरापदीमा म्प्रतिव्वत्रियम् ॥ लम्बा ताल पलोपमां च ललितामामाच भूयोधुना । चचत् पाननुभजम्भनमिमाव्या स्वनौ विभ्रत ॥ ५—पेखल=पेखा । सिनान=रनान । तनसुक=एक प्रकार का महीन वेषा । हिलोलित=भूलता हुआ । मौर=रचन । १ १०—हृदय पर आभरी में बने हुए बाल टोल रहे हैं माना माने के महत्वे वा गौर में एक निया हा । १२—बिलमण=बिलाम को ।

(६)

रने खन नयन कोन अनुसरई ।

रने रन वसन धूलि तनु भरई ॥२॥

रने रन दसन-छटा छुटहास ।

रने रन अघर आगे गहु दास ॥३॥

चउँ कि चलए रने खन चलु मन्द ।

मनमथ पाठ पहिल अनुग्रन्ध ॥६॥

हिरदय मुकुल हेरि हेरि थार ।

रने आँवर दए रने होय भोर ॥८॥

घाला सैसन तारन भेट ।

लखए न पारिअ जेठ कनेठ ॥१०॥

विद्यापति कह सुन घर कान ।

तरनिम सैसव चिन्हह न जान ॥१२॥

१—रने रन=घण घण । घण घण में आस बाण ।
 अनुमरण करती है—कटाव करती है । २—घण घण में अलख
 बल (अचल) (धूलि में गिरकर) शरीर का धूलि से भ
 है । ३—दसन=दो । दास=हँसी । ४—अघर=होंठ । आगे=बल
 ६—अनुग्रन्ध=भूमिका । ७—हिरदय-मुकुल=हृदय की कल
 कुच । ८—भोर=भूल जाना । ९—१०—तारन=तरनारि नवनी ।
 कनेठ=पनिष्ठ=धाय । घाला के शरीर में बचपन और जवन
 की भेट दुई है—मुकाबला हुआ है । इन दोनों में कौन बड़ा है
 शौन धाय (कौन निबल और कौन सबल) है, यह जान नहीं पड़ता ।
 ११—कान=काह कृष्ण । तरनिम=जवानी ।



(१०)

पीन पयोधर दूचरि गता ।

मेरु उपजल कनक-लता ॥२॥

एकान्दुए कान्हु तोरि दोहाई ।

अति अपूरुव देखलि सार्ई ॥४॥

मुख मनोहर अधर रंगे ।

फूललि मधुरी कमल सगे ॥६॥

लोचन-जुगल भृग अकारे ।

मधु क मातल उडय न पारे ॥८॥

भउँह क कथा पूछह जन् ।

मदन जोडल काजर-धनू ॥१०॥

भन विद्यापति दृति थवने ।

एत सुनि कान्हु कएल गमने ॥१२॥

१—२ पीन=पुष्ट । पयोधर=बुच । गता=गात शरीर ।
मेरु=सुमेरु पर्वत । दुबल शरीर में पुष्ट बुच है माना साने की लता
(दह) में सुमेरु पर्वत (कुत्र) उत्पन्न हुआ हो । ४—अपूरुव=
अपूर्व । सार्ई=उमे । ५—६ अधर=भाँछ । रंगे=रंगे हुए लाल ।
मधुरी=एक तरह का सुन्दर लाल फूल जो मिथिला में विशेष होता
है । सुन्दर मुख पर रंगीन (लाल) अधर है मानो कमल के फूल
के साथ मधुरी फूली हो । ७—८ भृग=भारा । मधु ■ मातल=मधु
पीकर मस्त बना (उम मुख कमल में) दोनों लोचन भारे के समान
हैं जो (मुख-कमल का) मधु पीकर मस्त होनेसे उड़ नहीं सकते ।

लोल कपोल ललित मनि-नु डल
 अधर बिम्ब अध जाई ।
 भौह भ्रमर, नासापुट सुन्दर
 से देखि कीर लजाई ॥८॥
 भनइ विद्यापति से घर नागरि
 आन न पावए कोइ ।
 कसदलन नारायन सुन्दर
 तसु रंगिनी पए होइ ॥१०॥

(मुक्ता की) माला उरभी हुई है मानों, सुमेरु पर्वत पर
 चन्द्रमा का छोड़ कर (क्योंकि केश कपी अधिकार भी है।)
 सब तारे मितमर उगे हों । ७—लोल=चंचल । कपोल=गाल ।
 अधर=आँख । बिम्ब=बिम्बफल (लाल होता है) अध=अध
 नीचे । अधरबिम्ब अध जाई=आँख की लालिमा देख बिम्बफल
 नीचे जाता है—हीन मालूम होता है । ८—भ्रमर=भारा । भाह
 भ्रमर=भाह भ्रमर के समान, काला है । नासापुट=नाक ।
 कीर=मुग्गा । १०—कसदलन नारायण=(१) मिथिला के राजा
 (२) श्रीकृष्ण । तसु=उसका । रंगिनी=स्त्री ।

“इस्क को दिल में दे जगह ‘अकबर’
 इलम से शायरी नहीं आनी ।”

(१२)

माधव, की कहव सुन्दरि रूपे ।
कनेक जतन विहि आनि समारल
देखल नयन सरूपे ॥ २ ॥
पल्लव राज चरन जुग सोभित
गति गजराज क भाने
कनक रुदलि पर सिंह समारल
तापर मेर समाने ॥ ४ ॥
मेर उपर दुइ कमल फुलायल
नाल बिना रचि पाई ।
मनि-भय हार धार बहु सुरसरि
तओ नहि कमल सुपाई ॥ ६ ॥

(नोट—‘अद्भुत एक अनूपम भाग’ शीपक सुरदाम एक प्रसिद्ध पद्य है । साहित्य-समार में उसकी बड़ी प्रशंसा है । सुरदाम से छेद-सी वष पहले रची गई यह कविता पढ़कर, शायद विद्यापति की प्रतिभा का अन्दाजा लगावे !)

१—की=क्या । २—विहि=विधि ब्रह्म । सरूपे=मत्स्य प्रत्यक्ष ।
३—पल्लवराज=कमल । ४—कनक-रुदलि=सोने के कले ब
धम्म (जाँघ की उपमा) । सिंह=(कृषि की उपमा) । मेर=मैदा
(उमड़ी हुई छाती) । ५—दुइ-कमल=दो कमल (दू
पुच) । नाल=नी । रचि=शोभा । ६—(कुचों पर) मणि-भय
रूपी गंगा की धारा बह रही है तो भी—उसके प्रसर सत
भी—(दोनों कुच रूपी) वरम नहीं मुरमाने (वैसा आशय है ।)

अधर बिम्ब सन, दसन टाडिम बिजु
 रवि ससि उगधिक पासे ।
 राहु दूर वस निधरो न आवधि
 तें नहि करयि गरासे ॥८॥
 सारंग नयन घयन पुनि सारंग
 सारंग तसु समधाने ।
 सारंग उपर उगल दस सारंग
 केलि करयि मधुपाने ॥१०॥
 भनइ त्रिधापनि सुन घर जौवति
 पहन जगत नहि आने ।
 राना सिधसिध रूपनरापन—
 लखिमा देइ पति भाते ॥१२॥

७-अधर=भोष्ठ । बिम्ब=बिम्बपत्र । सन=जेसा । दसन=दस । टाडिम=भनार । बिजु=बीज, दाना रनि । ससि उगधिक पासे=सूर्य चन्द्र एक साथ लगे हैं (चंद्रमा जेसे मुख में बाल सूय-सा लाल सिंदूर है) । ८-राहु= (केरा की उपमा) । निधरो=निकट । ९-सारंग= (१) हरिण । सारंग= (२) जौवल । सारंग= (३) वामदेव । सारंग मनु समधाने=उसके सधान में-कटाघ में-वाम (बसता) है । १०-सारंग= (४) कमल (ललाट) । दस= (महा बहुवाची) । सारंग= (५) भार (केरा के लगे हुए गुच्छे) । मधुपान=रस पीकर । (मुखरूपी) कमल पर भौरे (हरी लगे लटकी) है या भार मधुपान कर केलि कर रहे है । पहन=जेसा । आने=दूसरा ।

(१३)

जुगल सैल-सिम हिमकर देखल
 एक कमल दुइ जोति रे ॥ १ ॥
 फुललि मधुरि फुल सिंदुर लोटाएल
 पांति बइसलि गज मोति रे ।
 आज देखल जत के पतिआपत
 अपुरय गिहि निरमान रे ॥ ३ ॥
 × × × ×
 निपरित कनक रुदलि तर सोमित
 थल पकज के रूप रे ।
 तथहु मनोहर बाजन बाजए
 जनि जागे मनसिज भूप रे ॥ ५ ॥
 भनइ विद्यापति पुरय पुन तह
 एसनि भजए रसमन्त रे ।
 बुभए सकल रस नृप सिवसिंघ
 लखिमा दइ कर कत रे ॥ ७ ॥

१-जुगल सैल=दो पहाड़ (कुचों की उपमा) सिम=मीमा में
 निश्चय । हिमकर=बद्रमा (मुख की उपमा) । कमल=(मुख की उपमा) ।
 दुइ जोति=दो ज्योनियाँ (दो आँखें) । २-मधुरि फुल=एक तरह का तन
 फूल । फुली दुई मधुरी (फूल) सिंदुर पर लोटाया है । और, दाँत बर
 है गनमुखाओं की पक्ति बैठी है । ४-निपरित=उलट । कनक-कनि
 (जाय की उपमा) थल पकज=स्थल-कमल (पैर की उपमा) । ५-बाज
 बहो गी । मनसिज=हृमदव । ६-पुन=पुन्य । ऐसनि=ऐसी । रसम
 रसनी सुरमिरा ।

(१४)

चाँद सार लण मुण घटना कर
लोचन चकित चकोरे ।

अमिय धोय आँचर धनि पोछलि
दह दिसि भेल उँजोरे ॥ २ ॥

कामिनि कोने गढ़ली ।

रूप सरूप मोयँ कहइत असंभव
लोचन लागि रहली ॥ ४ ॥

गुर नितम्य भरे चलण न पारण
माक-पानि सोनि निमाई ।

भागि जाइत मनसिज धरि राखलि
त्रियलि लता अरुभाइ ॥ ६ ॥

भनइ बिद्यापति अद्भुत कौतुक
इ सय घचन सरूपे ।

रूपनरायन ई रस जानयि
सिधसिख मिथिला भूपे ॥ ८ ॥

१-२ चन्द्रमा का मार भाग लेकर (बिषाता ने रोधा के) मुख
की रचना की (जिसे देखते हैं) चकोर की आँखें चकित हुई । बाला ने
(अपने मुख चंद्र को) अचानक से पोंछ कर जो अमृत धो बहाया वही
(चौदनी के रूप में) दमो दिशा में प्रसारित हुआ । ३-कोने-विमने ।
गढ़ली=गढ़ा रचा । ४-भरे=भार से । माक पानि=मध्य भाग में (कटि) ।
सोनि=धीरे, पतली । निमाई=निमाण की । ६-त्रिवली=पेट में पड़ी
नीन रेखाएँ ।

(१५)

सुधामुगि के विहि निरमिल धाला ।

अपरुष रूप मनोभव मंगल

त्रिभुवन विजयी माला ॥ २ ॥

सुन्दर उदन चार अरु लोचन

काजर रंजित मेला ।

कनक-कमल भाक काल भुजगिनी

स्त्रीयुत रंजन खेला ॥ ४ ॥

नाभि चिर सयँ लोम लतावलि

भुजगि निस्तास दियासा ।

नासा-रगपति चंचु भरम भय

पुच गिरि संधि नियासा ॥ ६ ॥

१—वे विहि = विम विधाता न । निरमिल = निर्माप कि

२—मनाभव मंगल = कामधेय वा शुभ स्वरूप—“मनाभव मंगल कय
महादरे —गीतगाविन्द । त्रिभुवन विजयी माला = तान भुवन को पराजित
करने वाली माला क ममान । ३—४ उदन = मुख । मेला = हुआ
माभ=मध्य में । स्त्रीयुत=सुन्दर । सुन्दर मुख में सुन्दर काजल लगी आ
है, मानों, माने के कमल (मुख) में कान-सर्पिणी (अंजन) की
कर रही हो । अथवा मानों बाल भुजगिनी रूपी आये कनक कमलरूपी मुख
के बीच सुन्दर (स्त्रीयुत) खजन की तरह खेल रही है । ५—६
निवा=बिल छंद । सयँ=मे । लोम-लतावली=चरा-रूपी लताव
पक्तिवद्ध बाल । भुजगि=सर्पिली । निमास=माम । रगपति=गरुड
चंचु=नीच । नाभी रूपी विज से पक्तिवद्ध बाल रूपी सर्पिणी (नाभि

तिन वान मदन तेजल तिन भुवने
 श्रवधि रहल दओ बाने ।
 चिधि बड दारन बधए रसिकजन
 सौपल तोहर नयाने ॥ ८ ॥
 भनइ विद्यापति सुन घर जौबति
 इह रस फेओ पए जाने ।
 राजा सिचसिध रूपनरायन
 लखिमा देइ रमाने ॥ १० ॥

की सुगधिन) माँनों की प्यास में (आग बनी), किन्तु नुकीली नाक की
 गरइ की चौंच समझ कर, घर से कुछ रूपी (दो) पवनों के बीच के
 (मकीण) मिलन-स्थान में आ बसो । ७-८ तिन=तीन । तेजल=छोड़ा ।
 अवधि=अवशिष्ट बाकी । रहल=रहा । दओ=दो । बधए=बधने को, हत्या
 करने को । तोहर=तुम्हारे । नयान=आँखें । (कामदेव को पचबाण
 कहते हैं, सो) मदन ने अपने (पांच बाणों में से) तीन बाण तो तीन
 लोकों में छोड़े रोप उमरें दो बाण रह गये । मद्धा बहा ही निष्ठुर है,
 (वन बचे हुए दो बाणों को) रसिकों की हत्या करने के लिये तुम्हारे
 नयनों का मौप दिया । ९-१० इह रस कओ पए जाने=यह रस काइ-कोइ ही
 जानता है । देइ=देवी । रमाने=रमण पति ।



“हृदय-मिथु मति सीप समाना । स्वाती सारद बहहिं मुगाना ।
 जो बरसै बर बारि-विचार । होहिं बनि-विनामनि चार ॥

(१६)

जाइत देखलि पथ नागरि सजनि गे
 आगरि सुबुधि सेयानि ।
 कनक लता सनि सुन्दर सजनि गे
 बिहि निरमाओल आनि ॥ २ ॥
 हस्ति गमन जकाँ चलइत सजनि गे
 देखइत राज कुमारि ।
 जिनकर एहनि सोहागिनि सजनि गे
 पाओल पदारथ चारि ॥ ४ ॥
 नील बसन तन घेरल सजनि गे
 सिर लेल चिचुर संभारि ।
 तापर भमरा बिषय रस सजनि गे
 बइसल पाँखि पसारि ॥ ६ ॥
 केहरि सम कटि-गुन अछि सजनि गे
 लोचन अम्बुज धारि ।
 विद्यापति कवि गाओल सजनि गे
 गुन पाओल अवधारि ॥ ८ ॥

-
- १—नागरि=नगर निवासिनी सुचतुरा । आगरि=अग्रगण्या ।
 २—मनि=ममान । निरमाओल आनि=नाकर बनाया । ३—जका=जैसा ।
 ४—जिनकर=जिसकी । एहनि=येही । ५—चिचुर=बेरा । ६—तापर = त
 पर । भमरा=भार्या । ७—केहरि=सिद्ध । अछि=(अस्ति) है । अम्बु=
 कमल । धारि=धारण करो, समझो । अवधारि=निश्चय ।

(१७)

चिकुर-निकर तम सम
 पुनु आनन पुनिम ससी ।
 नयन पंकज के पति आओन
 एक ठाम रहु यसी ॥ २ ॥
 आज मोयँ देखलि धारा ।
 लुधुध मानस, बालक भयन
 कर की परकारा ॥ ४ ॥
 सहज सुन्दर गोर कलेवर
 पीन पयोधर सिरी ।
 फनक लता अति विपरित
 फरल जुगल गिरी ॥ ६ ॥
 मन विद्यापति विहि क घट न
 के न अदभुद जान ।
 राय सिधसिध रूपन गायन
 लयिमा देइ रमान ॥ ८ ॥

१-२ चिकुर-निकर=कैरा समूह । पुनिम=पूर्णिमा का । ठाम=स्थान । कैरा समूह अथकार के समान है फिर मुख पूर्णिमा के चंद्र के समान और नयन कमल के (समान)---बौन विश्वास करेगा (कि ये सब परस्पर विरोधी पदार्थ) पर स्थान पर बसते हैं । मोयँ=मैंने । धारा=बाना । ४-लुधुध=डुब्ध, अनुरक्त । बालक भयन=काम पैदा करने वाला । बी बरबाय=विम प्रकार ५-मिरी=मी, रागायुक्त । ६-परल=कला । घटन=घटि ।

(१८)

सजनी, अपरप पेंखल रामा ।

कनक लता अवलम्बन ऊअल

हरिन हीन हिमधामा ॥ २ ॥

नयन नलिनि दश्रो अंजन रंजइ

भाह विमंग विलासा ।

चकित चकार-जोर विधि याँधल

केवल काजर पासा ॥ ४ ॥

गिरिवर गरुअ पयोधर परसित

गिम गज मोति क हारा ।

काम कम्पु भरि कनक-सम्भु परि

ढारत सुरसरि धारा ॥ ६ ॥

पणसि पयाग जाग सत जागइ

सोइ पायण बहुभागी ।

विद्यापति कह गोकुल नापक

गोपी जन अनुरागी ॥ ८ ॥

१-अपरप=अपूरव । पेंखल=देखा । रामा=सुन्दरी । २-कनक
मोने की लता (देह) । ऊअल=उदय हुआ । हरिन हीन हिम
निष्कलक चन्द्र (मुख) । ३-नलिनि=कमलिनी । दश्रो=दश । भाह
विलासा=कुम्भिल बगेली भाह=भवों=मे भाव भगी । ४-जोर=
बाधन=बाधा है । पायण=पास में रस्मा में । ५-६ गिरिवर गरुअ
क उमे भारी । पयोधर=कुच । गिम=झीना कण्ठ । गजमानिक=नी
की । कम्पु=राख । कनक=सोना । पहाइ एउ उचु ॥ कुच का एरा

(१६)

कनक लता अरविन्दा ।

दमना माँझ उगल जनि चन्दा ॥ २ ॥

केहु कहे सैवल छपला ।

केहु बोले नहि नहि मेघे भूपला ॥ ४ ॥

केहु कहे भमए भमरा ।

केहु बोले नहि नहि चरण चकोरा ॥ ६ ॥

ससय परल सय देयी ।

केहु बोले ताहि जुगुति यिसेखी ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति गावे ।

बड पुन गुनमति पुनमत पारे ॥ १० ॥

इ गते में गन्मुक्तियों की माला है मानों कामदेव शय (फण्ट) में
 १२ कर, सोने के मण्डप (कुन्नी) पर गंगा की धारा (माला) गर
 हा हो । ७-परमि=पैठ कर जा कर । पराग=प्रयाग में । नाग=यज्ञ ।
 जत=शन सौ । (जा) प्रयाग में जाकर मैरुकों यज्ञ करे वही बहुभाग्य
 वाली (इस रमणी को) प्राप्त करे ।

१-२ दमना=द्रोणलता । माँझ=में । उगल=उभय हुआ । जनि=
 मानो । सोने की लता पर कमल पिला है या द्रोण-लता पर चद्रमा
 लगा है । ३-केहु=कहा । कहे=कहता है । सैवल=सैवाल सैवार ।
 छपला=छिपा हुआ ५-६ भूपला=पहा हुआ । ७-भमए भमरा=भौरा
 भ्रमण कर रहा है । ८-चरण=चर रहा है दाना जुग रहा है । परल=
 पड़ गया । १०-पुन=पुन्य से । पुनमत=पुण्यवत ।

(२७)

कचरी भय चामरि गिरिकन्दर
मुख-भय चाँद अकासे ।
हरिन नयन भय, सर-भय कोकिल
गति-भय गज वनवास ॥ २ ॥
सुन्दरि, किए मोहि सँभासि न जासि ।
तुअ डर इह सब दूरहि पलायल
तुहुँ पुन काहि डरासि ॥ ४ ॥
कुच-भय कमल फोरक जल मुदि रह
घट परवेस हुतासे ।
दाडिम निरिफल गगन वास कर
सम्भु गरल कर ग्रासे ॥ ६ ॥
भुज-भय पक मृनाल नुकाएल
कर भय किसलय फाँप ।
कवि सेखर भन कत कत पेसन
कहय मदन परतापे ॥ ८ ॥

१-कचरी=केश। चामरि=चैवरवाली गौ। २-सर=सर
३-विण=क्यों। सँभासि=बानचीत करके। जासि=जाती है।
क्यों मुझमें बाने नहीं कर जानी? ४-पलायन=भाग गया। ५-
फोरक=अंगन की कली। घट परवेस हुतासे=अग्नि में प्रवेश करता है।
६-दाडिम=अनार। निरिफल=बन। गगन=आसरा। सम्भु-
शिव। गरल=विष। ७-मृनाल=वसन-जान। नुकाएल=दिए गए।
कर=हाथ। किसलय=अवीन वृत्ता।

(२१)

रामा, अत्रि क चंगिम भेल ।

तन जतन कत अद्बुद, विहि विहि तोहि देल ॥ २ ॥

इन्दर वदन सिंदुर बिन्दु, सामर चिकुर भार ।

नि रवि-ससि संगहि ऊगल पाछु कए अधकार ॥ ४ ॥

तचल लोचन बाँक निहारए अजन सोमा पाए ।

नि इन्दीवर पवन पेलल अलि भरे उलटाय ॥ ६ ॥

जत उरोज चिर भूपायए पुनु पुनु दरसाए ।

तइऔ जतने गोअए चाहए हिम गिरि न नुकाए ॥ ८ ॥

एहि सुन्दरि गुनक आगरि पुने पुनमत पाय ।

रम विन्दक रूपनारायन कवि विद्यापति गाय ॥ १० ॥

१-रामा=सुन्दरी । चंगिम=शामामयी । भेल=हुई । २-वतने=केतना । कत=कितना । अद्बुद=अद्भुत । विहि=विधि, प्रज्ञा । विहि=विधि, प्रकार डग । अधवा विहि विहि=बुन चुन कर । देल=दिया । ३-वदन=मुख । सामर=काला । चिकुर=केश । ४-ऊगल=उड़य हुआ । पाछु=पीछे । कए=करके । ५-बाक=निरछा । निहारए=देखती है । ६-इन्दीवर=कमल । पवन पेलल=पवन द्वारा आन्दोलित । अलि भरे=मौरी के मार में । उलटाय=उलट रहा हो । ७-उनत=उन्नत, उभड़े हुए । उरोज=नुच । चिर=धीरे से, साड़ी से । ८-जइऔ=यवधि । जाने=यत्न में । गोअए=गोपन करना, छिपाना । हिम=बर्फ (माडी) । गिरि=पहाड़ (कुच) । नुकाए=छिपना । ९-एहि=येही । पुने=पुण्य में ही । पुनमत=पुण्यवत । विन्दक=ज्ञाता ।

(२२)

सहज प्रसन मुख दरस हृदय मुस
लोचन तरल तरङ्ग ।
अकास पताल बस सेओ कहसे भल ब्रम
चाँद सरोरह संग ॥२॥
विहि निरमलि रामा दोसरि लछि समा
भल तुलापल निरमान ॥३॥
पुञ्चमडल सिरि हेरि कनक गिरि
लाने दिगन्तर गेल ।
येओ अइसन कह सेओ न जुगुति मह
अचल सचल कहसे भेल ॥४॥
माक-गोनि तनु भरं भाँगि जाए अनु
विधि अनुसण भेल साजि ।
नील पटोर आनि अति सं सुदृढ़ जाणि
जतन सिरिहु रोमराजि ॥५॥
भन कयि विद्यापनि काम-रमनि रति
वीरुष शुक्र रमम-त ।
गिरि मियनिघ राउ पुग्न मुहल पाउ
लगिमा दइ रानि कम्प ॥६॥

सद्यःस्नाता

(२२)

सहज प्रसन मुख दरस हृदय सुग
लोचन तरल तरङ्ग ।

अकास पताल घस संश्रो कइसे भेल अ
चाँद सरोरह संग ॥२॥

बिहि निरमलि रामा दोसरिल छि समा
भल तुलाएल निरमान ॥३॥

पुच मडल सिरि हेरि कनक गिरि
लाने दिगन्तर गेल ।

केश्रो अइसन कह संश्रो न जुगुति सह
अचल सचल कइसे भेल ॥४॥

माक-रानि तनु भर भांगि जाए जनु
बिधि अनुसए भेल साजि ।

गील पटोर आनि अति से सुदृढ़ जानि
जतन सिरिनु रोमराजि ॥५॥

भन कयि विद्यापति काम-रमनि रति
बीतुक शुभ रसमत ।

गिरि गिरिमिथ राउ पुरन सुरन पाउ
रागिमा दइ रानि क- ॥६॥

सद्यःस्नाता

(२३)

कामिनि करण सनाने ।

हेरितहि हृदय हनए पंचवाने ॥ २ ॥

चिकुर गरए जलधारा ।

जनि मुख-ससि डर रोअए अंधारा ॥ ४ ॥

कुच जुग चारु चकेवा ।

निअ कुल मिलिअ आनि कोन देवा ॥ ६ ॥

ते संका भुज पासे-

बाँधि धएल उडि जाएत अकासे ॥ ८ ॥

तितल बसन तनु लागू ।

मुनिहु क मानस मनमथ जागू ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति गावे ।

गुनमति धनि पुनमत जन पावे ॥ १२ ॥

२-हेरितहि = देखते ही । हनए = मारती है । पंचवाने = कामदेव
 का वाण । ३-४, चिकुर = बर । गरए = गिरती है । जनि = मानों ।
 रोअए = रोता है । अंधारा = अंधकार । बेशों से जल की धारा गिर रहा
 है, मानों, मुख वही चंद्रमा के डर में (बरता वही) अंधकार रा रहा
 हो । ६-निअ=निज । मिलिअ = मिलने को । आनि कोन देवा = कोन
 भानि देवा = निस्सने ला दिया है । ७-८, कही ये कुच वही चकेवा
 आवारा में न उड़ जायें, इसी गच्छ में अपनी भुजाओं में उन्हें बांध रखा
 है । ९-तितल = भीगा हुआ । १०-मानस = मन । मनमथ = कामदेव ।
 धनि = रमणी । जा = पुरुष ।

(२४)

श्राज्जु मभु सुभ दिन मेला ।
 कामिनि पेखल सनान क बेला ॥ २ ॥
 चिकुर गरए जलधारा ।
 मेह धरिस जनु मोतिम हारा ॥ ४ ॥
 बदन पौछल परचूरे ।
 माजि धयल जनि कनक-मुकुरे ॥ ६ ॥
 तँह उदसल कुच जोरा ।
 पलटि बैसाओल कनक-कटोरा ॥ ८ ॥
 निवि बध करल उदेस ।
 बिद्यापति कह मनोरथ सेस ॥ १० ॥

१-मभु = मेघ । मेला = हुआ । २-पेखल = देखा । वन
 समय । ३-४ चिकुर = केरा । गरए = गिरती है ।—(बाने)
 से (उज्जल) जल की धारा गिर रही है, मानों, बान (केरा)
 की माला (जल धारा) को वर्षा कर रहे हों । ५-कन = कुच
 पौछल = पौछा, परिमाजित किया । परचूरे = प्रचुर रूप से,
 तरह । ६-माजि धयल = माजि कर रख दिया, साफ कर रख
 कनक-मुकुरे = सोने का दर्पण । ७-तँह = उससे—(मुझ भेने स
 उदसल = उदम गया, प्रगट हुआ । जोरा = जोड़ा, युगल । ८-पल
 उलट कर । बैसाओल = बिछला दिया, रख दिया । ९-निवि = नि
 पुननी । करल = किया । उदेस = सिधिन । १०-सेस = समप्त ।

(२५)

जाइत पेखल नहायलि गोरी ।

कति सयँ रूप धनि आनलि चोरी ॥ २ ॥

केस निगारइत बह जल धारा ।

चमर गरए जनि मोतिम हारा ॥ ४ ॥

अलकहि तीतल तैं अति सोभा ।

अलिकुल कमल बेढल मधुलोभा ॥ ६ ॥

नीर निरंजन खोवन राता ।

सिंदुर मँडित जनि पंकज-पाता ॥ ८ ॥

सजल चीर रह पयोधर सीमा ।

कनक धेल जनि पडि गेल हीमा ॥ १० ॥

ओ नुकि करतहि चाहि किए देहा ।

अबहि छोड्य मोहि तेजब नेहा ॥ १२ ॥

ऐसन रस नहि पाओय आरा ।

इथे लागि रोइ गरए जलधारा ॥ १४ ॥

बिधापति कह सुनह मुरारि ।

बसन लागल भाष रूप निहारि ॥ १६ ॥

२-कति सयँ = कहां से । आनलि चोरी = चुरा लाइ । ३-निघर-
। = गारते समय, पानी निचोड़ते समय । ४-चमर = चेंबर से ।
अलक = केरा । तीतल = भीगा हुआ । तैं = इससे । ६-अलि
१ = भ्रमर गण । बेढल = घेर लिया । ७-पानी में स्नान करने के
एय ओहें अजन हीन और लज्जित हो गई हैं । ८-पंकज पाता = कमल
। पत्ता । ९-पयोधर सीमा = कुर्ची पर । कनक-बेल = सोने का

(२६)

नहाइ उठल तीर राइ कमलमुक्ति
समुप हेरल घर कान ।
गुरजन सग लाज धनि नत-मुक्ति
फइसन हेरव ध्यान ॥ २ ॥
सपि हे, अपरय चातुरि गोरि ।
सब जन तेजि कप अगुसरि संचरि
आइ यदन तंहि फेरि ॥ ४ ॥
तंहि पुन मोति-हार तोरि फँकल
कहइत हार डुटि गेल ।
सब जन एक एक चुनि संचर
स्याम-दरस धनि लेल ॥ ६ ॥
नयन चकोर कान्हु-मुख सलि-यर
कपल अमिय रस पान ।
डुहु डुहु दरसन रसहु पसारल
कवि विद्यापति भान ॥ ८ ॥

विल्ल फल । १०-पड़ि गेल = पड़ गया । हीमा = बर्फ । ११-ओ =
(वस्त्र) । नुकि करत हि चाहि = बिपाना चाहता है । किए = क
१२-येसन = ऐसा । आर = अन्यत्र । श्वे = इस लिए ।

१-नार = राधा । हेरल = देखा । कान = कृष्ण । २-नत = न
ध्यान = यदन मुख । ४-अगुसरि = अग्रसर, आगे । संचरि = चर
आन = ओट । ५-तोरि फँकल = तोड़ कर फँक दिया । डुटि गल
गया । ६-लेल = लिया । कपल = किया । अमिय = अ

प्रेम-प्रसंग

श्रीकृष्ण का प्रेम

(२७)

पथ-गति नयन मिलल राधा कान ।

दुहु मन मनसिज पूरल संधान ॥ २ ॥

दुहु मुख हेरइत दुहु भेल भोर । ३

समय न बूझए अचतुर चोर ॥ ४ ॥

विदगधि संगिनी सब रस जान ।

कुटिल नयन कपलहि समधान ॥ ५ ॥

चलल राज-पथ दुहु उरभार ।

कह कथि सेखर दुहु चतुरार ॥ ६ ॥

१—२—पथगति = राह में जाने हुए । कान = कृष्ण । २—मन
सिज = कामदेव । पूरल = पूरा किया । संधान = बाण का संचालन । पथ
में जाने हुए राधा-कृष्ण दोनों आँखों से मिले—एक दूसरे को देखा । दोनों
के मन में कामदेव ने अपने बाण का संचालन किया—दोनों के हृदय में
काम का संचार हुआ । ३—हेरइत = देखते ही । भेलभोर = बेसुध हुए ।
४—समय न बूझए = अवसर नहीं समझता । ५—विदगधि—विदग्ध,
झुरसिरा । कुटिल नयन = टेढ़ी चितवन ने—ईशारे से । कपलहि = कर
दिया । समधान = सावधान । उरभार = उत्तम कर ।

“चरन धरत चित्त बरत, चाहत न नेकहु सोर ।
हँसत है सुवरन सदा, कवि व्यभिचारी चोर ॥”

(२८)

सजनी, भल कए पेखल न भेल ।
 मेघ-भाल सयँ तडित लता जनि
 हिरदय सेल दई गेल ॥ २ ॥
 आध आंचर खसि आध धदन हसि
 आधहि नयन-तरङ्ग ।
 आध उरज हेरि आध आंचर भरि
 तबधरि दगधे अनङ्ग ॥ ४ ॥
 एके तनु गोरा कनक कटोरा
 अतनु काचला उपाम ।
 हार हरल मन जनि बूझि ऐसन
 फांस पसारल काम ॥ ६ ॥
 दसन मुकुता पांति अधर मिलायल
 मृदु मृदु कहतहि भासा ।
 विद्यापति कह अतए से दुख रह
 हेरि हेरि न पुरल आसा ॥ ८ ॥

१-भल कए = अच्छी तरह । पेखल न भेल = देख न सका ।
 २-सयँ = संग में साथ में । तडित लता = बिजली । जनि = मनी ।
 ३-नयन तरंग = बगध । ४-उरज = कुच । तबधरि = तब से ।
 दगधे = जलाना है । अनङ्ग = काम ५-कनक कटोरा = सोने का बटोरा
 (कुच) । अतनु = कामदेव । एक सा शरीर गौरवर्ण है और
 उसपर मे (कुच) माना मदन (अतनु) सोने के कटारे में रख
 (कनक कटोरा) मिला दिया गया है, ऐसा प्रतीत होता है । ६-जनि बूझि
 ऐसन = ऐसा मगध पढ़ना है मानों । ७-दसन = दोन । अधर =
 भोष्ठ । भासा = भाषा, बचन । अण्ण = इतना ही से ।

(२६)

ससन परस खसु अम्बर रे
 देखल धनि देह ।
 नथ जलधर-तर संचर रे
 जनि बिजुरी रेह ॥ २ ॥
 आज देखल धनि जाइत रे
 मोहि उपजल रङ्ग ।
 कनक-लता जनि संचर रे
 महि निर अवलम्ब ॥ ४ ॥
 ता पुन अपरध देखल रे
 कुच-जुग अरविन्द ।
 विगसित नहि किछु कारन रे
 सोभा मुख-चन्द ॥ ६ ॥
 विद्यापति कवि गात्रोल रे
 रस धूक रसमन्त ।
 देवसिंह नृप नागर रे
 हासिनि देइ कन्त ॥ ८ ॥

१-ससन = श्वसन, धवन । परस = तपरा से । खसु = गिर पडा ।
 अम्बर = वषट्ठा, अचल । देखल = देखा । धनि = बाला । २-जलधर =
 बादल । तर = तले, नीचे । जनि = मानों । रेह = रेखा । ३-जाइत =
 जानी हुई । रग = प्रेम । ४-संचर = जा रही है । निर अवलम्ब = बिन।
 अवलम्ब का । ५-जा = उसपर भी । पुन = पुन । जुग = दो ।
 अरविन्द = कमल । विगमित = खिला हुआ । मोभा = सम्मुख ।

(३०)

अलखित हमे हेरि बिहुसलि थोर ।

जनि रयनी भेल चाँद ईजोर ॥ २ ॥

कुटिल कटाख लाट पडि गेल ।

मधुकर-डम्बर अम्बर लेल ॥ ४ ॥

काहिक सुन्दरि के ताहि जान ।

आकुल कए गेल हमर परान ॥ ६ ॥

लीला कमल भमर धर बारि ।

चमकि बललि गोरि चकित निहारि ॥ ८ ॥

तैं भेल बेकत पयोधर सोम ।

कनक कमल हेरि काहि न लोभ ॥ १० ॥

आध नुकाएल आध उदास ।

कुच कुम्भे कहि गेल अप्पन आस ॥ १२ ॥

से अय अमिल निधि दए गेल सँदेस ।

किछु नहि रखलन्हि रस परिसेस ॥ १४ ॥

भनइ विद्यापति दुहु मन जागु ।

विसम कुसुम सर काहु जनु लागु ॥ १६ ॥

१-अलखित = अलख रूप से—बिना दूसरे क देखे । ॥ १ ॥ = ले
बर । बिहुसलि = मुस्तुराई । २-रयनी = रजनी, रात । ईजोर = चमक ।
५-काहिक = निमकी । के = कौन । ७-भर बारि = निवारण का-
कौतुक मे भमर का कमल से निवारण कर । ८-तैं = हमने । बेकत = बेच-
प्राप्त । ११-१२-नुकाएल = बिपा हुआ । उदास = प्रताप । कुम्भ =
पत्र । भाषा बिपा और भाषा प्रताप वृत्त-कुम्भ (गिराकर) का कर

(३१)

अम्बर विघट्ट अकामिक कामिनि
 कर कुच भाँपु सुन्दर ।
 कनक-सम्भु सम अनुपम सुन्दर
 दुइ पंकज दस चन्दा ॥ २ ॥
 कत रूप कहय बुझाई ।
 मन मोर अंचल लोचन चिकल भेल
 ओ नहि अनइत जाई ॥ ४ ॥
 आड धदन कण मधुर हास दय
 सुन्दरि रहु सिर नाई ।
 अआँधा कमल कान्ति नहि पूरण
 हेरइत जुग यहि जाई ॥ ६ ॥
 मनइ विद्यापति सुनु घर जीयति
 पुह्यी नय पँचयाने ।
 राजा सिंग सिंघ रूपनरायन
 लखिमा देखि रमाने ॥ ८ ॥

भारा कह गइ (कि मिलूगी) १३-अमिल = अप्राप्य । निधि = खजाना ।

१४-परिसेस = परिशेष, बाकी । १६-विमम = विषम, कठोर । कुसुम-सर = कामदेव का शर ।

१ अम्बर = वर अंचल । विघट्ट = टूट गया । अकामिक = अकस्मात् । कर = हाथ । भाँपु = टक लिया । सुन्दर = सुन्दर ।
 अकस्मात् अंचल टूट गया, (उस) कामिनी ने अपने दोनों हाथों से सुन्दर कुचों को टक लिया । २-कनक-सम्भु = सोने के महादेव

गेलि कामिनि गजहु गामिनि
बिहसि पलटि निहारि ।

इन्द्रजालक कुसुम-सायक
कुहकि भेलि वर नारि ॥ २ ॥

जोरि भुज जुग मोरि येडल
ततहि यदन सुखन्द ।

दाम चम्पक काम पूजल
जइसे सारद चन्द ॥ ४ ॥

(कुच) दुह पकज = दो कमल (दोनों हाथ) दस चर = दस
चन्द्रमा (दस अंगुलिया) ३-रुत = किताब । ४-अनहत = अन्ध
दूसरी जगह । ५-आड = आँट । ६-अभोधा = उलट कर रखा हुआ ।
जुग बहि जार = जुग नीच जाने है । ७-पुहवी = पृथ्वी । नव =
नवीन । पचवाने = कामदेव के बाण । ८-रमान = रमण, पति ।

१-गेलि = गई । गजहु गामिनि = हाथी के समान मस्तानी चर
वाली । बिहसि = मुरकुरा कर । निहारि = देख कर । २-इन्द्रजालक =
ऐन्द्रजालिक जादूगरा । कुसुम सायक = कामदेव के बाण । कुहकि
कूजना हँसना क्या था । कूजना था । भेलि = हुए । मानों वह नारी भई
हँसकर ऐन्द्रजालिक मर्त हो गई । अर्थात् उसकी हँसी ने उस अद्भुत
चमत्कार का अनुभव करवा दिया किमका मर्त क बाण पड़ने हैं । ३-४-मारि =
मोड़ कर । बँडल = धँस । नहि = नहीं । यदन = मुग । दाम = रानी (मन्ना)
चम्पक = चम्पे की । जइसे = वैसे । सुखन्द = सुन्दर । दोनों हाथों
को जोड़ कर उनमें अपना सुन्दर मुख लगा लिया, मानों, कामदेव ने
चम्प की माया (हाथ) से सारद चन्द्र (मुख) की पूजा की है ।

उरहि अंचल भाँपि चंचल
 आघ पयोधर हेर ।
 पोन पराभव सरद-धन जनि
 बेकत फल सुमेर ॥६॥
 पुनहि दरसा जीव जुडाएव
 दुटत धिरह क ओर ।
 चरन जायक हृदय पायक
 दहइ सब अंग मोर ॥८॥
 भन विद्यापति सुनह जदुपति
 चित्त धिर नहि होय ।
 से जे रमनि परम गुनमनि
 पुनु कए मिलव तोय ॥१०॥

४-५-उरहि = बद्धस्थल को । भाँपि = ठककर । पयोधर = स्नायु, कुच । हेर = देखती है । पोन = पवन, वायु । पराभव = हार कर । जनि = मानों । बेकत = व्यक्त, प्रगट । फल = किया । सुमेर = पर्वत । बद्धस्थल को चंचल अंचल से ढाक कर आँधे कुच को देखनी है माना, पवन से हार कर शरद के प्रेम (अंचल) ने सुमेर को (कुच) प्रगट किया हो—जिस प्रकार पवन के भँके से प्रेम हट जाने पर सुमेर देख पड़ता है उसी प्रकार । ७-जीव = प्राण । जुडाएव = शीतल होंगे । ओर = मीमा । ८-जायक = महावर । पायक = भाग । दहइ = जलता है । उसके पैर के महावर (मेरे) हृदय में आग (लगा रहा) है जिससे मेरे सब अंग जल रहे हैं । १०-से = वह । पुनु = पुन । मिलव = मिलेगी । तोय = तुम्हें ।

(३३)

सहजहि आनन सुन्दर रे
 भौंह सुरेभलि आंसि ।
 पंखज मधु पिबि मधुकर रे
 उडप पसारल पांसि ॥२॥
 ततहि धाओल दुदु सोचन रे
 जतह गेलि घर नारि ।
 आसा लुयुधल न तेजपर
 एषा क पाहु भिगारि ॥४॥
 इगित गयन तरंगित र
 याम भँओह भेल भंग ।
 तरा न जागल तेसर रे
 गुपुत मनोमय रंग ॥६॥

चन्दन चरचु पयोधर रे
 म्रिम गज मुकुताहार ।
 भसम भरल जनि संकर रे
 सिर सुरसरि जलधार ॥८॥

घाम चरन अगुसारल रे
 दाहिन तेजइत लाज ।
 तरन मदन सर पूरल रे
 गति गजए गजराज ॥९॥
 आज जाइत पथ देखलि रे
 रुप रहल मन लागि ।
 तेहि खन सयँ गुन गौरव रे
 धेरज गेल भागि ॥१०॥

देव । ७-चरचु=चंचित किया । पयोधर=कुन, स्तन । म्रिम=गले में । भरल=भरा हुआ । सुरसरि=गंगा । कुच चन्दन से चंचित है जिनपर गजमुकुतओं की माला (भूल रही) है मानों, भस्म का लेप किये हुए महादेव के सिर पर गंगा की धारा (बह रही) हो । ८-अगुसारल=अग्रसर किया, आगे किया । दाहिन तेजइत लाज=दाहिने पैर को आगे रखते लज्जा होती है । ९-तरन=उत्त समय । मदन=कामदेव । गति=चाल । गजए=पराजित करती है । गजराज=राजा । १० रुप रहल मन लागि=रुप मन से लग रहा है-सौंदर्य हृदय में बैठ गया । खन=घण । सयँ=से । गेल=गया ।

रूप लागि मन धाओल रे
 पुच-कचन गिरि सांधि ।
 ते अपराधे मनोमय रे
 ततहि धपल जनियांधि ॥१४॥
 विद्यापति कवि गाओल रे
 रस युक्त रसमा ।
 रूपनरायन नागर रे
 लगिमा देख कन ॥१५॥

(३४)

पथ गति पेखल मो राधा ।
तखनुक भाव परान पण पीडलि
रहल कुमुद निधि साधा ॥ २ ॥
ननुआ नयन नलिनि जनि अनुपम
वक निहारइ धोरा ।
जनि सुखल में रागवर बांधल
दीठि नुकाएल मोरा ॥ ४ ॥
आध वदन-ससि बिहसि देखाओलि
आध पीहलि निअ बाह ।
किछु एक भाग बलाहक भापल
किछुक गरासल राह ॥ ६ ॥

१-२-पथ-गति = पथ में जाती हुई । पेखल = देखा । मो = मैं ।
तखनुक = उस समय का । परान पण = प्राण भी । पीडलि = पीड़ित
किया । रहल = रह गया । कुमुद निधि = कुमुद का सर्वस्व (चन्द्र) ।
साधा = माध इच्छा । मैंने राह में जाती हुई राधा का देखा । उस
समय की उसकी भावमयी ने प्राणों तक को पीड़ित किया उस चन्द्र
(मुख) को देखने की साथ बनी ही रह गई । ३-ननुआ = सुन्दर ।
नलिनि = कमलिनी । जनि = समान । वक = टेढ़ा । निहारइ = देखनी
है । ४-सुखल = स्तखला जजोर । रागवर = पद्मीनेष्ठ सज्जन ।
बांधल = बाँधा । नुकाएल = छिप गया । ५-वदन-ससि = मुख हवी
चन्द्रमा । देखाओलि = दिखाताह । पीहलि = बाँध लिया । निअ = निजे ।
बाह = बाह से मुजा से । ६-भापल = बाप दिया । बलाहक = मेघ ।

कर-जुग पिहित पयोधर अंचल
चंचल देखि चित भेला ।

हेम कमलन जनि अगनित चंचल
मिहिर तरे निन्द गेला ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति सुनह मधुरपति
इह रस येह पण याघा ।

हाम दरम रस सयह युभादत
नाल कमल दुइ आघा ॥ १० ॥

गणगण = गण विद्या । ७-८-निदिन = भानु । ९-१०-
रस = भयन = विमल । हेम = लाला । जनि = जन । अग-
नित = असीम । तरे = सीधे । मिहिर = मधुर । ११-१२-
भानुति हाने म दरे दुइ राने क मुख भग दस दस दिन ५०
रस, लाला मी क कल्पन (दाने मुख) लाला = दुइ ५
मध (मधुर हाने) क तरे मा रहे हो । १-१० मुख म
मधुरा = मधुरा राने । ११-१२ । वेद = वेद । १३ ।
गणगण = गणगण - गण गण । गणगणगण । गण + (ग-
ण) गण । दे गणगण गणगण, (गणगण) गणगण । गणगण
गण । गणगण गणगण गण गण गण गण गण गण गण
गण गण गण गण गण गण (गणगण गणगण गणगण
गण गण गण) गणगण (गणगण गणगण) गणगण । गण
गणगण गणगण गणगण गणगण गणगण गणगण ।

(३५)

हाँ जहाँ पग-जुग धरई । तहिं तहिं सरोरुह भरई ॥ २ ॥
 हाँ जहाँ भलकत अग । तहिं तहिं विजुरि तरंग ॥ ४ ॥
 न हेरल अपरय गोरि । पइठल हिय मणि मोरि ॥ ६ ॥
 हाँ जहाँ नयन विकास । तहिं तहिं कमल प्रकास ॥ ८ ॥
 हाँ लहु हास संचार । तहिं तहिं अमिय विकार ॥ १० ॥
 हाँ जहाँ कुटिल कटाख । ततहिं मदन-सर लाख ॥ १२ ॥
 रइत से धनि थोर । अब तिन भुवन अगोर ॥ १४ ॥
 पुन किण दरसन पाय । अब मोहे इत दुख जाय ॥ १६ ॥
 येघापति कह जानि । तुअ गुन देहय आनि ॥ १८ ॥

१-२-पग जुग = पानों पैर । धरई = धरती है—रखती है ।
 हिं = वहाँ । सरोरुह = कमल । भरई = भरते है । ३-४ भल
 कत = भलकने है—चमकते है । अग = शरीर । विजुरि-तरंग = विजली
 के चंचल प्रकार । ५-६-नि = क्या । हेरल = देखा । गोरि = गौर
 मदनी, सुन्दरी । पइठल = पेट गई घुस गई । हिय-मणि = हृदय में ।
 मोरि = मेरे । १-१०-लहु = लघु, मद । हास = हँसी । अमिय = अमृत ।
 ११-१२-कुटिल = टेढ़े । कटाख = कटाघ । ततहिं = वहाँ ही ।
 मदन = कामदेव । सर = बाण । १३-१४-देरइत = देखते ही । से =
 वह । धनि = बाना, सुन्दरी । अगोर = प्रतीक्षा करना । १५-१६—
 पुन = पुन । किण = क्या । १६—आ मैं इसी दुख से मरुगा ।
 १८-तुअ = तुम्हारे । दहय आनि = ला दूंगा ।



राधा का प्रेम

(३६)

ए सखि पेसलि एक अपरूप ।

सुनइत मानवि सपन सरूप ॥ २ ॥

कमल जुगल पर चाँद क माला ।

तापर उपजल तरुन तमाला ॥ ४ ॥

तापर वेढलि बिजुरी लता ।

कालिन्दी तट धीरे चलि जाता ॥ ६ ॥

साया सिखर सुधाकर पाँति ।

ताहि नय पल्लव अरुनक भाति ॥ ८ ॥

बिमल बिम्बफल जुगल बिरास ।

तापर कीर थीर कर बास ॥ १० ॥

तापर चंचल खंजन-जोर ।

तापर साँपनि भाँपल मोर ॥ १२ ॥

सखि रंगिनि कहल निसान ।

हेरइत पुनि मोर हरल गिआन ॥ १४ ॥

कवि विद्यापति एह रस भान ।

सुपुरुष मरम तुह भल जान ॥ १६ ॥

१ कमल-जुगल = दा पैर । चाँद क माला = नख की पंक्ति ।
 २ कमल-जुगल = दा पैर । ३ वेढलि = चिपटी हुई । ४
 माला = पीताम्बर । ५—साया-सिखर = तमाल रस
 साया कपो बाहुओं के अंग भाग में । सुधाकर पति = म
 रति । ८—नय पल्लव = हथेली । अरुनक भाति—

(३७)

को लागि कौतुक देखलों सखि

निमित्त लोचन आध ।

मोर मन मृग मरम येधल

विषम धान वेश्वाध ॥ २ ॥

गोरस बिरस चामी बिसेखल

छिकहु छाडल गेह ।

मुरलि धुनि सुनि मोमन मोहल

बिकहु भेल सन्नेह ॥ ४ ॥

तीर तरंगिनि कढम्ब-कानन

निकट जमुना घाट ।

उलटि हेरइत उलटि परलओ

चरन चीरल काँट ॥ ६ ॥

सुछति सुफल सुनह सुन्दरि

विद्यापति मन सार ।

कंसदलन गुपाल सुन्दर

मिलल नन्दकुमार ॥ ८ ॥

३—विषमल = भाव । १०—बीर = नाक । ११—खजन जोर =
आखों का जोड़ा । सापिनि = केरा । मोर = मोर-मुकुट ।

१—वी लागि = निसलिये । निमित्त = एक घण । लोचन आध =
आधी आखों से, मनखियों से । २—मरम = हृदय का भीमरी भाग ।
विषम = कठोर । ३—बिरस = रमणीय । चामी बिसेखल = विरोध
पासी । छिकहु = छींकने पर भी । ४—तरंगिनी = नदी ।

(३८)

अवनत आनन कए हम रहलिहुँ
 बारल लोचन-चोर ।
 पिया मुख-रुचि पिण्य धाओल
 जनि से चाँद चकोर ॥२॥
 ततहुँ सयँ हठ हटि मो आनल
 धएल चरनन राखि ।
 मधुप मातल उडए न पारए
 तइअओ पसारए पाँखि ॥४॥

१ २ अवनत = नीचे । आनन = मुख । बारल = निवारण कि,
 रोक रखा । मुख-रुचि = मुख की शोभा । पिण्य = पीने के निवे ।
 धाओल = दौड़ पड़ा । जनि = मानों । स = वह । मैंने अपने मुँह से
 नीचे कर लिया और नयन रूपी चोरी का (उनसी ओर जाने से)
 रोक दिया । किंतु प्रीति के मुख की शोभा को पान करने के निवे
 दौड़ पड़े जिस प्रकार चाँद की आर चकार दौड़ते हैं । ३ ४ ततहुँ = वहाँ
 सयँ = से । हटि = हटाने । मो = मैं । आनन = लाया ।
 राखि = धर रखा । मधुप = भौरा । मातल = मत्त बना पागल ।
 उडए न पारए = उड़ नहीं सक्ता । तइअओ = तौ भी । पसारए =
 पसारता है । वहाँ से—मुख की आर म—म (आँखों से)
 पूरक रोक कर दय लाई और अपने चरणों पर धर रखा—नीचे की ओर
 देने लगे । (किंतु जिस प्रकार) मधु पीकर मत्त बना मारा उड़ नहीं सक्ता

माधव घोलल मधुर चानी
 से सुनि मुँडु मोयँ कान ।
 ताहि थयसर ठाम घाम भेल
 धरि धनू पँचवान ॥६॥
 तनु पसेव पसाहनि भासलि
 पुलक तइसन जागु ।
 चुनि चुनि भए काँचुअ फाटलि
 थाहु बलघा भाँगु ॥८॥
 भन विद्यापति कम्पित कर हो
 बोलल बोल न जाय ।
 राजा सियसिंध रूपनरायन
 साम सुन्दर काय ॥१०॥

घोभी पक्ष पसारता है । उमी तरह मेरी आँखें बराबर वस भोर जाने
 लगी । ४-मुँडु = मूढ़ लिया । ५-ठाम = जगह । घाम भेल = विरह
 हुआ, बेरी हुआ । पंचवान = कामदेव । ६ उमी समय, उसी जगह कामदेव
 धनुष धारण कर मेरा बेरी हुआ—मुझपर बाण की बौछार करने लगा ।
 ७-पमेव = पसीना । पसाहनि = प्रसाधनी ललाट पर की मजाबट,
 भगराग । भासलि = दह गया, धो गया । पुलक = रोमांच । तइसन =
 उसी प्रकार । ८-चुनि चुनि भए = छलछल-सलल होकर । कानुभ =
 कचुरी, चोली । बलघा = चूड़ी । भाँगु = फूट गई । [प्रेमातिरेक से
 शरीर फूल उठा, जिस कारण चोली फूट गई और चूड़ियाँ फूट गई ।]
 ९-कम्पित कर हो = हाथ कांप रहे हैं । बोलल बोल न जाय = बोली
 बोली नही जाती ।

(३६)

सामर सुन्दर ए वाट आपत
तैं मोरि लागलि आंखि ।
आरति आंचर साजि न भेले
सब सखीजन साखि ॥२॥
कहहि मो सखि कहहि मो
कत तकर अधियास ।
दूरहु दूगुन एडि मैं आवझो
पुनू दरसन आस ॥४॥
कि मोरा जीयन कि मोरा जीयन
कि मोरा चतुरपने ।

१—ए वाट = इस रास्ते । तैं = इसी कारण । २—आपत =
आतीबस्था मे, व्याकुलता से । साखी = साधी, गवाह । अदुलत मे—
मेमावेरा से—मे मानन को सौमान भी न सकी—अपने कुतों को मनी ॥
नैक भी न सकी—इस बात की गवाह सभी सखियाँ हैं । ३—४ मे =
मुखमे । कत = वहाँ । तकर = उसका । अधियास = निवास—रह ।
दूर दूगुन = दूगुनी दूरी । एडि = अतिशय कर । आवझो = आव
हैं । पुनू = पुन । कहा = मेरी सखी कहा, उसका निवास—रह
वहाँ है । दूगुनी दूरी (हाथ पर भी अमे) अतिशय कर मे पुन दान स्ने
की भाव मे वहाँ आती है । ५—६—मुखनि = मुख ।
अदुलत = ह । मेरी निदगी क्या, जगती क्या और चतुरपने—
वे सब मिथ्या है । काम के वाट मे मे मुखनि है ।

मदन-चान मुखलि अछुआँ
 सहआँ जीब अपने ॥६॥
 आध पद धरइत मोए देखल
 नागर जन समाज ।
 कठिन हिरदय मेदि न मेले
 जाओ रसातल लाज ॥८॥
 सुरपति पाए लोचन मागआँ
 गरुड मागआँ पाँखि ।
 नन्द क नन्दन में देखि आयआँ
 मन मनोरथ राखि ॥१०॥

(उसकी मामिक पीड़ा) अपने प्राणों में सह रही हूँ । ७ =—नागर
 जन = चतुर लोग । मेदि = छेदना विदीय होना । कृष्ण की ओर
 आधा पग रखते—प्रेमावेश में उनकी ओर एक पैर बटाते ही—मुझे
 समाज के चतुर लोगों ने देख लिया । पर, मेरा कठिन हृदय फट नहीं
 गया, लज्जा पाताल में धँस गई । ८—सुरपति = इन्द्र । पाप = चरण
 में । पाँखि = पख । इन्द्र के चरणों में मैं उन का महल लोचन माँगनी
 हूँ गरुड से पख माँगनी हूँ । १०—देखि आयआँ = देख आऊँ ।



Poetry is that which lifts the veil from
 the hidden beauty of the world. —Shelly

(४०)

कानु हेरब छल मन बड साध ।

कानु हेरइत भेल अत परमाद ॥ २ ॥

तबधरि अबुधि मुगुधि हम नारि ।

कि कहि कि सुनि किछु बुझिण न पारि ॥ ३ ॥

साओन घन सम भरहु नयान ।

अधिरत धस धस करण परान ॥ ४ ॥

को लागि सजनी दरसन भेल ।

रभसे अपन जिउ पर हथ देल ॥ ५ ॥

ना जानू किए कर मोहन चोर ।

हेरइत प्रान हरि लेई गेल मोर ॥ ६ ॥

अत सय आदर गेल दरसाइ ।

जत विसरिण तत विसर न जाइ ॥ ७ ॥

विद्यापति कह सुन बर नारि ।

धैरज धर चित मिलब मुरारि ॥ ८ ॥

१ कानु = कृष्ण । हेरब = देखना । छल = था । साध = राई

२-अन = इतना । परमाद = प्रमाद, पागलपन । ३-तबधरि = तबतक ।

मुगुधि = मुग्धा । ४-कि = क्या । बुझिण न पारि = समझ नही मगनी ।

५-साओन-घन = आबण का मेघ । नयान = नयन, आँस । ६-

अधिरत = हृदय । धस धस करण = धक धक करता । ७-रभस =

नौतुर में दी । पर हथ = दुमरे क हाथ में । ८-रिण = गया । ११-

गान दरसाइ = गाँ गया, बाला गया । १२-जत = जितना । विसरिण =

भूलिण । विसर न जाइ = नही भूलना ।

(४१)

कि कहव हे सखि इह दुख ओर ।

बाँसि-निसास-गरल तनु भोर ॥ २ ॥

हठ सयँ पइसए सयनक माभ

ताहि खन विगलित तन मन लाज ॥ ४ ॥

विपुल पुलक परिपूरण देह ।

नयन न हेरि, हेरए जनु केह ॥ ६ ॥

गुरु जन समुसहि भाव-तरंग ।

जतनहि बसन भापि सब अंग ॥ ८ ॥

लहु लहु चरन चलिण गृह माभ ।

आजु देखि बिहि राखल लाज ॥ १० ॥

तनु मन वियस रसए निधि-ग्रथ ।

कि कहव निद्यापति रहु धन्द ॥ १२ ॥

१—कि = क्या । २—बाँसि निसास-गरल = बरी के नि श्वाभ के विष मे—बरी की आवाज की मादकता से । तनु भोर = शरीर वसुध है । ३—हठ सयँ = हठपूर्वक । पइसए = पैठता है । सयनक = कानों के । माभ = गन्ध, में । ४—ताहि खन = उसी समय । विगलित = दूर हुए, जाती रही । ५—विपुल = अधिक, असंख्य । पुलक = रोमांच । ६—आँखों से उस ओर—कृष्ण की ओर—नही दायती हू कि कहीं कोई चेमा बरते देख न ले । ७—गुरु जन—अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति । भाव-तरंग = भावना की लहर । ८—लहु लहु = धीरे धीरे । देख बिहि = देव और न्या । ११—ससए = गिर पड़ना है । १२—धन्द—किर

(४२)

कत न वेदन मोहि देसि मदना ।

हर नहि बला मोहि जुवति जना ॥ २ ॥

विभूति-भूषन नहि चानन क रेनु ।

बधच्छाल नहि मोरा नेतक यसनू ॥ ४ ॥

नहि मोरा अटामार चिकुर क बेनी ।

सुरसरि नहि मोरा कुसुम क स्नेनी ॥ ६ ॥

चांदन क बिन्दु मोरा नहि इन्दु छोटा ।

ललाट पावक नहि सिन्दुर क फोटा ॥ ८ ॥

नहि मोरा कालकूट मृगमद चारु

फनपति नहि मोरा मुकुता-शाय ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति सुन देख कामा ।

एक पण दुखन नाम मोर घामा ॥ १२ ॥

अरे कामदेव मुझे इतनी वेदना मत ले, मैं मराने नहीं चाह
 सुखी हूँ । (शरीर में लगे) ये विभूति के भूषण (लेप) नहीं, बल्कि
 उन्दन व रेणु दे यह बाधदाया नहीं बनूँ मेरी पुनरी [नेत्रक बनूँ]
 दे । (सिर पर) वह जग का भार नहीं बनूँ बेरों की गुंथी हुई हट
 दे । गंगा नदी बनूँ बेणी में गुंथे गये (उजने) पत्तों की कता है ।
 (काल पर) उन्नत की बेदी अथवा मोंगीका है, दिनीया का चरमा [१३
 घाटा] रहा । ललाट में (कुलीय अंग की) अग्नि नहीं सिन्दुर का दीया है ।
 वह रिय नही बिन्दु पर सुन्दर (काया) मृगमद है । (लगे
 में) भजना नही, बिन्दु मेरी मुक्तियों की माया है । दिखानी करे है

(४३)

मनमथ, तोहे की कहय अनेक ।
 दिठि अपराध परान पण पीडसि
 ते तुअ कौन प्रियेक ॥ २ ॥
 दाहिनि नयन पिसुन गन बारल
 परिजन चामहि आध ।
 आत्र नयन-कोने जव हरि पेखल
 तें मेल अत परमाद ॥ ४ ॥
 पुर-बाहिर पथ करत गतागत
 के नहि हेरत कान ।
 तोहर कुसुम सर कतहु न संचर
 हमर हृदय पववान ॥ ६ ॥

हे कामदेव, सुना, मुझमें दोष है तो केवल एक यही कि मेरा नाम
 'वाम (रमणी)' है [जो महादेव के 'वामदेव' नाम से मिलता है]
 १-२-मनमथ = वामदेव । दिठि = दृष्टि, नजर, । पीडसि = पीड़ा देने
 वा । ३-४ पिसुन = दुष्ट । बारल = मना किया । परिजन = घर के लोग ।
 परमाद = प्रमाद, पागलपन । दाहिने नेत्र की दुष्टों के कारण मना करना
 पड़ा—दाहिने नेत्र से दुष्टों के डर से नहीं देखती—परिवार वालों के कारण
 बायें नेत्र के आधे को निवारण किया । रह गया बायें नेत्र का आधा
 भाग—सो आधे नेत्र से ही—बायें नेत्र के कटाव से ही—जब कृष्ण
 को देखा तो इतना पागलपन मुझमें आ गया । ५-पव = उड़ । करत
 गतागत = आने-जाते । कान = कृष्ण । ६-कुसुम सर = फूलों के बाण ।
 पंचरान = कामदेव के पांच सर ।

(४४)

एक दिन हेरि हेरि हंसि हंसि जाय ।

अर दिन नाम धप मुरलि बजाय ॥२॥

आँजु अति नियरे करल परिहास ।

न जानिए गोकुल ककर बिलास ॥४॥

साजनि ओ नागर-सामराज ।

मूल बिनु परधन मांग घेयाज ॥६॥

परिचय नहि देखि आनक काज ।

न करए समझ न करए लाज ॥८॥

अपन निहारि निहारि तनु मोर ।

देइ आलिंगन भए बिभोर ॥१०॥

खन खन वेदगधि कला अनुपाम ।

अधिक उदार देखिअ परिनाम ॥१२॥

विद्यापति कह आरति ओर ।

युक्तिओ न बूझए इए रस भोर ॥१४॥

२-अर = और अन्य । ३-नियरे=निकट । परिहास=हँसी मजाक ।

ककर=किसरा । ४-६नागर सामराज = चतुरों का सम्राट् । मूल=मूल धन । सखि, वह चतुरों का बादशाह है देखो तो दूसरे ॥ १॥ सम्पत्ति पर बिना मूल धन क मूढ़ माँगता है (एक तो धन दूसरे का, उसमें भी मूल धन सामान्य, फिर मूढ़ कैसा !) ७-दूसरे का काम देख कर भी नहीं परिचय करता-जहाँ समझता । ८-समझ=र । ११-प्रतीक्ष्य अनुपम विदग्धनापूर्ण कला (दिखाता है) १४-वह रस में बेसुध (कृष्ण) समझ कर भी नहीं समझता ।

दूती

कृष्ण की दूती

(४५)

धनि धनि रमनि जनम धनि तोर ।
 सब जन कान्हु कान्हु करि भूरप
 से तुअ भाय बिभोर ॥ २ ॥
 चातक चाहि तियासल अम्बुद
 चकोर चाहि रहु चन्दा ।
 तर लतिका अवलम्बन करिप
 मभु मन लागल धन्दा ॥ ४ ॥
 फेस पसारि जवे तुहुँ राखलि
 उर पर अम्बर आधा ।

१—धनि=धन्य । रमनि=रमणी स्त्री । तार=तुम्हारा । २—जन=
 आदमी । कान्हु=कृष्ण । भूरप=जन्ते, व्याकुल होते । से=वह । तुम=
 तुम्हारे । बिभोर=बेसुख । ३ ४—चातक=पपीहा । चाहि=देखना ।
 तियासल=तृपित प्यासा । अम्बु=बादल । तर=वृक्ष । लतिका=लता ।
 करिप=कर रहा है । मभु=मेरे । लागल=लगा । धन्दा=मन्देह ।
 (वैसी विचित्रता है ।) तृपित मेष भाज पपीहा की ओर देख रहा है,
 चन्द्रमा चकोर को देखता है और वृक्ष लतिका का अवलम्बन कर रहा है
 (इन विरोधी बातों को देख) मेरे मन में सराव हो रहा है । [कवि का
 तात्पर्य यह है कि जैसी व्याकुलता आज तुममें होनी चाहिये थी, वह
 श्रीकृष्ण में है ।] ५—पसारि=पसार कर, खोल कर । राखलि=रखा ।

से सब सुमिरि कान्हु भेल आकुल
 कह धनि इये कि समाधा ॥ ६ ॥
 हँसइत कब तुहु दसन देखाएलि
 करे कर जोरहि मोर ।
 अलखित दिठि कय हृदय पसारलि
 पुनु हेरि सखि कर कोर ॥ ८ ॥
 एतहु निदेस कहल तोहे सुन्दरि
 जानि तोहे करह बिधान ।
 हृदय पुतलि तुहु से सून कलेवर
 कबि विद्यापति भान ॥ १० ॥

उर=दाही, वच स्थान । अम्बर=रत्न, अचल । ६-से=वह । भेल=हुआ ।
 इये=इसका । धनि=वाने । समाधा=निवारण । ७-दसन=नास ।
 करे कर जोरहि मोर=हाथ से हाथ जोड़ कर मुकती हुई । अलखिते=
 अलक्ष्य रूप से, बिना देते । पुनु=पुन । हेरि=देखकर । कर कोर=
 कोर कर=कोड़ में करना-रखना आलिंगन करना । हाथ से हाथ जोड़
 कर (अंगुष्ठों लेती हुई) कब तुमने पीछे की ओर मुड़ कर, हँसती हुई
 अपने दाँतों की छत्र दिखाई, यवम् अलक्ष्य दृष्टि से कर उनके हृदय को
 प्रसारित कर पुन उनकी आर देख कर, सखी का आलिंगन किया । ८-
 एतहु=एतना । निदेस=दशारा । कहल=(मैंने) कहा । तोहे=तुम्हें ।
 जानि=जानकर । करह=करो । निधान=उपचार । १०-हृदय-पुतलि=
 हृदय की पुतली प्राण । से=वह (कृष्ण) । सून=शून्य । कलेवर=
 शरीर । भान=कहता है ।

(४६)

सुन सुन प सखि कहए न होए ।

राहि राहि कए तन मन खोए ॥ २ ॥

कहइत नाम पेम भए भोर ।

पुलक कम्प तनु घरमहि नोर ॥ ४ ॥

गद गद भाखि कहए बर-कान ।

राहि दरस बिनु निकस परान ॥ ६ ॥

जय नहि हेरय तकर से मुख ।

तय जिउ-भार धरय कोन सुख ॥ ८ ॥

तुहु बिनु आन नहि इथे कोइ ।

विसरए चाह विसर नहि होइ ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति नहि रियाद ।

पूरव तोहर सख मन साथ ॥ १२ ॥

१-कहए न होए=नहा नहीं जाता । २-राहि=राधा । कए=करके, बहकर । राप=सोना, मुन्हा देना । ३-पेम=प्रेम । भोर=बेसुप । ४-पुलक=रोमांच । घरमहि=पसीना भी । नोर=भासू । शरीर रोमांच होकर कापने लगता है पसीना हाता है और भासू प्रवाहित होने लगते हैं । ५-गदगद=रुंधे हुए कंठ से । भाखि=बहना । कान=कृष्ण । ६-निकसे=निकलता है । ७-तकर=उसका । से=वद । ८-धरय=धरगा । ९-आन=दुमरा । इथे=यहाँ तुम्हारे सिवा यहाँ दूसरा कोई नहीं-तुम्हें छोड़ कर कृष्ण अथ किसी को प्यार नहीं करते । १०-विसरए=विस्मरण होना, भूल जाना । ११-विवाद=कलह । १२-पूरव=पूरी होगी । मन-साथ=मन कामना ।

(४७)

कंठक माक कुसुम परगास ।

भमर विकल नहि पावय पास ॥ २ ॥

भमरा भेल घुरए सबे ठाम ।

तोहे बिनु मालति नहि बिसराम ॥ ४ ॥

रसमति मालति पुनु पुनु देखि ।

पियए चाह मधु, जीउ उपेसि ॥ ६ ॥

उ मधुजीवी तोंजे मधुरासि ।

सांचि धरसि मधु मने न लजासि ॥ ८ ॥

अपनेहु मने गुनि बुझ अयगाहि ।

तसु दूपन बध लागत कोहि ॥ १० ॥

भनहि विद्यापति तों पय जीय ।

अधर सुधारस जों पय पीय ॥ १२ ॥

१-परगास=प्रकार । २-पावय=पता है, जा सकता है ३-भमरा (गाधव) ४-मालति (राधा) ६-जीव उपेसि=जीवन की उपेक्षा करके अपाउं मरेगे या जीवेंग इसका कुछ भी रवाना न करके । ८-मोवि धरसि=सचिन करके रखा है । ९-अयगाहि=दूबकर अयाव इस बात को अपने मन में गली भाँति सोचो-समझो । ११-तों पय जीव=तब जी सकता है । १२-जों पय पीय=यदि वह पी सक ।

(४८)

आजु हम पेखल कालिन्दी कूले ।

तुअ विनु माघन विलुठए धूले ॥ २ ॥

कत सत रमनि मनहि नहि आने ।

किए विप दाह समय जल दाने ॥ ४ ॥

मदन-भुजंगम दसल कान ।

बिनहि अमिय-रस कि करब आन ॥ ६ ॥

कुलधति धरम काच समतूल ।

मदन दलाल भेल अनुकूल ॥ ८ ॥

आनल घेचि नीलमनि हार ।

से तुहु पहिरवि करि अभिसार ॥ १० ॥

नील निचोल भापवि निज देह ।

जनि धन भीतर दामिनि-रेह ॥ १२ ॥

चौदिक चतुर सखी चलु सग ।

आजु निकुंज करह रस-रंग ॥ १४ ॥

१-पेखल=देखा । कालिन्दी=यमुना । कूले=किनारे में । २-विलुठए=लोठ रहे हैं । ३-कत=कितने । सत=सौ । आने=लाता है । ४-विप की ज्वाला के समय नद के दान से क्या—विप की ज्वाला कहीं पानी में शांत होती है ? ५-भुजंगम=मय । दसल=काटा । कान=कृष्ण । ६-अमिय=अमृत । कि करब=क्या करेगा । आन=अन्य । ८-समतूल=समान । १०-से=वह । अभिसार=गुप्त मिलन, प्रियतम के पास गमन । ११-निचोल=चोली । १२-धन=प्रेम । दामिनि=विजयिनी । रेह=रेखा । चौदिक=चारों ओर ।

(४६)

आज पेपल नन्द किसोर ।
 केलि विलास सबहु अर तेजल तेजे
 अह निसि रहत विमोर ॥२॥
 जय धरि चकित बिलोकि विपिन तट
 पलटि आओलि मुख मोरि ।
 तयधरि मदन मोहन तरु कानन
 लुटइ धीरज पुनि छोरि ॥४॥
 पुनु फिरि सोइ नयन जदि हेरि
 पाओव चेतन नाह ।
 भुजंगिनि दंसि पुनहि जदि दंसय
 तयहि समय रिष जाइ ॥६॥
 अर सुभ सन धनि मनिमय भूपन
 भूपित तनु अनुग्राम ।
 अभिसर बल्लभ हृदय विराजहु
 जनि मनि वाचन दाम ॥८॥

१

२-अहनिंसि=दिन-रात । विमोरि=वेसुष । ३-जयधरि=जयमे ।

४-तय धरि = तबसे । लुटइ=चोरे है । ५-पाओव चेतन = जेन
 पायेगे, सुभ में जायेगे । नाह=नाथ (कृष्ण) । ६-भुजंगिनि=मायिनी ।

दंसि=काट कर । तबहि समय=उसी समय—उसी हालत में । उर=

काता है । ८-अभिसर=अभिसार करा—गुप्त मिलन स्थान में जा निवा ।
 बल्लभ=प्यारा, विद्यापति का उपनाम । जनि मनि वाचन दाम=जैसे सोने के
 भागे में मणियों की माला पिराई गई है ।

(५०)

प्रथम सिरिफल गरव गमओलह
जों गुन-गाहक आबे ।
गेल जीवन पुनु पलटि न आबए
केवल रह पछताये ॥ ७ ॥
सुन्दरि, वचन करह समधाने ।
तोह सनि नारि दिवस दस अटलिहुँ
पेसन उपजु मोहि भाने ॥ ४ ॥
जीवन रूप ताबेधरि छाजत
जाबे मदन अधिकारी ।
दिन दस गेले सखि सेहओ परापत
सकल जगत परचारी ॥ ६ ॥
बिद्यापति कह जुयति लाय लह
पडल पयोधर-तूले ।
दिन दिन अगे सखि पेसनि होएबह
घोसनि घोर क मूले ॥ ८ ॥

१-सिरिफल=शीफल, शैल (कुच) । गमओलह=गँका दिया खो दिया । २-जौ=जगतक । आवे=आता है । ३-करह समधाने=समाधान करो, विचार करो । ४-सनि=समान । अटलिहुँ=मैं भी थी । भाने=अनुमान । ५-छाजत=शामना है । ६-गने=जाने पर । सेहओ=बह भी । परापत=भागना । ७-पयोधर-तूले=बुच सराजू पर है । ८-अगे सखि=भरी सखि । होएबह=हो जाओगी । पेमिनि=स्वातिनी की । घोर क=मट्टा । मूले=मूल्य की ।

(५१)

ए धनि कमलिनी सुन हित बानि ।

प्रेम करवि जब सुपुरुष जानि ॥ २ ॥

सुजन क प्रेम हेम समतुल ।

दहइत कनक दिगुन होय मूल ॥ ४ ॥

दूइइत नहि दुट प्रेम अवभूत ।

जइसन थढ़य मृनाल क सूत ॥ ६ ॥

सयहु मतगज मोति नहि मानि ।

सकल कंठ नहि कोइल बानि ॥ ८ ॥

सकल समय नहि रीतु बसन्त ।

सकल पुरुष-नारि नहि गुनयन्त ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति सुन बर नारि ।

प्रेम क रीत अय धुमकह विचारि ॥ १२ ॥

१-धनि=वाना । कमलिनी=पद्मिनी जानि की स्त्री । बानि=वाणी, बात । २-जब प्रेम करो तो सुपात्र हो जान कर । ३-सुजन क=मज्जुन का । हेम=माना । समतुल=समान । ४-दहइत=जलने पर । कनक=सोना । दिगुन=दो गुणा । मूल=मूल्य । ६-जइसन=जिम प्रकार । थढ़य=बढ़ता है । मृनाल क=मृनाल का कमल की डटी का । सूत=सूत्र, धागा भीतर का रेशा । ७-मतगज=दासी । मोति=मुत्त । ८-कोइल-बानि=झोयल की काकली । १०-सभी स्त्री और पुरुष गुणवन्त ही नहीं होने । धाय की एक कहावत इसी भाव की है—

सदा न बाग्या मुलबुल बोल सदा न बाग बहारा ।

सदा न ज्वानी रहनी यारो, मदा न सोइवन यारो ॥

राधा की दूती

(५२)

सुनु मनमोहन कि कहय तोय ।

मुगुधिनि रमनी तुअ लागि रोय ॥२॥

निसि दिन जागि जपए तुअ नाम ।

थर थर काँपि पडए सोइ ठाम ॥४॥

जामिनि आध अधिक जब होइ ।

धिगलित लाज उठए तब रोइ ॥ ६॥

सखिगन जत परयोधए जाय ।

तापिनि ताप ततहि तत ताय ॥ ८॥

कह कधि सेखर ताक उपाय ।

(रचइत तयहि रयनि यहि जाय ॥ १० ॥

१-कि = क्या । कहय = कह । तोय = तुम्हें । २-मुगुधिनि = मुग्धा, प्रेमासक्त । रमनी = रमणी, स्त्री । तुअलागि = तेरे लिये । रोय = रोती है । ४-पडए = (गिर) पड़ती है । ठाम = जगह । ५-जब रात आधी से अधिक बीत जाती है । ६-धिगलित लाज = लाज से रहित होकर । उठए तब रोइ = तब रो उठती है । ७-जत = जिनमें । परयोधए = प्रबोध करती है, समझाती है । ८-तापिनी = ज्वाला से जली हुई । ताप = ज्वाला से । ततहि तत = उतनाही उतना । ताय = जलती है । (वह विरह-ज्वाला से) बली हुई बाण ज्वाला से और भी अधिकाधिक जलती है । ९-ताक = उम्का । १०-बहि जाय = बह जाती है, बीत जाती है ।

(५३)

माधव ! कि कहव से विपरीत ।
तनु भेल जरजर भामिनी अन्तर
चित यादल तसु प्रीत ॥ २ ॥
निरस कमल मुख कर अवलम्बइ
सरि माझ बइसलि गोइ ।
नयन क नीर थीर नहि चाँधइ
पंक कयल महि रोइ ॥ ४ ॥
मरम क बोल, धयन नहि बोलए
तनु भेल कुहु-ससि पीना ।
अयनि उपर धनि उठए न पारइ
धएलि भुजा धरि दोना ॥ ६ ॥
तपत फनक जनि काजर भेल तनु
अति भेल बिरह-हुतासे ।
कवि विद्यापति मन अभिलासत
कान्हु चलइ तसु पासे ॥ ८ ॥

२-जरजर = जजर, अत्यन्त क्षीण । भामिनी = स्त्री । अन्तर = भीतर ।
बादल = बढ़ गया । तसु = उसी प्रकार । ३-निरस = रसहीन, उदास ।
कर = हाथ । अवलम्बइ = अवलम्बन करके । माझ = मध्य । बइसलि ॥
बैठी । गोइ = छिपाकर । ४-नयन क नीर = आँसू । थीर = स्थिरता ।
५-मरम क बोल = मम-कथा, हृदय के भाव । कुहु-ससि = अमावास्या का
चंद्र । ६ उठए न पारइ = उठ नहीं सकती । पृथ्वी पर चढ़ वाला स्वयं उठ
नहीं सकती (मछियाँ) उस दोना को भुजा पक-वर (भरती पर से)

(५४)

लोट्टइ धरनि, धरनि धरि सोइ ।

खने खन सांस खने खन रोइ ॥ २ ॥

खने खन मुरछइ कंठ परान ।

इथि पर की गति दैव से जान ॥ ४ ॥

हे हरि पेखलौं से घर नारि ।

म जीवइ बिनु कर परस तोहारि ॥ ६ ॥

केओ केओ जपण बेद दिठि जानि ।

केओ नय ग्रह पुज जोतिअ आनि ॥ ८ ॥

केओ केओ कर धरि धातु बिचारि ।

बिरह बिखिन कोइ लखण न पारि ॥ १० ॥

उठाती है । ७-तपन = तप्त तपाये हुए । कनक = सोना । जनि =
समान । हुनास = अग्नि । ८-तनु = उसके ।

१-लोट्टइ = लोटती है । धरनि = पृथ्वी । सोइ = वह । २-खने-
खन = क्षणक्षण में । सांस = उसमें लेती है । रोइ = रोती है । ३-खण-
क्षण में वह मूर्छित हो जाती है और प्राण कण्ठ तक चले आते हैं (मृत
प्राय हो जाती है) । ४-इथि = इसके । पर = बाद । की = क्या । मे =
वह । ५-पेखलौं = (मने) देखा । ६-जीवइ = जीवेगी । करपरस = हाथ
का स्पर्श । ७-केओ = कोई । दिठि = नजर लगाना । ८-पुज = पूजता
है । जोतिअ = ज्योतिषी । आनि = ले आकर बुलाकर । ९-धातु = नाड़ी ।
१०-बिरह बिखिन = बिरह बिचीख बिरह से चीख दुर्द । लखण न पारि =
लख नहीं सकता ।

(५५)

अभिरल नयन गरण जल धार ।

नव जल बिंदु सहष के पार ॥ २ ॥

कि कहव सजिनी तकर कहिनी ।

कहण न पारिअ देखलि जहिनी ॥ ४ ॥

कुच जुग ऊपर आनन हेर ।

चाद राहु डर चढल सुमेर ॥ ६ ॥

अनिल अनल यम मलयज बीष ।

जेहु छल सीतल सेहु भेल तीख ॥ ८ ॥

चाद सतावण सविता हु जीनि ।

नहि जीवन एकमत भेल तीनि ॥ १० ॥

किछु उपचार मान नहि आन ।

ताहि घेयाधि भेषज पैचवान ॥ १२ ॥

तुअ दरसन बिनु तिलओ न जीव ।

जइओ कलामति पीउख पीव ॥ १४ ॥

१-अभिरल = लगातार । गरण = गिरती है । २-नव-जल-बिंदु =

नवीन जल के कण आत । ३-तकर = उसका । कहिनी = कहानी ।

४-जहिनी = जैसी । ५-आनन = मुख । ७-अनिल = वायु । अनल =

आग । यम = बमन करती है अग्रणी है । मलयज = चन्दन । बीष =

विष । ८-छल = था । तीख = तीक्ष्ण । ९-मविताहु = सूर्य । जीनि =

जैसे, जीतकर, बढ़कर । १०-एकमत भेल तीनि = तीनों (वायु चन्दन

चंद्र) एकमत हुए । ११-उपचार = औषधादि । १२-भेषज = दवा ।

पैचवान = कामदेव । १३-निलमा = निनमात्र भी, एक छप भी ।

(५६)

लाखे तरुशर कोटिहि लता
जुयति कत न लेख ।
सब फूलमधु मधुर नही
फूलहु फल रिसेख ॥ २ ॥
जे फुल भमर निन्दहु सुमर
वासि न बिसरए पार ।
जाहि मधुकर उडि उडि पड
सेहे संसार क सार ॥ ४ ॥
सुन्दरि, अग्रहु घनन सुन ।
सबे परिहरि तोहि इछ हरि
आपु सराहहि पुन ॥ ६ ॥

जीव = जीवैगो । १४-पीउख = पीयूष = अमृत ।

१-२-तरुशर = तरुवर, वृक्षश्रेष्ठ । कत = कितना । न लेख = सख्या नहीं, अमल्य । मधु = पुष्परस । मधुर = मीठा । लाखों पेड़ हैं वराहों लतायें हैं, (यों ही) कितनी युवतियाँ हैं (जिनकी) गिनत नहीं । निन्दु सभी फूलों का रस मीठा नहीं होता—फूलों में भी जो विशेष फूल होते हैं । जे = जिस । भमर = मौरा । निन्दहु = निन्द भी । सुमर = स्मरण करता है । वासि = गध । न बिसरए पार = न विस्मरण कर सकता, नहीं भूल सकता । ४-मधुकर = मौरा । पड पड़ना, बैठना । से हे = वही । जिसपर मौरा उड़-उड़ कर बैठे, वह (फूल) समार का सार है—ससार में खिलता वही का सार्थक है ।

तोहरे चिन्ता तोहरे कथा
 सेजहु तोहरे चाव ।
 सपनहु हरि पुनु पुनु कए
 लए उठए तोर नाव ॥ ८ ॥
 आसिंगन दए पाहु निहारए
 तोहि बिनु सुन कोर ।
 अकथ कथा आपु अवथा
 नयन तेजए नोर ॥ १० ॥
 राहि राही जाहि मुँह सुनि
 ततहि अप्पए कान ।
 सिरि सिय सिंग इ रस जानए
 कथि विद्यापति भान ॥ १२ ॥

४-मुन=मुनो । ६-सवे=सबको । परिहरि=छोड़कर । रद=इच्छा करता है । आपु=अपना । सराहहि=सराहना करो । पुन=पुनः । ७-ताहरे=तुम्हारा । सेजहु=राय्या पर भी । चाव=चाहना । ८-सपनहु=सपने में भी । पुन पुन कए=बारम्बार । लए उठए=ले उठते हैं । नाव=नाम । दए=देने हैं । पाहु=पीछे । निहारए=देखते हैं । सुन=श्रव्य, सात्वी । कोर=गोद । १०-अकथ=न कहने योग्य । आपु=अपनी । अवथा=अवस्था । नोर=आँसू । ११-राहि=राधा । अप्पए=अपण करते हैं । १२-भान=कहते हैं ।

‘A poet is a painter of soul’

(५७)

आसार्य मन्दिर निसि गमावण

सुख न सूत सँयान ।

जयन जतय जाहि निहारण

ताहि ताहि तोहि भान ॥ २ ॥

मालति ! सफल जीयन तोर ।

तोर चिरहे भुञ्जन भम्मण

भेल मधुकर भोर ॥ ४ ॥

जातकि केतकि कत न अछण

सबहि रस समान ।

सपनहु नहि ताहि निहारण

मधू कि करत पान ॥ ६ ॥

वन उपयन कुज पुटीरहि

सबहि तोहि निरूप ।

१-आमार्ये = आशा में । गमावण = बिनाता है । सूत = सोता है ।

सँयान = शयन पर, बिछावन पर । २-अखन = अब । जतय = जहाँ ।

जाहि = जिसे । निहारण = देखता है । अब जहा जिसे देखता है,

उसे उसे ही तुम्हें भान करता है—अवश सभी को तुम्हें ही समझना

है । ४-भुञ्जन = भुवन ससार । भम्मण = भ्रमण करने । मधुकर =

भारा । भोर = विमोर, व्याकुल या प्रातःकाल । ५-जातकि = पारिजात ।

कत = कितना । अछण = है । ६-स्वप्न में भी उन्हें देखता तक नहीं,

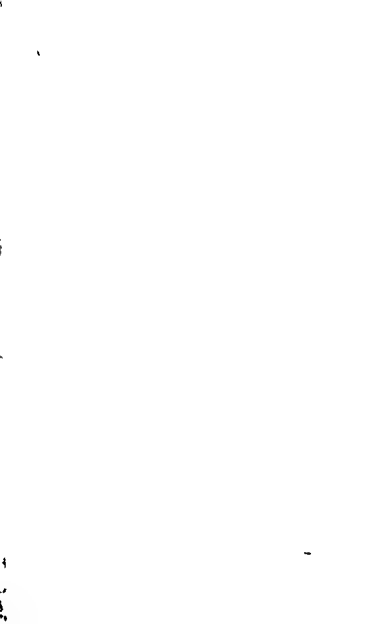
फिर उनका मधु-क्यों पान करने लगता । ७- सबहि = सभी स्थानों में ।

निरूप = निरूपण करता है ।

तोहि बिनु पुनु पुनु मुख्य
 अइसन प्रेम सरूप ॥ ८ ॥
 साहर नवह सउरभ न सर
 गुजरि गीत न गाव ।
 चेतन पापु चिन्ताए आकुल
 हरख सवे सोहाव ॥ १० ॥
 जरु हिरदय जतहि रतल
 से धसि ततही जाप ।
 जइऔ जतने चांधि निरोधिअ
 निमन नीर धिराए ॥ १२ ॥
 ई रस राय सिध सिध जानप
 कवि विद्यापति भान ।
 रानि लखिमा देइ यल्लभ
 सफल गुन निधान ॥ १४ ॥

८-पुनु पुनु = पुन पुन, बारम्बार । मुख्य = मूर्छित होता है ।
 अइसन = इस प्रकार का । ९-साहर = सड़वार । नवह = नया-नव
 कुसुमित फूल । सउरभ = सौरभ, सुगंध । गुजरि = गुंजार करके ।
 गाव = गाता है । १०-चेतन = चैतन्य, जीव । पापु = पापी । चिन्ताए =
 चिन्ता से । हरख सवे सोहाव = आनन्द में ही सब कुछ मुहावा है ।
 ११-जरु = मिसवा । जतहि = जहाँ । रतल = अनुरक्त हुआ ।
 से = सह । धसि = धुमकर । ततहि = वहाँ ही । १२-जरभो =
 यद्यपि । निरोधिअ = रोक रतिये । निमन = नीची जगह । नीर =
 पानी । धिराए = स्थिर होता है ।

नोंक-भोंक



(५८)

कर घर कर मोहे पारे
देव में अपरव हारे, कन्हैया ॥ २ ॥
सरि सर तेजि चलि गेली ।
न जानू कोन पथ भेली, कन्हैया ॥ ३ ॥
हम न जायव तुअ पासे ।
जायव औघट घाटे, कन्हैया ॥ ४ ॥
विद्यापति एहो भाने ।
गुजरि भजु भगवाने, कन्हैया ॥ ५ ॥

- १-कर = हाथ । घर = घरकर । कर = करो । पारे = उसपार ।
२-देव = दृष्टी । में = म । हारे = माना । ३-तेजि = छाड़कर ।
चलि गेली = चली गई । ४-न जानू = न मालूम । कोन पथ भेली =
किस रास्ते गई । ५-जायव = जाऊँगी । तुअ = तेरे । पासे = निज ।
६-औघट घाटे = जिस पथ से काँटे जाता जाना न ह । ७-एहो = यह ।
भाने = कहते हैं । ८-गुजरि = बाला । गुजरि ।

इस पद में प्रेमिका के हृदय का छासा चित्र विद्यमान है । जहा एक ओर बहती है—‘हम न जायव तुअ पासे’ तो दूसरी ओर मुँह में निक्कलता है—‘जायव औघट घाटे’—माने जा रही हूँ निश्चित स्थान में ही—अर्थात् चला उस एकांत स्थान में बेलि ब्रीड़ा करें । यों ही इसके अन्य पदों में भी अपूर्व बारीक भाव विद्यमान है । समस्त पाठ्य गौर करें ।



Poetry has something divine in it —Bacon

(५६)

कुंज भवन सयँ निकसलि रे
 रोकल गिरिधारी ।
 एकहि नगर बस माधव हे
 जनि कर बटमारी ॥ २ ॥
 छाडु कन्हैया मोर आचर रे
 फाटत नव-सारी ।
 अपजस होएत जगत भरि हे
 जनि करिअ उधारी ॥ ४ ॥
 सग क सखि अगुआइलि रे
 हम एकसरि नारी ।
 दामिनि आए तुलाएल हे
 एक रात अंधारी ॥ ६ ॥
 भनहि विद्यापति गाओल रे
 सुनु गुनमति नारी ।
 हरि क संग किछु डर नहि हे
 तौह परम गमारी ॥ ८ ॥

*-सयँ = से । निकसलि = निकली । रोकल = रोक दिया । १-
 बस = रहते हैं । जनि = जन । बटमारी = टपेती राखनी । २-
 नव-सारी = नवीन साड़ी । उधारी = नश । ५-मग ब = माय । ६-
 अगुआइलि = आग गई । एकसरि = अकली । ६-दामिनि आए तुला
 ए = रिजली भी चमकने लगी—मेरा था गया । अंधारी = अंधेरी रूप
 पक्ष की । ८-हरि क = श्रीकृष्ण के । गमारी = गंवारी, बेवकूफ ।

(६०)

तुअ गुन गौरव सील सोभाव ।

सुनि कए चढलिहुँ तोहरि नाच ॥२॥

हठ न करिअ कान्हु कर मोहि पार ।

मग तहँ बड थिरु पर उपकार ॥४॥

आइलि सयि सय साथ हमार ।

से सय भेलि निकहि विधि पार ॥६॥

हमरा भेलि कान्हु तोहरोअ आस ।

जे अंगिरिअ ता न होइअ उठास ॥८॥

भल मन्द जानि करिअ परिनाम ।

जस अपजस दुइ रहत ए ठाम ॥१०॥

हम अयला कत कह्य अनेक ।

आइति पड़ले युमिअ विवेक ॥१२॥

तोहँ पर नागर हम पर नारि ।

काँप हृदय तुअ प्रकृति विचारि ॥१४॥

अनइ विद्यापति गाये ।

राजा सिरसिध रूपनरायन इ रस सकल से पावे ॥१६॥

२-सुनिवप = सुनकर । ४-मग तहँ = समझे । थिर = है ।

६-भेलि = हुई । निकहि विधि = अच्छी तरह से । ८-जे = जो कुछ ।

अंगिरिअ = अंगीकार करना । ता = उसमें । होइअ उठास = उदामी

होना, मुवरना । ११-कुअ = कितना । १२-आइत पड़ले = आ पड़ने

पर ही, अवसर आने पर ही । युमिअ विवेक = ध्यान की परत होती है ।

१३-पर नागर = अन्य पुरुष । १४-प्रकृति = स्वभाव ।

(६१)

नाम डोलाव अहीरे
जिवइत न पाओव तीरे
गर नीरे लो ।

सेया न लेअण मोले
हँसि हँसि की दहु बोले
जिव डोले लो ॥ २ ॥

किए बिके पेलिहु आप
बेढलिहु मोहि बड सापे
मोरे पापे लो
करितहुँ पर-उपहासे
परिलिहुँ तन्हि बिधि फाँसे
नहि आसे लो ॥ ४ ॥

न घूकसि अवूक गोआरी
भजि रह देव मुरारी
नहि गारी लो ।

कवि विद्यापति भाने
नृप सिवसिंघ रस जाने
नव कान्हे लो ॥ ६ ॥

१-जिवइत = जीवती हुई । खर नीरे = तीरछ धारा । २-मोले =
मूल्य में, रुपैया पैसा में । की दहु = न जाने क्या ? ३-किए = क्यों ।
पेलिहु = मैं आई । बेढलिहु = आ घेरा । ४-तन्हि = उसी से । ५-
गोआरी = स्वामिन । गारी = गाली । ६-नव = नवीन, युवक ।

सखी शिक्षा

राधा को शिक्षा

(६२)

प्रथमहि अलक तिलक लेव साजि ।

चंचल लोचन काजर आँजि ॥ २ ॥

जाणय वसन आँग लेव गोप ।

दूरहि रहव तँ अरथित होय ॥ ४ ॥

मोरि घोलव सखि रहय लजाय ।

कुटिल नयन देव मदन जगाय ॥ ६ ॥

भाँपय कुच दरसाओय आध ।

खन खन सुदृढ करव निरि बाँध ॥ ८ ॥

मान करय किछु दरसव भाव ।

रस राखय तँ पुनु पुनु आय ॥ १० ॥

हम कि सिखाओरि अओ रस रग ।

अपनहि गुरु भय कहत अनग ॥ १२ ॥

भनइ विद्यापति इ रस गाव ।

नागरि कामिनि भाव बुझाय ॥ १४ ॥

१-अलक=वेश । तिलक - टीका बँदी । लेव=लेना । २-आँजि : लगा लेना । ३-वसन=वपडा । आँग = अंग । लेव गोप = छिपे लेना । ४-नै=इसमे । अरथित = अव्यक्त चाहक । ५-मु मोड़कर घाते करना और बार-बार लज्जित होना । ६-कुटिल = टेढ़ा भाँपव = धँकना । निवि-बाँध=नीबी का बंधन । ८-मान करने बुझ भाव प्रकट करना । ११-अओ=और । १२-अनग=कामदेव । १४-नागरि कामिनि=मुक्तुग स्त्री ।

(६३)

प्रथमहि सुन्दरि कुटिल कटाख ।

जिच जोखे नागर दे दस लाख ॥ २ ॥

केओ दे हास सुधा सम नीक ।

जइसन परहोक तइसन वीक ॥ ४ ॥

सुनु सुन्दरि नय मदन पसार ।

जनि गोपह आओय बनिजार ॥ ६ ॥

रोस दरस रस राख गोप ।

धएले रतन अधिक मूल होय ॥ ८ ॥

भलहि न हृदय बुझाओय नाह ।

आरति गाहक महंग बेसाह ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति सुनहु सयानि ।

सुहित बचन राखय हिय आनि ॥ १२ ॥

१ २ जोखे = तौलकर । पहले, हे सुन्दरि, कुटिल कगच करना जिसके (मूल्य रूप में) नागर दस लाख प्राण तौलकर देगा । ३ — केओ = जोई । हास = हँसी । । नीक = अच्छा । ४ — परहोक = बोहनी । बीक = बित्री होती है । ५ — मदन पसार = कामदेव की दुकान । ६ — गोपह = छिपाओ । बनिजार = व्यापारी । ७ — रोस प्रगल्भ प्रेम छिपाकर रखना क्योंकि धरे हुए रस की कीमत अधिक होती है । ८ — भलहि = अच्छी तरह । १० — आरति = आर्त जाग्रदपूज । महंग = महंगा । बेसाह = खरीद करता है । १२ — सुहित = सुदृढ़ मित्र । हिय = हृदय ।

(६४)

सुनु सुन प सखि वचन विसेस ।

आहु हम देब तोहे उपदेस ॥२॥

पहिलहि वेठवि मयनक-सोम ।

हेरइत पिया मुख मोडवि गीम ॥३॥

परसइत दुहु कर वारवि पानि ।

मौन रहवि पहु करइत घानि ॥६॥

जब हम सौंप करे कर आपि ।

साधस धरवि उलटि मोहे काँपि ॥८॥

विद्यापति कत इह रस ठाठ ।

भए गुरु काम निखाओ पठ ॥१०॥

३—सयनक सोम = राध्या की एक ओर । ४—गीम = प्रीति गर
दन । जब प्रीति मुख देखने लगे तो अपनी गद्दन (दूसरी ओर) मोड़
लेना । ५—परसइत = स्पर्श करने । कर = हाथ । वारवि = वारण
करना, मना करना । पानि = हाथ । जब वे अग स्पर्श करने लगे तो
दोनों हाथों से उनका हाथ को रोकना । ६—पहु = प्रभु प्रीति । करइत
घानि = बातचीत करते समय । ७—८—करे = हाथ में । कर = हाथ ।
आपि = अपना कर । साधस = समय । जब मैं उनका हाथ मैं तुम्हारा हाथ
अपण कर तुम्हें सौंपूँगी तो तुम सन्नम उलटकर बाँपते हुए मुझे पकड़ना
९—रस ठाठ = रस की रीति । मण = होकर ।

(६५)

परिहर, ए सखी, तोहे परनाम ।

हम नह जायव से पिआ-ठाम ॥२॥

वचन चातुरि हम म्छि नहि जान ।

इ गित न वूझिण न जानिण मान ॥३॥

सहचरि मिली बनावए भेस ।

वाँधए न जानिण अप्पन केस ॥४॥

कभु नहि सुनिण सुरत क यात ।

कइसे मिलव हम माधव साथ ॥५॥

से घर नागर रसिक सुजान ।

हम अथला अति अलप गेआन ॥६॥

विद्यापति कह कि बोलए तोए ।

आजुक मीलल समुचित होए ॥७॥

१—ए सखि, (इन बातों को) छोड़ो मैं तुम्हें प्रणाम करती हूँ ।

२—ठाम = स्थान । ४—इ गित = इशारा । न मैं इशारा समझती हूँ और न मान करना जानती हूँ । ५—सहचरि = सखियाँ । बनावए भेस = भेष बनाती है—मेरा आगर कर दती है । ६—अप्पन = अपना ।

७—सुरत क बात = वाम-श्रीश की बातें । ८—कैसे = किस प्रकार । ९—नागर = चतुर । १०—अलप = अल्प, थोड़ा । ११—तोए = तुम ।

१२—आजुक = आज का । मीलल = मिलना ।

शेर दर अल है वही हसरत

मुनवे ही दिल में जो उतर जाये ।

(६६)

काहे डरसि सखि चलु हम सग ।

माधव नहिं परसर तुअ अग ॥ २ ॥

इह रजनी फुल-कानन माभ ।

के एक फिरत साजि यहु साज ॥ ३ ॥

कुसुम क घोर धनुष धरि पानि ।

मारत सर वाला जा जानि ॥ ६ ॥

अतए चलह सपि भीतर कुज ।

जहाँ रह हरी महायल पुज ॥ ८ ॥

एत कहि आनल धनि हरि पास ।

पूरल बल्लभ सुख अभिलास ॥ १० ॥

१—काहे=किसलिये । डरसि=डरती है । २—परसर=स्पर्श करेगे । ३—६—रजनी=रात । फुल-कानन=पुष्प-वन । माभ=मैं । के=कौन । एक=अकेले । कुसुम क=फूला का । धनुष=धनुष । पानि=हाथ । इस रात में पुष्प-वन में, यों नाना प्रकार शृङ्गार करके कौन अकेली घूमती है ? (अरी, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि) फूलों का कठोर धनुष हाथ में धरकर (कामदेव रूपी तीरन्दाज) वाला बियों को खोज-राज कर बाण मारता है । ७—अतए=अतएव , इसलिये । ८—दरो=श्रीकृष्ण । महायलपुज=बड़े बलराती । महायलपुज कहकर सखी भैयाँ दती है कि श्रीकृष्ण तुम्हें काम के बाण की चोट से बचावेंगे । ९—एत=इतना । आनल=लाइ । धनि=वाला । पास=निज । १०—पूरल=पूरा हुआ । बल्लभ=विवापति का उपनाम ।

(६७)

परिहर म्रन किहु ॥ कर तरास ।

साधस नहिं कर, चल पिय पास ॥ २ ॥

दुर कर दुरमति कहलम तोप ।

विनु दुख सूख कहा नहि होय ॥ ४ ॥

तिल आध दूख जनम भरि सूख ।

इथे लागि धनि किए होइ विमूख ॥ ६ ॥

तिला एक मूनि रहु दु नयान ।

रोगि करय जइसे औप ३ पान ॥ ८ ॥

चल चल सुन्दरि करह सिंगार ।

विद्यापति कह एहि से विचार ॥ १० ॥

१—परिहर=दोषो । तरास=ग्राम डर । १—साधस=भय । २—

दुर कर=दूर करो । दुरमति=दुर्बुद्धि । कहलम=मैं कहती हू । तोप=

तुम्हें । ५—तिल आध=(मैथिली प्रयोग) एक चण के लिए । ६—

इथे=इसलिये । किए=क्यों । होइ=होती हो । विमूख=विमुख,

विपत्त । ७—मूनि रहु=मूढ़ रखो । दु=दो । नयान=आँखें । ८—

जइसे=जिस प्रकार । पान=पीना । ९—करह=करो । एहि से=

यह ही ।



A poet is not only a dreamer of dreams his heart is the mirror of the world's emotions his songs of gladness are the echoes of the world's laughter his songs of sorrow reflect the tears of humanity—Sar jini

श्रीकृष्ण को शिक्षा

(६८)

हमे दरसइत कतहुँ येस करु

हमे हेरइत तनु भाँप ।

सुरत सिंगारि आज धनि आओलि

परसइत थर थर काँप ॥२॥

सुनु हे कान्हू कहिए अयधारि ।

सकल काज हम बुकल बुभाएल

न बुभल अन्तर नारि ॥ ४ ॥

अभिनय काम नाम पुनु सुनइत

रोपत गुन दरसाइ ।

अरि सम गंजए मन पुनु रंजए

अपन मनोरथ साइ ॥६॥

अन्तर जीउ अधिक करि मानए

बाहर न गन तरासे ।

कह कवि-सेयर सहज विषय-रत

विदगधि केलि विलासे ॥ ८ ॥

१—दरसइत = दिया करके । कतहुँ = कितना ही । येस करु = श्रृंगार करना । हेरइत = देखते । भाँप = धाप लेना । २—सुरत = काम कीड़ा । ३—अयधारि = निश्चय करके । ४—बुभल बुभाएल = समझा दिया है । अन्तर = हृदय । ५—अभिनय = नवीन । रोपन = रोप नवत करती है । गुन दरसाइ = गुण दिखाकर बना प्रकट करके । चूकि

(६७)

सुन सुन सुन्दर कन्हारै । तोहे सौंपल धनि राई ॥ २ ॥
कमलिनि कोमल कलेवर । तुहु से भूपल मधुकर ॥ ४ ॥
सहज करवि मधु पान । भूलह जनि पंचवान ॥ ६ ॥
परबोधि पयोधर परसिह । कुंजर जनि सरोरुह ॥ ८ ॥
गनइत मोतिम हारा । छले परसव कुच भारा ॥ १० ॥
न बुझए रति रस रंग । यन अनुमति खन भंग ॥ १२ ॥
सिरिस कुसुम जिनि तनु । थोरि सहघ फुल धनु ॥ १४ ॥
विद्यापति कवि गाव । दूतिक मिनति तुष पाव ॥ १६ ॥

बिल्कुल ही नवीना है अतः, काम का नाम सुनते ही बला प्रकट करती हुई क्रोधित हो उठती है । ६—गजए=गजना करती है । रजए=प्रसन्न करती है । साइ=बह । ७—हृदय से तो (तुम्हें) प्राणों से अधिक चाहती है किन्तु बाहर टर से प्रगट नहीं करती ।

२—धनि=बाला । राई=राधा । ३—कलेवर=शरीर । ४—भूपल=भूला हुआ । मधुकर=मौघ । ५—सहज=स्वामादिक ढंग में धीरे धीरे । करव=करना । जनि=नहीं । पंचवान=कामदेव । ७—परबोधि=प्रबोध कर, समझा-बुझाकर । पयोधर=कुच, स्तन । परसिह=स्पर्श करना । ८—कुंजर=हाथी । जनि=नहीं । सरोरुह=कमल । जिस प्रकार हाथी कमल का सारना है उस प्रकार नहीं । ९—गनइत=गिनते हुए । १०—छले=दल में । १२—अनुमति=सखी होना । १३—सिरिस-कुसुम=एक कोमल फूल । जिनि=प्रेमा । १४—फुलधनु=राम का धनु । १६—मिनती=मिनती । पाव=पैर ।

(७०)

प्रथम समागम भुखल अनङ्ग ।

धनि उल जानि करव रतिरङ्ग ॥२॥

हठ करव अति आरति पाप ।

घडहु भुखल नहि दुहु कर खाए ॥४॥

चेतन कान्हु तोहहि अति आधि ।

के नहि जान महत नर हाथि ॥६॥

तुअ गुन गन कहि कत अनुबोधि ।

पहिलहि सबहि हललि परबोधि ॥८॥

हठ नहि करव रती परिपाटि ।

कोमल कामिनि विघटति साटि ॥१०॥

जाये रमस सह तारे तिलास ।

विमति बुझिअज थं न जाएव पास ॥१२॥

धसि परिहरि नहि धरयिए थाहु ।

उगिलल चांद गिलए जनि राहु ॥१४॥

भनइ विद्यापति कोमल-क्रांति ।

कौसल सिरिस सुमन अलि भांति ॥१६॥

१—जनग = कामदेव । २—आरति पाप = व्याकुलता में पाकर ।

४—कत = क्षीय से । ५—चेतन = चतुर । आधि = अति, हो । ६—

महत = महाव्रत । नर = नया (प्रभाया हुआ) । ७—अनुबोधि =

समझा-बुझाकर । हललि = लार । ८—रती परिपाटि = रति-क्रोड़ा के तंग ।

१०—विघटति साटि = राखति घटगी=पीड़ा होगी । १२—रमस = काम

क्रोड़ा । सह = सहन करे । १४—विमति = राजी नहा । जयें = यदि ।

(७१)

बुभुव छयलपन आज ।

राहि मनि रतने आनलि अति जतने

वचि सय रमनि समाज ॥२॥

सिरिस कुसुम जनि अति सुकुमार धनि

आलिंगव दूढ अनुरागे ।

निर्भय करव केलि केह नहि बूझे गेलि

भौर भरे माँजरि न माँगे ॥३॥

धिरीतिक घोलि नियरे यहसाओर

नख हनि आनय कोल ।

नहि नहि कर धनि कपट भुलव जनु

यदि कह कातर कोल ॥४॥

१३-एक बार छोड़कर पुन भ्रमर दोबारा आगे बढ़कर उसकी ओर
मन पकड़ना । १४=गिलए=निगल जाना । १६=नित प्रसार भौर बने
बौराल से सिरिस के फूल का रस चूमता है उमी प्रकार ।

१—छयलपन=रसिकता । २—राहि=राधा । मनि रतने=
रत्नों में मणि । आनलि=लाइ । वचि=बोल करके । ३—जनि=
पेमा । आलिंगव=आलिंगन करना छापी लगाना । ४—निर्भय होकर
कलि करना यह किसे नहीं मान्य है कि भौर व शरीर व भौर से बानस
मजरी नहीं टूटती । ५—नियरे=निकट । नख हनि आनय कोल=नख
से हनन का—नख से कुचों को छत-विछन कर—उमे गोदी में बैठा लेना ।
६—नहि नहि कर धनि=बह बाला-यदि नहीं नहीं करे । कातर कोल=
दोन बचन ।

मिलन

(७२)

सुन्दरि चललिहु पहु-घर ना ।

चहुदिम ससि सव कर घर ना ॥ २ ॥

जाइतहु लागु परम डर ना ।

जइसे ससि काँप राहु डर ना ॥ ४ ॥

जाइतहि हार दुटिण गेल ना ।

भूषन उसन मलिन मेल ना ॥ ६ ॥

रोए रोए काजर दहाए देल ना ।

अदकँहि सिंदुर मेटाए देल ना ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति गाओल ना ।

दुख सहि सहि सुख पाओल ना ॥ १० ॥

१—चललिहु = चली । पहु = प्रभु । २—चहुदिस = चारो ओर ।

का=हाथ । ३—जईतहु—जाने में । ४—ससि = चंद्रमा । ५—रोए=

रोकर । दहाए देल = दहा दिया । अदकँहि = भान्क से ही, डर से ।

६१

म कवि बध्यने सदा रमते यत्र भारती ।

रसभावगुणैभूतैरनवारैगुणोदयै ॥

—चेकटाचार्य ।

(७३)

कौतुक चललि भवन कप सजनि गे
 संग दस, चौदिस नारी ।
 बिच बिच सोभित सुन्दरि सजनि गे
 जेहि घर मिलत मुरारी ।
 लप अमरन कप पोडस, सजनि गे
 पहिर उतिम रंग चीर ।
 रसि सकल मन उपजल, सजनि ग
 मुनिहुक चित नहि थीर ॥ ४ ॥
 नील बसन तन घेरलि सजनि गे
 सिर लेल घोंघट सारि ।
 लग लग पहुँके खलइत सजनि गे
 सकुचल अकम नारि ॥ ६ ॥

१ कौतुक = कुतूहल युक्त होकर । चौदिस = चारो ओर । २—
 बिच बिच = मध्य भाग में । ३—अमरन = आभरण गहने । कप =
 पोडस = सालाह शृंगार करके । उतिम रंग = अच्छे रंग का । चीर =
 साड़ी । ४—उपजल = (काम) उत्पन्न हुआ । मुनिहुक = ऋषियों का भी ।
 थीर = स्थिर । ५—नील बसन = नीले रंग का वस्त्र । तन घेरलि = शरीर
 को लपेटे हुई । घोंघट = घुघट । सारि लेल = मैंभाल लिया । ६—लग =
 निकट । पहुँके = प्रीतम । सकुचल = सकुचा गया । अकम = हृत्प्य ।
 प्रीतम के निकट जाने में बाला का हृदय सकुच गया ।

सखि सब, देल भवन कए, सजनि गे
 घुरि आइलि सभ नारि ।
 कर धए, लेल एहु लग कए, सजनि गे
 हेरए बसन उधारि ॥ ८ ॥
 भए घर सनमुख बोलइ सजनि गे
 करे लागल सविलास ।
 नव रस रीति विरीति भेल सजनि गे
 दुहु मन परम हुलास ॥ १० ॥
 विद्यापति कवि गाओल सजनि गे
 ई थिक नव रस रीति ।
 बयस जुगल समुचित थिक सजनि गे
 दुहु मन परम विरीति ॥ १२ ॥

७—देल भवन कए = भवन कए देल = घर में ला रक्खा । घुरि
 आइलि = लौट आई । ८—कर धए = हाथ धरकर । एहु लग कए लेल =
 प्रीतिम निकल ले आवे । हेरए = देखता है । बसन = वस्त्र (भवत) ।
 उधारि = उधारकर — (भवत) हटाकर । ९—भए = होकर । कर =
 प्रीतिम । करे लागल = करने लगा । सविलास = काम-क्रीड़ा । १०—
 नव = नवीन । हुलास = आनन्द । ११—ई = यह । थिक = है । १२
 बयस = अवस्था । जुगल = दोनों की । समुचित = योग्य ।



‘ Poetry is the spontaneous over flow of
 powerful feelings ’

(७४)

अहे सखि अहे सखि लप जनि जाह ।

हम अति धालिक आकुल नाह ॥ २ ॥

गोट गोट सखि सख गेलि बहराय ।

बजर कियाड पहु देलहि लगाय ॥ ४ ॥

तेहि अउसर पहु जागल कन्त ।

चोर संभारलि जिउ भेल अन्त ॥ ६ ॥

नहिं नहिं करण नयन डर नोर ।

कांच कमल भमरा भिककोर ॥ ८ ॥

जइसे डगमग नलनिक नीर ।

तइसे डगमग धनि क सरीर ॥ १० ॥

भन विद्यापति सुनु कबिराज ।

आगि जारि पुनि आगि क काज ॥ १२ ॥

१—लप जाह — ले जाओ । जनि = मत, नहीं । २—धालिक =
बालिका । आकुल = घबराया हुआ । नाह = नाथ प्रीतम । ३—गोट
गोट = एक-एक कर । गेलि = गई । बहराय = बाहर होना । ४—बजर = बज
तुल्य । पहु = प्रभु प्रीतम । देलहि = दिया । ५—पहु = प्रीतम (यहाँ
कामदेव से तात्पर्य है) । ६—बस्त्र हटाने का उपक्रम करने की माँग
हुआ, मेरे प्राण निकल गये । ७—नोर = आँसू । ८—कांच कमल =
अधखिला कमल । भमरा = भौरा । ९—डगमग = हिलता दुबता । नल
निक नीर = कमल के (पत्ते पर का) पानी । १०—धनि क = रत्न के,
बाला के । १२—आग जलाई जानी है, तौभी तो फिर आग की आवश्यक
बता होती है ।

(७१)

कत अनुनय अनुगत अनुबोधि ।

पति-गृह सखिन्हि सुताओलि बोधि ॥ २ ॥

विमुखि सुतलि घनि सुमुखि न होए ।

भागल दल बहुलावए कोए ॥ ४ ॥

यालमु येसनि बिलासिनी छोडि ।

मेल न मिलए देलहु हिम कोटि ॥ ६ ॥

यसन भूपाए यदन धर गोए ।

यादर तर ससि चेकत न होए ॥ ८ ॥

भुज-जुग चाँप जीव जौ साँच ।

कुच कञ्चन कोरी फल काँच ॥ १० ॥

लग नहिं सरए, करए कसि कोर ।

करे कर घारि करहि कर जोर ॥ १२ ॥

यत दिन सैसय लाओल साठ ।

अथ भए मदन पढाओव पाठ ॥ १४ ॥

गुग्जन परिजन दुँअओ नेवार ।

मोहर मुदल अछि मदन भएडार ॥ १६ ॥

भनइ विद्यापति इहो रसमान ।

राए सिचसिब लखिमा विरमान ॥ १८ ॥

१-कत = कितना । अनुनय = विनयी । अनुगत = सुरामर । अनुबोधि = बुझाना । २-सुताओलि = सुतार्द । ३-विमुख = दूसरी तरफ मुँह करके । ४-बहुलावए = फेरना । गोए = कौन । ५-येसनि = येसनी, नामी । बिलासिनी = बिलास करने वाली (बाला) । ६-हिम = हेम =

(७६)

सखि परबोधि सयन तल आनि ।

पिय हिय हरसि धणल निज पानि ॥ २ ॥

छूअइत बालि मलिन भइ गेलि ।

बिधु कोर मलिन कमलनी भेलि ॥ ४ ॥

नहि नहि कहइ नयन भर मोर ।

सूति रहलि राहि सयनक ओर ॥ ६ ॥

आलिंगण नोबि-बँध बिनु रोरि ।

कर कुच परस सेह भेल मोरि ॥ ८ ॥

आचर लेइ यदन पर भाँप ।

थिर नहि होअइ घर घर काँप ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति धीरज सार ।

दिन दिन मदन क होय अधिकार ॥ १२ ॥

सोना । ७-गोए = शिपाकर । ८-बैज = व्यक्त प्रगट । ९-१०-बौं = दबाकर । सौं = सचय करना । कोरी = कोरा, अड़ता । माने के समान कुचों को कंधे आर अड़ते पल समझ कर दोनों हाथों में दबाकर प्राणों के समान नागानी है । ११-लग = निकट । सरण = आती है । कोर = मोड़, गादी । १२-बरे बर बारि = अपने हाथ से (नायक) के हाथ निवारण करती है । करइ करगोर = हाथ जोड़ती है प्रार्थना करती है । सैसव = नचपन । माठ लाओल = सगन निभाई । नेवार = निवारण किया हुआ । मोहर = मुहर देकर ।

१--आनि = लाई । २--बणन = पकड़ा । पानि = हाथ । ३--बालि = बाला । ४--बिधु कोर = चंद्रमा गोद में । ५--

(७७)

प्रथमहि गेलि धनि प्रीतम पास ।

हृदय अधिक भेल लाज तरास ॥ २ ॥

ठाढ़ि भेलन्हि धनि अंगोन डोले ।

१-१ हेम-भरति सयँ मुखहु न धोले ॥ ४ ॥

कर दुहु धर पहु पास बइसाए ।

रसल छलि धनि बदन सुखाए ॥ ६ ॥

मुख हेरि ताकए भमर भाँपि लेल ।

अकम भरि कँ कमलमुखि लेल ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति दह इ सुमति मति ।

रस बूझ हिन्दूपति हिन्दूपति ॥ १० ॥

नार = आसू । ६—सृति रहल = सा रही । राढ़ि = राधा । ओर = सीमा पर (२४ अर) । छारि = खोलना । ८—मेह = बही ।

१—धनि = नायिका । ३—भेलहि = हुए । ४—हेम = सोना । सृनि = समान । ५—पहु = प्रभु, प्रीतम । बइसाए = बैगना है । ६—रसल छलि = रति हुए थी । ७-८—हेरि ताकए = भली भाँति (निरीक्षण करके) देखना । भमर = भौरा [कृष्ण] । अकम = गौद । भरि कँ = भर कर, भौरा (कृष्ण) उसका मुख भली भाँति—आखें गड़ा कर-देखना था अतः नायिका ने उसे ढोंप लिया । निन्तु ज्यों ही उसने अपना मुँह ढोंपा कि भौरा पाकर श्रीकृष्ण ने उसे गाल म ले लिया । ९—दह=दो । विद्यापति कहते हैं कि हे सुमति, अब यह (गति) अनुमति दो—कृष्ण की प्रार्थना स्वीकार करो । हिन्दूपति = राजा शिवसिंह ।

(७८)

जतने आएलि धनि सयन क सीम ।

पाँगुर लिखि पिति नत रहू गीम ॥ २ ॥

सखि हे, पिया पास बैठलि राहि ।

फुटिल भाह करि हेरइछि काहि ॥ ४ ॥

नयि घर नारि पहिल पिया मेलि ।

अनुनय करइत रात आध गेलि ॥ ६ ॥

कर धरि बालमु यइसाओल कोर ।

एक एए कह धनि नहि नहि धोल ॥ ८ ॥

कोर करइत मोडई सय अङ्ग ।

प्ररोध न मानु, जनि बाल भुजङ्ग ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति नागरि रामा ।

अन्तर दाहिन बाहर बामा ॥ १२ ॥

१—सयन क—सीम = शय्या की सीमा में शय्या के निम्न । २—

पाँगुर = पद्मशुलि, पैर की अंगुली । लिखि = पृथ्वी । नत = नीचे झिमे ।

गीम = ग्रीवा, गदन । ३—राहि = राधा । ४—हेरइछि = देखती है ।

५—नयि = नवीना । नवीना सुन्दरी नायिका की प्रथम-प्रथम प्रीतिम म

भेंट हुई । ६—अनुनय = विनय । ७—घर धरि = हाथ धाकर ।

साओल कोर = गोदी में बिठलाया । ८—बाया बस एक 'नहीं' कहा

वचन कहती है—सदा नहीं नहीं बोलती है । ९—गोदी में बिठाने ही

अपने अंगों को छूती है—भावमग्न दिग्गजानी है । १०—जनि = जानों ।

बाल मुनग = बच्चा साँप । १२—अन्तर = हृदय में । दाहिन = अनुमूल ।

बाहर = बाहर से, ऊपर से । बामा = प्रतिकूल ।

(७६)

अधर मँगइते अओंध कर माथ ।

सहण न पार पयोधर हाथ ॥ २ ॥

विघटल नीची कर घर जाँति ।

अँकुरल मदन, धरण कत भाँति ॥ ४ ॥

कोमल कामिनि नागर नाह ।

कओने परि होएत केलि निरयाह ॥ ६ ॥

कुच कोरक तय कर गहि लेल ।

काँच बदरि अरनिम रुचि भेल ॥ ८ ॥

लावण चाहिअ नखर बिसेष ।

भौंहनि आवण चाँद क रेक ॥ १० ॥

तसु मुख सौं लोभे रहु हेरि ।

चाँद भपाय बसन कत बेरि ॥ १२ ॥

१—अओंध कर = नीचे करती है । २—सहण न पार = सह नहीं सकती । पयोधर = कुच । ३—विघटल = टूटी हुई । नीची = नीचा, कुकनी । कर घर जाँति = हाथ से दबा कर रखती है । अँकुरल = अंकुरित हुआ, पैदा हुआ । भाँति = रूप आकार । ४—नागर = चतुर । नाह = नाथ प्रीतम । ६—कओने परि = किस प्रकार । ७—कुच कोरक = कुच की कोर । ८—बदरि = बैर (छाटे छोटे कुच की उपमा) । अरनिम रुचि = लाल रंग क । ९—१०—नखर = नख की रेखा । बिसेष = उत्तम, सुन्दर । (जब प्रीतम) कुच पर नख-रेखा दना चाहता है, तो नायिका की भव्ती पर [चन्द्र की रेखा] टिकापन आ जाता है । ११—तसु = उमका । १२—चाँद = चन्द्रमा (मुख) । बमन = कपड़ा (अचल) ।

(८०)

जखन लेल हरि कंचुअ अछोडि ।

कत पर जुगति कएल अग मोडि ॥ २ ॥

तखनुक कहिनी कहल न जाय ।

लाजे सुमुखि धनि रहलि लजाय ॥ ३ ॥

कर न मिभाय दूर जर दीप ।

लाजे न मरए नारि कठजोव ॥ ६ ॥

अक्रम कठिन, सहए के पार ।

कोमल हृदय उखडि गेल हार ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति तखनुक भान ।

कओन कहल सयि होएन बिहान ॥ १० ॥

१—जखन = जिस समय । कंचुअ = कंचुकी, चानी । अछोडि
लेल = उतार लिया । २—कत = कितना । पर जुगति = प्रयुक्ति उद्यम ।
३—कहिनी = कहानी, कथा । ४—लाजे = लाज से । ५—कर = हाथ ।
मिभाय = भुगना है । जर = जलना है । दीप = दीपक । दीपव [शब्दा से]
दूर पर जल रहा है, अतः वह भायिका के हाथ से नहा भुगना । की
मुल-गुरुकानिदास के मेघदूत में एक छेमा ही पद्य है जिसका अनुवाद
है—'नीची प्रथी शिथिल करके वस्त्र प्रेमी छुटवे । मुग्धा प्यारी अरु
अपरा काम-ओढ़ा दिगावे ॥ मोरी लजा विवरा तब हा चूए मुणी नतवे ।
पै होत्री है विफल सयि का दीप कैम भुगाने ।' ६—लाज = लाज म ।
कठजोव = कठोर प्राण । ७—अक्रम = अलिखित । सहए के पार = सह
सह राहता है । ८—उखडि गेल = उखड़ गया निराश पड़ गया ।

(८१)

ए हरि बले यदि परसयि मोय ।

तिरि बध-पातक लागय तोय ॥ २ ॥

तुहु रस आगर नागर दीठ ।

हम न बूझिय रस तीत कि मीठ ॥ ४ ॥

रस परसंग उठओ मभु कांप ।

थान हरिनि जनि कपलहि भांप ॥ ६ ॥

असमय आस न पूरय काम ।

भल जन न कर बिरस परिनाम ॥ ८ ॥

विद्यापति कह धुभलहुं साच ।

फलहु न मीठ हाअय कांच ॥ १० ॥

६—तत्पनुफ=उस समय या । १०—विहान=प्रातः काल ।

१—बल=बलपूर्वक । परमवि=स्वरा करना । मोय=मुझे । २—
तिरि-बध पातक=स्त्री के बध का पाप । तोय=मुझे । ३—आगर=अग्रणी
श्रेष्ठ । नागर=चतुर । ४—तीत निकट, बड़बड़ा । कि=या । परसंग=
चर्चा । ५—मभु=मैं । ६—मानों बाण से बेधी जाकर हरिनि उदक
उठनी हो । ७—असमय में करने से न कोई आशा पूरी होती है, और
न कोई काम पूरा होता है । ८—भलजन=अच्छे आदमी । न कर=नहीं
करते । बिरस=रस हीन, बुरा । परिनाम=अनिम फल । अच्छे आदमी
[ऐसा काम] नहीं करते जिसका परिणाम बुरा हो । ९—धुभलहुं=मैं
समझा । १०—कच्चा फल भी मीठा नहीं होता ।

(८२)

रति-सुखिसारद तुहु राख मान ।

चाहिले जोवन तोहे देव दान ॥ २ ॥

आवे से अलप रस न पूरव आस ।

थोर सलिल तुअ न जाय पियास ॥ ४ ॥

अलप अलप रति यहि चाहि नीति ।

प्रतिपद चाँद-कला सम रीति ॥ ६ ॥

थोरि पयोधर न पुरर पानि ।

न दिह नख रेख, हरि रस जानि ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति कइसन रीति ।

काँच दाडिम प्रति ऐसन प्रीति ॥ १० ॥

१—रति-सुखिसारद = कामक्रीड़ा में परम चतुर । तुहु = तुम । मन = मर्यादा । २—आवे=इस समय । मे=बहु । अलप=थोड़ा । पूरव = पूरेगा । ३—सलिल=पानी । तुअ = तेरी । न जाव=नहीं जायगी । ४—६—जिम प्रकार प्रतिपद चन्द्रमा थोड़ा थोड़ा बढ़ता है, उसी प्रकार रति भी थोड़ी थोड़ी करक बढ़ानी चाहिये यही नीति है । ७—थोरि=झोटी । पयोधर=कुर । पानि=हाथ । अभी कुर छोटे है, उनमें तुम्हारे हाथ भी नहीं मरेंगे । ८—हे हरि, उनपर नख की रेखा मत दा-उन्हें नखों से मत बकाओ, तुम तो स्वयं रस की बात जानते हो । ९—कामन=किम प्रकार की । १०—दाडिम=अनार [कुच की उपमा] । ऐसन = इस प्रकार ।

जहाँ न जाय रति । नहीं जाय ननि ।'

(८३)

निवि रंधन हरि किए कर दूर ।

पहो पप तोहर मनोरथ पुर ॥ २ ॥

हेरने कथोन सुख न बुझ विचारि ।

चड लुहु ढीठ बुझल घनमारि ॥ ४ ॥

हमर सपथ जा हेरह मुरारि ।

लहु लहु तत्र हम पारय गारि ॥ ६ ॥

विहर से रहसि हेरने कौन काम ।

से नहि सहचहि हमर परान ॥ ८ ॥

कहाँ नहि सुनि पहन परकार ।

करप विलास दीप लप जार ॥ १० ॥

परिजन सुनि सुनि तेजव निसास ।

लहु लहु रमह संगीजन पास ॥ १२ ॥

भनइ विद्यापति पहो रस जान ।

नृप सिर्गसिध लखिमा विरमान ॥ १४ ॥

१- निवि बधन = बँचे का बधन । किए = क्यों । २- पहोपप = इसम भी । ३- हेरने = देखने से । ४- बुझल = ब्रं समझ गई । ५- हेरह = देखो । ६- लहु लहु = धीरे धीरे । पारय गारि = गाली दूगी । ७- खुरा होकर बिहार करा, [बिहार से रहसि] भला देखने से क्या प्रयोजन । ८- पहन परकार = ऐसा ढग । १०- काम-झीड़ा के समय दीपक जला ले । ११- परिजन = पड़ोसी । तेजव निसास = [बेलि-ममय में] निश्चाम लेना । १२- रमह = समीप बगे । पास = निकट । १४- विरमान = पति ।

(८४)

सुन सुन नागर निवि बध छोर ।

गाँठिते नहिं सुरत धन मोर ॥ २ ॥

सुरत क नाम सुनल हम आज ।

न जानिअ सुरत करण कौन काज ॥ ४ ॥

सुरत क खोज करय जहाँ पाय ।

घर कि अछप नाहि सखिरे सुधाव ॥ ६ ॥

घेरि एक माधव सुन मभु घानि ।

सखि सयं खोजि माँगि देय आनि ॥ ८ ॥

बिनति करण धनि माँगे परिहार ।

नागरि चातुरि भन कथि-कठहार ॥ १० ॥

इस पद्य में राधा या विचित्र परिहास, बड़ी सफाई से, बखि है।
इस राधा से 'सुरत' माँग रहे है— राधा से काम-क्रीड़ा करने को कह
है—इसपर राधा कहती है,— अरे चतुर, सुनो, मेरी नींदी का क्या
बोको, इसकी गाँठ में 'सुरत' रुपी धन नहीं छिपा पड़ा है। मेरे 'सुरत'
का नाम तो आज ही सुना है, न जाने 'सुरत' [कौन है और] का
काम करता है। हाँ आज से मैं जहाँ पाऊँगी सुरत की खोज करूँगी
सखियों से पूछूँगी [सखि रे सुधाव] कि मेरे घर में है कि नहीं। माधव
एक बार मेरी बात सुन लो, सखियों से यदि प्राप्त कर सकूँगी तो खोज
बंद कर तुम्हें ला दूँगी।' यों नायिका बिनती करती और उन्हें मना कर
रही है, यवि-बयठहार विद्यापति नागरी नायिका की इस चातुरी या (चतुरा
पूण ।) बखन करते है।

(८५)

हरि-कर हरनि-नयनि तब साँपलि

सपिगन गेलि आन ठाम ।

अयसर पाइ धनि कर धरि नागर

विनति करए अनुपाम ॥ २ ॥

हरनि नयनि धनि रामा ।

कानुक सरस-परस संभापन

मेदल लाज क धामा ॥ ४ ॥

सुखद सेजोपरि नागरि नागर

यइसल नय रति साधे ।

प्रति अंग नुम्यन रस अनुमोदन

थर थर काँपए रात्रे ॥ ६ ॥

मदन सिंहासन करल अरोहन

मोहन रसिक सुजान ।

भय गढ तोडल अलप समाधल

रायल सकल समान ॥ ८ ॥

कह कवि सेयर गरुअ भूख पर

कर जल थोर अहार ।

अइसन दुहुमन तेलफइ पुन पुन

उपजल अधिक विकार ॥ १० ॥

४—सरस परस = रसमय स्पर्श, आलिंगन । ५—सेजोपरि—राय्या

के ऊपर । करल अरोहन = आरोहन किया, चढ़े । ६—अलप समाधल =

थोड़े से मृत्यु किया । समान = मान सहित । ८—गरुअ = अधिक ।

(८६)

सुरत समापि सुतल बर नागर

पानि पयोधर आपी ।

कनक सभु जनि पूजि पुजारी

धएल सरोरुह भाँपी ॥ २ ॥

सखि हे माधव, केलि विलासे ।

मालति रमि अलि ताहि अगोरमि

पुनु रति रगर आसे ॥ ४ ॥

घदन मेराए धएल मुख मंडल

कमल मिलल जनि चन्दा ।

भमर चकोर दुअओ अरसाएल

पीयि अमिय मकरन्दा ॥ ६ ॥

भनइ श्रीहर सुनइ मधुरपति

राधा चरित अपारे ।

राजा सिरसिघ रूपनरायन

सुकवि मनधि कंठहारे ॥ ८ ॥

१—सुरत = वाम-कीड़ा । समापि = समाप्त कर । सुतल = मा गल ।

पानि = हाथ । पयोधर = कुंठ । आपी = अपितकर, राग । २—कनक

सभु = सान का महादेव । सरोरुह = कमल । ४—अलि = मेल ।

अगोरमि = अगारे रहता है । ५—मेराए = मित्रावर । धएल = धर ।

बन मदन = कृष्ण ने अपना मुख राधा के मुख में लगा रखा ।

६—भमरो = चोरी । अरसाएल = अपना गव । अमीकर = शिरसिघ के

मन्या । सुकवि कंठहार = विद्यापति ।

(८७)

हे हरि हे हरि मुनिप छवन भरि
 अथ न मिलास क घेरा ।
 गगन नयत धूल से अवेकत भेल
 कोकिल करइछ फेरा ॥ २ ॥
 चक्रा मोर सोर कप छुप भेल
 उटिष मलिन भेल चदा ।
 नगर क धेनु डगर कप संचर
 कुमुदनि यम मकरदा ॥ ४ ॥
 मुप फेर पान मेहो रे मलिन भेल
 अउसर भल नहि, मंदा ।
 विद्यापति भन एहो न निक थिक
 जग भरि करइछ निदा ॥ ६ ॥

१—छवन भरि = पान भरकर, अच्छी तरह । मिलास क =
 बेनि या ममय । २—गगन = आकाश । नयत = नयन, तारे । धूल
 = धे । से = वह । अवेकत भेल = अवेकदुप, छिप गये । करइछ
 फेरा = फेरा कर रही है, शहर उभर पुकार रही है । ३—भर कप =
 शायन करके । छुप भेल = छुप हो गये । ४—धेनु = गौ । डगर = राह ।
 संचर = जा रही है । कुमुदनि यम मकरदा = कुमुदियों से मकरद
 (पराग) का करना (अब) कम (मन्त्र) हो गया अर्थात् वे मुद
 गर्द । मुपफेर = मुप का । मे हो = वह भी । ५—भन = भना, अन्दा ।
 मंदा = बुढ़ा । निर = अन्दा, उचित । थिक = है ।

(८८)

रयनि समापलि फुलल सरोज ।

भमि भमि भमरी भमरा खोज ॥ २ ॥

दीप मद रचि अम्बर रात ।

जुगुतहि जानलि भय गेल परात ॥ ४ ॥

अथहु तेजहु पहु मोहि न सोहाय ।

पुनु दरसन होत मदन दोहाय ॥ ६ ॥

नागर राख नारि मान-रंग ।

हठ कपले पहु हो रस भंग ॥ ८ ॥

तत करिअए जत फायए चोरि ।

पर जन रस लए न रह अगोरि । १० ॥

क्या ३

- १—रयनि = रान । समापलि = शीत गर्म । सरोज = कमल । २—
भमरी घूम घूम कर भमर की खोज कर रही है—क्योंकि भमरी को
छोड़कर भमर पराग-लोभ से रान भर कमलिनी कोष में बैद था और
अब उसके निकलने का समय आ गया है । ३—दीप = दीपक ।
मद-रचि = चीथ बालि, मलिन । अम्बर = आकाश । रात = लान हुआ ।
४—जुगुतहि = चुक्ति से ही । जानलि = जान गर । ५—सबहु =
धोड़ी । पहु = प्रभु, प्रीतम । ६—मदन दोहाय = कामदेव की दुहाई ।
७—नागर = चतुर । मान-रंग = आदर और प्रेम । ८—फायए =
लहे । परजन = पर पुरुष ।

"The beauty of poetry is to paint the human life truly"

सखी-सम्भाषण

(८६)

आहु निपरित धनि देखिअ तोय ।

बुझए न पारिअ संसय मोय ॥ २ ॥

तुअ मुख-भंडल पुनिम क चाँद ।

का लागि भए गेल ऐसन छाँद ॥ ४ ॥

नयन जुगल भेल काजर बिथार ।

अधर निरस कर कओन गमार ॥ ६ ॥

पीनपयोधर नखरेख देल ।

कनक-कुंभ जनि भगनहु भेल ॥ ८ ॥

अग धिलेपन बुकुम भार ।

पीताम्बर धरु इथे कि बिचार ॥ १० ॥

सुजन रमनि तुहु कुलवति-पाद ।

का सूर्य भुजलि मरम क साध ॥ १२ ॥

कामिनी कहिनी कह सम्पाद ।

कह फवि सेसर नह परमाद ॥ १४ ॥

१—निपरित = बदली हुई । २—पुनिम क = पृथिमा का । ४—

का लागि = किसलिये । ऐसन छाँद = इस आकार का अर्थात् ऐसा गुलिन ।

५—विथार = बिस्तार, फैल जाना । ६—अधर = जोड़ । ७—पीन

पयोधर = मुष्ट कुच । ८—कनक-कुंभ = माने क घड़े (कुच) । भग

नहु = टूट जाना । बुकुम भार = केसर से भरा हुआ अर्थात् रक्त-पत्र ।

१०—पीताम्बरधर = पीताम्बर धारण रियेहुइ हा—शरीर पीला पड़ गया है ।

इथे = इसका । कि = क्या । १२—रा मर्व = निमवे मग । भुजलि = भोग

किया । मरम क साध = हृदय की इच्छा । १४—परमाद = प्रवाण, रि

(६०)

श्राजु देवलिसि कालि देखलिसि

श्राज कालि कत भेद ।

सैसथ बापुर सीमा छाडल

जऊयन बाँधल फेद ॥ २ ॥

सुन्दर कनककेशा मुति गोरी ।

दिन दिन चाँद केला सयँ बाढलि

जऊयन सोभा तोरी ॥ ४ ॥

बाल पयोधर गिरि क सहोदर

अनुषामिष अनुरागे

कओन पुरष कर परसए पाओल

जे तनु जितल परागे ॥ ६ ॥

मन्द हास वंकिम कए दरसए

चगिम भौह बिभंगे ।

लाज धेआकुलि सामु न हेरए

आओल नयन तरगे ॥ ८ ॥

विद्यापति कबिबर यह गावए

नय जीवन नय कन्ता ।

सिबसिध राजा एह रस जानए

मधुमति देवि-सुकन्ता ॥ १० ॥

१—बापुर = बेचारा । फेद (अस्पष्ट) । ३—कनककेशा = कन
कीया, स्वर्ण-निर्मिता । मूति = मूर्ति । ५—बाल पयोधर = छोटे छोटे
बुच । गिरि क सहोदर = पहाड़ के भाद (पहाड़ के ऐसे) ।

(६१)

सामरि हे भामरि तोर देह ।

की कह के सयँ लापलि नेह ॥ २ ॥

नौद भरल अछ लोचन तोर ।

कोमल बदन कमल रवि चोर ॥ ४ ॥

निरस धुसर कर अधर पँवार ।

कौन कुबुधि लुटु मदन भँडार ॥ ६ ॥

कोन कुमति कुच नख खत देल ।

हाय हाय सम्भु भगन भए गेल ॥ ८ ॥

दमन-लता सम ननु सुकुमार ।

फुटल बलय टुटल गुम हार ॥ १० ॥

केस कुसुम तोर, सिरक सिंदूर ।

अलक तिलक हे सेउ गेल दूर ॥ १२ ॥

भनइ बिद्यापति रति अथसान ।

राजा सिधसिध ई रस जान ॥ १४ ॥

अनुपामिण = उपमा देते है । ६—जितल पराये = पराग को जीत लिया—पीला पड़ गया । ७—चगिम = सुन्दर । ७—मामु = सामने ।

१—सामरि = श्यामा, सुन्दरी । भामरि = मलिन । २—की = क्या । के सयँ = किससे । लापलि = लार्ई । ३—अछ = है । ४—कोमल मुख की कमल-भङ्ग आभा चोरी चली गई है—बुद्ध मदन पड़ गया है । ५—धुसर = धूसर, भूरा । पँवार = मंगल, भूगा । ७—खत = खन, घाव । ८—दमन लता = द्रोण पुष्प की लता । १०—बलय = हाथ की चूड़ी । गुम = भोवा, गला । ११—कुसुम = फूल । १२—अलक = आलता महावर । १४—अवमान = समाप्त ।

(६२)

ए धनि ऐसन कहवि मोय ।

आजु जे कैसन देखिण तोय ॥ २ ॥

नयन बयन आनहि भांति ।

कहइत कहिनि भूलसि पांति ॥ ३ ॥

सुरग अधर विरंग भेलि ।

का सयँ कामिनि कएल केलि ॥ ६ ॥

बेरुत भए गेल गुपुत काज ।

अतए करु करह लाज ॥ ८ ॥

सघन जघन काँपए तोर

मदन मथन कएल जोर ॥ १० ॥

गोर पयोधर रातुल गात ।

नयन आचर भापसि हात ॥ १२ ॥

अमिअ-सागर तुहु से राहि ।

मुकुद मातंग निहर ताहि ॥ १४ ॥

कह कवि-सेयर कि कर लाज ।

कह न कहिनि सखिन समाज ॥ १६ ॥

३—आनहि = अन्य ही । ५—सुरंग = लाल । विरंग = मलिन ।

७—बेरुत = व्यक्त प्रगट । ८—नयन = अगण्य, यहाँ । कर = भिन्ने ।

६—सयन = पुष्ट । जघन = बाँध । ११—१२—रातुल = लाल ।

मुँची का रंग लाल हो गया है । नयन = नयनों की रेखा । १३—अमिअ =

अमृत । राहि = राधा । १४—मुकुद-मातंग = कृष्ण रंगी दासी ।

(६३)

आजु देखिण सखि बड अनमनि सनि
बदन मलिन सन तोरा ।
मन्द चवन तोहि कोन कहल अछि
से न कहिय किछु मोरा ॥ २ ॥
आजुक रयनि सखि कठिन तिल अछि
कान्हु रभस कर मदा ।
गुन अथगुन पहु एकओ न बुझलनि
राहु गरासल चदा ॥ ४ ॥
अधर सुखाएल फेस अरभाएल
घाम तिलक बहि गेला ।
घाटि विलासिनि केलि न जानधि
भाल अरुन उडि गेला ॥ ६ ॥
भनई चियापति सुन घर जीयति
ताहि करय क्रिय बाधे ।
जे किछु देल आँवर बाधि लेल
सखि सभ कर उपहासे ॥ ८ ॥

-
- १—अनमनि=अनमनी उदासीन । सखि=समान । बदन=मुख ।
२—मद=धुर । अछि=है । ३—रयनि=रात । रभस=कामक्रीड़ा ।
रा=बुरी तरह मे । ४—पहु=प्रीति । ५—अधर=ओछ । घाम=
मीना । तिलक=गीवा । ६—बारि=बालिका । भाल अरुन उडि गेला=
एक का सिंदूर बिंदु नष्ट हो गया । ७—क्रिय=वैसे । बाधे=बाधा
ला, रोकना । ८—उपहासे=नन्दा ।

(६४)

न कर न कर सखि मोहि अनुरोध ।

की कहव हमहु तकर परगोध ॥ २ ॥

अलप वयस हम कानु से तरना ।

अतिहु लान डर अतिहु करना ॥ ४ ॥

लोमे निठुर हरि कपलन्हि केलि ।

की कहव जामिनि जत दुख देलि ॥ ६ ॥

हठ भेल रस मोर हरल गेथान ।

निधि बँध तोडल कखन के जान ॥ ८ ॥

देल आलिंगन भुज जुग चापि ।

तखन हृदय मभु ऊठल कापि ॥ १० ॥

नयन धारि वरसाओलि रोइ ।

तवहु कान्हु उपसम नहि होइ ॥ १२ ॥

अधर सुरस मभु कपलन्हि मन्द ।

राहु गरासि निसि तेजल चन्द ॥ १४ ॥

कुच जुग देलन्हि नख परहार ।

केहरि जनि गज कुम्भ विदार ॥ १६ ॥

मनइ विद्यापति रसवति नारि ।

तुहु से चेतन लुगुध मुरारि ॥ १८ ॥

२—तकर=तगर । ६—जामिनी=पति । जत=जितना ।

८—कखन=कव । लयन=भुज जुग=दोनों हाथ । चापि=चाकर ।

१०—तखन=उम समेत । १२—उपसम=रान्त ठडा । १३—अधर

=भीष्ट । १४—तेजल=छोड़ दिया । १५—नखपरहार=नखों की

(६५)

कि कहव हे सखि आजु क विचार ।

से सुपुरुष मोहे कएल सिंगार ॥ २ ॥

हंसि हंसि पहु आलिंगन देल ।

मनमथ अकुर कुसुमित भेल ॥ ४ ॥

आंचर परसि पयोधर हेर ।

जनम पंगु जनि भेंटल सुमेर ॥ ६ ॥

× जव निवि चध रसाभोल कान ।

तोहर सपथ हम किछु जदि जान ॥ ८ ॥

रति चिन्हे जानल कठिन मुरारि ।

तोहर पुने जीअलि हम नारि ॥ १० ॥

कह कवि रजन सहज मधुराई ।

न कह सुधामुखि गेल चतुराई ॥ १२ ॥

चोट । १६—वेहरि = सिद्ध । गुरु म = दासी का प्रेय । विदार =
पाइना । १८—चेनन = चतुरा । लुपुध = लाभायमान ।

२—कएल किया । ३—पहु = प्रीतम । ४—मनमथ = कामदेव ।
कुसुमित = फूला हुआ । कामदेव स्त्री अकुर फूल उठा-काम का पूष विकारा
हुआ । ५—आंचर = अंचल । पयोधर = कुच । हेर = देखना । ६—
पंगु = पगड़ीन । जनि = मानों । ७—रसाभोल = (खोलकर) गिरा
दिया । कान = कृष्ण । ८—रति के चिन्ह से जाना कि कृष्ण बड़ा कठोर
दर्य है । १०—पुने = पुण्य से । जीअलि = जीती बची । ११ सहज
मधुराई = राई (राधा) स्वभावत ही मधु (मधुरा) है । १२—गेल चतुराई
= चतुरता खतम हो गई ।

(६६)

दृढ परिरम्भन पीडलि मदनै ।

उवरि अएलहुँ सपि पुरव पुने ॥ २ ॥

हुटि झिझिआएल मोतिम हार ।

सिंदुर लोटाएल सुरग पँवार ॥ ४ ॥

सुन्दर कुच जुग नए एत भरी ।

जनि गज कुंभ विदारल हरी ॥ ६ ॥

अधर दसन देखि जिउ मोरा काँपे ।

चाद-मडल जनि राहु क भाँपे ॥ ८ ॥

समुद ऐसन, निसि न पारिए ऊर ।

फखन उगत मोर हित भण सूर ॥ १० ॥

मोयँ न जाएव सपि तन्हि पिया ठाम ।

वरु जिय मारि नडावधि काम ॥ १२ ॥

भनइ विद्यापति तेज-भय लाज ।

आग जारिये, पुनु आगि क काज ॥ १४ ॥

- १—परिरम्भन = गाढ़ आलिंगन । पीडलि = पीड़ित हुई । मदनै = काम-द्वारा । २—उवरिअएलहुँ = मैं बच आई । पुने = पुण्य से । ३—झिझिआएल = विखर-प्रकाश । ४—सुरग = लाल । पँवार = प्रवाल मूगा । ५—कुच = स्तन । जुग = दो । नए-एत = नखों-द्वारा छि गये घाव । ६—गज-कुंभ = हाथी के घड़े । विदारल = विनीत किया चीर फाड़ टाला । हरी = सिद्ध । ७—ओष्ठ पर दाँतों का आक्रमण करने देत मेरे प्राण काँप उठे । ८—राहु क भाँपे = राहु का आक्रमण । ९—समुद = समुद्र, सागर । ऐसन = समान । ऊर = ओर सीमा ।

(६७)

कि कहय हे सखि रातु क बात ।

मानिक पडल कुगानिक हात ॥ २ ॥

काँच कचन न जानय मूल ।

गुंजा रतन करेण समतूल ॥ ४ ॥

जे किछु कभु नहि कला रस जान ।

नीर खीर दुह करण समान ॥ ६ ॥

तन्हि सौं कहाँ पिरीत रसाल ।

घानर-कंठ कि मोतिम माल ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति इह रस जान ।

घानर मुँह की सोभण पान ॥ १० ॥

१०—उगत = उगेगा । सूर = मूय । ११—मोर्वे = मैं । तन्हि = उस ।

१२—बन = भले ही । नकानधि = छोड़ दे । १४—भाग जलाती है, किन्तु पुन भाग ही को जरूरत होती है ।

१—कि कहय = क्या कहूँ । रातु क = रात की । २—मानिक = माणिक, मणि । पडल = पड़ गया । कुगानिक = अपट्ट व्यापारी । हात = हाथ । ३—कचन = सोना । मूल = मूल्य, कीमत । ४—गुंजा = एक प्रकार का लाल फल जो जंगल में विशेष होता है बनवासी इसकी माला बनाते हैं धुँपुची । रतन = रत्न मणि । समतूल = समान । ६—नीर = पानी । खीर = घीर = दूध । ७—तन्हिसौं = उनमे । रसाल = रस मय । ८—घानर = बदर । कि = क्या । १०—इह = यह । की = क्या । सोभण = शोभना है ।

(६८)

पहलु क परिचय प्रेम क संचय
रजनी आध समाजे ।
सकल कलारस संभरि न मेले
घेरिनिभेलि मोरिलाजे ॥ २ ॥
साए साए अनुसए रहलि यहने ।
तन्हिहि सुबन्धु के कहिए पठाइअ
जा भमरा होअ दूते ॥ ४ ॥
एनहि चीर धर एनहि चिकुर गह
करए चाह कुच भंगे ।
एकलि नारि हम कत अनुरजय
एकहि घेरि सब रगे ॥ ६ ॥

१—पहिलु क = प्रथम बार का । परिचय = जान पहचान । प्रेम का । रजनी = रात । पहली बार का परिचय था—प्रथम प्रथम भेंट हुई थी, अब प्रेम के संचय में ही—प्रेमरस में ही—जो भी रात बीत गई । २ = संभरि न मेले = संभल कर न हुआ—भर नहीं सके । भेलि = हुआ । ३—साए = साथ । अनुसए = अनुसाए, पड़ता रहा । रहनि = रह गया । ४—तन्हिहि = उनके । कहि पठाइअ = बात पठानी, बुझा भजना । जाअरिस प्रस्थार । भमरा = भ्रमर = मारा । ५—एनहि = एंग में । चीर = काटी । चिकुर = केरा । गह = पकड़ना । कुच-भंग = कुच को विनष्ट करना । ६—एकलि = अकेली । हम = विनया । अनुरजय = अनुरजय बधनी, प्रेम निवाहणी । घेरि = बार ।

तखन विनय जत सेसव कहव कत

कहए चाहल कर जोली ।

नव रस-रंग भग भए गेल सखि

ओर धरि भेल न बोली ॥८॥

भनइ धियापति सुनु घरजौयति

पहु अभिमत अभिमाने ।

राजा सिचसिध रूप नरायन

लखिमा देइ विरमाने ॥१०॥

७—तखन = उस समय । जत = जितना । से = वह ।

कहव = कहूँगी । कत = कितना । कहए चाहल = कहना चाहा । कर
जोली = हाथ जोड़कर । ८—नव = नवीन, नया । भग भए गेल =
भग हो गया । ओर = अन्त । ओर धरि भेल न बोली =
तक वह भी न बोली — साफ-भाप बात भी नहीं कह सके । ७—

८, इस पद का तात्पर्य यह है कि ममागम के समय श्रीकृष्ण यह
देखकर कि राधा उनकी प्रत्येक चेष्टा का यथोचित समाधान नहीं करती,
दोनों हाथ जोड़कर उस समय उसकी प्रार्थना करने लगे । यों ऐन
मौके पर दोनों हाथ प्रार्थना के लिये जोड़े जाने के कारण रति-रस में
भग हो गया । फिर तो कृष्ण के मुख से बोली तक नहीं निजाली ।
इस पद का यथार्थ मम विदग्ध पाठक ही समझ सकेंगे । ९—पहु = पहुंच,
प्रीतम । अभिमत = युक्तियुक्त । १०—विरमाने = विरमण, प्रीतम,
पति ।



कौतुक

(६६)

उठ उठ माधव कि सुतसि मद ।

गहन लाग देखु पुनिम क चंद ॥ २ ॥

हार-रोमावलि जमुना-गग ।

त्रिवलि त्रिवेनी विप्र अनंग ॥ ४ ॥

सिंदुर तिलक तरनि सम भास ।

धूसर मुख-ससि नहि परगास ॥ ६ ॥

एहन समय पूजह पंचवान ।

होअ उगरास देह रतिदान ॥ ८ ॥

पिक मधुरर पुर कहइत बोल ।

अलपओ अवसर दान अतोल ॥ १० ॥

विद्यापति कनि एहो रस भान ।

राए सिवसिंघ सब रसक निधान ॥ १२ ॥

१—मद=असमय । २—गहन = ग्रहण । ३—४—रोमावलि=

कमर-के निकट-के-धरों की-पक्ति । त्रिवलि=पे में पड़ी तीन

रेखायें । अनंग=कामदेव । हार और रोमावली जमरा गंगा और

जमुना हैं त्रिवली ही त्रिवेणी हैं और कामदेव ही विप्र हैं । ५—

सिंदुर तिलक = सिंदूर का टीका । तरनि = सूर्य । भास = प्रकाशित ।

६—धूसर = धूमिल, प्रभाहीन । परगास=प्रकाश । ७—एहन = ऐसा ।

पंचवान = कामदेव । ८—होअ उगरास = उगरास होगा ग्रहण छूटेगा ।

देह रति दान = रति का दान दो । ९—पिक = कोयल । मधुरर =

भौरा । पुर कहइत बोल = गाँव में कहता फिरता है । १०—अल

पओ=भोजन ही । अतोल = अनन्त ।

(१००)

त्रिवलि तरंगिनिपुर दुग्गम जानि
मनमथ पत्र पठाऊ ।
जौवन-दलपति तोहि समर लागि
ऋतुपति-दूत बढाऊ ॥ २ ॥
माधय, अय, देखुसाजिए चाला ।
तसु सैसय तोहें जे संतापल
से सय आओत पाला ॥ ४ ॥
कुडल चक्र तिलक अकुस कप
चंदन कथच अभिरामा ।
नयन कमान कटाख यान दप
साजि रहल अछि धामा ॥ ६ ॥
सुन्दरि साजि खेत चलि आइलि
विद्यापति कवि भाने ।
राजा सिवसिंघ रूप नरायन
लपिमा देइ रमाने ॥ ८ ॥

१—त्रिवलि = पेट में पड़ी तीन रेखाएँ । तरंगिनि = नदी । विरानी
रूपी नदी में तट पर (बसे हुए) नगर की दुग्गम जान करमदेव रूपी पत्रने
(उसे विजय करने की) पत्र भेगा । २—दलपति = सेनापति । समर
सागि = युद्धने निय । ऋतुपति = वसन्त । ४—तगु = उमके । तारे =
गुमने । संतापल = दुःख दिया । ५—कुडल त = कुडल (वर्णरूप)
पत्र है । तिलक-अकुस = टीका की मकुरा है । चंदन कथच = चंदन की
सेन की शरीर-जप है । ६—कमान = धनुष । ७—नेत = युद्धभूमि ।

(१०१)

अम्बर वदन भूपावह गोरी ।

राज सुनइछिअ चाँद क चोरी ॥ २ ॥

घर घर पहरि गेल अछ जोहि ।

अरही दूखन लागत तोहि ॥ ४ ॥

कतए नुकाएब चाँद क चोर ।

जतहि नुकाओय ततहि उजोर ॥ ६ ॥

हास सुधारस न कर उजोर ।

यनिक धनिक धन योलब मोर ॥ ८ ॥

अधर क सीम दसन कर जोति ।

सिंदुर क सीम बैसाओलि मोति ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति होह निरसंक ।

चाँदहु कां थिक भेद कलंक ॥ १२ ॥

१—अम्बर = वन । वदन = मुख । भूपावह = डीप लो ।

२—चाँद क = चन्द्रमा की । ३—पहरि = प्रहरी, पहरेबा । गेल छल जोहि = डूँड गया है । ४—दूखन = दाप बनक । ५—कतए = कहाँ ।

नुकाएब = छिपेगा । ६—उजोर = प्रवारा । ७—१०—हास = हँसी ।

सुधारस = अमृत का रस । अधर क सीम = ओष्ठ के निकट । दसन =

दाँत । बैसाओलि = बैठाया । हँसवर प्रकाश मत करो, धनी व्यापारी

कहेगे कि ये मेरे ही धन है (क्योंकि) ओष्ठ के निकट दाँत प्रकाश पैला

रहे हैं (जो मुक्त के समान हैं) और सिंदुर बिन्दु मोती से चमक

रहे हैं । ११—छाह = होओ । १२—थिक = है । चाद (और

तुम्हारे मुख) में भेद है क्योंकि उसमें बलक है ।

(१०२)

लोलुअ वदन सिरी अछि धनि तोरि ।

जनु लागिह तोहि चाँद क चोरि ॥ २ ॥

दरसि हलह, जनु हेरह काहु ।

चाँद-भरम मुख गरसत राहु ॥ ४ ॥

धवल नयन तोर जनि तरआर ।

तीख तरल तेहि कटार क धार ॥ ६ ॥

निरयि निहारि फाँस गुन जोलि । ७

घाँधि हलव तोहि खंजन घोलि ॥ ८ ॥

सागर-सार चोराओल चद ।

ता लागि राहु करण यड दंद ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति होउ निरसक ।

चाँदहु की किछु लागु कलक ॥ १२ ॥

१—लोलुअ=आन्दोलित, चंचल । वदन-सिरी=वदन-सी सुर
की शोभा । अछि=अस्ति, है । धनि=नी । २—जनु=नहीं ।
३-४—दरसि हलह=देखकर (कल्प) हट जाभा । 'भृगार-निरस'
में यों ही लिखा है—'कपिति प्रविश मेरे मा बहिरिष्ठ कान्ते, प्रण
समय-वेला बत्तने शीतरसमे । तव मुखकलक शीघ्र नून स राहु ।
प्रसति तव मुखेन्दु पूषचन्द्र विहाय ॥— ५—धवल=उज्ज्वल । जनि=
ऐसा । तरआर=तलवार । ६—तीख=तीक्ष्ण । बगल क=कटार
की । ७-८—निरयि=नीचे की ओर । फाँस गुन=गुण रूपी वस्तु
में । जानि=जाकर बांधकर । हलव=वे जायगा । बोलि=समझकर ।
९—सागर-सार=अमृत । १०-११=६६ । चोर-जुम ।

(१०३)

साँझ क घेरि उगल नव ससधर

भरम विदित सविताहु ।

कुण्डल चक्र तरास नुकापल

दूर भेल हेरथि राहु ॥२॥

जनु घइससि रे घदन हाथ लाई ।

तुअ मुख च गिम अधिक चपल भेल

कति खन धरव नुकाई ॥४॥

रक्तोपल जनि कमल घइसाओल

नील नलिनि दल तहु ।

तिलक वुसुम तहु माभु देखिकहु

भमर आवधि लहु लहु ॥६॥

पानि पलव गत अधर यिम्य रत

दसन दाडिम बिज तोरे ।

कीर दूर भेल पास न आवण

भाँह धनुहि के भोरे ॥८॥

१—संध्या क समय नवीन चंद्र का उदय हुआ जिसमे सूर्य का भी भ्रम हुआ—मतलब यह है कि सूर्यास्त हो रहा था उसी समय भायिका घर से निकली । सूर्य अभी पूर्णतः अस्त नहीं हुए थे उन्हें आश्चर्य हुआ कि भोरे अस्त होने के पहले ही यह कौन सा नवीन चन्द्रमा उदित हुआ । २—कुण्डल-चक्र = कुण्डल (वर्णमाला) हपी चक्र । नुकापल = दिपा हुआ । ३—घदन हाथ लाई = मुख हाथ पर रखकर । ४—चगिम = सुन्दर । कति खन = कब तक ।

(१०४)

चड कौसलि तुअ राधे ।

किनल कन्हारि लोचन आधे ॥२॥

अतुपति हटवप नहि परमादी ।

मनमथ मधथ उचित मूलवादी ॥४॥

द्विज पिक लेखक मसि मकरदा ।

काँप भमर-पद, साखी च दा ॥६॥

बहि रति-रग लिखापन माने ।

थो सिर्वासिध सरस कवि माने ॥८॥

५—रत्नोपल = लाल कमल (हाथ) । कमल = (मुख) । नील मल्लि
नील कमल (आँखें) । तटु = वहाँ भी । ६—लडु = धीरे धीरे
७—पानि-पलव-गत = हाथ पल्लव के समान है । अथर = जो
बिम्ब रत्न = बिम्ब फल के समान । दाहिम बीज = अनार के दाने
= —कीर = मुग्गा । भोरे = भ्रम में ।

१—कौसलि = सुचतुरा । किनल = कमल किया सरीर
२—लोचन आधे = आधी आँख से, एक कान से । अतुपति = असतु
हटवप = वापारी । नहि परमादी = प्रमादी नहीं बुद्धिमान
४—मनमथ = कामदेव । मधथ = मध्यस्थ, दलाल । मूल =
मूल्य । वादी = कहने वाला । ५—द्विज पिक लेखक = कोषक
ब्राह्मण लेखक है । मसि = रोशनाई । मकरन्दा = पत्तन ।
६—काँप = बाँझ का कलम । भमर पद = भौरे का पैर । सखी =
साथी, गवाह । बहि = बहो, दिसाव की पुस्तक । रति-रग =
काम-विलास । लिखापन माने = मान लिखा गया । इस पद

(१०५)

कंचन गढल, हृदय हथिसार ।

ते थिर थम्भ पयोधर भार ॥ २ ॥

लाज सिकर घर दढ कण गोप ।

आनक घचन हलह जनु कोप ॥ ४ ॥

दूर कर अगे सखि चिन्ता आन ।

जअओयन हाथि करिय अघधान ॥ ६ ॥

मनसिज मदजल जअओ उमताप ।

धरिहसि पिअतम-आकुस लाप ॥ ८ ॥

जाये न सुमत ताये अगोर ।

मुसइत मनिहसि मानस चोर ॥ १० ॥

भन विद्यापति सुन मतिमान ।

हाथि महत नय, के नहि जान ॥ १२ ॥

संस्कृतानुवाद स्वयं विद्यापति ने यों किया है—‘रत्नाकरसुता भाषां यस्य कृष्णस्य राधिके । लोचनाद्देन स क्रीतस्त्वया ते कौरालम्भइत् ॥ दृष्टाधिपो वसन्तस्मोहप्रमारी विचक्षण । योग्यमूल्यार्थं वादी च मध्यस्थो मन्मथोऽभवत् । भ्रमरस्य पदं कर्षो लेखकं कोकिलो द्विज । अमुत् कृष्णं अये राधे शरी पात्रं ममी मधु ॥ बहिनति रति-कीका मानो वेदन लेखक । कृष्णस्य शिखसिद्धेन वाणी विद्यापते कवे ।’

१—कचन = सोना । हथिसार = हस्ती-शाना । २—थिर = स्थिर ।

थम्भ = स्तम्भ, स्तम्भा । पयोधर = कुच । ३—सिकर = झुल्ला, जगीर । गोप = दिपाकर । ४—आनक = दूसरे के । हलह जनु कोप = कभी मन खोल दो । ६—जवानी को ही हाथी समझ लो ।

(१०६)

कउडि पठाओले पाव नहि घोर ।

घोव उधार मांग मति भोर ॥ २ ॥

वास न पावए मांग उपाति ।

लोभ क रासि पुरख थिके जाति ॥ ४ ॥

फि कहय आज कि कौतुक भेल ।

अपदहि कान्हक गौरव गेल ॥ ६ ॥

आएल घइसल पाव पोआर ।

सेज क कहिनी पूछए बिचार ॥ ८ ॥

ओछाओन खंडतरि पलिआ चाह ।

आओर कहय कत अहिरिनि-नाह ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति एहु गुनमत ।

सिरि सिवसिंघ लखिमा देइ कंत ॥ १२ ॥

७—मनसिज = वामदेव । मदनल = हाथी । मस्तक से चूने

पानी । उमनाए = पागल हो । पियतम-आकुस = प्रीतिम रूपी भू

६—सुमत = मत में आ जाय । १०—सुमरत = (मुच प

पोलने से । मनिहसि = मना करना । १२—महत = मत्त, पागल ।

१—कउडि = कौड़ी । (यहा मूल्य) । पगओने = ने

पर भी । घोर = मट्टा । २—घोव = घो । मनिभोर = मू

३—वास = रहने की जगह । उपाति = साप मासमी । लज

रासि = लोभ का खजाना । थिक = है । ६—अपदहि = अप

प, उरी जगह । ७—पोआर = पुआल । ८—आछाओन =

विद्यावन । खंडतरि = जीर्ण-शीर्ण जगह । पलिआ = पलग ।

अभिसार

(१००)

धनि धनि चलु अभिसार ।

सुभ दिन आजु राजपन मनमथ
पाथोय कि रीति विधार ॥२॥

शुरजन नयन अंध करि आओल
बाधव तिमिर रिसेख ।

तुअ उर फुरत याम कुच लोचन
बहु मगल करि लेख ॥३॥

कुलघति धरम करम भय अव सब
गुरु मंदिर चलु रारि ।

प्रियतम सग रग कर चिर दिन
कलत मनोरथ साखि ॥४॥

नीरद बिजुरि बिजुरि सयँ नीरद, <
किकिनि गरजन जाने ।

हरखण्ड परराण कुल सब साखी
सिधि कुल दुहु गुन गान ॥८॥

१—अभिसार = गुप्त मिलन । २—राजपन मनमथ = काम

का राजत्व है । विधार = विस्तार । ३—गुरुजन = बड़े लोग ।

बाधव = बाधु, भिन्न । तिमिर = अंधकार । ४—फुरत = पड़कना ।

उर = हृदय । याम = बायें । लेख = समझो । ५—साखि = सुखी,

पूछ । ६—नीरद = मेघ । सयँ = हग मे । मेघ बिजली के साथ

रहता है और बिजली मेघ के साथ (यों ही रोधा कृष्ण के साथ और

कृष्ण राधा के साथ) ८—सिधिकुल = मोर ।

(१०८)

कह कह सुन्दरि न कर बेआज ।

देविअ आज अपूरव साज ॥ २ ॥

मृगमद पक करसि अंगराग ।

कोन नागर परिनत होअ भाग ॥ ४ ॥

पुनु पुनु उठसि पड़िम दिसि हेरि ।

फखन जायत दिन कत अछि बेरि ॥ ६ ॥

नूपुर उपर करसि कसि थीर ।

हृद फए पहिरसि तम सम चीर ॥ ८ ॥

उठसि बिहंसि हंसि तेजिए सार ।

तोर मा भात्र सवन अंधिआर ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति सुनु घर नारि ।

धैरज घर मन, मिलत मुरारि ॥ १२ ॥

१—बेआज = बहाना । २—मृगमद पक = कलुषी का लेव
(जो काला होता है) । ४—कोन = कौन । किस नायक का मग
परिणत हुआ—किसका माग्योदय हुआ है । ५—हेरि = देखना ।
६—फखन = कब । कत = कितना । अछि = अस्ति = है । बेर =
समय । ७—नूपुर को पैर के ऊपरी भाग में कसकर स्थिर करने
ही जिसमें चलो पर शब्द न हो । ८—तम-सम = मपछा है
समान काल । ९—तेजिए सार = सार त्याग कर, अक्षरार्थ ही ।
१०—तोर = तुम्हारे । भाव = अच्छा लगता है । अंधिआर = अन्धकार ।

(१०६)

माधव, अनि श्राणलिकत भाति ।
प्रेम हेम परपाओल कसोटी
भादव कुहु तिथि राति ॥ २ ॥
गगन गरज घन साहि न गन मन
कुलिस न कर मुख बका ।
तिमिरअजन जलधार धोए जनि
तैं उपजावति संका ॥ ४ ॥
भाग भुजग सिर कर अभिनय, कर-
भापल फनिमनि दीप ।
जानि सजल घन से देख खुम्बन
तैं तुअ मिलन समीप ॥ ६ ॥
नारिरतन धनि नागर घजमनि
रस गुन पहिरल हार ।
गोविंद चरन मन कह कविरंजन
सफल भेल अभिसार ॥ ८ ॥

२—हेम=सोना । कसोटी भादव कुहु तिथि राति=भादो की
अमावस्या की रात रूपी कसोटी पर । ३—गगन=आकाश ।
कुलिस=बध्न, ठनका । मुख बका=मुख टेढ़ा करना, विमुख करना ।
४—तिमिरअजन=अधकार रूपी अजन का । जनि=जहाँ । ५—
भागते हुए सर्प के सिर पर मानो नृत्य करती है और मर्प के मणि को
हाथ से टोप लेती है । ६—रस भाव का पद गीतगोविन्द में यों है—
निनपनि सुमति अजर कल्प, हरिरुपन इति तिमिर मन-

(११०)

चन्दा जनि उग आजुक राति ।

पिआ के लिखिअ पठाओय पांति ॥ २ ॥

साओन सयँ हम करव पिरीत ।

जत अभिमत अभिसार क रीत ॥ ४ ॥

अथवा राहु शुभाण्य हँसी ।

पिनि जनि उगिलह सीतल ससी ॥ ६ ॥

कोटि रतन जलधर तोरे लेह ।

आजुक रयनि घन तम क्य देह ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति सुभ अभिसार ।

भल जन करथि पर क उपकार ॥ १० ॥

स्पष्ट ॥ ७—धनि=बाला (राधे) । नागर-नायक (कृष्ण) ८—रति
रजन = विद्यापति का उपनाम ।

१—जनि = नहीं । उग=उदय हो । पठाओय = पठाऊँगी,
भेदूँगी । पांति = पत्र । ३—साओन सयँ = आवण मास से ।
४—अभिमत = मनोनीत । जो अभिसार करने की निश्चित रीति है—
निश्चित काल है । ६—पिनि = पीकर । उगिलह = उगल दो ।
ससी = चन्द्रमा । ७—जलधर = मेघ । लेह = लो । ८—रयनि =
रजनी, रात । घन = घना, निविड । तम = अंधकार । देह = शरी ।
१०—करथि = करते हैं । पर क = दूसरे का ।

Poetry is an emotion realized in tranquility
—Wordsworth

(१११)

आजु मोयं जापय हरि समागम
कत मनोरथ मेल ।
घर गुरुजन निंद निरूपइत
चन्द ऊदय देल ॥ २ ॥
चन्दा भलि नहि तुअ रीति ।
पहि मति तोहे फलैक लागल
किछु न गुनह भीति ॥ ४ ॥
जगत नागरि मुख जितल जय
गगन गेला हारि ।
तहँओ राहु गरास पडला
देव तोह कि गारि ॥ ६ ॥
एक मास विहि तोहि सिरिजप
दप सकलओ धल ।
दोसर दिन पुनु पर न रहसो
एही पाप क फल ॥ ८ ॥
भन त्रिधापति सुन तोयं जयती
न कर चांद क साति ।
दिना सोरह चांद क आशति
ताहि पर भलि राति ॥ १० ॥

२—निंद निरूपण = निंद का निरूपण करो, साते-न-सोते ।

४—भीति=डर । ५—ससार में जब कियों ने तुम्हारे मुग का चीत लिया—अपनी मुखशी से तुम्हें पराजित किया—तब तुम द्वारक

(११२)

गगन अर घा मेह दारुन, सघन दामिनि भलकर ।
कुलिस पातन सबद भनभन, पवन सरतर चलगई ॥२॥
सजनी, आजु दुरदिन भेल ।
कत हमर नितात अगुसरि संकेत हुँ जहि गेल ॥३॥
तरल जलधर बरिख भर भर, गरज घन घनघोर ।
साम नागर एकले कइसन, पथ हेरण मोर ॥६॥
सुमिरि मभु तनुअयस भेल, जनि अधिर धर धर काप ।
इ मभु गुरुजन नयन दारुन, घोर तिमिरहि भाप ॥८॥
तुरित चल अर किए विचारत, जीवन मभु अगुसार ।
कयोसेपर बचन अभिसर, किए से विप्रिन विधार ॥१०॥

भाकरा में भाग गये । ७—पुर=पूय । ६—सानि=शासि, निन्दा ।

१०—भारति=आयत्त, सीमा । तोहि पर=उसके बाद ।

१—गगन=भाकरा । घन=घना, निविड । दामिनि=विजली ।

२—कुलिस पातन = वज्र का गिरना ठनवा की ठाक । सरतर बन

गई = अत्यन्त तेजी से सनसनाती हुई बढ़ती है । ४—अगुसरि=

अग्रसर होकर, आगे जाकर । सवेत=गुप्त मिलन स्थान । ५—

तरल=अस्थिर, चलायमान । जलधर=मेघ । बरिख=बरसण

है । ६—साम=रयाम, ओट्टण । एकल=अकेले । ७—मभु=मेघ ।

अधिर=चंचल । ८—ई=यह । गुरुजन=बड़े लोग भेष्ट पुरुष ।

तिमिरहि=अंधकार । ९—तुरित=तुरत । किए=क्या ।

विचारत=विचारती हो । मभु=मध्य, में । अगुसार=अग्रसर होओ, बढ़ो ।

१०—अभिसर=अभिसार करो । विधार=विस्तार ।

(११३)

रयनि काजर वम, भीम भुजगम,
कुलिस परण दुरवार ।

गरज तरज, मन रोस वरिस घन
ससश्र पड अभिसार ॥२॥

सजनी, घवन छुडै तमोहि लाज ।

होपत से होओ नरु सव हम अगिकर
साहस मन देल आज ॥४॥

अपन अहित लेख कहइत परतेष
हृदय न पारिअ ओर ।

चाव हरिन 'घह राहु कवल सह
प्रेम पराभव थोर ॥६॥

१-रयनि - रान । वम = वमन करता है । रयनि काजर वम =
रात अधिकार पूर्ण है । भीम = विशाल । भुजगम = सर्प । कुलिस
= वज्र, ठनका । दुरवार = निमसे वचना मुश्किल है । २-रास = रोप, क्रोध ।
४-हापत से हाओ नरु = जो होना होगा, वह भले ही हो जाय ।
अगिकर = अगीकार करणी । ५-अहित = बुराई । लेख = सम-
झना । परतेष = प्रायश्च । ओर = मीमांसा, अन्त । ६-हरिन =
चन्द्रमा में जो हरिन के आकार का वाला धम्मा है । घह = धारण
परना । कवल = कौर, ग्रास । सह = साथ । पराभव = हार ।
राहु का ग्रास हो जाने पर भी चन्द्रमा हरिण की धारण किये
रहता है प्रेम में पराजय है ही नहीं—किमी विघ्न बाधा से प्रेम का
नाश नहीं हो सकता ।

धरन धेदिल फनि हित मानलि धनि
 नेपुरे न करण रोर ।
 सुमुपि पुछ्यो तोहि सरूप कहसि मोहि
 सिनेह क कत दुर ओर ॥८॥
 ठामहि रहिअ धुमि, परस चिन्हिअ भूमि
 दिग मग उपजु संदेह ।
 हरि हरि सिय सिय तावे जाइअ जिय
 जाये न उपजु सिनेह ॥१०॥
 भनइ विद्यापति सुनह सुचेतनि
 गमन न करह बिलम्ब ।
 राजा सियसिच रूपनरायन
 सकल कला अलम्ब ॥१२॥

७ वेदलि = लपेटना, घेरना । फनि = सप । रोर = रा
 भकार । पैर में सप लिप जाने पर बाला ने उसे अपना दिव
 समभा क्योंकि (सर्प लिप जाने से) नूपुर-भकार नहीं करते
 थे । ८—सरूप = सख । आर = अन्त । सुन्दरी मैं तुमसे पूछती
 ह, सच सच बताओ प्रेम की अन्तिम सीमा कहाँ पर है ? ९—
 दिग = दिशा । धूम धूम कर एक ही स्थान पर चली आती ह ।
 रपरा से ही पृथ्वी जानी जाती है (अथकार के कारण दोख नहीं
 पड़ती) दिशा और राह के विषय में सन्देह है—मालूम होता है ।
 दिग्भ्रम हो गया है जिससे मैं राह भूल गई ह । १०—जावे =
 तब तक । जावे = जब तक । ११—सुचेतनि = बुद्धिमती सुचतुर ।
 जाने में ।
 १०—अमित

(११४)

सखि हे, आज जायव मोहि ।
घर गुम्जन डर न मानव
चचन चूकच नहि ॥ २ ॥
चानन आनि आनि अग लेपव
भूपन कए गजमोति ।
अजन बिहुन लोचन जुगुल
धरत धवल जोति ॥ ४ ॥
वयल वसन तनु भूषण
गमन करव मंदा ।
जइओ मगर गगन ऊगत
सहस सहस वदा ॥ ६ ॥
न हम काटुक टीठि निवारवि
न हम करव ओत ।
अधिक चोरो पर सय करिअ
एहे सिनेह क सोत ॥ ८ ॥
भन विद्यापति सुनह जुधतो
साहस सकल काज ।
धूम सियसिध इरस रनमय
सोरम देवि समाज ॥ १० ॥

३—चानन = चदन । आनि = लाकर । ३—बिहुन = रहित ।

धवल = उजला । ५—मदा = धीरे धीरे । ६—सगर = समग्र = समूचे ।
गगन = आकाश । ७—निवारवि = बचा दूगी । ओत = ओट । सोन = सोन ।

(११५)

प्रथम जउवन नय गरुअ मनोभव
छोटि मधुमास रजनि ।
जागे गुरजन गेह राखए चाह नैह
समअ पडल सजनि ॥ २ ॥
नलिनी दल निरु चित न रहए धिर
तत पर तत हो बहार ।
विहि मोर बड मदा उगि जनु जाए बंदा
सुति उठि गगन निहार ॥ ४ ॥
पथहु पथिक संका पय पय धए पंका
फि करति ओ नय तरुनी ।
बलए चाह धसि पुनु पड एसि खसि
जाल क छेकलि हरिनी ॥ ६ ॥
साए साए कओन बेदन तसु जाने ।
निहुँज बनहि हरि जाइति कओन परि
अनुमान इन पचवाने ॥ ८ ॥
विद्यापति भन कि करत गुर जन
नीद निरूपन लागी ।
नयन नीर भरि धीर भूपावए
रयनि गमावए जागो ॥ १० ॥

१-मधुमास = चैत्र । २-नलिनी दल निरु = कमल के पत्ते पर के पानी के समान । बहार = बाहर । ४-सुति = सागर । ५-पय = पय । पका = फीका । ६-जाल क छेकलि = जाल में थिरी हुई । ७-साए = माखी । ८-इन = मारना ।

(११६)

अबहु राजपथ पुरुजन जागि ।

चाद किरन नभमडल लागि ॥ २ ॥

सहय न पारय नय नर नेह ।

हरि हरि सुन्दरि पडलि संदेह ॥ ३ ॥

कामिनि कएल कतहु परकार ।

पुरुष क बेस कएल अभिसार ॥ ६ ॥

धम्मिल लोल भौंट कए धध ।

पहिरल बसन आन करि छन्द ॥ ८ ॥

अम्बर कुच नहि सम्बर भेल ।

बाजन यत्र हृदय फरि लेल ॥ १० ॥

अइसए मिललि धनि कुँज क माझ ।

हेरि न बिन्हइ नागर राज ॥ १२ ॥

हेरइन माधव पटलन्हि धद ।

परसइत भांगल हृदय क दंद ॥ १४ ॥

भनइ बिद्यापति सुन थर नारि ।

दूध-समुद जनि राज मरालि ॥ १६ ॥

३—सहय न पारय = सह नहीं सकती । नय = नया । ५—
परकार = प्रकार, उपाय । ७—धम्मिल - बेरा, बेसी । लोल = लचल । भौंट
= भौंटा, लोपा, जूड़ा । बाजन बेसी को (साधुओं के ऐसा) जूड़ा क
समान बोधा । ८—आन छन्द करि = दूसरी तरह से । ९—अम्बर
कपड़ा । सम्बर = संग्रहण । किन्तु कपड़े से कपड़े जाने पर भी कुच
सँभल न सके, दिप न सके । १०—बाजन-यत्र = सिवार । हृदय करि

(११०)

March

चरन नूपुर उपर सारी ।

मुखर मेखल कर निवारी ॥ २ ॥

अम्बर सामर देह भपाई ।

चलहु तिमिर पथ समाई ॥ ४ ॥

ममुद कुसुम रमस रसी ।

अबहि उगत कुगत ससी ॥ ६ ॥

आपल चाहिअ सुमुखि तोरा ।

पिसुन लोचन भम चकोरा ॥ ८ ॥

अलक तिलक न कर राधे ।

अग बिलेपन करह बाधे ॥ १० ॥

कुसुमित कानन कालिन्दि तीर ।

तहाँ चलि आओल गोकुल वीर ॥ १२ ॥

तयँ अनुरागिनि ओ अनुरागी ।

दूपन लागत भूपन लागी ॥ १४ ॥

भन विद्यापति सरस करि ।

नृपति कुल सरोरुह रवि ॥ १६ ॥

सेल = हृदय पर रख लिया । १३—धद = सदेह । दद = दन्द दुःखि ।

१६—ममुद = समुद्र । राजमरालि = राजहसिनी ।

१—२ पैर के नूपुर को ऊपर चढ़ानो, और मुखर (शब्द करने

वाली) करघनी को हाथ से निवारण करा । ३—अम्बर = बल । तिमिर

पथ = अपभार पूर्ण राह । समाई = घुमर । ५—समु = समुद्र ।

कुसुम = फूल । रमस = आनन्द । रमी = रम युक्त । ३—नुगत = निमग्न

(११८)

जागल घर पर निंद भेल भोरें ।

सेज तेजल उठि नद किसोर ॥ २ ॥

सघन गगन हेरि नयतर पांति ।

अवधि न पाओल छूटल राति ॥ ४ ॥

जलधर रुचिहर सामर कांति ।

जुवति-मोहन घेस घर कत भांति ॥ ६ ॥

धनि अनुरागिनि जानि सुजान ।

घोर अंधिआरे कपल पयान ॥ ८ ॥

पर-नारि पिरित क घेसन रीति ।

चलल निभृत पथ न मानए भीति ॥ १० ॥

कुसुमित कानन कालिन्दि तीर ।

तहँ चलि आओल गोकुल बीर ॥ १२ ॥

कबिसेतार पथ मीलल जाइ ।

आएल नागर भेंटल राई ॥ १४ ॥

आगमन भयुभ हो । ससी = चंद्रमा । २-विमुन = दुष्ट । मम-अभिमन्यु कर रहे हैं । ६-अलक-तिलक = महावर और टीका । अग विलेपन = शरीर में अंगरग लगाना । करह बाधे = राधा कर दी, मत लगाओ ।

१-घर पर ओ जगे थे, समी सो गये । ३-नयतर = नयन तारे । ४-रात कितनी बीनी इसका अन्दाज न पाया । ५-जलधर = मेघ । रुचि हर = शोभा हरने वाला । ६-जुवति-मोहन = युवतियों का मोहनेवाला । १०-निभृत = अंधकार पूछ, सुनसान । १४-राई = राधा ।

(११६)

तपन क ताप तपत मेल महि तल

तातल बालू दहन समान ।

चढता मनोरथ भासिनी चलु पथ

ताप तपत नहि जान ॥ २ ॥

प्रेम क गति दुरगार ।

नयिन औचनि धनि चरन कमल जिनि

तइओ कपल अभिसार ॥ ४ ॥

कुल गुन गौरव सति-जस अपजस

तुन करि न मानए राधे ।

मन मधि मदन महोदधि उछलल

धूडल कुल मरजादे ॥ ६ ॥

कत कत विधिन जितल अनुरागिनि

साधल मनमथ-तत ।

गुरु जन नयन निवारइतु खु बदन

पाठ करए मन मत ॥ ८ ॥

कैलि कलायति कुसुम सरसि कुल

कौसल करल पयान ।

जत छल मनोरथ पूरल मनमथ

इह कविसेखर भान ॥ १० ॥

१—तपन क=सूय के । ताप = गर्मी । तपन = तप्त, जलती
उर । तातल = गर्म हो गया । दहन = अग्नि । २—मनोरथ = इच्छा
रूपी रथ । भासिनि = स्त्री । ३—दुरवार = अटल । ४—जिनि =

(१२०)

निअ मदिर सयँ पग दुइ चारि ।

घन, घन वरिस मही भर चारि ॥ २ ॥

पथ पीछर, बड गरुअ नितग्य ।

खसु कत धेरि, नहीं अवलम्य ॥ ४ ॥

यिजुरि छटा दरसावण मेघ ।

उठए चाह जल धारक येघ ॥ ६ ॥

एक गुन तिमिर लाख गुन भेल ।

उतरहु दयिन भान दुर गेल ॥ ८ ॥

ए हरि जानि करिअ मोयँ रोस ।

आजुक विलम्य दइय दिअ दोस ॥ १० ॥

समान । गइओ = तौ मी । ५—सति=रती स्त्रियों का । २—मधि = मध्य, में । महोदधि = महा मसुद्र । वल्लल = बढ़ने लगा, भरगिल होने लगा । ७—मामय = कामदेव । तत = तन्त्र । ८—निवारित = बचनी हुई । मन्त = मन । ९—कुसुम = फूल । सरसि = मरसी, तालाब । तुल = किनारे । कौसल = दल से । १०—दल = था ।

१—निअ = अपना । सयँ = से । पग = पैर । २—घन घन = घने बादल । मही भर वारि = पृथ्वी जल से भर गयी । ३—पीछर = गिस्पर, पैर फिसल जाय । गरुअ = भारी । नितग्य = चूतड़ । ४—खसु कत धेरि = किनारी बार गिर रही । ६—जल धार बौध कर = मूरलधार—बरसना चाहता है । ७—तिमिर = अंधकार । ८—उत्तर और दक्षिण का छान हो दूर हो गया, दिशा छान नहीं रहा ।

(१२१)

माधव, करिअ सुमुखि समधाने ।

तुअ अभिसरि कएलि जत सुन्दरि
कामिन करु के आने ॥ २ ॥

वरिस पयोधर धरनि चारि भरि
रयनि महा भय भीमा ।

तइओ चललि धनि तुअ गुन मन गुनि
तसु साहस नहि सीमा ॥ ४ ॥

देखि भवन भित लिखित भुजंग पति
तसु मन परम तरासे ।

से सुखदनि घर भूपडत फनिमनि
त्रिहुसि आएलि तुअ पासे ॥ ६ ॥

निअ पहु परिहरि अइलि कमल मुषि
परिहरि निअ कुल गारी ।

तुअ अनुराग मधुर मद मातलि
किछु न गुनलि घर नारी ॥ ८ ॥

ई रस रसिक विनोद क विन्दक
कवि विद्यापति गात्रे ।

काम प्रेम दुहु एक मत भए रहु
कखने की न करावे ॥ १० ॥

२—के = कौन । आने = दूसरा । पयोधर = बादल ।

भीमा = डरावनी । ५—मिति = दीवाल । भुजंग = सर्प । ७—कर = हाथ । फनिमनि = सर्प के मणि को । ७—पहु = प्रभु, प्रीतम । गारी-

(१२२)

राहु मेघ भय गरसल सूर ।

पथ परिचय दिवसहि भेल दूर ॥ २ ॥

नहि वरिसण अवसन नहि होए ॥

पुर परिजन संचर नहि कोए ॥ ४ ॥

चल चल सुन्दरि, कर गए साज ।

दिवस समागम सपजत आज ॥ ६ ॥

गुरुजन परिजन डर कर दूर ।

बिनु साहस अभिमत नहि पूर ॥ ८ ॥

एहि ससार सार यथु एक ।

तिला एक सगम, जाउ जिव नेह ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति कबिकठहार ।

कोटिहुँ न घट दिउस-अभिसार ॥ १२ ॥

गाली, शिकायत । १०—करने = कथ कथा नहीं कराना ।

१—मेघ ने राहु बनकर सूर्य को घन लिया है—मेघ के कारण सूर्य हीनप्रभ हो गये है । २—पथ परिचय = राह की पहचान । दिवसहि = दिन में ही । ३—अवसन = अवसन्न, समाप्त । मेघ न बरसता है, न सुग जाता है । ४—गर्व में लोग नहीं आते-जाते । ५—कर गए साज = जाकर साज करो—शृंगार करो । ६—दिवस समागम = दिन का मिलन । सपजत = सम्पूज्य होगा । ८—अभिमत = मनोवाञ्छा । ९—सार = तत्त्व, सत्य । यथु = वस्तु । १० = एक क्षण के लिये रति-नीड़ा और जीवन भर प्रेम कराना । १२—कोटिहुँ = करोड़ों उपाय करने पर भी । न घट = न घट सकता, न हा सकता ।

(१२१)

माधव, करिअ सुमुगि समधाने ।

तुअ अभिसरि कपलि जत सुन्दरि

कामिन करु के आने ॥ २ ॥

यरिस पयोधर धरनि धारि भरि

रयनि महा भय भीमा ।

तइओ चललि धनि तुअ गुन मन गुनि

तसु साहस नहि सीमा ॥ ४ ॥

देखि भवन मित लिखित भुजंग पति

तसु मन परम तरासे ।

। से सुषदनि धर भूपइत फनिमनि

त्रिहुसि आपलि तुअ पासे ॥ ६ ॥

निअ पहु परिहरि अइलि कमल मुखि

परिहरि निअ कुल गारी ।

। तुअ अनुराग मधुर मद मातलि

किछु न गुनलि उर नारी ॥ ८ ॥

। ई रस रसिक यिनोद क चिन्दक

कवि विद्यापति गाये ।

काम प्रेम दुहु एक मत भए रहु

कखने की न कराये ॥ १० ॥

२—के = कौन । जाने = दूसरा । पयोधर = गदल ।

भीमा = बराबनि । ५—मिति = दीवाल । भुजंग = सर्प । ७—कर =

हाथ । फनिमनि = सर्प के मणि को । ७—पहु = प्रभु, प्रीतम । गारी =

(१२२)

राहु मेघ भए गरसल सुर ।

पय परिचय दिवसहि भेल दूर ॥ २ ॥

नहि बरिसए अवसन नहि होए ॥

पुर परिजन सचर नहि कोए ॥ ३ ॥

चल चल सुन्दरि, कर गए साज ।

दिवस समागम सपजत आज ॥ ४ ॥

गुरुजन परिजन डर कर दूर ।

बिनु साहस अभिमत नहि पूर ॥ ५ ॥

एहि ससार सार यथु एक ।

तिला एक सगम, जाय जिय नेह ॥ १० ॥

भनइ निद्यापति कथिऊठहार ।

कोटिहुँ न घट दिवस अभिसार ॥ १२ ॥

गाली, शिकायत । १०—कपने = कप क्या नहीं करता ।

१—मेघ ने राहु बनकर सूर्य को घन किया है—मेघ के कारण सूर्य हीनप्रभ हो गये हैं । २—पय-परिचय = राह को पहचान । दिवसहि = दिन में ही । ३—अवसन = अवसन, समाप्त । मेघ न बरसता है, न सुन जाता है । ४—गाँव में लोग नहीं आते-जाते । ५—कर गए साज = जाकर साज करो—भूषण करो । ६—दिवस समागम = दिन का मिलन । सपजत = सम्पूज्य होगा । ७—अभिमत = मनावन्धा । ८—सार = ठर, सत्य । यथु = वस्तु । १० = एक पण के लिये रक्खीड़ा और जावन भर प्रेम करना । १२—कोटिहुँ = करोड़ों टपाव करने पर भी । न घट = न घट सकता, न हो सकता ।

(१२३)

आज पुनिम तिथि जानि मोयँ अपलिहुँ

उचित तोहर अभिसार ।

देह-जोति ससि किरन समाइति

के विभिनावर पार ॥ २ ॥

सुन्दरि अपनहु हृदय विचारि ।

आख पसारि जगत हम देखलि

के जग तुअ सम नारि ॥ ४ ॥

तोहँ जनि तिमिर हीत कए मानह

आनन तोर तिमिरारि ।

सहज विरोध दूर परिहरि धनि

चलु उठि जतए मुरारि ॥ ६ ॥

दूती घवन हीत कए मानल

चालक भेल पंचवान ।

हरि अभिसार चललि घर कामिनि

विद्यापति कवि भान ॥ ८ ॥

१—पुनिम=पूर्णिमा । अपलिहुँ=मैं भाई । २—देह

जोति=शरीर की काति । ससि किरन=चन्द्रमा की किरन (मै) ।

समाइति=धुस जायगी, मिल जायगी । के=कौन । विभिनावर

पार=विभिन्न कर सकता है, अलग कर सकता है । ५—जनि—

नहीं । तिमिर=अंधकार । हीत=मित्र । आनन=मुग । तिमिरारि=

अंधकार का शत्रु चन्द्र । ६—जतए=जहाँ । ७—चालक=प्रेरक ।

पंचवान=काम । हरि अभिसार=क्षण से गुप्त मिलन करने को ।

(१२४)

अरुन किरन किछु अम्बर देल ।
 दीपक सिपा मलिन भए गेल ॥ २ ॥
 हठ तज माधव जपवा देह ।
 राखए चाहिअ गुपुत सनह ॥ ४ ॥
 दुरजन जाएत परिजन कान ।
 सगर चतुरपन होएत मलान ॥ ६ ॥
 भमर कुसुम रमि न रह अगोरि ।
 फेओ नहि बेकन करए निअ चोरि ॥ ८ ॥
 अपनयँ धन हे धनिक घर गोए ।
 परक रतन परगट कर कोए ॥ १० ॥
 फाव चोरि जाँ चेतन चोर ।
 जानि जाए पुर परिजन मोर ॥ १२ ॥
 मनह विद्यापति सपि कह सार ।
 से जीवन जे पर उपकार ॥ १४ ॥

१—अरुन किरन=सूर्य की किरण । अम्बर=आकाश ।
 २—सिपा=लौ, टेम । ३—तज=छोटी । जपवा देह=जाने गे ।
 ४—गुपुत=गुप्त, छिपा हुआ । ६—सगर=सब । मलान=मलान,
 मलिन । ७—भमर=भौरा । रमि=रमण कर, विशार कर ।
 अगोरि=अगार कर रहनी । ८—बेकन=भक्त प्रसन्न । ९—१०—
 अपनी लोग अपने धन को भी छिपाकर रखते हैं । फिर दूसरे के धन
 को वहीँ की ही प्रकार चुरता है । ११—फाव=पकना, शोभना ।
 चेतन=चतुर । १२—सार=सत्य ।

दुहु रूप लावनि मनमथ मोहति (१२५)

निरपि नयन भुलि जाय ।

रजनि जनित रति विशेष अलापन

अलस रहल दुहु गाय ॥ २ ॥

चाँचर कुन्तल ताहे कुसुमदल

लोलत आनहि भाँति ।

दुहु दुहु हेरि मुख हृदय बाढप सुख

घोलत भूलत पाँति ॥ ४ ॥

निज निज मन्दिर नागरि नागर

चलइत कर अनुबन्ध ।

विरह विपानल दुहु तनु जारल

लोचन लागल धन्व ॥ ६ ॥

भीतक-चीत पुतुलि सन दुहु जन

रहल विदायक बेला ।

प्रेम पयोनिधि उछलि उछलि गड

चेतन अचेतन भेला ॥ ८ ॥

दुहु जन चीत रीत हेरि सहचरि

छन छन गगनहि चाय ।

रजनि पोहाओल सब जन जागल

से उर अधिक डराय ॥ १० ॥

सेखर बुझि तव करि कत अनुभव

दुहुसंग भग कराव ।

निज निज मन्दिर गमन करल दुहु

गुरुजन भेद न पाय ॥ १२ ॥

छलना

(१२६)

मन्दिर अङ्गुली सहचरि मेलि ।

परसगे रजनि अधिक भइ गेलि ॥ २ ॥

अउ सति चललहु अप्पन गेह ।

तउ मझु नाद भरल सय देह ॥ ४ ॥

सति रहल हम करि एक चीति ।

दैर बिपाक भेल त्रिपरीत ॥ ६ ॥

न घाल सजनि सुन सपन सम्याद ।

हँसइत केहु जनि घर परिवार ॥ ८ ॥

बिपाद पडल मझु हृदयक माँझ ।

तुरित घोंचायला नौबिक काज ॥ १० ॥

एक पुरुष पुनु आओल आगे ।

कोप अरुन आँधि अधरक दागे ॥ १२ ॥

से भय चिहुर चीर आनहि गेल ।

कपाल काजर मुख सिंदुर भेल ॥ १४ ॥

अतर कहय केह अपजस गाय ।

विद्यावति कह के पतिआग्र ॥ १६ ॥

१—अङ्गुली = मै भी । सहचरि = सती । २—परसगे =
बानचीन में । रजनि = रात । ४—सति रहल = सो रही । चीन
एक करि = चित्त एकाग्र करव । ६—बिपाक = वन । ७—सपन
= स्वप्न । ८—परिवार = प्रवाद, शिकायत । १०—घोंचायली =
शिथिल कर दिया । तुरित काज = नौबी का बधन । १२—अरुन
= लाल । अधरक दागे = गाल पर निह बना दिया ।

(१२७)

कुसुम तोरण गेलहुँ जाहाँ ।
ममर अधर खंडल ताहाँ ॥ २ ॥
तेँ चलियलहुँ जमुना तीर ।
पवन हरल हृदय चीर ॥ ४ ॥
म सखि सरूप कहल तोहि ।
आनु किछु जनि बोलसि मोहि ॥ ६ ॥
हार मनोहर बेस्त भेल ।
उज्जर, उरग ससूअ लेल ॥ ८ ॥
तेँ धसि मजूर, जोडल काँप ।
नखर गाहल हृदय काँप ॥ १० ॥
भन विद्यापति उचित भाग ।
वचन पाटव कपट लाग ॥ १२ ॥

१३—से भण=उस दर से । विकुर=कुरा । चीर=साड़ी । भान
गेन=दूमे हो डग वा हो गया । १४—खाल=मरनक
१५—भनर=हृदय की बात । १६—पतिआव=विरगम करेगा ।

१—कुसुम=कूल । गेलहुँ=गई गई । २—ममर=भारा
अधर=भोछ । ३—तेँ=वहाँ से । ४—हृदय चीर=यस
की साड़ी, भन । ५—सरूप=सुरूप । आनु=गन्य । ६—
बेस्त=व्यक्त, प्रसन्न । ७—उज्जर=उज्जर । उरग=मय । ८—म
गाहल=मय पहा । १०—नखर, गाहल=नखर गहा गया ।
१२—पाटव=पटुता, चतुरता ।

(१२८)

ससि हे तोहे हमर बहु सेवा ।
 पेसनि वानि कयहु जनि बोलवि
 ०११ जाति कुल किए मोर सेवा ॥ ३ ॥
 गोमुख नगर कान्हू रतिलम्पट
 जोवन सहज हमारा ।
 तुह ससि रभसि मोहे जनि बोलवि
 लोरु करव पतिआरा ॥ ४ ॥
 केसर कुसुम हेरि हम कौतुक
 भुज जुग मेदल ताहि ।
 दाडिम भरम पयोधर ऊपर
 पडलहु पीर लोभाहि ॥ ५ ॥
 चकित उभय भुज इति-उति पेपल
 तैं वेस भए गेल आन ।
 इये परिवाद कहसि, मोहे बैरिनि
 इह कवि सेपर भान ॥ ८ ॥

१—हे ससि, मैं तुम्हारी बहुत सेवा करूँगी । २—वानि =
 बोली । जाति कुल = मेरा जाति-कुल क्यों लोगी, क्यों नष्ट
 करोगी । ४—रभसि=दिल्ली मैं । पतिआरा = विश्वास । ५—
 वेशर के फूल देख कर, कौतुकवश, उमे दानों हाथों से मुसल दिया [जिस
 कारण मेरे अंगों में अगलाग लग दीख पड़ते हैं] । ६—अतार समझकर
 सुगने मेरे बुच्चों पर लुमा गये [उनकी आँचों के आपात से कुन
 सनविधन हो गये, भिमे तुम नख-रेखा समझ रही हो] । ७—उभय =

४५ (१२६)

खरि नरि वेग भासलि नाइ ।

घरए न पारवि बाल कन्हाइ ॥ २ ॥

ते धसि जमुना भेलहुँ पार ।

फट्टा यलआ टूटल हार ॥ ४ ॥

ए सखि ए सखि न बोल मद ।

विरह बचन बाढए दुदु ॥ ६ ॥

कुटल एसल जमुन माँझ ।

ताहि जोहइत पडलि साँझ ॥ ८ ॥

अलक तिलक तँ यहि गेल ।

सुध सुधाकर बदा भेल ॥ १० ॥

तटिनि तट ७ पाइअ बाट ।

तँ फुच गडल कठिन काँट ॥ १२ ॥

भन त्रिद्यापति निअ अपसाद ।

बचन कओमल जितिअ बाद ॥ १४ ॥

शेनों । भुन=खाय । तँ=इससे । वेप = रप । भन=दूसरा ।

१—खरि=सीम । नरि=नदी । भासनि=भसत गरी, बस

चली । नाइ=नाव, नौका । ३—धसि=धरकर । ४—बलआ=

चूडी । ५—मद=बुरी बात । ६—विरह=विरस, कठोर ।

दद=मगड़ा । ७—समल=गिर पड़ा । ८—जोहइत=खोजने में ।

९—अलक-आलता, महावर । तिलक=टीका । १०—सुध=

शुद्ध, निष्कल । सुधाकर=चंद्रमा । ११—तटिनि=नदी । बाट=

राह । १२—गडल=गड़ गया । १३—अपसाद=परायण ।

(१३०)

ननदी सरप निरूपह दोसे ।
विनु विचार बेभिचार बुझओवह
सासू करतन्हि रोसे ॥ २ ॥
कौतुक कमल, नाल सयँ तोरल
करप चाहल अयतसे ।
रोप क्रोप सयँ मधुकर आओल
तेहि अधर कर दसे ॥ ४ ॥
सरवर-घाट घाट कटक तह
देखहि न पारल आगू ।
साँकरि गट उरहि कहु चललहु
तँ कुच कटक लागू ॥ ६ ॥

१४- वरन वओसप=वर्ण चातुरी । बा=मुकरमा ।

१-सरप=वस्त्र आकृति । निरूपह=निरूपण करती
हो । मेरी नन, तुम गति देखकर मुझे दाव लगानी हो ।
२-बेभिचार=प्रभिचार पाप कम । बुझओवह=समझाओगी ।
रामे=प्राप्त । ३-नाल सयँ=मृणा ने । अरामे=मिर का
आभूषण । ४-रोप क्रोप क्रोधित होकर । वप=कमल का भीतरी भाग ।
मधुकर=भात । तेहि=उसीने । दमे वर=वाट चिया (जिसमे
थोड़ा मजिन हा गया) ५-सरवर=तलाव । घाट=सड़ । केंर
नरु=वर्णों के पेड़ । देखहि न पारल=देख न सही । आगू=
आगे । ६-साँकरि=सरोण, पत्नी । तँ=इसमें । कुच=मन ।

गम्भ्र कुम्भ सिर थिर नहि थाकए
ते उधमल केस पास ।
सखि जन सयँ हम पाछे पडलिहु
ते भेल दीउ निसास ॥ ८ ॥
पय अपवाद पिसुन परचारल
तयिहु उत्तर हम देला ।
अमरर^२ चाहि धैरज नहि रहले
ते गदगद सर भेला ॥ ११ ॥
भनइ विद्यापति सुन वर जौवति
हैं सम राखल गोइ ।
ननदी सयँ रस रीति बढावह
गुपुँत, वेरुत नहि होई ॥ १२ ॥

७—गरभ = भारी । कुम्भ = घटा । सिर थिर नहि थाकए =
निर स्थिर नहीं रहता । उधमल = शिथिल हो गया । ८—सयँ =
मे । पीछे पालिहु = पीछे पड़ गई । दीउ भेल = नीम हुआ । निमास =
ऊँची सास, उच्छवास । म सखियों से पीछे पड़ गई, भन दीउ
वर उन्हें पाने की चेष्टा करने क कारण साम कलरी चली
जा रही है । ९—पय = राह । अपवाद = शिवायत । पिसुन =
गुप्त । परचारल = प्रचारित किया, फैलाया । तयिहु = वहाँ ।
उत्तर देना = उत्तर दिया । १०—अमरर चाहि = अमर
वश, क्रोध के वश हो । गदगद सर = भराई आवाज । ११—
मम = यह मव । गद = झिपाकर । गुपुन वरन नहि होई = जो
प्रकट है वह छिप नहीं सकता ।

(१३१)

जाहि लागि गेलि हे ताहि कहाँ लईलि हे ।

ता पति, बरि, पितु काहाँ ।

अछलि हे दुख सुख कहह अपन मुख

भूपन गमओलह जाहाँ ॥ २ ॥

सुन्दरि, कि कप पुकाओय कँते ।

जन्हिका जनम होइत, तोहे गेलिहु ।

अइलि हे तन्हिका अते ॥ ४ ॥

जाहि लागि गेलहु से चलियाएल

तैं मोयँ धापल नुकाई ।

१—जाहि लागि = जिसके लिये (जन के लिये) । गेलि = गम ।

जाहि = उसे । कहाँ लाइलि = कहाँ लाइ (नहीं लाइ) । ता पति
बरि पितु कहाँ = उसके (जल व पति = समुद्र, समुद्र का
बैरी = अगस्त्य, अगस्त्य का रिता = घर, बड़ा—बड़ा कहाँ है ?

२—अछलि = थी । भूपण = अगस्त्य आदि । गमओलह = छो
डिया । कहाँ अगस्त्य आदि (रनिजीका की मस्तो में) नष्ट
हो गये, बड़ा के मुख-दुख अपने ही मुख में कहो । ३—कि

कप = क्या कर । पुकाओय = ममकाओगी । ४—जहि का जनम
होइत = जिसका (दिन का) जन्म होने ही—प्रातः काल हा ।

अइलि । तन्हिका अते = उससे (दिन व) अत में—सन्ध्या
की आइ । ५—निमक लिये (जल के लिये) मैं गइ वह
(जन वृष्टि वर्षा) चली आइ—वर्षा होने लगे, जिससे मुझे
दीकर दिपना पड़ा ।

से चति गेल ताहि लप चललिहु
 ते पय भेल अनेआई ॥ ६ ॥
 मकर गहन ५ रोड़ि गेताइत
 मेदिनि घाहन आगे ।
 जे सर अछलि संग, से मय चलनि भंग
 उयरि अपलहुँ अति भाग ॥ ८ ॥
 जादि हुइ राज करइछनि सासुन्हि
 स मिलु अपना सगे ।
 भाइ विद्यापति सुन पर जीयति
 गुप्त नै रति रंग ॥ १० ॥

मान

(१३२)

खनहि खन महँधि भइ किल्लु अरुन नयन कइ
कपट धरि मान सम्मान लेही ।
कनक जयँ प्रेम कसि पुनु पलटि चाँक हसि
आधि सयँ अधर मधु पान देही ॥ २ ॥
अरेरे इन्दुमुखि अइ न कर पिअ हृदय खेद हर
कुसुम सर रग ससार सारा ॥ ३ ॥
यचन बस होसि जनु ससरि मित्र होइह तनु
सहज बर छाडि देब सयन-सीमा ।
प्रथमे रस भंग भेल लोभे मुख सोभ गेल
घाँधि भुज पास पिय घरय गीमा ॥ ५ ॥
जदि नयन-कमल बर मुकुल कल कान्ति धर
खर-नखर घात कइ सहै धेला ।
परम पद लाभ सम मोद खिर हृदय रम
नागरो सुरत-सुख अमिअ मेली ॥ ७ ॥
सरसकपि सुरस भन चारु तर चतुरपन
नारि आराहिअइ पंचयाना ।
सकल जन सुजन गति रानि लखिमाक पति
रूप नारायन सिवसिध जाना ॥ ९ ॥

[मान शिवा] १—महँधि=महँगा । ३—अइ=यनमदूल ।
कुसुम-सर=नामदेव । ५—गोप्य=गोपा, गरदन । ६—यदि नयन
रूपी कमल कली का रूप धारण करे—आँखें मिथने लगे—तो उस समय
नय का विकट प्रहार करना ।

(१३३)

लोचन अरुन धुमल चड भेद ।

रयनि उजागर गरुअ निवेद ॥ २ ॥ न

ततहि जाह हरि गकरह लाथ ।

रयनि गमभोलह जन्हिके साथ ॥ ४ ॥

कुच कुंकुम माखल हिय तोर ।

जनि अनुराग रांगि करु गोर ॥ ६ ॥

आनक भूपण तोर कलङ्क ।

चड ओ भेद मन्द ओ परसङ्ग ॥ ८ ॥

चिटि-गुड, धुपडलि, राडक पोरि । ५

लभोले लाथ, येकत भेल चोरि ॥ १० ॥

मनह विद्यापति, यजयदु घाद ।

चड अपराध मोन पप साथ ॥ १२ ॥

१—२—उजागर = जागरण । निवेद = बनाना है । लल
भाँटों को देखकर मने सारा भेद ममभ निया, वे रात का अधिक
जागरण प्रगट करती है । 'रजनि जनिउ गुरुनागर राग कपायि
तमलम निमेषम्—गीत गाविन्द ।' ३—ततहि जाह = वही जागो ।
लाथ = बहाना करना । ५—६—(उसक) कुच का लगा केसर तुम्हारे
हृदय में लिपटा हुआ है । मानो अनुराग के रंग में रंग कर (काले
वस्त्र स्थल को) गोरा बना दिया हो । ७—आनक = दूसरे का ।
८—परसग = प्रसंग संगति । ९—चिटि-गुड = गुड चीटी । यह
= शर्करा की एक उपव्यति । पोरि = घर । १०—लाथ लभोले = बहाना
करने पर । येकत = व्यक्त । ११—यजयदु = बोलना । घाद = ध्यर्थ ।

(१३४)

कुकुम लओलह नख खत गोइ ।

अवरक काजर अपलह धोइ ॥ २ ॥

तइओ न छपल कपट पुधि तोरि ।

लोचन अरन बेकत भेल चोरि ॥ ४ ॥

चल चल कान्ह घोलह जनु आन ।

परतय चाहि अरिक अनुमान ॥ ६ ॥

जानओ प्रकृति बुझओ पुनसीला ।

जस तोर मनोरथ मनसिज लीला ॥ ८ ॥

यचन नुकायह बेकतओ काज ।

तोय हँसि हेरह मोय घड लाज ॥ १० ॥

अपथहु सपर नुकायह राधे ।

कोन परि खेओम सठ अपराधे ॥ १२ ॥

भनइ विद्यापति विअ अपराध ।

उदघट न कर मनोरथ साध ॥ १४ ॥

१—नायिका ने जा अपने नखों से बकोकर तुम्हारे बख-
शक पर निह बना दिया था, उसे कुकुम लगाकर ठिपा लाये हो ।

२—अवरक = आठ या । अपलह = आये हा । ३—छपल—छिप सका ।

४—अरन = साथ । बेकत = व्यक्त, प्रकट । ५—आन = अन्य ।

६—परतय = प्रत्यय । ७—प्रकृति = स्वभाव । ८—जम = जैसा ।

मनसिज = कामरेव । ९—नुकायह = क्षिपाते हो । १०—तुम हँस-
वा (मेरी ओर) देखने हो, वि-तु मुझे लग्ना आती है ।

११—अपथहु = बुरी राह जाने पर भी । १२—कोन परि = किस प्रकार ।

खेओम = क्षमा कहगी । १४—उदघट = प्रकट । साध = रुद्धा ।

(१३५)

आध आध मुदित भेल दुहु लोचन
बचन बोलत आध आधे । ×

रति आलस सामर तनु भामर
हेरि, पुरल मोर साधे ॥२॥

माधव, चल चल चल तहि ठाम ।

जसु पद जात्रक हृदयक भूषण,
अबहु जपत तसु नाम ॥४॥

कत चंदन, कत मृगमद, कुकुम
तुअ कपोल रहु लागि ।

देखि सौति अनुरूप कपल विहि
अतए मानिए यह भागि ॥६॥

१—मुदित=मुँदे हुए । २—रति-आलस=काम-क्रोश

जनित थकावट । सामर=श्यामला । भामर=मलिन । हेरि=

हेलनर । साधे=होमना ३—चल=बाओ । तहि ठाम=उसी

जगह । ४—जसु=जिसके । पद जात्रक=पैर का महावर । निष्ठके

पैर का महावर तुम्हारे हृदय का आभूषण हुआ है, उसीवा-जान

तुम अब भी जप रहे हो [अवरमान् कृष्ण के मुँह से-उस नाविक

का नाम निकल गया था-] । ५—कत=कितना । मृगमद=कस्तूरी ।

कुकुम=केशर । कपोल=गौर । ६—अनुरूप=समान ।

६—मैं तो शरीरमें अपना सौभाग्य मानती हूँ कि मर्या ने मुझे
एक योग्य सौत दी है ।

(१३६)

सुन सुन सुन्दरि कर अधधान ।

बिनु अपराध कहसि काहे आन ॥२॥

पुजलौ पसुपति जामिनि जागि ।

गमन बिलम्ब भेल तेहि लागि ॥४॥

लागल भृगमद कुकुम दाग ।

उचरइत, मन अधर नहि राग ॥६॥

रजनि उजागर लोचन घोर ।

ताहि लागि तोहे मोहे योलसि चोर ॥८॥

नवकविसेखर कि कहव तोष ।

सपथ करह तब परतीत होय ॥१०॥

१—अधधान = मनोयोग ध्यान देना । कहसि काहे आन = दूसरी बात क्यों कह रही हो । पसुपति = महादेव । जामिनि = रात । ४—गमन = आने में । तेहि लागि = उसी लिये । ५—६—उचरइत = उच्चारण करने । राग = लालिमा । कुस्तूरी और केसर से शिव की पूजा की शरीर पर उड़ीके बिंदु हैं । बार-बार मंत्र उच्चारण करने के कारण आँख की लड़ाई नष्ट हो गई । ७—रजनि = रात । उजागर = जागरण । घोर = भयानक (लाल) । ८—इसी लिये तुम मुझे चोर कहती हो । ९—१०—विद्यापति कहते हैं—तुम क्या कहानो, जब शाय कपो, तो तुम्हारी बातों पर विश्वास हो ।

१ [अगले पद में श्रीकृष्ण की विभिन्न शाय पदविये और गौर कीविये]

(१३७)

धनि माननि, करह सजात ।

तुआ कुच हेम घट हार भुजगिनि

ताक उपर धर हात ॥ २ ॥

तोहे छाडि जदि हम परसव कोय ।

तुअ हार-नागिनि फाटव मोय ॥ ४ ॥

हमर वचन यदि नहि परतीत ।

बुझि करह साति, जे होय उचीत ॥ ६ ॥

भुज-पास बांधि जघन तर तारि ।

पयाधर पाथर हिय दह भारि ॥ ८ ॥

उर फारा, बांधि राख दिन राति ।

विद्यापति कह उचित इह साति ॥ १० ॥

१—धनि = वाला । करह सजात = सयन करो, क्रोध छोड़ो ।

२—हेम घट = सोने का घड़ा । भुजगिनि = सर्प । ताक = उसके ।

[यदि विश्वास न हो तो शपथ करा लो । सोना छुनर शपथ खाना

प्रामाणिक माना जाता है, सो] तेरे कुच रूपी साने के बड़े तथा हार

रूपी सर्पिली के ऊपर हाथ रखकर मैं शपथ खाता हूँ । ३—

छाडि = छोड़कर । परसव = स्पर्श करेगा । कोय = किसे को ।

६—साति = शास्ति, दंड । ७—भुज पास = भुजा रूपी जगैर ।

जघन तर = जीवों के बीच में । तारि = ताड़ना करके, खुर ठोक

पीट के । ८—सनरूपी भारी पत्थर हृदय पर रख दो । ९—उर

फारा = हृदय रूपी चलाखाने । राख = रखो । १०—१ = यह ।

मानि = शक्ति, मंड ।

(१३८)

अरुन पुरव दिसा, वितलि मगरि निसा
गगन मगनु भेल चदा ।

भूदि गेलि कुमुदिनि तइऔ तोहर धनि
भूदल मुख अरविदा ॥२॥

चाद बदन, कुबलय बुड लोवन
अधर मधुरि बिरमान ।

सगर सरोर कुसुम तौप सिरिजल
किण दुहु हृदय पखान ॥३॥

अस कति करह, ककन नहि पहिरह,
हार हृदय, भेल भार ।

गिरि सम गरुभ मान नहि मुँचलि
अपरयतुअवेउहार ॥४॥

अवगुन परिहरि हेरह हरलि धनि
मानक अवधि विहान ।

राजा सिवसिंघ रूप नरायन
कवि विद्यार्थत भान ॥५॥

- १—अरुन=लाल । वितलि=वीत गइ । सगरि=समग्र, समूची । मगन=मग्न हूब जाना । २—अरविदा=वमल । ३—बदन=मुग । कुबलय=वमन । मधुरि=एक लाल फूल । ४—कुसुम=फूल । सिरिजल=बनाया । किण दुहु=क्यों दिया । पखान=पत्थर । ५—अस=पेसा । कनि=क्यों । ककन=कंगन । ६—गरुभ=मारी । मुँचलि=छोड़ती हो । ७—विहान=प्रातः काल ।

(१३६)

मदन-कुँज पर वइसल नागर
वृन्दा सखि मुख चाहि ।
जोड़ि जुगुल कर विनति करए कत
तुरित भिलायह राहि ॥ २ ॥
हम पर रोखि विमुए भइ सुन्दरि
जयहु चललि निज गेहा ।
मदन हुतासन मभु मन जारल
जीव न बाँधइ थेहा ॥ ४ ॥
तुअ अति चतुर सिरोमनि नागर
तोहे कि सिखाओव वानि ।
तुहु गिनु हमर मरम कोन जानत
कइसे मिलाएव आनि ॥ ६ ॥
चन्दम चाँद पवन भेल रिपु सम
वृन्दावन घन भेल ।
कोकिल मयूर भ्रकार देत कत
मभु मन मनमथ सेल ॥ ८ ॥
छल छल नयन वयन भरि रोअत
चरन एकडि गहि जाव ।
हा हा से घनि हमए न हेरए
सिंह भूपति रस गाय ॥ १० ॥

१—चाहि=देखना । २—राहि=राधा । ४—मदन-कुँज
सन=नामदेव रूपी अग्नि । जीव न बाँधइ थेहा=जीव स्वैर

(१४०)

माधव, इ नहि उचित बिचार ।
जनि क पहन घनि काम कला सनि
से किए करु व्यभिचार ॥ २ ॥
मानहु ताहि अधिक कए मानव
हृदयक हार समान ।
कोन परजुगति आन के ताकव
की थिक तोहर गेशान ॥ ४ ॥
रूपन पुरुष के केशो नहि निक कह
जग भरि कर उपहास ।
निज धन अद्वस्त नहि उपमोगव
केवल परहिक आस ॥ ६ ॥
भनइ पिद्यापति सुनु मधुरापति
इ थिक अनुचित काज ।
मानि लायव वित, से, जदि हो नित
अपन करव कोन काज ॥ ८ ॥

नहीं बोलते प्राण स्थिर नहीं होने । ८—मनमय = कामदेव ।

२—जनिक = मिसत्री । पहन = पेसी । सनि = समान ।

४—परजुगति = प्रयुक्ति । आन के ताकव = दूसरे को देखना । की =
क्या । थिक = है । ५—रूपन = रूप । निक = नोक अच्छा
उपहास = हँसी, । ६—अद्वस्त = रहते । परहिक = दूसरे की ।

८—यदि माँगा हुआ धन नित्य रहता—यदि मैगनी की चीज पे ही काम
चल पाता—तो लोग अपने धन क लिये क्यों बट उठने ?

(१४१)

विरह व्याकुल बकुल तरुतर

पेखल न दकुमाः रे ।

नील नीरज नयन सयँ सखि

दरद नीर अपार रे ॥ २ ॥

पेखि मलयज पङ्क मृगमद

तामरस घनसार रे

निज पानि पङ्क मूदि लोचन

धरनि पङ्क असँमार रे ॥ ४ ॥

बहद मन्द सुगन्ध सीतल

मन्द मलय समीर रे ।

जनि प्रलय कालक प्रयल पावक

दहद सुन सरीर रे ॥ ६ ॥

अधिक वेपथ दृष्टि पङ्क पिति

मखन मुकुता-माल रे ।

अनिल-तरल तमाल तरुवर

मुच सुमनस जाल रे ॥ ८ ॥

मान-भनि तजि सुदति चलु, जहि

राए रसिक सुजान रे ।

सुखद सुति अति सरस दण्डक

कवि विद्यापति भान रे ॥ १० ॥

१—बकुल = मौलि, मनसरी । २—नीरज = कमल । ३—मल

यज = चन्दन । मृगमद = वस्तूरी । तामसर = वमल । पन

(१४२)

रामे, कि अत्र चोलसि आन ।
तोहर चरन सरन से हरि
अबहु मेटह मान ॥ २ ॥
गोवर्धन गिरि याम कर धरि
कएल गोखुल पार ।
जिरह से खिन करक फंकन
गरअ मानए भार ॥ ४ ॥
दमन काली कएल जे जन
चरन जुगल बरे ।
अत्र भुजगम भरम भूलल
हृदय हार न धरे ॥ ६ ॥
सहज चाक छाड्य न बरत
न बरमे नदि तोर ।
नरिन जलधर बारि रिनु
न विषएनाहरि नीर ॥ ८ ॥

सार = कपूर । ४-पानि = हाथ । ६-पावक = जमिन । सु = शय ।
७-बेषय = व्यथित । रिनि = पृथ्वी । मसु = बिकना = अनिय सरल =
वायु द्वारा बान्दोलित । मुन = गिरावा । सुमनस = पून । ६-मुदति =
शुन्दरी । १०-सुति = सुनने में । दटक = इस छंद का नाम टक है ।
१-रामा = सुंदरी । अन = अन्त । ४-करक = हाथ का ।
गरम = अधिक, बठिन । ६-दमन = दलित, गट । बरे = बेठ ।
भुजगम = सर्प । ७-बरत = बरत । बरमे = बैठता । ८-जलधर = धारन ।

(१४३)

सखि हे वृक्षल कान्ह गोश्वार ।
 पितरक टाँड काज दहु कश्चोन लह
 ऊपर चकमक सार ॥ २ ॥
 हम तो कएल मन गेलहि होयत भल
 हम छुलि सुपुरुष भाने ।
 तोहर वचन सखि कएल, आँखि देखि
 अमिअ भरम बिय पाने ॥ ४ ॥
 पसुक संग हुन जनम गमाओल
 से कि युष्मथि रतिरंग ।
 मधु-जामिनि मोर आज बिकल गेलि
 गोष गमारक संग ॥ ६ ॥
 तोहर वचन कृप धसि जाय्य
 ते हमे गेलहु अयाट ।
 घंदन भरम सिमर आलिगल
 सालि रहल हिय काट ॥ ८ ॥
 मनर विद्यापति हरि यदुपलम
 कएल यदुत अपमा ।
 राजा सियमिह रूपारायन
 लगिमा पति रस जा ॥ १० ॥

२—पितरक = पोतल बा । टाँड = दाप बा षड गदग १—
 गपदि = गो मे । दखि = दो । ६—मधुम मित्र = बर्ग की पत्नी । ७—
 भया = भय । ९—पितर = पोतल । १०—यदुपलम = यदुपलमि । ११—
 १८८

(१४४)

मधु सम बचन कुलिस सम मानस
प्रथमहि जानि न भेला ।
अपन चतुरपन पिसुन हाथ देल
गरुअ गरुअ दुर भेला ॥ २ ॥
सखि हे, मन्द प्रेम परिनामा ।
यह कए जीवन कएल अपराधिन
नहि उपचर एक ठामा ॥ ४ ॥
भाँपल कृप देसहि नहि पारल
आरति चलसहु धाइ ।
तरन लघू-गुरु किछु नहि गूनल
अउ पछतायऊ जाई ॥ ६ ॥
एक दिन अछलहु आन भान हम
अउ धूकिल अयमाहि ।
अपन मुँड अपने हम चाँछल
दोस देव गए काहि ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति सुनु अर जौवति
चित्त गनय नहि आने ।
प्रेमक कारन जोउ उपेक्षिए
जग जन के नहि जाने ॥ १० ॥

१-कुलिस=बन्ध । २-पिसुन=दुष्ट । ४-उपचर=शक्ति । ५-
आरति=शीघ्रतामे । ६-गूनल=समझा । ७-आनभान=नासमझ । भवगादि=
अन्य प्रवेश करके । ८ चाँछल=झील लिया । १० उपेक्षिए=उपेक्षा करो ।

(१४५)

माधव, दुर्जय मानिनि मानि ।

विपरित चरित पेखि चरुति भेल

न पुछल आघहु यानि ॥ २ ॥

तुअ रुप साम अघर नहि सुनए

तुअ रुप रिपु सम मानि ।

तुअ जन सयँ सम्मास न करई

कइसे मिलाएय आनि ॥ ४ ॥

मोल बसा घर, कांचन छुरि कर

पौतिक माल उतारि ।

बारि रद छुरि कर मोति माल घर

पहिरल अरुनिम सारि ॥ ६ ॥

असित बिज उर पर छरा, मेटल

मलयज देह लगाइ ।

मृगमद तिलक धोइ, दगंचरा, कय

सय मुग लए छपाइ ॥ ८ ॥

०—विपरित=वर्ण । १—रुति=रुति । २—सम=

सम (कृत) । अघर=अघर । ४—सयँ=से । सम्मास=

सावनीय । कांचन छुरि कर=हाथों की कांच की धूँरी । पौतिक=

विराज, नील इति । ६—बारि रद छुरि=हाथी की गीत की धूँरी ।

अरुनिम=रत्न । सारि=साड़ी । ७—असित बिज=असित रत्न ।

दग=दग । मलयज=मलय । ८—मृगमद=मृगमद (बागी होनी दे)

मृगमद=मृगमद की । कय=कय । ९—मुग=मुग, गिरा ।

एक तील छल चार चिबुक पर
निन्दि मधुप सुत सामा ।

तुन अर्घ करि मलयज रजल
ताहि छपाओल रामा ॥१०॥

जलघर देखि चन्द्रातप भापल
सामरि सखि नहि पास ।

तमाल तरु गन चूना लेपल
सिखि पिरु दूरि निवास ॥१२॥

मधुकर डर धनि चम्पक तरु तल
लोचन जल भरिपूर ।

सामर चिबुर हेरि मुकर पट्फल
ट्टि भय गेल सत चूर ॥१४॥

तुअ गुन गाम कह एक सुक पटिन्
सुनतहि उठल रोसाइ ।

पिंजर भटकि फटिक पर पटछ
धाप धपल तहि जाइ ॥ १५ ॥

मेरु सम मान, सुमं, दंड, दंड
देखि भेल रंजु अनन ।

विद्यापति कह गदि मनाय
थापु सिंगरु दान ॥ १६ ॥

चिबुक = दुबो । नि-

को भी लज्जित करण द । १०-...
सु दरी ने उसे निद्र दि । ११-...

(१४६)

मानिनि हम कहिए तुअ लागी ।
नाह निकट पाइ जे जन बचए
तेकर बडहि अमागी ॥ २ ॥
दिनकर-बन्धु कमल सब जानए
जल तेहि जीवन होई ।
पङ्क विहिन तनु भानु सुखावए
जल पटाय घर कोई ॥ ४ ॥
नाह समीप सुखद जत येभव
अनुकुल होएत जोई ।
तेकर विरह सकल सुख सम्पद
एन एन दगधए सोई ॥ ६ ॥
तुहु धनि गुनमति बूझि करह रति
परिजन ऐसन भास ।
सुनइत राहि हृदय भेल गदगद
अनुमति कएल प्रगास ॥ ८ ॥

बैद्यना । १२—बाने समाल के वृष को चूने मे पाव दिया और
(बाने) मयूर और कोयल को खदेड़ दिया । १३—चिकुर=कैरा ।
मुकुर=भाइना । १४—सत्र चूर=सौ डुगड़े । १५—गाम=समूह ।
मुक=गुग्गा । रोसाई=कृपित होकर । पण्डि=एक पण्डित ।
१७—रेनु=बूल ।

१-तुम लागी=तुम्हारे निवे । २-नाह=नहीं । ३-निदर=निये ।
४-विहिन=हीन । भानु=सूर्य । पण्डि=विद्वान् । ६-दगधए=अलग है ।
१६२

(१४७)

मानिनि आव उचित नहि मान ।
एखनुक रंग एहन सन लगइछ
जागल पए पैचवान ॥ २ ॥
जूडि रयनि चकमक कर चाँदनि
एहन समय नहि आन ।
एहि अघसर पिय मिलन जेहन सुख
जकरहि होए से जान ॥ ४ ॥
रभसि रभसि अलि विलसि विलसि करि
करए मधुर मधु पान ।
अपन अपन पहु सयहु जेमाओलि
भूखल तुअ जजमान ॥ ६ ॥
प्रियलि तरंग सितासित सगम
उरज सम्भु निरमान ।
आरति पति मगइछ परतिग्रह
कर धनि सरयस दान ॥ ८ ॥
दीपक द्विप सम धिर न रहए मन
ढूढ कर अपन गेशान ।
संचित मदन वेदन अति दारुन
विधापति कवि भान ॥ १० ॥

२—रस समय का समा (रंग) कुछ ऐसा मालूम होता है,
मानों कामदेव सोते से चग पहा हो । ३—जूडि=शीतल । ४—
जेहन=वैसा । जेवरहि=जिसका । ६—रभसि=व्रमग में भावर ।

(१४८)

अपिल लोचन तम, ताप विमोचन
 उदयति आनन्द कन्दे ।
 एक नलिनि मुख मलिन करण, जनि
 इथे लागि निन्दह चन्दे ॥ २ ॥
 सुन्दरि, वृक्षल तुअ प्रतिभाति ।
 गुन गन तेजि दोष एक घोषति
 अन्त अहारनि ज.ति ॥ ४ ॥
 सरल जीव जन जीव समीरन
 मन्द सुगन्ध सुसीते ।
 दीपक जोति परस जदि नासप
 इथे लागि नीन्द मास्ते ॥ ६ ॥

भलि = भौरा । ६—पु = प्रीतम । जेमाभाति = दिलाया । ७—
 निवली की तरंग में गंगा यमुना (द्वार और रोमानलि) का संगम
 हुआ है, वहां कुच रुपी शिव की भी स्थापना है । ८—भारति =
 भारत, यात्रुल । परनिग्रह = प्रतिग्रह = दान । ९—दीपक-दिप =
 दीपक की शिखा, लौ । १०—मदन = कामदेव ।

१—अक्षित = समूचा (सत्तार) । तम = अधिकार । ताप =
 गर्मी ज्वाला । विमोचन = मारा करनेवाला । उदयति = उगता
 है । फद = मूल, जड़ । २—नलिनि = कमलिनी । इथे = इस लिये ।
 निन्दह = निन्द करती हो । ३—प्रतिभाति = बुद्धि । ४—घोषति =
 बार बार कहना । ५—जीव जन = प्राणी । जीव = प्राण । समीरन =
 वायु । ६—परस = स्पर्श । नीन्द = निन्द करना । मास्ते = पवत को ।

स्थावर जंगम कीट पतंगम
सुखद जे सकल सरीरे ।
कागद पत्र परस जभों नासए
इथे लागि निन्दह नीरे ॥ ८ ॥
खन खन सकल कुसुम मन तोपए
निसि रह कमलिनि सगे ।
चम्पक एक जइओ नहि चुम्पए
इथे लागि निन्दह भृगे ॥ १० ॥
पाँच पख गुन दस गुन चौगुन
आठ दुगुन, सगि माझे ।
विद्यापति का हु आकुल तो यिन
विषाद न पावसि लाजे ॥ १० ॥

७—स्थावर = वृक्ष आदि अचल जीव । जंगम = मनुष्य आदि चलनेवाले जीव । कीट = कीड़े । पतंगम = पतंगे आदि । ८—कागद पत्र = कागज के पत्रे । परस = स्पश । जभों = यदि । नीरे = पानी । ९—खन = क्षण । कुसुम = फूल । तोपए = मृदु करण ह । निसि = रात । १०—चम्पक = चम्पा । जइओ = यदि । भृग = भीरे को । ११— $(५ \times ५ \times १० \times ४ \times ८ \times २) = १६०००$ सखियों के मध्य में । १२—काहु = शीघ्र विषाद = दुःख । पावसि = पानी हो ।

“सा कविता सा वनिता यस्या अश्वेन दरशनेनापि ।
मविहृदय विहृदय सरल तरल च स्फुर भवति ॥”

(१४६)

चानन भरम सेवलि हम सजनी
 पूरत सब मन काम ।
 कटक दरस परस भेल सजनी
 सीमर भेल परिनाम ॥ २ ॥
 एकहि नगर बसु माधव सजनी
 पर भामिनि बस भेल ।
 हम धनि पहनि कलावति सजनी
 गुन गौरव बुर गेल ॥ ४ ॥
 अभिनव एक कमल फुल सजनी
 दीना नीमक डार ।
 सेहो फुल ओतहि सुखायल छथि सजनी
 रसमय फुलल नेवार ॥ ६ ॥
 विधि बस आज आपल सजनी
 एत दिन ओतहि गमाय ।
 कोन परि करय समागम सजनी
 मोर मन नहि पतिआय ॥ ८ ॥
 भनइ विद्यापति गाओल सजनी
 उचित आओत गुनसाह ।
 उठ बघाय कर मन भरि सजनी
 आज आओत घर नाह ॥ १० ॥

१—चानन=चदन । भरम=अम ये । सेवनि=सेवा की ।

२—कटक=प्रियतम का । सीमर=सेमन । ३—परमादिनि=

(१५०)

सजनी अपुन न मोहि परबोध ।
तोहि जोडिअ जहाँ गाँठ पड्य तहाँ /
तेज तम परम विरोध ॥ २ ॥
सलिल सनेह सहज यिक सीतल
[जानय सब कोई ।
से यदि तपत कय जतने जुझाइअ
नइओ विरत रस होई ॥ ४ ॥
गेल सहज हे कि रिति उपजाइअ
कुल—ससि नीली रग ।
अनुमवि पुनु अनुभव अचेतन
पड्य हुतास पतग ॥ ६ ॥

दूतरे की ला । ४—एहिनि = ऐसी । दूर गेल = दूर हो गया । ५—एव
नये कमल के फूल हो (अर्थात् मुने) नीम की छाती पर डाल दिया,
बड़ बड़ी सून गया भीर नेवार का फूल रसयुक्त होकर तिला ७—
द्वि—है । भोगदि = नहीं । ८—यमागम = भेंग । १०—भाओत = भागेगा ।

१—अपुन = अरधान, अनुतिन रूप से । परबाध = सतकाश ।
३—नइअ सीतल यि = स्वभावत ही ठग है । ४—तपत
कय = गम करके । जतने = यत्न पूर्वक । जुझाइअ = ठग बीनिये ।
तइओ = तो भी । विरत रस = रसहीन । ५—कुल रूपी चंद्रमा में
नीला धब्बा पड़ जाने पर विजना भी प्रयत्न करने पर क्या उनमें
स्वाभाविक रंग उत्पन्न हो सकता है । ६—अनुमवि = अनुभव
करके । पुनु = पुनः । अनुभवय = अनुभव करना है । हुतास = अग्नि ।

(१५१)

कयहु रसिक सयँ दरसन होए जनु
दरसन होए जनु नेह ।
नेह बिछोह जनु काहुक उपजए
बिछोह घरए जनु देह ॥ २ ॥
सजनी दुर कर ओ परसङ्ग ।
पहिलहि उपजइत प्रेमक अकुर
दारन बिधि देल भङ्ग ॥ ४ ॥
दैवक दोष प्रेम जदि उपजए
रसिक सयँ जनु होय ।
कान्ह से गुपुत नेह करि अय एक
सयहु सिपाओल मोय ॥ ६ ॥
प्रह्वन औपध सखि कहि नहि पाइअ
जनि जीवन जरि जाय ।
असमजस रस सहए न पारिअ
इह कवि सेखर गाय ॥ ८ ॥

१—सय=से । जनु=नहीं । २—बिछोह=जुदाई । काहुक=
किसीको । ३—दुर कर=अलग करो, बद करा । परसंग=
विषय, वानजीत । ४—दारन=बठोर । भग देल=तोड़ डाल
कुचल डाला । ५—दैवक दोष=विवि विटम्बना से । ६—कृष्ण से
गुप्त प्रेम करके मैं यही एक सिखा लोगों को देती हूँ । ७—एमी
दवा मैं कदा भी नहीं पाती, बिम्बे खाने से ये जवानी बन जाती ।
८—असमजस=दुविधा । सहए न पारिअ=सहा नहीं जाता ।

(१५२)

जनम होअए जनु, जा पुनु होई

जुवती भए जनमए जनु कोई ॥ २ ॥

होई जुवति जनु हो रसमति ।

रसओ धुभए, जनु हो कुलमति ॥ ३ ॥

इधन माग ओं बिहि एक पए तोहि ।

थिरता दिहह अयसानहु मोहि ॥ ६ ॥

मिलि सामी नागर रसधार ।

परयस जनु होए हमर पिआर ॥ ८ ॥

होए परयस कुछ धुभए बिचारि ।

पाए बिचार हार कओन नारि ॥ १० ॥

भनइ बिद्यापति अछ परकार ।

दद-समुद होअ, जोव दए, पार ॥ १२ ॥

१—जो = यदि । जनु = नही । २—जुवती = नौजवान स्त्री ।

३, ४—यदि जुवती होकर जम मिले तो मुरसिका न हो, और यदि

मुरसिका हो तो ऊँचे कुल की नहीं हो । ५-६ = यह । धन = (यहाँ)

वरदान । बिहि = मन्त्र । एक पए = एक ही । ६-थिरता = स्थिरता ।

दिहह = देना । अयसानहु = अतिम अवस्था में भी । ७-सामी = स्वामी,

पति । नागर = चतुर । रसधार = रसिक । ८-परयस = दूसरे के बरा ।

९-१०-यदि परवरा भी हो जाय, तो कुछ समझ-बूझ रखे, क्योंकि

समझ-बूझ होने पर (वह निरवय कर सकेगा कि) कौन कौन गने का

हार हो सक्ती है । ११-अछ = है । परकार = उपाय । दद = बलद

समुद = समुद्र । पार देकर कलह स्त्री समुद्र से पार हो जाओ ।

(१५३) X

चरन-नपर मनि रंजन छाद ।

धरनि लोटायल गोकुल चाद ॥ २ ॥

ढरकि ढरकि परु लोचन मोर ।

कसरूप मिनति कपल पदु मोर ॥ ४ ॥

लागल कुदिन कपल हम मान ।

अबहु न निकसए कठिन परान ॥ ६ ॥ ट्या

रोस तिमिर अत धेरि रिपु जान ।

रतनक मे गेल गैरिक भान ॥ ८ ॥

नारि जनम हम न कपल भागि ।

मरन सरन भेल मानक लागि ॥ १० ॥

विद्यापति कह सुनु धनि राइ ।

रोअसि काहे कह भल समुझाइ ॥ १२ ॥

१-२—मेरे चरण के नख रूपी मणि को रमिग करने के

X कहाने कह गोकुल चन्द (श्रीकृष्ण) पृथ्वी में लोट गया । ३—नोर

= भोसू । ४—कन रूप = किनो प्रकार से । मिनति = मिनती ।

पदु = प्रीति । ६—निकसए = निकलता है । ७-८—प्रोध कपी

अधकार में मैं उस समय क्या जानने गई, रत्न को मैंने गेरु मिट्टी

समझा । ९—भागि = भाग्य । १०—मान के कारण मुझे पृथु

की शरण लेनी पड़ी । ११—राइ = राधा । १२—रोअसि = रोटी है ।

काहे = किस लिये । मग समुझाइ = अच्छी तरह समझाकर ।

(१५४)

धनि भेलि मानिनि सखि गन माफ ।

अनुनय करइत उपजए लाज ॥ २ ॥ ह
पिरितक आरति विरति न सतई ।
इ गित भंगिए दुहु सय कहई ॥ ४ ॥

राहि सुचेतनि कान्हु सयान ।

मनहि समाधल मन अभिमान ॥ ६ ॥

अधर मुरलि जौं धएल मुरारि ।
ति फोइ कवरि धरि पौंधि समारि ॥ ८ ॥

जौं निज पुर पथ घएल मुरारि ।

सखि लरि अनतए बलु चर नारि ॥ १० ॥

हरि जय छाया कर धनि पाय ।

धनि सभ्रम बइसलि कर लाय ॥ १२ ॥

कह कवि सेयर सुभय सयान ।

इ गित रस पमारल पंचयान ॥ १४ ॥

१—धनि=बाना । ३—आरति=आतुरता, शीघ्रता । प्रेम की आतुरता उदासीनता नहीं सहती । ४—इ गित भंगिए=इशारे से । ५—राहि=राधा । सुचेतनि=सुचतुरा । ६—समाधल=समाधान किया । ७—फोई=भुने हुए । कवरि=वेश । धनि=बाला । समारि=संभालकर । ८—पुर पथ=गाँव का रास्ता । १०—अनतए=अन्यत्र । सखिओं की ओर देखकर वह चतुर स्त्री दूसरी ओर चली । ११—जब श्रीकृष्ण (रास्ते में) राधा को पाकर वसपर छाया की तो राधा झटपट उनका हाथ पकड़ बैठ गई ।

(१५५)

(श्रीकृष्ण का मान)

राधा माधव रतनाह मंदिर

नियमय सयनक सुख ।

रस रस दारन दंद उपजल

कान्ह चलल तय रस ॥ २ ॥

नागर अंचल कर धरि नागरि २

हसि मिनतो कर आधा ।

नागर हृदय पांचसर हनलक

उरज दरसि मन बाधा ॥ ४ ॥

देख सखि भूठक मान ।

कारन किछुओ युभए न पाए

तय काहे रोखल कान ॥ ६ ॥

रोख समापि पुन रहस पसारल

भेल मधथ पंचवान ।

अयसर जानि मानयति राधा

कथि विद्यापति भान ॥ ८ ॥

१—रतनहि=रत्न का बना । नियमय=निवास करते हैं । सयनक

सुख=शय्या के सुख में-मिलनानन्द में । २—रस रस=धीरे धीरे ।

दारन=पठार । दंद=बलह । रस=रुचकर । ३—अंचल=

चादर की छूट । कर=दाय । ४—पांचसर=वामदेव । हनलक=

मारा । उरज=कुच । दरसि=देखकर । मन-बाधा=मन में

बाधा उपरिधन हुई मा चचल हो उठ्य । ६—रोखल=बुद्ध

(१५६)

एत दिन छलि नव रीति रे ।

जल मीन जेहन पिरीति रे ॥ २ ॥

एकहि बचन बीच भेल रे ।

हंसि पहुँ उतरो न देल रे ॥ ४ ॥

एक हि पलंग पर कान रे ।

मोर लेख दूर देस भान रे ॥ ६ ॥

जाहि घन केओ नहि डोल रे ।

ताहि घन पिया हंसि घोल रे ॥ ८ ॥

धरय योगिनिया के भेस रे ।

करय में पहुँक उदेस रे ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति माग रे ।

सुपुरुष न कर निदान रे ॥ १२ ॥

हुआ । ७—समाधि = समाप्त कर । रहन पमारल = काम मीन में लगा । मध्य = मध्यस्थ, पंच । ८—अब समय जानकर राधा मानवती बन गई । भान = कहते हैं ।

१—एत = इतन । छलि = भी । नव = नवोन । २—मीन = मछली । जेहन = जैसा । ३—बाच भेल = अंतर पड़ गया । ४—पहुँ = प्रीति । उतरो = उत्तर भी । ५—कान = कहेया, कृपण । ६—मोर लेख = मेरे निवे । भान = मानुम बता दे । ७—केआ = कोई । डोल = आना-जाना है । ८—धरय = धर्मगो । योगिनिया = योगिनी । १०—पहुँक = प्रीति का । उदेस = तलाश । ११—निदान = मत ।

(१५७)

जतहि प्रेम रस ततहि दुरन्त ।

पुनु कर पलटि पिरित गुनमन्त ॥ २ ॥

सचतह सुनिये अइसन बेवहार ।

पुनु दृष्टए पुनु गार्वाय हार ॥ ४ ॥

ए कन्हु कन्हु तोहहि सयान ।

त्रिसरिए कोष करए समधान ॥ ६ ॥

प्रेमक अंकुर तोहे जल देल ।

दिन दिन घाढि महातर भेल ॥ ८ ॥

तुअ गुन न गुनल, सउतिन आछ ।

रोपि न काटिए बिपद्रुक गाछ ॥ १० ॥

जे नेह उपजल प्राणक ओल ।

से न करिअ दुर दुरजन योल ॥ १२ ॥

जगत विदित भेल तोह हम नेह ।

एक परान कपल दुइ देह ॥ १४ ॥

भनइ विद्यापति न कर उदास ।

घडक बचन करिए बिसबास ॥ १६ ॥

१-२-—जहाँ प्रेम रस है, वहाँ दीरघ-प्रेम कण्ह भी है ।

अब गुणवान् एग बार दृष्टने पर पुन प्रीति करते है । ३-—सचतह=

सचन दी । ६-समधान=समाधान ७-तोहे=तुम ने । ८-तुमने गुण

कुछ न दया और सौतिन बर लाये । १०-विपद्रुक गाछ=विप का भी

रुख । ११-प्राणक ओल=प्राणों की ओर अन्तर्लाल में । १२-

दुर=दूर, रिक्त । १३-तोह हम=तुम्हारा और मेरा ।

(१५८)

को हम साँभक, एकसरि तारा
भादव चौठक ससी ।

इथि दुहु माक कओन मोर आनन
जे पहु हेरसि न हँसी ॥ २ ॥

साए साए कहह कहह, कन्हु कपट करह जनु
कि मोरा भेल अपराधे ॥

न मोर्यँ कबहु तुअ अनुगति खुकलिहँ
धचन न धोलल मँदा ।

सामि समाज प्रेम अनुरजिए
कुमुदिन सखिधि चदा ॥ ५ ॥

भनइ बिद्यापति सुनु थर जौयति
मेदिनि मदन समाने ।

राजा सियसिंघ रूप नरायन
लखिमा देखि रमाने ॥ ७ ॥

१—२—क्या मैं सयाराल की अकली तारा हूँ (जिसे लोग
देखना नहीं चाहते), या मैं भादा शुक्ल चतुर्था का चरमा हूँ (जिसे
देखने से बलक लगता है) मेरा मुँह इन दोनों में क्या है, जो
हैं प्रियतम, उसे तुम ईसकर नहीं देखते । (वैसा अच्छा तर्क है ।)

३—साए = सखि । कहह = कहो । कन्हु = श्रीकृष्ण । ४—अनु
गति = पीढ़े जाना—आशा मानना । सामि = स्वामी पति । अनु
रजिए = अनुरजन किया, निमाया । सखिधि = निकट । ६—मेदिनि
मदन = पृथ्वी में कामदेव स्वरूप ।

(१५६)

करतल, कमल नयन, ढर नीर ।

न चेतए समरुन कु तल चीर ॥ २ ॥

तुअ पय हेरि हेरि चित नहि थीर ।

सुमिरि पुरुष नेहा दगध सरीर ॥ ४ ॥

कत परि माधव साधव मान ।

विरही जुयति मांग दरसन दान ॥ ६ ॥

जल मध कमल गगन मध सूर ।

आंतर चान कुमुद कत दूर ॥ ८ ॥

गगन गरज मेघ, सिखर मयूर ।

कत जन जानसि नह कत दूर ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति विपरित मान ।

राधा बचन लजापल कान ॥ १२ ॥

१—करतल = हथेली । कमल = (मुख) । नीर = जल ।

२—चेतए = सभलती है । समरुन = आभरण गहने । कुतल = केश । चीर = बल । ३—तुअ पय = तेरी राह । हेरि हेरि = देख देख कर । थीर = स्थिर । ४ = पुरुष = पहला । दगध = जलता है । ५—

कत परि = कत तक । साधव मान = मान किये रहने । ७—मध = मध्य । सूर = सूर्य । ८—आंतर, अंतर, बीच । चान = चंद्रमा । कुमुद = कोइ । वन = किनारा । ९—गरज = गरजना है । सिखर =

पहाड़ की चोटी । १०—जन = आत्मी । जानसि = जानते हैं । ११ १२—यह विपरीत मान कैसा ? [मान भिन्न करती है, पुरुष नहीं] राधा का यह बचन सुन आकृष्ण लजित हुए ।

मान-भंग

(१६०)

बडई चतुर मोर कान ।

साधन दिनहि भांगल मझु मान ॥ २ ॥

जोगी चेस धरि आओल आज ।

के इह समुझव अपरव काज ॥ ३ ॥

सास वचन हम भीख लइ गेल ।

मझु मुख हेरइत गदगद भेल ॥ ४ ॥

कह तब—'मान रतन एह मोय ।'

समझल तब हम सुरुपट सोय ॥ ५ ॥

जे किछु कहल तब कहइत साज ।

कोई न जानल नागर-राज ॥ १० ॥

विद्यापति कह सुन्दरि राई ।

क्रिप तुट समुझवि से चतुराई ॥ १२ ॥

२—भांगल = ताश । मझु = मेरा । ३—आओल = आया ।

४—क = कीन । अपरव = अप्रव । ५—सास वचन = सास के

कहने में । लइ गेल = ले गई । ६—हेरइत = देखते । ७—तब

कहा—'मुझे मान रतन हो ।' ८—सोय = वह । १०—जानल =

जाना । नागर राज = चतुरों का बादशाह । ११—राई = राधा ।

१२—क्रिप = वीर ।

‘सुभाषितेन गीतेन युवतीना, च लीलया ।

मनो न भिद्यते यस्य स योगीश्वरवा पशु ॥’

(१६१)

जटिला सास फुकरि तहि बोलल
बहुरि बेरि काहे ठाढ़ि ।

ललिता कहल अमगल सुनल
सति पतिभय अवगाढ़ि ॥ २ ॥

सुनि कह जटिला घटल की अकुसल
घर सयँ बाहर होय ।

बहुरिक पानि धरि हेरह जोगी
किये अकुसल कह मोहि ॥ ४ ॥

जोगेश्वर फेरि बहुरिक पानि धरि

फोटा — फुसल करय यनदेव । अरु
इहे एक अक बंक, बिसंकुओ
यन मधि पसुपति सेव ॥ ६ ॥

१—फुकरि = चित्ता कर । बहुरि = बहुरिया, पनोह । बरि = बिलम्ब । २—अवगाढ़ि = निश्चय । जटिला सास चित्ताकर बेली बहुरिया, इतनी देर मे बहा क्यों रखी हो ? ललिता ने कहा—कुछ अमगल सुना जा रहा है । सती का पतिभय निश्चित है । ३ = घर की अकुसल = कौन सा अमगल घटा है । ४—बहुरिक पानि = बहुरिया के हाथ । हेरह = देखो । ५ ६—अक = रेखा । बंक = रेखा । बिसंकु = शक्युक्त । मधि = में । तब योगेश्वर ने बहुरिया का हाथ धरकर कहा—वन देवता पुरान करें, यही हाथ की एक रेखा कुछ देती है जिससे अशुभ की आशंका है । इसके निवारण के लिये वन में पशुपति की सेवा करनी होगी ।

पुजनक तंत्र मंत्र बहु आछप

से हम किछु नहि जान ।

जटिला कह आन देव कहाँ पाओर

× तुहु बोज कर इह दान ॥८॥

एत सुनि दुहु जन मंदिर पइसल

दुहु जन भेल एक ठाम ।

मनमय मंत्र पढाओल दुहु जन

पूरल दुहु मन काम ॥९॥

पुनु दुहु जन मंदिर सयँ निकसल

जटिला सयँ कह भाखी ।

जय इह गौरि आराधन जाओव

विधवा जन घर राखी ॥१०॥

एत कहि सबहु चललि निज मंदिर

जोगी चरन प्रनाम ।

विद्यापति कह नटथर सेखर

साधि चलल मन काम ॥१४॥

७-८—पूजा के बहुत से मंत्र-तंत्र है, हम कुछ नहीं जानते ।
जटिला सास ने कहा—तुम्हारे ऐसा देवता फिर वहाँ मिलेगा—तुम
इसे बीनमंत्र दो—भ्राह्म पूक कर दो । ९—प.सल = प्रवेश दिया ।
११—सयँ = से । १२—जब यह गौरी की आराधना करने जाय,
तब विधवा को घर में ही रख लेना—विधवा इसके साथ—न जाय ।
[विचारो मास विधवा भी, जन बड़ अकेली जायगी, तो मिलने में सुविधा
होगी] १४—मनकाम = मन कामना, इच्छा ।

(१६२)

गोकुल देवदेयासिनि आओल
नगरहि ऐसे पुरारि ।
अरु वसन पेन्हि जटिल वेस धरि
कान्ह छार माभ ठारि ॥ २ ॥
मुनि धनि जटिला तुरित चल आओल
हेरइत चमकित भेल ।
हमर बधुक रीति देखि जनि आनमति
कहि मंदिर लइ गेल ॥ ४ ॥
देवदेयासिनि कान ।
जटिला घचन सुधामुषि निबरहि
एक दोठि हेरइ वयान ॥ ६ ॥
कह तब अतनु देव इधे पाओल
हृदि मधि पइसल काल ।

१—देवदेयासिनि = वह स्त्री जा भाइ पूज करती है ।
आओल = आइ । नगरहि = नगर में । २—यहन = लात । वसन =
वस्त्र । पेन्हि = पहनकर । जटिला = योगिनी । माभ = मैं । ३—
जटिला धनि = सास । चमकित = आरवधित । ४—बधुक =
बधुकी, पत्नी की । जनि = जेमे । आनमति = कुछ हमरी ही
तरह की । लइ गेल = (श्री कृष्ण का) ले गई । ६—जगिा =
माम । सुधामुषि = चंद्रवदनो (बाला) । निबरहि = निकट ही । एक
दोठि = एकटक । वयान = मूल । ८—अतनुदव = वामदेव । १५०
इस । हृदि मधि = हृदय में । पइसल = प्रवेश किया ।

निरजन सोइ मत्र जग भाडिए ॥ ८ ॥
तब इह होएव भाल ॥ ८ ॥
एत मुनि जटिला घर दोहे लेअल
निरजन दुहु एक ठाम ।
सव जन निकसल बाहर बइसल
पूरल कान्ह मा काम ॥ १० ॥
चहु सन अतनु मत्र पढि भारल
भागल तब से हो देवा ।
देवदेयासिनि घर सयँ निकसल
चातुरि बूझ्य केवा ॥ १२ ॥
जटिला बहुत भक्ति करि हरयित
कतक भीष आनि देल ।
बह करि सेयर भीख लिए तब
से हो देयासिनी गेल ॥ १४ ॥

८—निरजन = एरा न मे । भाडिय = धाड़ पूर कर । ८ =
बह । भाल = भण्डी । ९—एत = ऐसा । जटिला = सास । घर दोहे
लेअल = दोनों को घर में ले आई । ठाम = गह । १०—निरजना =
निरजन गये । बइसल = बैठी । मनराम = मन कागना, रक्षा । ११—
भागल = भग गया । से हो = बह । १२—केवा = किंगने अधर
निमीने नहा । १३—भक्ति = भक्ति । बन्क = बिना (बहुत) आनि
दल = ला दिया । १४ गेल = गई ।

“कलेने की नवमे गुम एव मधुर रागिनी का नाम कविता है ।”

(१६३)

वरनागरसाजइनागरि वेसा।

मुकुट उतारि सीमन सवारल

घेनी विरचित फेसा ॥ २ ॥

चदन धोइ सिंदुर भाल रजल

लोचन अजन अका।

कुण्डल छोलि कर्नफल पहिरल

भरि तनु केसरपका ॥ ४ ॥

वेसर राचित सतेसरि पहिरल

चूरि कनक, कर कजे।

चरन कमल पास जायक रजन

तापर मजिर गजे ॥ ६ ॥

कंबुकि माक कदम्ब कुसुम भरि

आरम्भन कुच आभा।

अरुनाम्बर वर साडी पहिरल

चट्ट विलोकन सोभा ॥ ८ ॥

१—चतुर कृष्ण स्त्री का वेष बना रहे है। २—सीमन =

मौंग। विरचित = बनाया। ३—रज = अनुरजित करते है

लगाते है। अका = रेखा। ४—वेसर—पका = वेशर का लेप।

५—चूरि कनक कर का = कमल हथी हाथ में सोने की चूरी।

६—जायक = मढावर। गजे = गुजार कर रहा है। ७—चोनी में

कदम्ब के फूल रखकर आभायुक्त कुच बनाये। ८—अरुनाम्बर =

लाग वपना।

धरि परिवादिनि स्याम मिलन हित

शुभ अनुकूल पयाने ।

पहिलहि वाम चरन तुलि मोहन

त्रियागति लच्छन भाने ॥१०॥

पेसन चरित मिलन जहाँ सुन्दरि

दूरहि एकलि ठारि ।

कर धरि यत्र तत्र सवारत

कोइह लखइ न पारि ॥१२॥

राइक निकट यजाओल सुन्दरि

सुनइत भइगेल साधा ।

ए नव जौबनि नयिन बिदेसिनि

आओ पुकारइ राधा ॥१४॥

सुनइत स्याम हरति बित आओल

उठि धनि आदर वेल ।

पाँह पकडि निज आसन यहसाओल

कत कत हरमित भेरा ॥१६॥

९—परिवादिनि = बीया । पयान = जाना । १०—पहो नामी
पैर बनाया, क्योंकि कियों की यही रीति है । ११—यहाँ १२—
अवेली । १२—वर = दास । यत्र = बीया । तत्र = १३ । यो १४—
कोइ भी । लखइ न पारि = नही पारि । १५—राधा के । साधा = इच्छा । १६—पाँह = दास । १७—पाँह =
दास । कत कत = बिना ।

जयहि बजाओल धीन सुमाधुरि
रीकि दहेल मनि माल ।

अइसे बजावए हमर जतरिया
मोहन यत्र रमाल ॥२०॥

नाम गाम कह कुल अवलम्बन
घज आगम किए काजा ।

सुखमइ नाम, मथुरापुर, जदुकुल
गुनीजन पीडइ राजा ॥२२॥

धनि कह तुअ गुनरीकि प्रसन्न भेल
मांगह मानस जोय ।

मनोरथ कर्म जांचलि यदि सुन्दरि
मान रतन देह मोय ॥२४॥

हँसि मुख मोडि पीठि देइ यइसल
कान्ह कपल धनि कोर ।

टटल मान बदल कत कौतुक
भूपति के करु ओर ॥२६॥

१६—दहेल = दिया । २०—बजावए = बजाता है । जतरिया =
धीया बजानेवाला । यत्र = वीणा । २२—मेरा नाम सुखमयी है, गाँव
मथुरा, कुल यदुवरा, वहाँ के राजा गुणियों को पीडा दते हैं, इसीलिये
आइ हूँ । २३—मानस = हृदय । २४—मान रतन = मान स्त्री
रत्न । देह = दो । २५—कोर = गोद । २६—भूपति = शिवसिंह ।

विदग्ध-विलास

(१६४)

आजुग लाज तोहे कि कहव माई ।
जल वेइ धोइ जदि तबहु न जाई ॥ २ ॥
नहाइ उठल हम कालिंदी तीर ।
अगहि लागल पातल चीर ॥ ४ ॥
तं चेकत भेल सकल मरीर ।
तहि उपनीत समुख जकुवीर ॥ ६ ॥
बिपुल नितम्ब अति चेकत भेल ।
पालटि तापर कुतल देल ॥ ८ ॥
उरज उपर जय देहल दीठ ।
उर मोरि, घेसल, हरि करि पाठ ॥ १० ॥
हँसि मुख मोडप ढीठ कन्हाइ ।
तनु तनु भापइते भापल न जाइ ॥ १२ ॥
पिछापति कह तुहु आगेआनि ।
पुनु काहे पलटि न पैसलि पानि ॥ १४ ॥

१—आजुग = आज का । माई = भरी देवा । २—जल
देर = जल से । ३—नहाइ = स्नान कर । ४—पतली साड़ी शरीर से
मर गइ । ५—तैं = इससे । वेवउ = बक्त, प्रवट । ६—तहि =
वहीं । उपनीत = बैठा हुआ । जकुवीर = शूरा । ७—= पालटि = उलट
कर । तापर = उसपर । कुतल = बस । ८—देहल दीठ = (श्रोत्रध्व
मे) दृष्टि दानी । १०—मोरि = मुड़कर । बरसल = मैं बैठ गई ।
हरि बैठ मरि = शूरा की ओर पीठ काव । १२—तनु तनु = अंग
रूप । १४—पुन लौकर पानी में क्यों न पड़ गई ?

(१६५)

हम अवला सखि किये गुन जा ।

से रसमय-तनु रसिक सुजान ॥ २॥

कतहु जतन मोर कोर बइसाई ।

बाधल बेनि से कवरि यसाई ॥ ४ ॥

कंचुक देल हृदय पर मोर ।

परसि पयोधर मै गेल भोर ॥ ६ ॥

कठ पहिराओल मनिमय हार ।

अग बिलेपल कुकुम भार ॥ ८ ॥

यसन पेन्हाओल कए कत छद् । २२५

किंकिनि जालहि, नीधि निवध ॥ १० ॥

निज कर पल्लव मझु मुख माज ।

नयनहि कएल सु काजर साज ॥ १२ ॥

झलक तिलक, दए चोलि निहारि ।

कह कविसेयर जाँओ बलिहारि ॥ १४ ॥

१ — किये गुन मान = क्या गुण जानने गई । मे = वह । ३ —

कतहु = कितने । मारु = मुझे । कोर व मारु = गोद में बिठना

पर । ४ — कवरि = केश, यसाई = खोलकर । ५ — कंचुक = चोली ।

५ — पावि = शरा तर हकर । पर = । भोर = बेसुध ।

= बिलेपल = नेपथ्य कुकुम = लाल ल = पहनाया ।

कए मन छद् करके = करधनी ।

नीधि निवध = १२ है, पौदना ।

१३ — अलख

(१६६)

ए धनि रंगिनि कि कहन तोय ।

आजुक कौतुक कहल १ होय ॥ २ ॥

एकलि सुनल छलि कुसुम सयान ।

दोसर मनमय पर अनुवाण ॥ ४ ॥

नूपुर भुनभुन आओल का ।

कौतुक मुँदि हम रहल नयान ॥ ६ ॥

आओल कान्दु उदमल मभुषाम ।

पास मोडि हम लुकाआत दाम ॥ ८ ॥

कुतल कुसुम दाम, हरि लेल ।

वरिहा माल पुनहि मोदि देल ॥ १० ॥

नाला मोतिन भीमक द्वार ।

जतने उतारल वत्त परकार ॥ १२ ॥

कु बुकि कुगइत पट्ट मोत मोर ।

जागल मनमय बांधल जोर ॥ १४ ॥

कथि विद्यापति एह रम्य गान ।

तुह रतिका पट्ट रमिक सुजान ॥ १६ ॥

१—रंगिनि = रंगमित्र । २—उरति = आरति । गुणगुण

मोरे धी । कुसुम सयान = पुष्पस्थान पर । ४—मनमय = मनमोह ।

कर = दास । ५—आभोग = आवा । ७—वरान = वर ।

मभु = मरे । ८—मुह केवर मीने भयनी रानी विपारी । गुणगुण

कोश । कुसुमदाम = पूल की माला । हरि लेल = हर निहा, धारा

मिया । १०—वरिहा = मरु की पूँछ । ११—भीमक = भूक

(१६७)

हरि धरि हार चओकि पर राधा ।

आध माधय कर, गिम रहु आधा ॥ २ ॥

कपट कोष धनि दिठि धरु फेरी ।

हरि हँसि रहल वदन त्रिधु हेरी ॥ ४ ॥

मधुरिम हास गुपुत नहि भेला ।

तयने सुमुखि मुख चुम्बन देला ॥ ६ ॥

कर धर कुच, आकुल भेरि नारी ।

निरसि, अधर मधु पियण मुरारी ॥ ८ ॥

चिकुर चमर भरु पुसुमक धारा ।

पिय कहु, तम जनि, यम नव, तारा ॥ १० ॥

विद्यापति कह सुन्दरि वानी ।

हरि हँसि मिललि राधिका रानी ॥ १२ ॥

का । १३—पुगइत = खोलते । पहु = प्रीतम । भोर = बेसुष । १५—भान = कहने हैं ।

१-२—राधिका साईं हुई थी वि कृष्ण ने चुम्बे निष्क जाकर उसका हार पकड़ लिया । राधिका चीक पड़ी । हार टूट गया । आधा हार कृष्ण के हाथ में रहा और आधा राधिका के गले में । ३—कपट कोष = झूठमूठ का प्रोथ । दिठि धरु फेरी = आगे पेर ली । ४—वदन त्रिधु = मुखचंद्र । हेरी = देखना । ५-६—राधा की मधुर मुरझान स्मित न सखी, उसी समय कृष्ण ने उसके मुख को चुम्ब लिया । ८—अधर = नीचे का ओष्ठ । ९—चिकुर = केरा । १०—मानों अभङ्गार तारे श्री निगमकर पुन उसे उगल रहा हो ।

(१६८)

सासुसुतल छलि, कोर अगोर । लेख, ६७७७७७

तहि अति ढीठ पीठ रहु चोर ॥ २ ॥

कत कर आखर कहव दुभाई ।

आजुक चातुरि कहल कि जाई ॥ ४ ॥

नहि कर भारति ए अनुभ नाह ।

अय नहि होयत यचन निरयाह ॥ ६ ॥

पीठ आसिगन कत सुख पाय ।

पानिक पिआस दूध किए जाय ॥ ८ ॥

कत मुय मोरि अधर रस लेल ।

एत निसयद कए कुच कर देल ॥ १० ॥

समुय न जाए सअन निसोआस ।

त जाते ५ किए कारन भेल दसन विकास ॥ १२ ॥

जागल सास चलल तय कान ।

न पूरल आस विद्यापति भान ॥ १४ ॥

१—सुतल छलि—सोई थी । कोर अगोर—अपनी गोद में लेकर । २—तहि—वहा भी । ३—शरी में १ से कहा तक समझा कर बूझ । ४—कहल कि जाई—कहा कही जाती है ? ५—भारति—आजुका, शीघ्रता । नाह—मीनम । ६—य—मेरी पीठ के आसिगन से तुम्हें क्या सुख मिलेगा—पानी की प्यास कहाँ दूध से बानी है । ७—मोरि—मोड़कर । ८—निसयद कए—निश्चय होकर, सुप्रमाण । ९—निसोआस—निद्रास, सांस । ऊँची सांस समझ नही छोड़ना कि कही उस काम के धरों से मेरी सांस न

(१६६)

कि कहय हे सखि आञ्जुक रग ।

सपन हि सूतल कुपुरुष सग ॥ २ ॥

बड सुपुरुष बलि, आओल धाई ।

सूति रहल मुख आंचर भँपाई ॥ ४ ॥

काचलि खोलि आलिंगन देल ।

मोहे जगाए आपु निंद गेल ॥ ६ ॥

हे बिहि हे गिहि बड दुख देल ।

से दुख रे सखि अबहु न गेल ॥ ८ ॥

भनए विद्यापति, इह रस धद ।

भेक कि जाग कुसुम—मकरद ॥ १० ॥

जग जाय । १२—न मालूम क्यों, उमी समय दाढ़ चमक डटे ।

१३—काग = कृष्ण । १४—न पूरल आम = आशा नहीं पूरी हुई ।

१—रग = रस वार्त्ता । २—आज मैं स्वप्न में—अम मैं आकर—
कुपुरुष व साथ सोइ । ३—बलि—समझकर । आओल धाई =
दौड़कर आई । आंचर भँपाई—अचल से देखकर । १०—
काचलि = चोली । आलिंगन देन = छाती से लगाया । ६—मुझे
जगाकर पुन आग सा रहा । ७—बिहि = मर्या । ८—रस धुंदु =
रस की विचित्रता । १०—भेक = मेढ़क, बेंग । कि = क्या । कुसुम-
मकरद = फूल का पगल ।

“भमरदिता सा कनकास्त्रीणा मुचयथ सरसदिता ।

लसत्सर्पस्त्रीपूषाथकन्यदिता महामर्णा धीपार ॥”

(१७०)

आकुल चिकुर वेदलि मुख सोम ।

राहु वपल ससि-मडल लोम ॥ २ ॥

बड अपरुख दुइ चेतन मेलि ।

विपरित रति कामिनि कर केलि ॥ ४ ॥

कुच विपरीत, विलम्बित हार ।

कनक कलस वम दूधक धार ॥ ६ ॥

पिय मुख सुमुखि चूम तजि श्रोज ।

बाद अधोमुखि पिय सरोज ॥ ८ ॥

किकिनि रटत, नितम्बिनि छाज ।

मदन महारथ धाजन, धाज ॥ १० ॥

फुजल चिकुर, माल धेरु रग ।

जनि जमुना मिलु गग तरंग ॥ १२ ॥

पदन सोहाओन नम जल विन्दु ।

मदन, मोति लप, पूजेल इन्दु ॥ १४ ॥

भनइ विद्यापति रसमय वानी ।

नागरि रम, पिय अभिमत जानी ॥ १६ ॥

१—आकुल = व्यग्र, चंचल दिक्के दुःख । चिकुर = केश ।
२—वेद लिखा । ३—दुइ चे न = दा चतुर (राधा कृष्ण) ।

विलम्बित = लम्बा । वपल = वपला । ६—वम = वमना करता है,
७—आज = (यहाँ) लाज । ८—रटत = बहती है ।

९—धाज = शोमनी है । ११—पूजल = पूजा । १२—
१३—रम = रमनी है । अभिमत = इच्छा ।

(१०१)

विगलित चिकुर मिलित मुखमडल
चाँद वेदल घनमाला ।

मनिमय कुण्डल खवन दुलित भेल
घाम तिलक यहि गेला ॥ २ ॥

सुन्दरि तुअ मुख मङ्गल दाता ।
रति विपरीत समर जदि राखि
कि करय हरि हर धाता ॥ ४ ॥
किंकिनि किनि किनि ककन कनकन
घन घन नूपुर बाजे ।

रति-गग मदन परामव मानल
जय जय डिमडिम बाजे ॥ ६ ॥
निल एक, जयन सघन, रव करइत
होअल सैनक भग ।

विद्यापति बधि ६ रस गायप
जामुन मिलली गग ॥ ८ ॥

१—विगलित = गिरे हुए । घामाला = मेघसमूह । २—सखन =
पाता । दुलित = डोलना हुआ । ४—समर = युद्ध । राखि = रक्षा
करोगी । धाता = मन्ता । ६—भाज रति युद्ध में कामरूप हार गइ
दे, उमारी बध भेटी बन रही है । ७—निल एक = एक घण्टे
लिये । सघन बघन = कुछ जाय । रव = राख । होअल = हो गया ।
८—जामुन = समुद्र ।

विद्यापति
४७७७८८८८

(१७३)

दुहुक सजुव चिकुर फूजल ।

दुहुक दुह बलावल वूभल ॥ २ ॥

दुहुक अधर दसन लागल ।

दुहुक मदन चौगुन जागल ॥ ४ ॥

दुअओ अधर करए पान ।

दुहुक कठ आलिंगन दान ॥ ६ ॥

दुअओ केलि सयँ सयँ भेलि ।

सुरत सुखे विभावरि नेलि ॥ ८ ॥

दुअओ सअन चेत न चीर ।

दुअओ पियासल पोवए नीर ॥ १० ॥

मन विद्यापति संसय गल ।

दुहुक मदन लिखन देल ॥ १२ ॥

बराबर = बराबर = (१) बारल (२) कुब । बलगत = इन
पना । भरली = (१) पूछी (२) नितम्ब । ६—छरतर = छीन
ममीरन = (१) इवा (२) निश्राम । चचरिगन = (१) भग
(२) विमिति आदि । छले = शार । ७—प्रनय-पदोधि = प्र
का समुद्र । जुग अवसान । (विपरीत-रनि का अर्थन-ई)

१—सजुव = साथ हा साथ । चिकुर = केश । फूजन = छुन
गया । २—बलावल = ताकन और कमजारी । ३—अधर = नीचे
का भेष । दसन = दाँत । ७—बलि = वामप्रीडा । सयँ सयँ =
साथ ही साथ । ८—विभावरि = राज । ९—नेली ही रमा
१० अपन अपन वस्त्र तक नहीं हँभायते । १०—पियासल = प्यासा ।

✓ वसंत

(१७४)

माघ मास, सिरि पचमी, गँजाइलि

नवम मास पंचम हरआई ।

अति धन पीडा दुख यड पाओल

धनसपती भेलि धाई हे ॥ २ ॥

सुभ खन बेरा सुकुल पक्ष हे

दिनकर उदित समाई ।

सोरह सम्पुन, बतिस लखन मह

जनम लेल अनुराई हे ॥ ४ ॥

नाचप जुबतिजना हरखित मन

जनमल बाल सधाई हे ।

मधुर महारस मङ्गल गावप

मानिनि मान उढाई हे ॥ ६ ॥

१—सिरिपचमी = माघ शुद्ध पचमी । गँजाइलि = पूर्णगमाँ हुई ।

नवम मास = वैशाख में वसन का अन्त होता है । प्रेष्ट से माघ मङ्गल २१

नौ महीने हुए । पचम इहमाई = पाचवाँ दिन होना पर । (वैद्यक के

अनुसार नव महीने पाच दिन पर पुष्ट वाक्य पैदा होता है) ।

२—धन = अधिक । ३—खन = क्षण । बेरा = बेला, समय ।

सुकुल पक्ष = सुकृपक्ष । दिनकर = सूर्य । उदित समाई = उदय के

समय । ४—सोरह सम्पुन सातह जगों से सम्पुन । बतिस लखन =

बत्तिस लक्ष । अनुराई = वसन्त । ५—जनमल = धर्म दिया ।

मधार = माधव, वसन । ६—उढाई = उठा ले गया, नष्ट किया ।

वह मलयानिल श्रोतु उचित हे
 नव घन भञ्जो उजियारा ।
 माधवि फल भेल मुकुना तुल
 ते देल चन्दनवारा ॥ ८ ॥
 पीशरि पाँडरि महुशरि गायण
 काहरकाऽ धतूरा ।
 नागेशर-कलि संख धूनि पूर
 तकर ताल, समतूरा ॥ १० ॥
 मधु लण मधुकर आलक दण्डल
 कमल-पंचरी-लाई ।
 पञ्चोनार तोरि सूत बाँधल कटि
 फेसर कएलि उघनाई ॥ १२ ॥
 नव नव पल्लव सेज ओछाओल
 सिर देल कदम्बक माला ।
 धैसलि भमरी हरउद गायण
 चक्का चन्द निहारा ॥ १४ ॥

७—मलय-पवन वह रहा है, उसने ओ करना उचित है
 (क्योंकि शिशु का हवा लगने का मन है) अतः नवीन देव
 छा गये । ८—मुकुना तुल=मुक्ता व समान । पीशरि पीरि
 महुशरि=गीत निराप । काहरकाऽ=सुगन्धी । तकर=उमरा ।
 ममतूरा=मगान । ११=(वन हो पर शिशु को परने से
 धाया जाता है) । दण्डल=ल पिया । १२—पञ्चोनार=पुष्प
 कटि=कमर में । (मङ्गल की कमर में मन बाँधा जाता है) । वपनरी=

कनश्च केसुश्च सुति पत्र लिखिष हलु
रासि नद्धत कप लोला ।
कोकिल गनित गुनित भल जानप
रितु वसंत नाम थोला ॥ १६ ॥

× × × × ×
घाल वसंत तरुन भय धाओल
यदप सकल संसारा ॥ १८ ॥
दखिन पघन घन अग उगारप
किसलय कुसुम परागे ।
सुललित हार मजरि, घन कज्जल
अपिता अंजन लागे ॥ २० ॥
नव वसंत रितु अगुसर जौवनि
विद्यापति कवि गावे ।
राजा सिच सिध रूप नरायन
सकल कला मनभावे ॥ २२ ॥

राधनल (लहक भी कमर में पहनाया जाता है) । आद्याभाल =
बिछाया । मिर = कदम की भाँसा मिरहाने (तकिया क रूप
में) रक्ती । १४—हरदद = पत्रों का गीत । धमरी = धमरी । १५—
कनभ = सोना । कसुभ = पलास । सुति पत्र = क मपुन । नद्धत = पत्र ।
१६—कोकिल गणित की गणना खूब जाननी थी उसीने वसंत नाम
रक्ता । १८—बीन की ध्वनि पति गावन है । १९—२० दक्षिण पवन विमलय
और पुष्प पराग लेकर उसके गीर में वरग्न लगाना है । मजरी का
सुन्दर हार गले में है मेघ ने उल्टी ओंछों में नजन लगा दिया ।

(१७)

आरल रिनुपतिरान यसं
धाद्योल अलिदुल माधविपंथ

दिनकरकिरा

फेसर पुसुम घ

नूप आमा नय पीउल पा

काघा पुसुम एव घय माध ।

मौलि, रमान-मुदुल ३

समुल दि बोकिन पद

सिगिदुल नायत, अलिदुल यंत्र ।

दिगपुरा आग पद आनिन मंत्र ॥ १० ॥

कुदबल्ली तर, घण्टल निसान । जाय तोत
पाटलतून असोक-दलवान ॥ १४ ॥
मिसुक, लवंग-लता, एक संग ।
हेरि सिसिर रितु आगे दल भंग ॥ १६ ॥
सैन साजल मधु मयिका कूल ।
सिसिरक सजहु कएल निरभूल ॥ १८ ॥
उधारल सरसिज पाओल प्रान ।
निज नय दल, कर आसन दान ॥ २० ॥
नय घुम्दावन राज यिहार ।
विद्यापति कह समयक सार ॥ २२ ॥

पक्षी क रूप में ।) आन=आन । आभित मय= तारावादा मय रताक ।
११—चक्रवर्त=चक्रोवा । पत्तों क पराग हा चक्रोवा से उड़
रहे है । १२—मलय पवन=मलशयन से आनेवाली हवा
दक्षिण पवन । सह=साथ । कुदबल्ली=बुध विरोध । निसान=
पताका । पागल तून=पागल के पत्ते ही तुख (निपग) है ।
असोक दलवन=असोक क पत्त वाण ह । १५—मिसुक=पलास ।
(धनुष क समान) सर्वमलता=(तात के समान) । १६—आगे
दल भंग=पहले ही सैन्यभंग हो गया । १७—कूल=कुल ।
१८—उधारल=उधार किया । पाओल=पाया । २०—दल=पत्ता ।
अर्थ गिरामविहित विहित कश्चित् ।
सौम्यमेनि मरद्वयधूकचाम ॥
न-नीपयोध श्वनिनरा प्रकारो ।
नो गुजरीसन हवानिनरा निगूड ॥

(१७५)

आएल रितुपति राज वसंत ।

धाओल अलिकुल माधविपुंथ ॥ २ ॥

दिनकर किरन भेल पौगड ।

केसर कुसुम घएल हेमदड ॥ ४ ॥

नृप आसन नव पीठल पाठ ।

काचन कुसुम छत्र धर माथ ॥ ६ ॥

मौलि, रसाल-मुकुल, भेल ताप ।

समुप हि कोकिल पञ्चम गाय ॥ ८ ॥

सिपिकुल नाचत, अलिकुल यत्र ।

द्विजकुल आन पढ आसिअ मन ॥ १० ॥

चन्द्रार्तेप उडे कुसुम पराग ।

मलय पत्रा सह भेल अनुराग ॥ १२ ॥

१—आएल = आया । २—धाओल = दीया । अलिकुल =

भ्रमर समूह । माधवि पथ = माधवी की आर । ३—निकर =

सूय । भेल = हुआ । पौगड = कितोरावस्था, कुछ कुछ तीव्र । हेमदड =

सोने का टुंडा, आभा । 'मदन महीपति वनदण्डकनि कमल

कुसुम विराडो—गीत गोवि ।' ५—पीठल = बैठ निरोप, निगा ।

पाठ = पठा । काचन कुसुम = गुप्ता । ७—मौलि = किरण ।

रसाल मुकुल = आम की मन्दी । ताप = उतने । ८—सिपि =

मोर । अनिकुल यत्र = भारे बाजा बजा रहे है । १०—द्विजकुल =

(१) पक्षी (२) ब्राह्मण (पक्षी व द्विज हम निवे कदा जाग है कि

उतका जन्म भी दा बार होगा है एक बार अंटे व ११ ३ पुन

कुदवल्ली तरु, धपल निसान । १०५
पाटलतून असोक दलवाने ॥ १४ ॥
किसुक, लवंग-लता, एक संग ।
हेरि सिसिर रितु आगे दल भंग ॥ १६ ॥
सैन साजल मधुमयिका कुल ।
सिसिरक सयहु कपल निरमूल ॥ १८ ॥
उधारल सरसिज पाओल प्रान ।
निज नय दल, कर आसन दान ॥ २० ॥
नय घुम्दावन राज विहार ।
विद्यापति कह समयक सार ॥ २२ ॥

पत्नी क रूप में ।) आन=भावर । आभित मश= आशुवागमक श्लोक ।
११—चद्रानप=चंद्रोवा । फूलों क पराग हा चंद्रावा से उड़
रहे हैं । १२—मलय पवन=मलयागल से आनेवाली हवा
दक्षिण पवन । सट=सा । कुदवल्ली=वृक्ष विरोप । निसान=
पनावा । पाटल तून=पाटल के पत्ते ही तून (निपग) हैं ।
असोक दलवान=असोक क पत्त वाण ह । १४—किसुक=पलास ।
(धनुष के समान) लवंगलता=(तात के समान) । १६—आग
दल भंग=पहले ही सैनभग हो गया । १७—कुल=कुल ।
१८—उधारल=उद्धार किया । पाओल=पाया । २०—दल=पत्ता ।

अथा गिरामविहित विहितश्च मन्त्रि ।

सौभाग्यमेति मरुद्वृक्षधूक्चाभ ॥

नन्त्रीपयोधर श्वनितरा प्रकाशो ।

नो मुर्जेरीस्तन श्वातिनरा निगूट ॥

त्रिधापति
००००००००

(१७६)

नव धृन्दावन नव नय तरुगत

नव नव विकसिन फल ।

नवल रसत नवल मलयानिल

मातल नव अलि कुल ॥ २ ॥

बिहरइ नवल किसोर ।

कालिन्दि-पुलिन कुज वन सोमन

नव नव प्रेम बिभोर ॥ ४ ॥

नवल रसाल-मुकुल मधु मातल

नव कोकिल कुल गाय ।

नयजुघती गत चित उमतामई

नव रस कानन धाय ॥ ६ ॥

नव जुधराज नवल यर नागरि

मिलय नव नव भाँति ।

निति निति ऐसन नव नय खेलन

त्रिधापति मति माति ॥ ८ ॥

१—नव = नवीन । विकसिन = सिने हुए । २—मलयानिल =
मलय पवन । मानल = पागल बना । अलिकूल = भार । ३—रिह
रइ = बिहार करना है । नवल किसोर = सुन्दर वृक्ष । ४—बामिनि =
यमुना । पुलिन = किनारे । सोमन = सुराभिन । प्रेम बिभोर = प्रेम
में देगुल । ५—नई आव बी मगरी क मधु में मलन की नई कोदन
गा रही है । ६—उमतामई = उमच हा जाना है । ८—ऐसन = इस
परायण । निति निति = मति । माति = मच बनी ।

(१७७)

लता तरुशर मडप जीति ।

निरमल ससधर धवल्लिप भीति ॥ २ ॥

पडँअ नाल अइपन भल भेल ।

रात परीहन पटलव देल ॥ ४ ॥

देखह माइ हे मन चित लाय ।

वसन्त विवाह कानन थलि आय ॥ ६ ॥

मधुररि रमनी मगल गाथ ।

हुजयर कोकिल मत्र पढाव ॥ ८ ॥

कर मकरंद हयोदक नीर ।

विधु वरिआती धीर समीर ॥ १० ॥

कनअ किसुक मुति तोरन तूल ।

राजा

लाषा गिरल बेलिक फूल ॥ १२ ॥

केसर कुसुम कर सिंदुर दान ।

जओतुक पाओल मानिनिमान ॥ १४ ॥

मोहक

खेलए कौतुक नच पँचयान ।

विद्यापति कवि बढ कए भान ॥ १६ ॥

१—लता और वृक्ष ने मानो मडप को जीत लिया लता और वृक्ष ही मडप है । २—निरमल=स्वच्छ । ससधर=चंद्रमा । धवल्लिप=सूज्जल कर दिया (चूना पोत दिया) । भीति=दीनाल । ३—पडँअ नाल=पद्मनाल, कमल का नाल । अइपन=अरिपन (जमीन पर का मागलिक चित्र) । ४—रात=लाल । परीहन=परिधान=बख ५—माइ हे=अरी मैया । ६—कानन-थलि=वनस्थली । ७—मधुररि रमनी=

(१७८)

नाचहु रे तरनी तजहु लाज ।

आएल बसत रितु बनिक-राज ॥ २ ॥

हस्तिनि, चित्रिनि, पदुमिनि नारि ।

गोरी सामरि एक बूढि बारि ॥ ४ ॥

विविध भाँति रूपलन्धि सिंगार ।

पहिरल पटोर गृम भूल हार ॥ ६ ॥

परवार

केशो अगर चंदन घसि भर कटोर ।

ककरहु खोई छा करपुर तमोर ॥ ८ ॥

केशो कुमकुम मरदाव आंग ।

ककरहु मोतिअ भल छाज मांग ॥ १० ॥

मौरी रूपी स्त्री । २—दुजवर = दिन श्रेष्ठ । ४—बारि = बाला, नवयुवती ।
६—पटोर = रेशमी वस्त्र । गृम = गने में । ८—घसि = घिसकर ।
१०—ककरहु = किम्बोके । करपुर = कपूर । तमोर = पान । ६—
कुमकुम = केशर । मरदाव = मदन करानी है, मलबानी है । १०—
म निज = माती । छाज = शोभता है ।

२—बनिक राज = वापारी श्रेष्ठ । ४—बारि = बाला, नवयुवती ।
६—पटोर = रेशमी वस्त्र । गृम = गने में । ८—घसि = घिसकर ।
१०—ककरहु = किम्बोके । करपुर = कपूर । तमोर = पान । ६—
कुमकुम = केशर । मरदाव = मदन करानी है, मलबानी है । १०—
म निज = माती । छाज = शोभता है ।

Poets are long lived race than heroes they
breathe more of the air of immortality —Hazlitt

(१७६)

अभिनव पल्लव यस्मिन्क देल ।

धवल कमल फुल पुरहर भल ॥२॥

करु मकरद मदाकिनि पानि ।

अरुन असोग दीप दहु आनि ॥४॥

माइ हे आज दिवस पुनमत ।

करिप चुमाओन राय वसंत ॥६॥^२

सपुन सुधानिचि दधि भल भेल ।

भमि भमि भमरि हुंकारइ देल ॥८॥

फेसु कुसुम सिदुर सम भास ।

केत्रकि धूलि विधरहु पट वास ॥१०॥

भनइ विद्यापति कवि कठ हार ।

रस युक्त सिउ सिंघ सिउ गचतार ॥१२॥

१--अभिनव = नवीन । वसक = बंठने क गिये । २--

धवल = श्वेत । पुरहर = बाह की डाली । ३--मकरद = पुष्प

रस । मदाकिनि पानि = गंगा का पानी । ४--अरुण = लाल ।

असोग = अशोक । दीप = दीपक । दहु आनि = ला दिया । ५--

पुनमत = पुनरप्यय शुभ । ६--वसन कपी इलहे का चुमाओन करो

चूमो । ७--सपुन = सप्पुर्ण, पूष । सुधानिचि चद्र । दधि भेल = दही

बना । ८--भमि = भ्रमण कर । भमरि = भमरी भौरी । हुंकारइ

देल = मुलावा दे आई । ९--कुसु = पलास । कुसुम = फूल ।

भास = मालूम होता है । १०--धूल = पराग । विधरहु = बिखेर दिया

है । पट वास = रेशमी वस्त्र ।

वलीने सुगत्य

(१८०)

दखिन पवन वह दस दिस गेल ।
से जनि वादो भासो वोल ॥१॥

मनमथ काँ साधन नहि आन ।

निरसाएल से मानिनि मान ॥४॥

माइ हे सीत वसंत त्रियाद ।

कओन विचारय जय अवसाद ॥६॥

हुहु दिसि मथथ दिवाकर भेल ।

हुजवर कोकिल साजो देल ॥८॥

नय पल्लव जयपत्रक भाँति ।

मधुकर माला आखर पाँति ॥१०॥

वादी तह प्रतिवादी, भीत ।

सिसिर बिन्दु हो अन्तर सीत ॥१२॥

कुद कुसुम अनुपम विरसत ।

सतत जीत बेरताओ रसत ॥१४॥

विद्यापति कधि एहो रस भान ।

राजा मिथ सिंग एहो रस जान ॥१६॥

१—रल = शोर करता हुआ । ४—निरसाएल = नीरस कर दिया ।

६—जय-अवसाद = जीत और हार । ७—मथथ = मल्लथ । ८—

हुजवर = (१) दिन श्रेष्ठ (२) पत्रा मछ । ९—१०—नय पल्लव = नय

पत्र (निसपर पैसवा मिथा जाय) है नीर भीरों के मगूह अगरो की

पक्षियों हैं । ११ १२ मूढ़ (बुद्ध) से मूढ़पद (नाश) हर गया और

शिशिर की आस में जा रहा । १४—बेरताओ = प्रसन्न किया ।

(१८२)

अमिनघ कोमल सुन्दर पात ।

सुधारे यने, जनि पहिरल रात ॥ २ ॥

मलय पवन डोलय बहु भाँति ।

अपन कुसुम रस, अपने माति ॥ ५ ॥

देखि देखि माधव मन हुलसत ।

पिरिदायन भेल' येकत, वसंत ॥ ६ ॥

कोकिल घोलय साहर भार ।

मदन पाओल जग नय अधिकार ॥ ८ ॥

पाइक मधुकर कर मधु पान ।

भमि भमि जोहय मानिनि मान ॥ १० ॥

दिसि दिसि से भमि विपिन निहारि ।

रास सुभाउय मुदित मुरारि ॥ १२ ॥

भनइ विद्यापनि इ रस गाय ।

राधा माउय अमिनघ भाउ ॥ १४ ॥

१—अमिनघ = नवीन । पात = पते । २—सुधारे = सुगन्ध ।

रात = रात (वन) । मानो मधुचे वन २ रात वन परत निदा हो ।

३—दाय = दह रहा है । ४—अति = अत्यंत हाकर । फूल नयने

रस में आप ही पावत है । ५—दुन = दुःखित दुःख । ६—

येकत भेल = प्राप्त हुआ । ७—साहर = आश्चर्य । ८—मदन =

कामदेव । ९—पाइक = पयक, दूत । मधुकर = मधु । १०—

भमि भमि = अमर वर । वन्दन = वन्दन । ११—विपिन = वन ।

निहारि = देख कर । १२—सुभाउय = सुख राखीय कर रहे है ।

विद्यापति

७३७७६६६७

(१८२)

घल देसए जाऊ रितु बसत ।

जहा बुद-कुसुम केतकि हसत ॥ २ ॥

जहा चदा निरमल भमर कार ।

जहा रयनि उजागर दिन अंधार ॥ ४ ॥

जहा मुगुधलि मानिनि करए मान ।

परिपथिहि पेखए पंचयान ॥ ६ ॥

भनइ सरस कविकठ हार ।

मधुसूदन राधा बन बिहार ॥ ८ ॥

(१८३)

मधुरितु मधुकर पाँति । मधुर कुसुम मधुमाति ॥

मधुर वृन्दावन भाभ । मधुर मधुर रसराज ॥

मधुर जुवति जन संग । मधुर मधुर रसरंग ॥

मधुर मृदंग रसाल । मधुर मधुर करताल ॥

मधुर नटन गति भंग । मधुर नटिनी नट संग ॥

मधुर मधुर रस गान । मधुर विद्यापति भान ॥

१—निरमल = शून्य । भमर = भ्रमर, मौरा । कार = कार ।

४—जहाँ रात उजली प्रकाशमय (चान्दी के कारण) और दिन

अंधार पूर्ण (रात और मेघ के कारण) । ६—परिपथि =

पथियों की । पेखए = देखता है । पंचयान = वाहन ।

मधुरितु = बरत । मधुरर = भाग । मधुमाति मधु मे रत्न ।

भाभ = मै । रसराज = मृगार । मधुर मृदंग वा गति भंग (भंगपूर्ण)

और मधुर गान वाणी व भाव (मधुर) ग व (मधुर) रत्न ।

(१८४)

याजत द्विगि द्विगि धौद्रिम द्विमिया ।
नटति, फलावति माति श्याम सँग
कर करताल, प्रबन्धक ध्वनिया ॥२॥
डम डम डंक द्दिमिक डिम मादल

रनु भुनु मजीर योल ।

किंकिनि रनरनि, यलझा कनकनि
निधुवन रास, तुमुल उतरोल ॥३॥
घोन, रचाव, मुरज, स्वरमण्डल
सा रि ग म प ध नि सा, बहु विधि भाव ।

घटिता घटिता धुनि, मृदंग गरजन
चंचल स्वरमण्डल कर राव ॥६॥

क्षम भर गलित, ललित कयरीयुत
मालति माल विथारल मोति ।

समय घसंत रास रस वर्णन
पिघापति मति छोभिन होनि ॥८॥

२—नटति = नाच रही है । माति = मत्त होकर । ध्वनिया =
भावाव । ३—मादल = एक बाजा । ४—दसआ = दुँगना । निधु
वन = निधुवन में रासलीला नोश क साथ हो रही है । ५—
रचाव = सारंगी क रंग का एक बाजा । स्वरमण्डल = बीणा व। पर
मेद । ६—राव = स्वर । ७—परिभ्रम क कारण पमीने नच रहे
हैं, कश चंचल हो स्वर उभर झिटके है और मालती की माया माली-
कयेर रही है । ८—छोभिन = चंचल ।

(१८५)

रितुपति-राति रसिक रसराज ।

रसमय रास रमसरस ' माभ ॥२॥

रसमति रमनिरतन धनि राहि ।

रास रसिक सह रस अथगाहि ॥४॥

रंगिनि गन सब रंगहि नृत्त ॥५॥

रनरनि ककन किंकिनि रटई ॥६॥

रहि रहि राग रचय रसरत ।

रतिरत रागिनि रमन घसत ॥८॥

रति रनाय महति पिनार ।

राधारमन कर मुरलि बिलास ॥१०॥

रसमय विद्यापति करि भान ।

रूप नारायन भूपति जान ॥१२॥

(१८६)

मलय पवन यह । चसंत विजय बंद ॥

भमर करइ रोर । परिमल नहि ओर ॥

रितुपति रंग देला । हृदय रमसर भला ॥

अनग मंगरा मेलि । कामिनि करधु फेलि ॥

नरन तरनि मगे । रयनि छेपयि रग ॥

विद्वि विपद लागि । केसु उपजल आगि ॥

कपि विद्यापति भान । मानिनी जोषा जान ॥

नृप रदसिंह पग । मेदिनि कलय तर ॥

विरह

(१८७)

सखि हे वालुम जितव चिदेस ।
हम कुलकामिनि कहइत अनुचित
तोहहुँ दे हुनि उपदेस ॥ २ ॥
इ न जिदेसक बेलि ।

दुरजन हमर दुख न अनुमाव
तैं ताँहे पिया लग मेलि ॥४॥
किछु दिन करथु निवास ।
हम पूजल जे, से हे पप भुजय
राखथु पर-उपहास ॥६॥
होयताहु किए बध-भागी ।

निंद-तद

जेहि धन, हुन मन, जाएव चितव
हमहु मरय धामि आगी ॥८॥
बिद्यापति करि भान ।
राजा सिवसिंघ रूप नरायन
लखिमा देइ रमान ॥१०॥

१—जीतव = जीतेंगे (अपराधन समझ कर जायेंगे) वेमा-

नहीं कहती) । २—ताहहु = तुम्हीं । हुनि = उनको । ३—बेलि—

बेला, समय । ४—अनुमाव = समझेंगे । तैं ताँहे पिया लग मेलि =

इसीलिये तुम्हें प्रीतम क निकट भेज रहो हुँ । ५—करथु कर । ६—

जेमी पूजा की होगी वैसा पत्र में भोगी-वे मुझे बेवक दूसरे की

निंदा से बचा लें । ७—होयताहु = होवेंगे । किए = क्या । बध भागी

=इत्या या भागी । ८—जएव चितव = जान को सोचिगें ।

कालि कहल, पिआ (१८६) ए साभहि रे
जाएज मोयँ मारुअ देस ।
मोयँ अमागलि नहि जानलि रे,
संग जइतओँ जोगिन देस ॥२॥
हृदय मोर यह दारन रे

पिया विनु बिहरि न जाए ॥३॥
एक सयन सखि सुनल रे

आछल यालमु निसि भोर ।
न जानल कति खन तेजि गेल रे
बिहुरल चकैया जोर ॥५॥
सून सेज हिय सालए र

पिया विनु घर मोयँ आजि ।
यिनति करओँ सहलोलिनि रे
मोहि देह अगिहर साजि ॥७॥
पिघापति कवि गाओल रे

आजि मिलय पिय तोर ।
दइ घर नागर रे
ललिमा राय सिगसिघ नहि भोर ॥९॥

१—मारुअ मजुरा । २—जइतओँ = जानी । ३—दारन =
दगर । बिहरि = पर जाना । ४—भइत = या । जोर = जोश ।
५—सालए = पीस दी है । ७—सहलोलिनि = सहेली । मोहि
मुझ अग्निबिद्या साज दा, निमने बन जाऊँ ।

(१८८)

माधव, तौहँ जनु जाह विदेस ।
हमरा रंग-रमस लए जएबह,
लएबह कौन संदेस ॥२॥

यनहि गमन करु होएति दोसर मति
बिसरि जाएय पति मोरा ।

हीरा मनि मानिक एको नहि मांगय
फेरि मांगय पहु तोरा ॥४॥ १

जखन गमन करु नयन नीर भर
देखहु न भेल पहु ओरा ।

एकहि नगर बसि पहु भेल परयस
कइसे पुरत मन मोरा ॥६॥

पहु संग कामिनि बहुत सोदागिनि
चद्र निकट जइसे तारा ।

भनइ विद्यापति सुनु यर जौयति
अपन हृदय धरु सारा ॥८॥

१—जनु जाह = मन जाओ । २—रंग-रमस = भागे
मनोद । ३—मारा बिसरि जाएय = मुझे भूल जाओगे ।
५—नीर = आसू । पहु ओरा = प्रीति की ओर । ६—पुरत = पूरा
होगा । ८—सारा = (यहा) पूरा ।

‘सत्सुखसविधान सदलवार सुवृत्तमन्त्रिदम् ।

यो धारयति न बरुते सत्काय मात्यमध्य च ॥’

(१८६)

कालि कहल, पिआ ए साकहि रे
जाएय मोयँ मारअ देस ।
मोयँ अभागलि नहि जानलि रे,
संग जइतओँ जोगिन बेस ॥२॥
हृदय मोर यह दाहन रे
पिया विनु विहरि न जाए ॥३॥
एक सयन सखि सुनल र
आछल बालमु निसि मोर ।
न जानल कति खन तेजि गेल रे
विहुरल अकेरा जोर ॥५॥
सून सेज हिय मासप रे
पिया विनु घर मोयँ आजि ।
बिनति करओँ सहलोलिनि रे
मोहि देह अगिदर साजि ॥७॥
पिद्यापति कत्रि गाओल रे
आदि मिलत पिय तोर ।
लखिमा देह वर नागर रे
राय सिउसिध नहि मोर ॥९॥

१—मारअ मथुरा । २—नइतओँ = जानी । ३—दाहन—
कठोर । विहरि = फट जाना । ४—अछल = था । जोर =
६—सासप = पीडा देती है । ७—महलोविन = सहेली ।
८—मुझे अग्निबिज्ञा मान दो, निसमें बल जाऊँ ।

मधुपुर माहन गेल रे
मोरा विहरत छाती ।

गोपी सकल विमरलनि रे
जत छल अहिवाती ॥२॥

सुतल छलहुँ अपन गृह रे
निन्दइ गेलउँ सपनाइ ।

करसी छुटल परसमनि रे
कोन गेल अपनाइ ॥४॥

कत कह्यो कत सुमिरय रे
हम भरिष गरानि ।

आनक धन सौ धनवती रे
कुयजा मेल रानि ॥६॥

१—मधुपुर = मधुरा । गेल = गया । मोरा = मेरा । विहरत
फटती है ! २—विमरलनि = विस्मरण हो गये भूल गये । जत
जितनी । छल = थी । अहिवाती = सौभाग्यवती । ३—सुतल
सोई । छलहुँ = (मैं) थी । अपन = अपने । निन्दइ गेल सपनाइ
नाई मैं स्वप्न देखने लगी । ४—पर = हाथ । छुटल = छूट गया
परसमनि = रसरा मणि, पारस । कोन = कौन । गेल अपनाइ
अपना गया । ५—कत = किना । कह्यो = कहूँगी । सुमिरव
स्मरण करूँगी । भरिष गरानि = ग्लानि से भर गई हूँ । ६—आनक
इसरे वा । सौ = से । मेल = हुई ।

गोकुल चान, चकोरल रे
चाँरी गेल चन्दा ।

बिह्विहिलि चललि दुहु जोड़ी रे
जीव दइ गेल धंदा ॥८॥

काक भाख निज भाखह रे
पहु आओत मोरा ।
खीर खाँड भोजन देव रे
भरि कनक कटोरा ॥१०॥

भनहि बिद्यापनि गाओल रे
धैरज धर नारी ।

गोकुल होयत सोहाओन रे
फेरि मिलत मुरारि ॥१२॥

७—गोकुल का चन्द्रमा चकार बन गया—जा यहा चन्द्रमा क समान था—निमे हजार हजार गोपियाँ चकोरी की तरह दगती थीं—बड़ी आन स्वयं चकार बन कर दूसरे को—कुशा को देत रहा है । हाम । मेरा चन्द्रचोरी चला गया । ८—बिह्विहिलि = बिह्विहिलि । चललि = चली । दुहु जोड़ी = दोनो (राधा कृष्ण) की जोड़ी । जीव दइ गेल धंदा = प्राणों में सदेह दे गया । ९—काक = काग, कौवा । भाख = बोली । भाखह = बोला । पहु = प्रीतम । आओत = आवेगा । १०—खीर = दूध । देव = दूगी । कनक = सोना । १२—सोहाओन = रोमायमान ।

“मुमापिन रमास्वादबदरोमान्न वञ्चुरा ।

विनापि कामिनी सग वनय सुखमासते ॥”

(१६१)

सरसिज बिनु सर, सर बिनु सरसिज

को सरसिज बिनु सुरे ।

जौवन बिनु तन, तन बिनु जौवन

को जौवन पिय दूरे ॥ २ ॥

सखि हे मोर बड दैय विरोधी ।

मदन येदन बड, पिया मोर योमछुड,

अयहु देहे परयोधी ॥ ४ ॥

चौदिस भमर भम कुसुम कुसुम रम

नोरसि माँजरि पीयड ।

भद पयन चल पिक कुट्ट कुट्ट कह

सुनि विरहिनि कहसे जीयड ॥ ६ ॥

सिनह अछल जत, हम भेषुन दृष्ट

बड योल जत सर थीर ।

अइसन के योल दहु निज सिम तेजि कहु

उछल पयोनिध नोर ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति अरेरे कमलमुखि

गुन गाइक गिया तोरा ।

राजा सिय सिध रूप नराया

महजे एको नहि भोरा ॥ १० ॥

१—बी = ब्या । सुरे = सूर्य । ४—कामरु = प्रविष्टामग

बरा बाया । ६—दे = दी हा । ५—भार भम = गौर भय का

रे रे । ७—भान = बा । भेष = गणपति । बड पन जत सर

(१६२)

सखि हे कतहु न देखि मथार्ई ।

काप सरीर थोर नहि मानस,
अथधि नियर भेल आइ ॥ १ ॥

माधव मास, तीयि भयो माधव
अथधि कहए पिआ गेला ।

कुच-जुग संभु परसि कर योललहि
ते परतिति मोहि भेला ॥ ४ ॥

मृगमद चानन परिमल कु कुम
के धोल सीतल चदा ।

पिआ विसलेख अनल जौ यसिए
निप्रति चिहिए भल मदा- ॥ ६ ॥

भनइ विद्यापति सुन घर जीवति
चित जनु भूषह आजे ।

पिअ विस्लेख कलेस मेटाएत
घालम विलनि समाजे ॥ ८ ॥

धीर = बड़ लाग जा बुद्ध कहते है मव निमित्त दाता है । ८—क =
कौन । सिम = सीमा ।

१—मथार्ई = माधव, कृष्ण । २—मानस = मन । अथधि =
मिलने वा दिन । नियर = निरुद्ध । ३—माधव मास = बैशाख ।
माधव तीयि = एकदशी । गेला = गया । ४—कर = हाथ । ते =
उससे । ५—के = कौन । ६—विसलेख = विशेख विच्छेद ।
अनल = आग । ७—भूषह = भीमता, परनाप तरना ।

(१६३)

लोचन धाए फेधाएल
हरि नहि आयल रे ।
सिध सिध जिघओ न जाए
आस अरुभाएल रे ॥ २ ॥
मन करे तहाँ उडि जाइअ
जहाँ हरि पाइअ रे ।
पेम परसमनि जानि
आनि उर लाइअ रे ।
सपनहु संगम पाओल
रग पढाओल रे ।
से मोरा विहि विघटाओल
निन्दओ हेराएल रे ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति गाओल
धनि धइरज अर रे ।
अविरे मिलत तोहि बालमु
पुरत मनोरथ रे ॥ ८ ॥

१—धाए = दीह कर । फेधाएल = पूरा सहित हा नय, पून
गये । २—जिघओ = प्राय भी । अरुभाएल = ठाक पड़े है । ३—
मन करे = इच्छा करती है । ४—उर लाइअ = दानो मे लगाय ।
५—संगम = मिलन, भेंट । पढाएल = पाया । ६—विहि = वन ।
विघटाओल = नष्ट किया । निन्दे हेराएल = न भूल गये, जारी रही ।
८—अविरे = शीघ्र ही । पूरा हाथ ।

(१६४)

सखि मोर पिया ।

अरहु न आओल कुलिस दिया ॥ २ ॥

नपर सोआओलु दियस लिखि लिखि ।

नयन ओधाओलु पिआपथ देखि ॥ ४ ॥

जय हम पाला परिहरि गेला ।

किए दोस, किए गुन, युमद न भेला ॥ ६ ॥

अन हम तरनि युमद रस भास ।

हेत जन नहि मार काहे पिआ पास ॥ ८ ॥

आपव हेन करि पिया मोर गेला ।

पुरवक जत गुन बिसरित भेला ॥ १० ॥

भनह विद्यापति मुन अय राइ ।

कानु समुझाइत अय खलि जाइ ॥ १२ ॥

- २—आओल=आया । कुलिस दिया=बन पना कठोर
हृदय । ३—नपर=नहीं । सोआओल=नष्ट कर दिया । प्रीनम
के आने का दिन लिखते लिखते मेरे नख पिय गये । ४—अधा
आलु=अधा बना लिया । पिआ-पथ=प्रीनम की राह । ५—
नाना=भाती भली विगारी । परिहरि गला=छोड़ कर चने गये ।
६—निये=क्या । युमद न भेला=कुछ न चान सके । ७—
तरनि=शुक्ती । रस नाम=रस की बातें । हेन=हम मगय ।
१०—पूरवक=पूर का । बिसरित=बिसरग्य । ११—राइ=राधा ।
१२—कानु=हृदय ।

(१६५)

आसक लता लगाओल सजनी
नयनक नीर पटाय।
से फल अब तरुनत भेल सजनी
आंचर तर न समाय ॥ २ ॥
काच साच पहु देखि गेल सजनी
तसु मन भेल कुह भान।
दिन दिन फल तरुनत भेल सजनी
अहु खन न कर गेशान ॥ ४ ॥
सय कर पहु परदेश बसि सजनी
आयल सुमिरि सिनेह।
हमर पहन पति निरदय सजनी
नहि मन बाढय नेह ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति गाओल सजना
उचित आओत गुस्ताह।
उठि यघात्र कर मन भरि सजनी
अब आओत गर नाह ॥ ८ ॥

१-२-मवि, आँखों के पानी में गुँगा कर भारा दी लता
में लगई। अब उस लता का पत्र (पुत्र) बराना में भाग्य,
दुष्ट का उपाय, वह अल्प के तीरे समाना नहीं। ३-साँ।=सा
गुन में। पदु=प्रीति। तसु=उमक। रूप=रूपा (गिराव)।
अदुन=अम समय भी। ६-रुह=रूपा। ७-भाषा=भाष
आवेगा। गुनमाह=गुनसा। ८-बपव=बरीदा। नाह=नहीं।

(१६६)

कोन गुन पहु परबस मेल सजनी
बुझलि तनिक भल मद ।

मनमथ मन मथ तनि बिनु सजनी
देह दहए निसि चद ॥ २ ॥

कहओ पिसुन सत अघगु सजनी
तनि सम मोहि नहि आन ।

कतेक जनन सौं मेटिए सजनी
मेटए न रेख एनात ॥ ४ ॥

जे दुरजम कहु भाएए सजनी
मार मन न होए यिराम ।

अनुभव राहु परामन सजनी
हरिन न तज हिमधाम ॥ ६ ॥

जतओ तरनि जल सोखए सजनी
कमल न तेजए पाक ।

जे जन रतल जाहि सो सजनी
कि करत बिहि भए धारु ॥ ८ ॥

बिद्यापति कवि गाओल सजनी
रस वृक्षए रसमत ।

राजा सिंगसिंघ मन दए सजनी
मोदवती देह कत ॥ १० ॥

१—तनिक=उनका । २—मनमथ मन मथ=कामदेव मन का
मथन कर रहा है । तनि=उन्को । ३—दुष्ट लोग भले ही उनके

(१६७)

माधव हमर रटल दुर देस ।

केशो न कहइ सखि कुसल सनेस ॥ २ ॥

जुग जुग जीवथु बसथु लाख कोस ।

हमर अभाग हुनक नहि दोस ॥ ४ ॥

हमर करम भेल बिहि बिपरीति ।

तेजलनि माधव पुरुबिल ।परीति ॥ ६ ॥

{ हृदयक घेदन बान समान ।

{ आनक दुख आन नहि जान ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति कवि जयराम ।

देब लिखल परिनत फल बाम ॥१०॥

सैकड़ों अवगुण मुझसे बहें, शत्रु मेरेलिये उनके समान दूसरा कोई नहीं है । ४—पछान = पथर । ५—विषम = उदासीनता (कृष्ण के प्रति) । राहु परामर्श = राहु द्वारा हराये जाने पर, प्रेम लिये जाने पर । हिमशाम = चन्द्रमा । ७—तरनि = सूर्य । ८—रतल = अनुरक्त । कि करत = प्रज्ञा विमुक्त होकर क्या करेगा ?

१—रटल = चला गया । २—केशो = कोई । सनेस = शत्रु । ३—जीवथु = जीये । बसथु = बसें । ४—हुनक = उनका । ५—बिहि = मृदा । ६—तेजलनि = झोड़ दिया । पुरुबिल = पूर्व की । ७—बदन = बेरना, दुख । ८—आनक = दूसरे का । १०—बाम = बिपरीत ।

“कुलम-इप-न्यासा विवचनीश्वरशब्दमभवती ।

करय न कम्पयने व जरेव जीर्णरय सत्कवेर्वाणी ॥”

(१६८)

जीवन रूप अछल दिन चारि ।

से देखि आदर कपल मुरारि ॥ २ ॥

अब भेल भाल कुसुम रस छूछ ।

बारि बिहुन सर केओ नहि पूछे ॥ ४ ॥

हमरि ए चिनती कहय सखि रोय ।

सुपुरुष धनन अफल नहि होय ॥ ६ ॥

जावे रहइ धन अपना हाथ ।

तावे से आदर कर संग साथ ॥ ८ ॥

धनिकक आदर सब तहँ होय ।

निरधन चापुर पुछय न कोय ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति राखय सील ।

जो जग जीयै नयओ निधि मील ॥ १२ ॥

- १—अछल = थे । २—से = वह । कपल = किया । ३—भाल =
कुटु गंधहीन । रस छूछ = रस से छीन । ४—बारि बिहुन = पानी
से रहित । सर = तालाब । केओ = कोई । ५—रोय = रोकर ।
६—अफल = व्यर्थ । ७—जावे = जावतक । ८—संग-साथ = संगी-
साथी, मित्र-कुटुम्ब । ९—धनिकक = धनियो का । सब-
तहँ = सर्वत्र । १०—चापुर = देवार । ११—सील = मर्यादा ।
१२—यदि जग में जीवित रहा, तभी जो निधियों प्राप्त हों ।

Poetry is at bottom a criticism of life. The
greatness of a poet lies in his powerful and beauti-
ful application of ideas to life — Mathew Arnold

(१६६)

सपि हे हमर दुखक नहि ओर ।

६ भर बादर माह भादर

सून मंदिर मोर ॥ २ ॥

भूपि घन गरजति सतति

भुवन भरि घरसनिया ।

कन्त पाहुन काम दाहन

सघन, खर सर, हतिया ॥ ४ ॥

कुनिस, कत सत पात, मुदित

मयूर नाचत, मातिया ।

मत्त दादुर डाक, डाहुक

फाटि जायत छातिया ॥ ६ ॥

तिमिर दिग भरि घोर आमिनि

अधिर विजुरिक पतिया ।

विद्यापति कह कइसे गमाओय

हरि दिना दिन रातिया ॥ ८ ॥

२—(इस पद्य का यह चरण अत्यंत प्रसिद्ध है । स्वयं रवींद्र नाथ ठाकुर ने कई बार इसे उद्धृत किया है) । भर = भरा हुआ । बादर = मेघ । ३—सतति = सता । ४—पाहुन = प्रवासी । खर = तेज बाण । हतिया = मारता है । ५—वन सत = कई सौ । पात = गिरना है । मातिया = मत्त होकर । ६—डाक = पुनारता है । दादुर = एक बरसाती पक्षी । ७—दिग = दिशा । अधिर = चंचल । ८—वर्मे = किम प्रकार । गमाओय = विताऊगी ।

(१६६)

मोर धन धन सोर सुनइत
उठत मनमथ पीर ।

प्रथम छार असाढ आश्रोल
अबहु गगन गंभीर ॥ २ ॥

दियस रयना अरे सखी
कइसे मोहन बिनु जाय ॥ ३ ॥

आअए साओन धरिए भाओन
घन सोहाओन यारि ।

पंचसर-सर छुटत रे, कइसे
जीअए चिरहिन नारि ॥ ५ ॥

आयए भादो, बेगर माधो
कौसो, फदि, पहि दूय ।

निडर, उर डर, डाक, डाडुक
छुटत मदन धनूक ॥ ७ ॥

अलूह, आसि, गगा भासि, न
घान घन घा रोत ।

सिह भूपति ननइ ऐसन
चतुर मास त्रि योल ॥ ६ ॥

२-भाओन - जा मन को भावे । ५ पंचसर = वामदेव । ६-
बेगर = बिना । कौसो = किममे । ७-निडर डाडुक (पची विरोप) डर
डर शब्द में पुनार रहा है - मानों वामदेव की बंदूक छूट रही हो ।
८-अलूह = (अलू = अस्ति) आया । भासि = मालूम पड़ना है ।

(२००)

फुटल कुसुम नव कुज कुटिर वन
कोकिल पचम गावे रे ।
मलयानिल हिम सिखर सिधारल
पिया निज देश न आवे रे ॥ २ ॥
चनन चान तन अधिक उताप
उपवन अलि उतरोले रे ।
समय घसंत, कंत रहु दुर देस
जानल बिधि प्रतिकूले रे ॥ ४ ॥
अनमिल नयन नाह मुख निरखत
तिरपित न भेल नयाने रे ।
इ सुख समय सहष पत भकट
अवला कठिन पराने रे ॥ ६ ॥
दिन दिन खिन तनु, हिम कमलिनि जनि,
न जानि कि जिय परजंत रे ।
विद्यापति कह धिक धिक जीवन
माधन निकरन कत रे ॥ ८ ॥

१—फुल = प्रकटित हुआ, खिल उठा । २—मलयानिल
हिम सिखर सिधारल = मलय पवन हिमालय की ओर चला—
दक्षिण पवन बहने लगा । ३—चान = चन्द्रा । चान = चन्द्रमा ।
उताप = उत्तप्त कर देता है जलाता है । अलि उतरोले रे =
भीरे गुजार कर रहे है । ४—अनमिल = मिना पवन गिरे हुए ।
दिम = बर्फ । परजन = शेष । ८—निवरा = कवचा रहित, कठार ।

(२०१)

सजनी कानुक कहवि बुझाई ।
रोपि पेमक विज, अकुर मूडलि
याँचय कोन उपाई ॥ २ ॥
तेल बिन्दु जेसे पानि पसारिण
एसन मोर अनुराग ।
सिकता जल जेसे छनहि सुखए
तेसन मोर सुहाग ॥ ४ ॥
कुल कार्मिनि छलौ, कुलटा भए गेलौ
तिनकर धवन लोभाई ।
अपने कर हम मूँड मुडाएल
कानु से प्रेम बढाई ॥ ६ ॥
बोरमनि जनि, मन मन, रोअइ
अम्वर बदन छिपाई ।
दोषक लोभ सलम जनि धाएल
से फल भुजइत चाई ॥ ८ ॥
(भनइ विद्यापति इह कलजुग रित
चिन्ता करह न कोई ।
अपन करम दोष आपहि भुजइ
जे जन पर रस होई ॥ १० ॥

१—कानुक=कृष्ण को । २—मूडलि=ताड़ दिया ।
सारिण=पैलता है । ४—सिकता=बालू । तेसन=बैसा ।
दाग=मौमाय । ५—छलौ=थी । कुलग=व्यगिचारिणी । तिन-

(२०२)

के पतिआ लए जाएत रे
मोरा पियतम पास ।

हिय नहि सहए असह दुख रे
भेल साओन मास ॥ २ ॥

एकसरि भयन पिया विनु रे
मोरा रहलो न जाय ।

सखि अनकर दुख दारुन रे
जग के पतिआय ॥ ४ ॥

मोर मन हरि, हरि लय गेल रे
अपनो मन गेल ।

गोकुल तजि मधुपुर बस रे
फत अपजस लेल ॥ ६ ॥

विद्यापति कचि गाओल रे
जनि धरु पिय आस ।

आओत तोर मनभावन रे
एहि कातिक मास ॥ ८ ॥

कर = उतरे । ६-मुड़ मुड़ाएल = बदनाम हुई । ७-चोर रमनि =
चोर की स्त्री । अमर = बन्ध । ८-सलम = पतन । जनि = ऐसा ।
मुजहा चार = भोगता ही चाहिये । १०-मुजर = भोगता है ।

१-के = कौन । २-भे = हुआ, आया । ३-एकसरि = अकेली ।
४-अनकर = दूसरे का । पतिआय = विराम करता है । ५-हरिलय
गेल = दरकर ले गये । अपनो = स्वयं भी । ८-आओन = आवेगा ।

(२०१)

सजनी, के कह आओव मधार्द ।
 धिरह पयोधि पार किए आओव
 मभु मन नहि पतिआई ॥२॥
 एतन नयन करि दिवस गमाओल
 दिवस दिवस करि मासा ।
 मास मास करि घरस गमाओल
 छोड़ल जीवन आसा ॥३॥
 घरस घरस करि समय गमाओल
 छोड़ल कानुक आसे ।
 हिमकर किरन नलिनि जदि जारय
 कि करय माधव मासे ॥४॥
 अक्षर तपन ताप जदि जारय
 कि करय बारिह मेहे ।
 इह गय जीवत धिरह गमाओव
 कि करय से पिया मेहे ॥५॥
 भनइ विद्यापति सुन वर जीवति
 अत्र नहि होइ निरासे ।
 से व्रजनन्दन हृन्व्य अनन्दन
 भटित मितात्र तुअ पास ॥१०॥

१—आओव = आनेगे । २—पयोधि = समुद्र । ३—एतन तलत =
 यह छल यह छल । ४—छोड़ल = मुक्त दिया । कानुक = कृष्ण का ।
 ५—दिगवर = न द्रमा । नलिनि = वसति । जारय = मरवाया

(२०४)

अकुर तपन ताप जदि जारय
कि करय थारिद मेह ।

ई नव जौवन बिरह गमाओव
कि करय से पिआ गेह ॥ २ ॥

हरि हरि के रह दैव दुरासा ।

सिन्धु निकट जदि कंठ सुखावय
के दुर करय पियासा ॥ ४ ॥

चंदन तर जय सौरभ छोडय
ससधर बरिखय आगि ।

चिन्तामनि जय निज गुन छोडय
की मोर करम अभागि ॥ ६ ॥

साओन माह घन बिन्दु न बरिखय
सुरतर बाँझ कि छाँदे ।

गिरिधर सेवि ठाम नहि पापय
विद्यापति रह धाँदे ॥ ८ ॥

कि = क्या । मापव मास = वैशाख (वसंत) । ७—तपन-ताप=सूर्य
की ज्वाला । ९—होह = होओ । मटिनि = शीघ्र ।

३—के = रीन । ४—दुर करय = दूर करेगा । ५—सौरभ = सुगंध ।
ससधर = चंद्रमा । बरिखय = वर्षा करेगा । ६—चिन्तामनि =
वह मणि, जिससे जो कुछ माँगे, दे दे । ७—घन बिन्दु = मेघ
की बूंद । सुरतर = वनपत्र । बाँझ = बध्या । कि छदि = किस प्रकार ।
८—सेवि = सेवा कर । ठाम = जगह । धाँदे = सदेह ।

(२०५)

चानन मेल विषम, सर, रे
भूपन मेल भारी ।
सपनहुँ हरि नहि आपल रे
गोकुल गिरधारी ॥ २ ॥
एकसरि ठाढि कदम-तर रे
पथ हेरयि मुरारी ।
हरि चिनु हृदय दगध मेल रे
भामर मेल सारी ॥ ४ ॥
जाह जाह तोहँ ऊधय हे
तोहँ मधुपुर जाहे ।
चन्द्रबदनि नहि जीवति रे
बध लागत काहे ॥ ६ ॥
भनइ विद्यापति तन मन र
सुनु गुनमति नारी ।
आजु आओत हरि गोकुल रे
पथ चलु भट भारी ॥ ८ ॥

१—चानन=चदन । विषम=कठोर । सर=बाण । भारी=भार-स्वरूप । २—एकसरि=अकेले । पथ हेरयि=राह देख रही है । ४—दगध=दग्ध, जला हुआ । भामर=मलिन । ६—जाह=जाओ । मधुपुर=मथुरा । ८—जीवति=जीयेगी । बध=हरण । भट्टे=किसे । ८—भट भारी=भटक कर, शीम-शीघ्र ।

(२०६)

विपत, अपत, तरु, पाओल रे
पुन नय नय पात ।

गिरहिन-नयन बिहल विहि रे
अविरल यरिसात ॥ २ ॥

सखि अतर गिरहानल रे
नित घाढल जाय ।

बिनु हरि लख उपचारहु रे
हिय दुख न मेटाय ॥ ४ ॥

पिय पिय रटए पपिहरा रे
हिय दुख उपजाय ।

{ कुदिना, हित जन, अनहित रे
धिक जगत सोभाव ॥ ६ ॥

कवि विद्यापति गाओल रे
दुख मेढत तोर ।

हरखित चित तोहि भेटन रे
पिय नन्दकिसोर ॥ ८ ॥

१—विपति रूपी पत्रहीन घृष्ट ने पुन [वषा आने पर] नये
नये पत्ते प्राप्त भिये । २—विहल = विधान क्रिया, बनाया । विहि =
महल । अविरल = लगातार, निरंतर । ३—अतर = भीतर, ह य
में । गिरहानल = गिरह रूपी जगिन । ४—लख = लाल । उपचार =
उपाय । ५—कुदिना = कुदिन आने पर । अनहित = शत्रु । सोभाव =
स्वभाव । धिक = है । ७—भेटन = मिलेगा ।

(२०७)

मोर पिया सपि गेल दुर देस ।

जीवन दप गेल साल सनेस ॥ १ ॥

मास असाढ उगत नव मेघ ।

पिआ विसलेख रहओ निरथेघ ॥

कोन पुरुष, सखि कोन से देस ।

करय मोय तहाँ जोगिनि भेस ॥ २ ॥

साओन मास घरिस घन धारि ।

पंथ न सुभे निशि अंधियारि ॥

बौदिस देखिए बिजुरी रेह ।

से सपि कामिनि जीवन संदेह ॥ ३ ॥

भादव मास घरिस घन घोर ।

सभदिसि कुहरूप दादुल मोर ॥

चेहुँकि चेहुँकि पिया कोर समाय ।

गुनमति सूतलि अक लगाय ॥ ४ ॥

आसिन मास आस घर चीत ।

नाह निकाहन न मेलाह हीत ॥

सर घर खेलप चकया हास ।

विरहिनि वेरि भेल आसिन मास ॥ ५ ॥

१—साल = काँग । सनेस = गैट । २—उगत = उन्नत चढ़ता हुआ । विसलेख = विश्लेष, विच्छेद । रहओ = रहती हू । निरथेघ = निरवलम्ब । से = नद । ४—दादुल = मेक । कोर = मोद । सूतलि = सोई । अक = हृदय । ५—निकाहन = निष्करण । मेलाह = हुआ ।

विद्यापति
००००००००

कातिक कत दिगन्तर बास ।
पिय पथ हेरि-हेरि भेलहुँ निरास ॥
सुख सुखराति सबहु का भेल ।
हमे दुख साल सोआमि दयगेल ॥ ६ ॥
अगहन मास जीय के अत ।
अयहु न आएल निरदय कत ॥
एकसरि हम धनि सुतओ जागि ।
नाहरु आओत आएत मोहि नागि ॥ ७ ॥
पूस खीन दिन दोघरि राति ।
पिआ परदेस मलिन भेल काँति ॥
हेरओ चौदिस, भँखओ रोय ।
नाह विछोह काहु जन होय ॥ ८ ॥
माघ मास घन पडए तुसार ।
भिलमिल केखुओ, उनत धन हार ॥
पुनमनि सुतलि पिअतम कोर ।
विधि बस दैव घाम भेल मोर ॥ ९ ॥

६—दिगन्तर=दूरदेस । घाम=रहना । सुखराति=दो-
बी रात । सोआमि=सोआमी । ७—सुतओ नागि=उ-
मोनी हूँ । जब मुके जाग खा जायगी, जब मैं बिरह ज्वाला में
जाऊगी तब प्रीतम व्यथ भावेंगे । ८—दोघरि=दीर्घ, बा
भँखओ=भँखनी हूँ । तुसार=बर्फ । भिलमिल=बारीक
मे समझे कुछ कुछ है, बिनके ऊपर हार है । घाम भेल=विपुल दुः

फागुन मास धनि जीव उचाट ।
 विरह-विखिन भेल हेरओ चाट ॥
 आयल मत्त पिक पंचम गाव । *मन्ताप-३*
 से सुनि कामिनि जीवहु सताव ॥१०॥
 चैत चतुरपन, पिय परवास ।
 माली जाने कुसुम विकास ॥
 भमि भमि भमरा कर मधुपान ।
 प नागरि भइ पहु भेल असयान ॥११॥
 येसाख तुघे खर भरन समान ।
 कामिनि कंत हनय पँचयान ॥
 नहि जुडि छाहरि न चरिस बारि ।
 हम जे अभागिनि पागिनि नारि ॥१२॥
 जेठ मास ऊजर नव रंग ।
 कस चहुए खलु कामिनि संग ॥
 रूपनरायन पूरयु आस ।
 मनइ विद्यापति बारह मास ॥१३॥

१०—धनि जीव उचाट—बाबा का जी उचट गया । विखिन=विहीन, भयत कृश । पिक—कोयल । से=बह । सताव=सनाता है ।
 ११—प्रवास=विदेश में । कुसुम-विकास = फूल का खिलना । भमि =
 भ्रमण कर । भमरा = मोप । नागर = चतुर । पहु = प्रीतम । १२—
 तवे = तप जाता है, गरम हो उठता है । खर = तीक्ष्ण । जुडि =
ठकाना । छाहरि = छाया । चरिस = चरसवा है । बारि = पानी । ऊजर
 नवरंग = नये रंग खजद भये । खहु = खिखय । पूरयु = पूर करे ।

(२०८)

माधव देखलि वियोगिनि वामे ।
 अधर न हास विलास सखी संग
 अहनिस जप तुअ नामे ॥ २ ॥
 आना सरद सुधाहर सम तसु
 घोलइ मधुर धुनि बानी ।
 कोमल अरुन कमल कुँम्हिलायल
 देखि मन अइलहुँ जानी ॥ ४ ॥
 हृदयक हार भार भेल सुबदनी
 नयन न होए निरोधे ।
 मखि सब आप खेलाओल रंग करि
 तसु मा किछुओ न बोधे ॥ ६ ॥
 रगडल चानन मृगमद कुकुम
 सम तेजलि तुअ लागी ।
 जनि जल हीन मीन अऊँ फिरइछ
 अहोनिष रहइछ जागी ॥ ८ ॥
 दूति उपदेस सुनि गुनि सुमिरल
 तइखन चलला धाई ।
 मोदवती पति राखसिह गति
 कपि विद्यापति गाई ॥ १० ॥

३—तसु=उसवा । ४—कुम्हिलायन=भुरमा गया । भरलहुँ=मैं
 आरे । ६—निरोधे=बद । ७—रगडल=विषा । चानन=चन्दन ।
 मृगमद=कस्तूरी । कुकुम=केशर । ८—अऊँ=समान । फिरव=

(२०६)

लोचन नीर तटिति निरमान ।

करप कलामुषि तथिहि सनाने ॥ २ ॥

सरस मृनाल करइ जपमालो ।

अहनिस जप हरि नाम तोहारो ॥ ४ ॥

वृन्दायन फान्दु धनि तप करइ ।

हृदय येदि मदनानल यरइ ॥ ६ ॥

जिय कर समिध समरकर भागी ।

करति होम यध होपयह भागी ॥ ८ ॥

चिबुर यरहि रे समरि कर लेअइ ।

फल उपहार पयोधर देखइ ॥ १० ॥

भनइ यियापति सुनह मुरारी ।

तुअ पभ हेइस अछि यर नारो ॥ १२ ॥

= विरती है । ६ वृन्दायन = वनी घण ।

१२ आँखों के आँसुओं से नदी का निर्माण कर वह चन्द्र-वदनी उसीमें स्नान करती है । ३—मृनाल=कमल नाल । करइ = बनानी है । जपमाली = जपमाला सुमरती । ६—हृदय कभी वेदी पर काम की अग्निधक रही है । ७ ८—अपने प्राणों का समिध (अग्निहोत्र की लकड़ी) बनाकर और स्मरण को भरणी (आगी = जिससे आग निकले, भरणी) करके वह होम कर रहा है, तुम इसकी इत्या के भागी बनोगे । ९—चिबुर = कस । बरहि = बड़ी, बुरा । समरि = सम्मिलकर । १०—पयोधर = पुत्र । १२—अदि = है ।

(२१०)

अकामिक मन्दिर भेलि बहार ।

चहुँदिस सुनलक ममर ककार ॥ २ ॥

मुखलि पसल महि न रहलि थीर ।

न चेतए चिचुर न चेतए चीर ॥ ४ ॥

केशो सखि वेनि धुन, केशो धुरि भार ।

केशो चानन अरगजओ सँभार ॥ ६ ॥

केशो धोल मंत्र कान तर जोलि ।

केशो कोकिल रोद, डाकिनि धोलि ॥ ८ ॥

अरे अरे अरे कान्हू की रमसि धोरि ।

मदन भुजँग डसु बालहि तोरि ॥ १० ॥

भनइ विद्यापति पहो रस भान ।

एहि विष्णु गारुड एक पण कान ॥ १२ ॥

१—अकामिक = अकामात् । भेलि बहार = बाहर हुए । २—

ममर = मारा । ३—ससल = गिर पी । थीर = स्थिरता । ४—

चेतए = सँभालती है । चिचुर = केश । चीर = सा । ५—कओ

= काँह । वेनि धुन = वेणी गूथनी है वेणी सँभालती है । धुरि भार

= धूल भाँसती है । ६—अरगजओ = कस्तूरी आदि का लेप से ।

सँभार = सँभालती है । ७—कान तर = कान के निकट । जोलि = धार

से । ८—रोद = रोदेकती है । ९—कि रमसि धोरि = क्या रमस कर

बाल रहे हो । १०—गुम्हारी प्रेमिका को (बालहि) कामरेव स्वी सप

न धात्र लिया है । १२—एक कृष्ण ही इस विष क नित्ये गलए है ।

(२११)

माधव, कठिन हृदय परधासी ।
 तुभ पेअसि मोयँ देखल वियोगिनि
 अवहु पलटि घर जासी ॥१॥
 हिमकर हेरि अवनत कर आनन
 कर कखना पथ हेरी ।
 नयन काजर लप लिखए बिधुनुद
 भय रह ताहेरि सेरी ॥४॥
 दखिन पवन वह से कइसे जुषति सह
 कर कर्णलित तनु अंगे ।
 गेल परान आस दए राखए
 दस नख लिखए भुजगे ॥६॥
 मोनकेतन भय सिध सिध सिध कय
 धरनि लोशायए देहा ।
 करे रे कमल लप कुच सिरिफल दए
 सिध पूजए निज मेहा ॥८॥
 परभूत के डर पाअस लप कर
 धायस निकट पुकारे ।
 राजा सिधसिध रूप नरायन
 करहु विरह उपचारे ॥१०॥

१—परधासी=प्रधासी विरह में रहनेवाला । २—पेअसि=प्रयमी, प्रमिता । तामी=जाओ । ३—हिमकर=चंद्रमा । अवनन=नीच । बिधुनुद=राहु । ताहेरि सेरी=उसीकी शरण में ।

(२१२)

कुसुमित कानन हेरि कमलमुषि
मूदि रहए दु नयान ।
कोकिल कलरव मधुकर धुनि सुनि
कर देइ, भाँपइ कान ॥२॥
माधव, सुन सुन वचन हमारा ।
तुअ गुनसुन्दरि अति भेल दूयारि
गुनि गुनि प्रेम तोहारा ॥४॥
धरमो धरि धनि कत येरि यहसइ
पुन तहि उठइ न पारा ।
कातर दिठि करि चौदिस हेरि हेरि
नयन गरए जलधारा ॥६॥
तोहर विरह दिन छन छन तनु छिन
चौदसि चांद समान ।
भनइ विद्यापति सिवसिंह नरपति
लखिमा देइ रमान ॥८॥

१—कुसुमित = प्रसन्न, छा जाना । ६—गेल = गया हुआ । भुजग =
मय । (सर्प वायु को छा जायगा, यह समझकर) ७—मीनकनन =
कामदेव । ८—करे रे कमल सप = हाथरूपी कमल लेकर । मिरिफल
= नारियल । ९—परशुत = कोयल । पायस = पायस, लीर । बायस
= बीस । १०—करयु = करें । उपचार = उपाय ।

२—कुसुमित कानन = खिला हुआ वन । ३—मधुकर = मीठा । ४—पृथ्वी
पकड़कर बह बाला कई बार बैठ जाती है और पुन (चेष्टा करने पर)

(२१३)

सरदक ससधर मुखरुचि सौपलक
हरिन के लोचन लोला ।

केसपास लए चमरि के सापलक
पाए मनोभव पीला ॥ २ ॥

माधव, जानल न जियति राही ।

जतवा जकर ले ले छलि सुन्दरि
से सब सौपलक ताही ॥ ४ ॥

दसन दसा दालिम के सौपलक
यधु अधर रुचि देली ।

देह दसा सौदामिनि सौपलक
काजर मन सखि भेली ॥ ६ ॥

भाहक भंग अनग चाप दिहु
कोकिल के दिहु बानी ।

केवल देह नेह अछ सओले
पनवा अपलहुँ जानी ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति सुन वर जौयति
चित्त भँखह अनु आने ।

राजा सिवसिंघ रूप नरायन
लगिमा देइ रमाने ॥ १० ॥

उठ नहीं सकती । ७-दिन = गरीब, अमहाय । चौंसि = चतुर्दशी ।

१-ससधर = चंद्रमा । मुखरुचि = मुख की शोभा । सौपलक -
समर्पण किया । २-चमरि = बिम गाय की दुम का चँवर होता है ।

(२१४)

आपल उनमद समय बसत ।

दारुन मदन निदारुन फत ॥टेक॥

मृतु राज आज बिराज हे मणि

नागरी जुन यदिने ।

नव रंग, नव दल देलि उपवन

सहज सोमित कुसुमिते ।

आरे, कुसुमित कानन कोकिल साद ।

मुनिहुक मानस उपजु यिसाद ॥ १ ॥

अति मत्त मधुकर मधुर रव कर

मालती मधु संचिते ।

समय कत उदत नहि किछु

हमहि विधि बस बंचिते ॥

बन्धित नागूर मेह ससार ।

एहि रितुपतिसा न करण विहार ॥ २ ॥

मगभव = वामदर । पीग = पद्मा । ४ — जनवा = जितना । जकर =

निसरा । ले ले दनि = लिय हुए था । ५ — गतिम = क्षिप्त = अनार ।

बधु = बाधुन फल । ६ सौ मिनि = विस्ती । मनि = समान ।

७ — अनग आप दिहु = कामन्व व धनुष का दिहा । ८ — अद = ई ।

एनरा = एतना । ९ — मेह = भाषना ।

१ — उनमद = उमत्त, योग्य । गान कठिन । निगहन =

कथाहीन । नागरी जन बन्धिते = नागरी स्त्रियों द्वारा पूजित ।

नव = नवीन । दल = वृत्ता । कुसुमित = फूले हुए । कानन = वन ।

अति हार भार मनोज मारण
चद रवि सति भानप ।
पुरुष पाप सताप जत हो
मन मनाभव जानप ॥
मारण मनसिज मार सर साधि ।
चानन देह चोगुन हो धाधि ॥ ३ ॥
मय धाधि आधि वेआधि जाइति
करिष धैरज कामिनी ।
सुपहु मन्दिर तुरित आओत
सुफल जाइति जामिनि ॥
जामिनि सुफल जाइति अवसान ।
धैरज धर विद्यापति भान ॥ ४ ॥

साद = धनि । विसाद = विषाद, दुःख । २ — मधुसर = भौर । रव =
आधाज । उदत = वाधा । सह = बड़ी । मधुपनिता = वसन में ।
३ — मनोज = कामदेव । चद, रवि सति भानप — च० मा सूर्य
के समान मालूम होता है । जन = जितना । मनसिज = कामदेव ।
मार = मारना है । चानन = चदन । धाधि = गन्ना । ४ —
आधि वेआधि — शाक और पीड़ा । जामिनि = जायगी । सुपहु =
सुप्रभु, ध्वारे प्रीतिम् । आभात = आवगा । जामिनि = रान । अवसान =
अन । भान = रहते है ।

‘रम्यमपि न ते यति दम्भा विनायन्मुपह ।
प्रकृति मद्भने कुमलस्यै तम कविमय ॥

(२१५)

माधव, कत परबोधव राधा ।
 हा हरि हा हरि कहतहि बेरि बेरि
 अथ जिउ करय समाधा ॥२॥
 धरनि धरिये धनि जतनहि बइसइ
 पुनहि । उठए नहि पारा ।
 सहजहि धिरहिन जग महुँ तापिनि
 योरि मदन-सर-धारा ॥४॥
 अरुन नयन नोर तीतल कलेवर
 बिलुलित दीगल फेसा ।
 मन्दिर बाहिर करइत ससय
 सहचरि गनतहि सेपा ॥६॥
 आनि नलिनि केश्रो रमनि सुताओलि
 केश्रो देह मुख पर नीरे ।
 निसयद पेखि केश्रो सास निहारए
 केश्रो देह मद समीरे ॥ ८ ॥
 कि कहव सेद, भेद जनि अतर
 घन घन उतपत सांस ।
 भनइ विद्यापति सेहो कलावति
 जीव बंधल आस-पास ॥१०॥

२—समाधा=समाप्त । ३—बरसए=बैठती है । ४—नोर=
 भाँसू । तीतल=भीगा हुआ । सेपा=भत, मृत्यु । ७—सुताओलि=
 सुलाई । उतपत=उत्पत्ति, गर्म । आस-पास=आस के बंधन में ।

(२१६)

अनुखन माधव माधव सुमरइत
सुन्दरि भेलि मधार्ई ।
ओ निज भाव सुभावहि विसरल
अपने गुन लुनुधाइ ॥२॥
माधव, अपरव तोहर सिनेह ।
अपन विरह अपन ननु जरजर
जियहत भेलि संदेह ॥४॥
भोरहि सहचरि कातर दिठि हेरि
छलछल लोचन पानि ।
अनुपन राधा राधा रदइत
आधो आधो बानि ॥ ६॥
राधा सयँ जय पुनतहि माधव
माधव सयँ जय राधा ।
दारुन प्रेम तबहि नहि दूटन
बाढत विरहक बाधा ॥ ८ ॥
दुहुदिसि दारुदहन जैसे दगधइ
आकुल कीट परान ।
ऐसन बलम हेरि सुधानुखि
कवि विद्यापति भान ॥ १०॥

इस पद्य में प्रेम की पराकाष्ठा हो गई है । राधा विरहवश, प्रेम में तल्लीन हो, अपने को ही कृष्ण समझ लेती है और राधा-राधा विप्लाने लगती है । पुन जब होश में आती है, तो कृष्ण के लिये

(कृष्ण का विरह)

(२१७)

रामा हे, से किए विमरल जाई ।
 फर धरि माथुर अनुमति मगइत
 ततहि पडल मुरझाई ॥ २ ॥
 किछु गदगद सरे लहु लहु आखरे
 जे किछु कहल घर रामा ।
 कठिन फलेचर तेइ चलि आओल
 चित्त रहल सोइ ठामा ॥ ४ ॥
 से बिनु रात दिवस नहि भावण
 ताहि रहल मन लागि ।
 आन रमनि सयँ, राज सम्पद मोयँ
 आछिण जइसे विरागी ॥ ६ ॥
 हुइ एक दिखस निवय हम जाओव
 तहु परबोधवि राइ ।
 विद्यापति कह चित्त रहल तहि
 प्रेम मिलाएव जाई ॥ ८ ॥

याहुन हो रठनी है । नौ नौको अवस्थाओं में प्रेम बना सहती है ।

१—रामा = सुंदरी (सति) । मे = वर किए = क्यों ।

विसरल = भूलना । ३—सरे = गवा में । लहु लहु आखरे =

मधुर शब्दों में । ४ किछु = जा कुछ । ६ तेई = उसीसे । ५—

से = वह (राधा) । —आन = आन । तदिए = ह । ७—निवय

= निवय । ८—तहि = यही ।

(२१८)

तिल एक सयन ओत जिउ न सहए
न रहए दुहु तनु भीन ।
माझे पुलक गिरि अतर मानिए
अइसन रहु निसि दीन ॥२॥
सजनी कोन परि जीवए कान ।
रोहि रहल दुर हम मधुरापुर
एतहु सहए परान ॥४॥
अइसन नगर अइसन नव नागरि
अइसन सम्पद मोर ।
राधा बिनु सब बाधा मानिए
नयनन सेजिए नोर ॥६॥
सोइ जमुना जल सोइ रमनीगन
सुनइत छमकित चीत ।
कह कविसरार अनुभवि जनल
बडक बडइ पिरात ॥८॥

१—तिन एक = एक छय क विन भी । आन = भोट । भीन =
भिन्न । माझे = मध्य मे । — भित्त क समक रोमान हा जान मे
मिलने मे किंति-नाम मात्र ता-व्याधान हा जाती थी, अनपक्व, रामाच
हमलागी की पडाइक समान मानूम पन्ना था, हम प्रसार हम नि
रान मिने दुए थ । ३—कोन परि = किस प्रसार । ५—
अइसन = ऐसी । ६—नोर = आसू । ८—अनुभवि = अनुभव कर
क । जनल = जान गया ।

भावोल्लास

(२१६)

सरस बसत समय भल पाओलि
दछिन पवन बहु धीरे ।
मपनहुँ रूप बचन एक भाखिए
मुख साँ दूरि कर चीरे ॥ २ ॥
तोहर बदन सम चान होअधि नहि
जइओ जतन रिहि देला ।
कए बेरि काटि बनावोल नव कय
तइओ तुलित नहि भेला ॥ ४ ॥
लोचन तुल कमल नहि भए सक
से जग के नहि जाने ।
से फेरि जाए लुकाएल जल भए
पंकज निज अपमान ॥ ६ ॥
भनहि बिद्यापति सुनु घर जौवति
ई सभ लछमी समाने ।
राजा सिधसिध रुपनरायन
लखिमा दइ पति माने ॥ ८ ॥

१—पाओलि = पाया । २—स्वप्न में एक आदमी ने आकर
कहा—भरी, मुख से बचन हवाओ । ३—बदन = मुख । चान =
चंद्रमा । जइओ = वधवि । रिहि = बिवाहा । ४—कए = किये ।
कय = काया शरीर । वरना = जो भी । तुलित = तुल्य, समान । ५—
तुल = तुल्य । भए सक = हो सका । लुकाएल = छिप गया । नल भय =
बल में । पंकज = वसन । ६—सभ = सब ।

(२२०)

सुतलि छलहुँ हम घरवा र
गरवा मोति हार
राति जरनि भिनुसरवा रे
पिया आपल हमार ॥ २ ॥
कर कोसल, कर कपइत रे
हरवा उर टार ।
कर पकज उर थपइत रे
मुख खंद निहार ॥ ४ ॥
केहनि अमागलि घैरिनि रे
भागलि मोर निन्द ।
भल कए नहि देख पाओल रे
गुनमय गोविन्द ॥ ६ ॥
विद्यापति कति गाओल रे
धनि मन धर धीर ।
समय पाए तरुवर फर रे
कतथो सिखु नार ॥ ८ ॥

- १—सुतलि छलहुँ = सारी थी । गरा = गले में । २—जरनि =
जिम समय । भिनुसरवा = भोर उपकाय । आपल = भावा ।
३—चतुराई करते हुए कपिते हाथ से हृदय का हार हटवा ।
४—कर पकज = कमल कथा हाथ । थपइत = स्थापित करते, करते ।
छाती पर हाथ देकर मुख देखने लगे । ५—केहनि = कैसी ।
अमागनि = अमागिनी । ६—भलकए = अच्छी तरह । ८—पार =

(२२१)

मोरा रे अंगनवाँ चनन केरि गल्लिआ
ताहि चढि कुरुरय काग रे ।
सोने चाँच बाँधि देव तोर्यँ बायस
जअँ पिया आओत आज रे ॥ २ ॥
गायह सबि सब भूमर लोरो
मयन अराधन जाऊँ रे ॥ ३ ॥
चओदिस चम्पा मुओली फुललि
चान उओरिया राति रे ।
कइसे कए मोर्यँ मयन अराधय
होइति षडि रति-साति रे ॥ ४ ॥
निद्यापति कवि गावए तोहर
पहु अछ गुनक निधान रे ।
राओ भोगीसर सब गुन आगर
पदमा देइ रमान रे ॥ ७ ॥

फलना है । कपरो सिंचु नीर = कितना भी पानी पगओ ।

१ — अंगनवाँ = आँगन में । चनन करि = चन्दन का ।
गल्लिया = बूझ । कुरुरय = मोल रहा है । २ — सोने = स्वर्ण से ।
तोर्यँ = तुम्हें । बायस = बाग । ३ — गावह गाओ । मयन अराधन =
कामदेव की आराधना करने । ४ — मुओली = मल्लिका । चान = चन्द्रमा ।
उओरिया = चादनी । ५ — कइसे कर = किस प्रकार । होइति =
होगी । रति साति = रति जनित पौ । ६ — पहु = प्रीति । अछ = है ।
७ — रमान = पति ।

(२२२)

अंगने आओय जव रसिया ।

पलटि चलव हम इपत हंसिया ॥ २ ॥

रस-नागरि रमनी ।

कत कत जुगति मनहि अनुमानी ॥ ४ ॥

आये से. आंचर पिया घरये ।

जाएव हम न जतन धहु करये ॥ ६ ॥

कंचुआ घरय जव हठिया ।

करे कर बांधव कुटिल आध दिठिया ॥ ८ ॥

रमस मांगय पिया जय हो ।

मुख मोहि विहसि बोलव नहि नहि ॥ १० ॥

सहजहि सुपुरुष भमरा ।

मुख कमलक मधु पीअव हमरा ॥ १२ ॥

तखन हरय मोर गेआने ।

विद्यापति कह धनि तुअ धेयाने ॥ १४ ॥

१—अंगने=आगत में । आओव=आवेगे २—इपत=

थोड़ा थोड़ा । ३—रसनागरि=रस में चतुरा, सुरसिका । ४—कत=

कितनी । जुगति=युक्ति । ५—आवेमे=आवेरा में, वृत्तेजित

होकर । ६—वे बहुत यत्न करेंगे, किंतु मैं न जाऊंगी । ७—

कंचुआ=कचुकी, चोली । हठिया=हठकर । ८—(मपने)

हाथ से (उनके) हाथ को बाधा दूँगी और निरखी एव अभी

चितवन से देखूंगी । १०—रमस=रमि जीझ । विहसि=

हँसकर । ११—भमरा=मौरा । १२—पीअव पीयेगा ।

(१८४)

पिया जय आओय हू मझु गेहे ।

मगले जतहु करव निज देहे ॥ २ ॥

कनअ कुम्भ करि कुच जुग राखि ।

दरपन धरव काजर देह आखि ॥ ४ ॥

येदि यनाओय हम अपन अंक मे

भाड करव ताहे, चिकुर' बिछीने ॥ ६ ॥

कदलि रोपव हम गरुअ नितम्भ ।

आम पल्लव ताहे किंकिनि सुभम्भ ॥ ८ ॥

दिसि दिसि आनव कामिनि ठाट ।

चौदिसि पसारव चांदक हाट ॥ १० ॥

विद्यापति कह पूरव आस ।

दुइ एक पलक मिलव तुम पान ॥ १२ ॥

११—तखन= उस समय । (काम त्रीहा के समय) मेरा जान हर लेने ।

१—आभाउ=आवेंगे । २=यह । मझु=मेरे । गेहे=घर

में । २—जितना मगल करना होगा, अपने शरीर में ही करूंगी ।

३—कनअ-कुम्भ=सोने के घड़े । कुच जुग=दोनों कुच । ४—

भौखों में काजर लगाकर हमें दपण रूप में धरूंगी=मेरी आँखों में

प्रीतिम अपना रूप दूँगी । ५—वेदि=चौका । अंकमे=गोदी ।

६—वेरा को विचित्र कर, खोलकर उसमें भाड़ करूंगी । ७—

कदलि=बला । गरुअ=गिराएँ । सुभम्भ=आनंदित, शक्ति ।

८—आनव=लाऊंगी । ठाट=समूह । हाट=बाजार (मियों के मुख

चंद्रमा ही चंद्रमा से दीप्त पड़ेंगे ।)

(२२४)

दुहुक दुलह दुहु दरसन भेल ।

विरह जनित दुख सब दुर गेल ॥ २ ॥

कर धरि बइसाओल विचित्र आसन ।

रमन-रतन-स्याम रमनी रतन ॥ ४ ॥

बहु विधि बिलसए बहु बिधि रंग ।

कमल मधुप जनि पाओल सग ॥ ६ ॥

नयन नयन दुहु ययन ययान ।

दुहु गुन, दुहु गुन दुहुजन गान ॥ ८ ॥

भनइ विद्यापति नागरि भोर ।

त्रिभुवन धिजयी नागर चोर ॥ १० ॥

(२२५)

चिर दिन से बिहि भेल अनुकुल रे ।

दुहु मुख हेरइत दुहु से आकुल रे ॥ २ ॥

बाहु पसारिष दुहु दुहु धर रे ।

दुहु अधरामृत दुहु मुख भर रे ॥ ४ ॥

दुहु तनु कांपइ मदन उछल रे ।

किन किन किन करि किकिनि रुचल रे ॥ ६ ॥

जाइतेहि स्मित नव यदन मिलल रे ।

दुहु पुलकागलि ते लहु लहु रे ॥ ८ ॥

रस-भातल दुहु घसन पसल रे ।

विद्यापति रस सिन्धु उछलल रे ॥ १० ॥

(१२६)

सुनु रसिमा,

अय न धजाऊ विविन चमिआ ॥ २ ॥

यार यार चरमारविद गहि

मदा रहय चनि दसिया ।

कि छलहुँ कि होण्य से के जाने

यथा होएत कुल दसिया ॥ ४ ॥

अनुभव येसन मदन—भुजंगम

हृदय मोर गेल दसिया ।

नदनदन तुअ सरन न ख्यागब

बलु जग होए दुरजसिमा ॥ ६ ॥

विद्यापति कद सुनु बनितामनि

तोर मुख जीतल मसिमा ।

धन्य धन्य तोर माग गोआरिनि

हरिभलु हृदय हुलसिमा ॥ ८ ॥

हँसते हुए । पुलकावलि = रोमांच । म तन = मत्त बना । ख नल = गिर पड़ा ।

१—रसिमा = रसिक । २—बसिया = बुरी । ३—दसिमा =

दासी । ४—कि = क्या । छलहुँ = धोखा । होण्य = होऊगी, बनूँगी ।

से = यह बात । के = कौन । कुल दसिमा = कुल की निदा ।

५—देसन = इस प्रकार । मदन भुजंगम = काम कपी सध । गल दसिमा

= हँस गया, काट गया । ६—बलु = मले हा, बरज । दुरज

सिमा = अपवरा बलक । ७—बनितामनि = स्त्रियों में रत्न समान ।

जीतल = जीत लिया । मसिमा = चमया ।

(२२७)

सखि, कि पुछसि अनुभव मोय ।
 से हो पिरित अनुराग बखानिए
 तिल तिल नूतन होय ॥ २ ॥
 जनम अरधि हम रूप निहारल
 नयन न तिरपित भेल ।
 सेहो मधु बोल सखनहि सुनल
 स्तुति पथ परस न भेल ॥ ४ ॥
 कत मधु-जामिनि रमस गमाओल
 न धूमल, कइसन केल ।
 लाख लाख जुग हिय हिय राखल
 तइयो हिय जुडल न गेल ॥ ६ ॥
 कत विदग्ध जन रस अनुमोदइ
 अनुभव काहु न पेल ।
 विद्यापति कह प्राण जुडाएत
 लापे न मिलल पर ॥ ८ ॥

१—कि पुछसि = क्या पूछती हो । मोय = मुझसे । २—
 से हो = वही । तिल तिल = धण धण । ३—निहारल = देखा ।
 ४—रावनहि = बाना स । परम = सरा । ६—मधु जामिनि —
 मित्रन की रान । रमस = काम-क्रीड़ा । गमाओल = बिग ।
 केल = केनि । ६—तरभा = ती भी । जुडल होव = न जुगावा,
 टटा १ टुमा । ७—विदग्ध = विदग्ध, रमिक । रम अनुमोद = रम रु
 वपभोग करो दे । पेल = दसना । ८—नख मे पर न मिया ।

✓ प्रार्थना और नचारी

(२२८)

विदिता देवी विदिता हो
अविरल केस सोहन्ती ।

ऐकानेक सहस्र को धारिनि
जरि रंगा पुरनन्ती ॥ ३ ॥

कजल रूप तुझ काली कहिए
उजल रूप तुझ यानी ।

रवि-मंडल परचंडा कहिए
गंगा कहिए पानी ॥ ४ ॥

ब्रह्मा घर ब्रह्मानो कहिए
हर-घर कहिए गौरी ।

नारायन-घर कमला कहिए
के जान उतपत तोरी ॥ ५ ॥

विद्यापति कबिचर पद्मो गाओल
जाचक जन के गती ।

हासिनि देह पति गरुडनारायन
देवसिंघ नरपति ॥ ६ ॥

(२२९)

कनक-भूधर-सिखर वासिनि
चन्द्रिका चय चारु हासिनि
दसन कोटि बिकास, यकिम-
तुलित चन्द्र कले ।

क्रुद्ध सुररिपु बलनिपातिनि
महिष शुम्भ निशुम्भ घातिनि
भीत भक्त भयापनोदन—
पाटल प्रचले ॥ २ ॥

जय देवि दुर्गे दुरित तारिणी
दुर्गमारि विमद हारिणि
भक्ति नम्र सुरासुराधिप—
मगलायतर ।

गगन मंडल गभगाहिनि
समर भूमिपु सिंह याहिनि
परसु पाश कृपाण सायक—
शय चक्र धरे ॥ ४ ॥

अष्ट भैरवि संग शालिनि
सुकरकृत्तकपालकदम्बमालिनि
दनुजशोणिन पिशित वद्धित—
पारणा रमसे ।

ससार बंध निदानमोचिनि
चन्द भानु कृशानु लोचिनि
यांगिनि गण गीत शोभित
नृत्यभूमि रस ॥ ६ ॥

जगतिपालन जनन मारण
रूप कार्य सहस्र कारण
हरि विरवि महेश शेखर-
चुम्ब्यमान पदे ।

सकल पापकला परिच्युति
सुकवि विद्यापति कृतस्तुति
तोपिते सिधसिंह भूपति

कामना फल दे ॥ ८ ॥

(२३०)

जय जय सकर जय त्रिपुरारि ।

जय अध पुरुष जयति अध नारि ॥ २ ॥

आध धनल तनु आधा गोरा ।

आध सहज कुव आध कटोरा ॥ ४ ॥

आध हडमाल आध गज मोती ।

आध चानन मोहे आध विभूती ॥ ६ ॥

आध चेतन मति आधा भोरा ।

आध पट्टे आध मुंज डोरा ॥ ८ ॥

आध जोग आध भोग बिलासा ।

आध विधान आध नग वासा ॥ १० ॥

आध चान आध सिंदुर सोभा ।

आध बिरूप आध जग लोभा ॥ १२ ॥

भने कबिरतन विधाता जाने ।

दुह कप वांटल एक पराने ॥ १४ ॥

(२३१)

भल हर भल हरि भल तुअ कला ।
 खन पित बसन खनहि बघछला ॥ २ ॥
 खन पंचानन खन भुजचारि ।
 खन मकर खन देव मुरारि ॥ ४ ॥
 खन गोकुल मए खराइअ गाय ।
 खन भिखि भौंगिए डमर बजाय ॥ ६ ॥
 खन गोरिंद मए लिअ महादान ।
 खनहि भनम मरु काख थोकान ॥ ८ ॥
 एक सरीर लेल दुइ बास ।
 खन बैकुण्ठ खनहि कैलास ॥ १० ॥
 भनइ विद्यापति विपरित बानि ।
 ओ नारायन ओ सुलपानि ॥ १२ ॥

(२३२)

आगे माई एहन उमत घर लैल हिमगिरि
 देखि देखि लगइछ रंग ।
 एहन उमत घर घोइघो न खढइक
 जो घोइ रंग रंग जैग ॥ २ ॥
 चापक छाल जे बसहा पलानल
 सापक भीरल तंग ॥
 डिमिक डिमिक जे डमर बजाइन
 मटर मटर कर अंग ॥ ४ ॥

भकर भकर जे माँग भकोसधि
छुटर पटर कर गाल ।
आनन सौ अनुराग न धिकइन
भसम चढायधि भाल ॥ ६ ॥
भूत पिशाच अनेक दल-साजल
सिर सौ बहि गेल गग ।
भनर विद्यापति सुन ए मनाइनि
थिकाह दिगम्बर अग ॥ ८ ॥

(२३३)

धेरि धेरि अरे सिव मौ तोय बोलो
फिरसि करिअ मन माप ।
बिन सक रहह भीष मांगिए पप
गुन गौरव दुर जाय ॥ ७ ॥
निरधन जन बोलि सब उपहासए
नहि शादर अनुकम्पा ।
तोह सिव आक धतुर फुल पाओल
हरि पाओल फुल चम्पा ॥ ८ ॥
खटंग काटि हर हर जे बनाबिअ
मिसुल तोडिअ कर फार ।
यसहा धुरन्धर हर लप जोतिअ
पाएण सुरसरि धार ॥ ९ ॥

भन विद्यापति सुनह महेसर
इ लागि कपलि तुअ सेवा ।
एनए जे वर से वर होअल
ओतए जाएय जनि देया ॥८॥

(२३४)

हम नहि आज रहय यहि आगन
जो घुढ होएत जमाई, गे माई ।
एक त घरि भेला योध विधाता
दोसरे धिया कर थाप ।
तीसरे घरि भेला नारद यामन
जे घुढ आनल जमाई, गे माई ॥
पहिलुक घाजन डामर तोरय
दोसरे तोरय रैडमाला ।
चरद हाकि घरिआत बेलाइय
धिआले आपय पराई, ग माई ॥
धोती लोश पतरा पोधी
पर्रो सम लेयन्हि दिनाए ।
ला फिछु यजता नारद यामन
दाढो घण घिसिआएय, गे माई ॥
भा विद्यापति सुनु दे मनारन
दद कर अपन गेमान ।
सुम सुम यए सिरा गौरी बिआह
गौरी हर एक ममान, ग माई ॥

(२३५)

नाहि कब्य घर हर निरमोहिया ।
 विस्तार भरि तन वसन न तिन्हका
 घघल्लल काख तर रहिया ॥ २ ॥
 बन बन फिरथि मसान जगावधि
 घर आंगन ऊ गनौलनि कहिया ।
 सासु ससुर नहि ननद जेठौनी
 जाए पैठति धिया केकरा ठहिया ॥ ४ ॥
 बूढ घडद डकडोल गोल एक
 सम्पति भांगक भोरिया ।
 भनइ विद्यापति सुनु हे मनाइन
 सिब सन दानि जगत के कहिया ॥ ६ ॥

(२३६)

कतए गेला मोर बुढवा जती ।
 पीसल भांग रहल सेइ गती ॥ २ ॥
 आन दिन निकहि रहयि मोर पती ।
 आज लगाइ देल कौन उदगती ॥ ४ ॥
 एकसर जोहए जाएँ कौन गती ।
 ठंसि खसब मोरि होत दुरगती ॥ ६ ॥
 नदनबन बिच मिलल महेस ।
 गौरि हरथित भेल छुटल कलेस ॥ ८ ॥
 भनइ विद्यापति सुनु हे सती ।
 इहो जोगिया थिक त्रिभुवन पती ॥ १० ॥

विद्यापति
००००००००

(२३७)

जोगिया एक हम देखलौं गे माई ।

अतहद रूप कहलौ नहि जाई ॥ २ ॥

एव घदन तिन नयन घिसाला ।

बसन बिहुन ओदन यघछाला ॥ ४ ॥

सिर बहे गग तिलक सोहे चँदा ।

देखि सरूप मेटल दुखददा ॥ ६ ॥

जाहि जोगिया लै रहलि भयानी ।

मन आनलि घर कौन गुन जानी ॥ ८ ॥

कुल नहि सिल नहि तात महतारी ।

१५ एएन दिनक धिक लछु जुग चारी ॥ १० ॥

भन विद्यापति सुनु मनाइनि ।

एहो जोगिया धिक त्रिभुवन दानि ॥ १२ ॥

(२३८)

सिय हो, उतरय पार कछोन विधि ।

लोदय कुसुम तोरय बेल पात ।

पुजय सदासिय गौरिक सात ॥

यसहा चढल सिय फिरहु मसान ।

भंगिया जठर दरदो नहि जान ॥

जप तप नहि कैलहु नित दान ।

वित गेला तिन पन करइत आन ॥

मन विद्यापति सुनु हे महेस ।

निरधन आनि के हरहु कलेस ॥

(२३६)

जलन देखल हर हो गुननिधी ।

पुरल सकल मगोरथ सय विधी ॥ २ ॥

यसदा चढल हर हो बुढ जती ।

काने कुंडल सोभे गले गजमोती ॥ ४ ॥

बइसल महादेव चौका चढी ।

जटा छिरिआओल माओल भरी ॥ ६ ॥

विधिकरु निधिकरु विधिकरु करु ।

विधि न करइ से हर हो हठ धरु ॥ ८ ॥

विधिए करइत हर हो घुमि रसु ।

सँसरि एसल फनि सिरि गोरी हँसु ॥ १० ॥

केशा नहि किनु कहइन्हि दिन कहँ ।

पुरयल लिखल छला मोर पहुँ ॥ १२ ॥

कथि विद्यापति गाओल ।

गौरी उचित घर पाओल ॥ १४ ॥

(२४०)

हर जनि बिसरव मो भमिता,

हम नर अधम परम पतिता ।

तुअ मन अधम उधार न दोसर

हम सन जग नहि पतिता ॥ २ ॥

जम के द्वार जवाव कओ देव

जखन बुकत निज गुन करबतिया ।

जब जम किकर कोपि पठाएत

तखन के होत घरहरिया ॥४॥

भन विद्यापति सुरुवि पुनित मति

सरर विपरित धानी ।

असरन सरन चरन सिर नाओल

दया करु दिअ सुलपानी ॥५॥

(२४१)

एत जप तप हम किअ लागि केलहु

कयिला कपलि नित दान ।

हमरि धिया के एहो घर होपता

अब नहि रहत परान ॥२॥

हर के माग बाप नहि धिकइन

नहि छइन सोदर भाय ।

मोर धिया जौ सासुर जेती

यइसति फकर लग जाय ॥३॥

घास काट लौती बसहा चरौती

कुटती मांग धतूर ।

एकौ पल गौरा बैसहु न पोती

रहती ठाढ़ि हजूर ॥४॥

भन विद्यापति सुनु ए मनाइनि

दद करु अपन गेथान ।

तीन लोक के एहो छधि ठाकुर

गौरा देवी जान ॥५॥

(२४२)

कखन हरघ दुख मोर

हे भोला नाथ ।

दुखहि जनम भेल दुखहि गमाएय

सुख सपनहु नहि भेल, हे भोलानाथ ।

आछत चानन अवर गंगाजल

बेल पात तोहि देय, हे भोलानाथ ।

यहि भवसागर थाह कतहु नहि

भैरव धरु कर आए, हे भोलानाथ ।

भन विद्यापति मोर भोलानाथ गति

देहु अभय घर मोहि, हे भोला नाथ ।

(२४३)

यहि विधि ध्याहन आयो

एहन घाउर जोगी ।

टपर टपर कए बसहा आयल सटर सटर रँडमाल ॥

भकर भकर सिध भांग भकोसयि डमरू लेल कर लाय ।

ऐपन मेंटल पुरहर फोरल घर किमि चौमुख दीप ॥ ७

धिश्रा ले मनाइनि मठप बहसलि गाविण जनु सरि गीत ॥

भन विद्यापति सुनु ए मनाइनि ई धिका त्रिभुवन ईस ॥

(२४४)

आजु नाथ एक बत्त माहि सुख लागत हे ।

तोहँ सिध धरि नट बेध कि डमरू बजाएय हे ॥

भल न कहल गउरा रउरा आजु सु नाचय हे।
सदा सोच मोहि होत कवन विधि यांचय हे ॥
जे जे सोच मोहि होत कहा समुझाय हे।
रउरा जगत के नाथ कवन सोच लागय हे।
नाग ससरि भुमि छसत पुहुमि लोटायत हे।
गनपत पोसल मजूर सेहो धरि खायत हे ॥
अमिअ चूइ भुमि खनत बघम्वर जागत हे।
होत बघम्वर बाघ बसह धरि खायत हे ॥
टूटि छसत रदराछ मसान जगायत हे।
गौरी कह दुख होत विद्यापति गाथत हे ॥

(३२५)

आगे भाई, जागिया मोर जगत सुख दायक
दुख ककरो नहि देल ।
दुख ककरो नहि देल महादेव
दुख ककरो नहि देल ।
यहि जोगिया के भाग भुलैलक
धतुर खोआइ धन लेल ॥
आगे माइ, कातिक गनपति दुइजन बालक
जग भरि के नहि जान ।
तिनका अमरन किलुओ न थिकइन
रति थक सोन नहि कान ॥
आगे माइ, सोना रूपा अनका सुत मभरन
आपन रट्टक माल ।

अपना सुत ला किल्लुओ न जुरदनि
 अनका ला जजाल ।
 आगे माइ, छन में हेरथि कोटि धन वकसथि
 ताहि देवा नहि थोर ।
 भन विद्यापति सुनह मनाइनि
 थिका दिगम्बर भोर ।

(२४६)

जोगि भँगवा खाइत भेला रँगिया
 भोला चौडलया ॥
 सयके ओढाये भोला साल दुसलया
 आग ओढय मृगछलया ॥
 सयके सिआये भोला पाँच पकयममा
 आप खाप भांग धतुरया ॥
 कोई चढाये भोला अछुत चानन
 कोई चढाये बेलपतया ॥
 जोगिन भूतिन सिध के सँघतिया
 भेरो घनाये मिरदगिया ।
 भन विद्यापति जै जे सकर
 पारधती रौरि सँगिया ॥

(२४७)

जौं हम जनितहुं भोला मेला ठकना
 होइतहुं राम गुलाम मे माई ।

विद्यापति
००००००००

भाइ विभीषन घड तप कैलन्हि
अपलन्हि रामरु नाम, गे माई ।
पुरुष पछिम एको नहि गेला
अवल भेला यहि डाम, गे माई ।
थोस भुजा वस माव चढाओलि
भांग दिहल मर गाल, गे माई ।
नीच-ऊँच सिव किछु नहि गुनलन्हि
हरपि देलन्हि रँडमाल, गे माई ॥
एक लाख पूत सग लाख नाती
कोटि सोपरनरु दान, गे माई ।
गुन अवगुन सिव एको नहि बुझलन्हि
रखलन्हि राजनक नाम, गे माई ।
भन विद्यापति सुकवि पुनित मति
कर जोरि विनम्रो महेस, गे माई ।
गुन अगुन हर मन नहि आनधि
सेयकक हरथि कलेस, गे माई ।

(२४८)

जानकी-वन्दना

रे नरनाह नतत भजु ताही ।
ताहि, नहि जननि जनक नहि जाही ॥२॥
घसु नइहय सुसुय के नाम ।
जननि सिर चढि गेल यहि नाम ॥ ४

सासुक कोर में सुतल जमाय ।
समधि बिलह तो बिलहल जाय ॥ ६ ॥
जाहि ओदर से बाहर भेलि ।
से पुनि पलटि ततय बलि गेलि ॥ ८ ॥
भन विद्यापति सुकयी भान ।
कयि के करि कह कयि पहचान ॥ १० ॥

गंगा-स्तुति

(२४६)

बह मुख नार पाओल तुअ तारे ।
छोड़इत निकट नयन बह नीर ॥ २ ॥
करजोर विनम्रों विमल तरंगे ।
पुन दरसन होय पुनमति गगे ॥ ४ ॥
एक अपराध छेव मोर जानी ।
परसल माय पाप तुअ पानी ॥ ६ ॥
कि करव जपतप जोग धेआने ।
जनम कृतारथ एकहि सनाने ॥ ८ ॥
भनइ विद्यापति समदुखी तोही ।
अन्त काल जनु तिसरह मोही ॥ १० ॥

(२५०)

ब्रह्मकमण्डलु बास सुयामिनि
सागर नागर गृहपाले ।

पातक महिष विदारण कारण
 धृतकरवाल चीचि माले ॥
 जय गगे जय गग ।
 शरणागत भय भगे ॥
 सुर मुनि मनुज रचित पूजोचित
 कुसुम विचित्रित - तीरे ।
 त्रिनयन मौलि जटात्रय चुम्बित
 भूति भूषित सित नीरे ॥
 हरिपद कमल गलित मधुसोदर
 पुण्य पुनित सुरलोके ।
 प्रविलसदमरपुरी पद दान-
 विधान विनाशित शोके ॥
 सहज दयालुनया पानकि जन
 नरक विनाशन निपुणे ।
 रुद्रसिंह नरपति घरदायक
 विद्यापति कवि भणित गुणे ॥

कृष्ण-कीर्तन

(२५१)

माधव, कत तोर करव बडाई ।
 उपमा तोहर कहव फकरा हम
 कहितहुँ अधिक लजार्द ॥

जों थ्रीपडक सौरभ अति दुरलभ
 तौं पुनि काठ कठोर ।
 जा जगदीस, निसाकर तौ पुन
 एकहि पच्छ उजोर ॥
 मनि समान औरो नहि दोसर
 तनिकर पायर नामे ।
 कनक कदलि छोट लज्जित भए रह
 की कहु ठामहि ठामे ॥
तोहर सरिस एक तोहँ माधव
 मन होइछ अनुमान ।
 सज्जन जन सों नेह कठिन थिक
 कषि विधापनि भान ॥

(२५२)

माधव, बहुत मिनति करतोय ।
 दए तुलसी, तिल देह समर्पिनु
 दय जनि छाडि मोय ।
 गनइन दोसर गुन लेस न पाओयि
 जब तुहुँ करबि विचार ।
 तुह जगत जगनाथ कहाओसि
 जग बाहिर न ॥ छार ॥
 किए मानुस पसु पक्षि भए जनमिए
 अथवा कीट पतंग ।

४१७७

विद्यापति

करम विपाक गतागत पुन पुन
मति रह तुअ परमग ॥
भनइ विद्यापति अतिसय कातर
तरइत इह भय-सिंधु ।
तुअ पद पल्लव करि अयलम्वन
तिल एक देह दिनयधु ॥

(२५३)

तातल सैकत धारि-विन्दु सम
सुत मित रमनि समाज ।
तोहे विसारि मन ताहे समरपिनु
अर मभु हब कोन काज ॥
माधव, हम परिनाम निरासा ।
तुहुँ जगतारन दोन दयामय
अनए तोहरे विसवासा ।
आध जनम हम नींद गमायनु
जरा सिंसु कत दिन गेला ।
निधुनु रमनि रमम रग मातनु
तोहे भजब कोन बेला ॥
कत चतुरानन मरि मरि जाओत
न तुअ आदि अधसाना ।
तोहे जनमि पुन तोहँ समाओत
सागर लहरि समाना ॥

भनइ विद्यापति सेप ^{अर} समन भय
 तुय विनु गति नहि आरा ।
 आदि अनादि नाथ कहाओसि अब
 तारन भार तोहारा ॥

(२५४)

जतन जतेक धन पापे चटोरल
 मिलि मिलि परिजन खाय ।
 मरनक बेरि हरि कोई न पूछए
 करम सग चलि जाय ॥
 ए हरि, चम्दौ तुअ पद नाय ।
 तुअ पद परिहरि पाप पयोनिधि
 पारक कओन उपाय ॥
 जावत जनम नहि तुअ पद सेविनु
 जुबती मति मयँ मेलि ।
 अमृत तजि हलाहल किए पोअल
 सम्पद अपदहि भेलि ॥
 भनइ विद्यापति नेह मो गनि
 कहल कि बाढव काजे ।
 सांझक बेरि सेवकाई मंगइत
 हेरइत तुअ पद लाजे ॥

विविध

(२५५)

व्यथा

माधव, कि कहव-तोहर गोश्रान ।

सुपहु कहलि जब रोष कयल तव
कर भूनल दुहु कान ॥ २ ॥

आयल गमनक बेरि, न नीन टर ।
तइ किहु पुछिओ न भेला ।

एहन करमहीनी हम सनि के धनि
कर से परसमनि गेला ॥ ४ ॥

जओ हम जनितिहुँ एहन निठुर पहु
कुच-कचन-गिरि-सांधि ।

कौसल कबतल चाह-सता लय
दढ करि रखितिहु बांधि ॥ ६ ॥

इ सुमिरिष जब जाओ मरिष तब
बृष्णि पइ हृदय पपाने ।

हिमगिरि-कुमरी चरन हृदय धरि
कयि सिधापति भान ॥ ८ ॥

(२५६)

प्रेम

फूल एक फूलवारि लाआल मुरारि ।

जतने पटाओल सुवचन वारि ॥ २ ॥

चौदिस बान्हल मीलक आरि ।

जिय अवलम्बन करु अरधारि ॥ ४ ॥

विद्यापति

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ततहु फुलल फुल अभिनव पेम ।
जसु मूल लहए न लाखहु हेम ॥६॥
अति अयक्य फुल परिनत भेल ।
दुइ जिय अछल एक भए गेल ॥८॥
पिसुन-बीट नहीं लागल ताहि ।
साहन फल देल बिहि निरवाहि ॥१०॥
विद्यापति कह सुन्दर सेहु ।
करिष जतन फलमत्त होए जेहु ॥१२॥

(२५७)

शिवमिह का युद्ध -
दूर दुग्गम दमसि भंजेओ
गाढ गढ गूढिय गंजेओ
पातसाह समीम सीमा
समर दरसओ रे ॥ १ ॥
ढोल तरल निसान सहहि
भेरि काहल भाल नहहि
तीनि भुज न निकेत
केतकिसान भगिओ रे ॥ २ ॥
कोह नीर पयान चलिओ
बागु मध्ये राय गरओ
तरनि तेअ तूलाधरा
परताप गहिओ रे ॥ ३ ॥

मेघ कनक सुमेघ कम्पिअ
धरनि पूरिय गगन भम्पिअ
हानि तुरण पदाति पयभर
कमन सहिओ रे ॥ ४ ॥

तरल तर तरयारि रंगे
पिञ्जुदाम छटा तरंगे
घोर घन संघात बारिस
काज दरमेश्रो रे ॥ ५ ॥

तुरण कोटिअ चाप चूरिअ
चारि दिसि सार्पिदिस पूरिअ
त्रिपम सार असाढ धारा
धरनी भरिओ रे ॥ ६ ॥

अन्ध कूअ कयन्ध लाइअ
फेरवी फफरिस गाइअ
रहिर मत्त परेत भूत
बैताल विछलिओ रे ॥ ७ ॥

पार भइ परिपंधि गजिअ
भूमि मंडल मुड मंडिअ
चार चन्द्र कलेय कीत्ति
मुकेत की तुलिओ ॥ ८ ॥

राम रूप स्वधम्म सिफिअ
दान दण्य दधीचि रक्खिअ

सुकवि नव जयदेव
भनिओ रे ॥ ६ ॥

देवसिंह नरेन्द नन्दन
सनु नरवइ कुल निकन्दन
सिंह सम सिवसिंह राया
सकुल गुनक निधान गनिओ रे ॥ १० ॥

(टटकूट)

२५८

हरि सम आनन हरि सम लोचन
हरि तहाँ हरि घर आगी ॥
हरिहि चाहि हरि हरि न सोहाय्य
हरि हरि कए उठि जागी ॥
माधव हरि रहु जलधर छार्द ।
हरि नयनी धनि हरि घरिनी जनि
हरि हेरइत दिन जार्द ॥
हरि भेल भार हार भेल हरि सम
हरिक वचन न सोहाये ।
हरिहि पइसि जे हरि जे नुकाएख
हरि चढि मोर युभावे ॥
हरिहि वचन पुनु हरि सयँ दरसन
सुकवि विद्यापति भान ।
राजा सिवसिंह रूप नरायन
लखिमा देधि रमाने ॥

(३५६)

माघच आय युक्त तुश साजे ।
 पच दून दह दह गुन सप गुन
 मे दलह कोन फाजे ॥
 चालिस चारि काटि चौठाइ
 म हम संपिआ मोरा ।
 स निरघत मुग पेंघत चौदिस
 करत जनम के ओरा ॥
 साठिहु मह दह बिन्दु बियरजित
 के स सहत उपहासे ।
 हम अशला अर पणुंक दोससं
 दुइ बिन्दु करय गरास ॥
 मघ घुदा दध नयण याम कण
 से उर हमर परान ।
 कपटी घालमु हेरि न हेरण
 कारन के नहि जान ॥
 भनइ बिद्यावति सुनु यर जीवति
 ताहि करयि के याधा ।
 अपन जीव दध परक बुझाइअ
 नाल कमल दुइ आधा ॥

(२६०)

पुसुमित कानन कुजे बसो ।
 नयनकः काजर घोरि मसो ॥

नौमि दसाह एक मिलु कामिनि
सुकवि विद्यापति भाने ॥

(बाल विवाह)

२६२

पिया मोर बालक हम तरनी ।
कोन सप चुकलाह भेलौह जननी ॥
पहिरलेल सखि एक दछिनक चीर ।
पिया के देखैत मोर दगध शरीर ॥
पिया लेली गोद के चललि बजार ।
हडियाक लोग पूछे के लागु तोहार ॥
नहि मोर दवर कि नहि छोड भाई ।
पुखर लिखल छल बालमु हमार ॥
घाटरे घटोहिया कि तुहु मोरा भाई ।
हमरो समाद नैहर लेन जाऊ ॥
कहिहुन यथा के किनए धेनु गई ।
दुधवा पियाइक पोसता जमाई ॥
नहि मोर टका अछि नहि धेनु गई ।
कौनइ विधि सँ पोसव जमाई ॥
भनइ विद्यापति सुनु ब्रजनारी ।
धीरज भरह त मिलत मुरारी ॥

मासु दोसरि किछुओ नहि जान ।
 आँख रतींधी सुनए नहि कान ॥
 जागह पथिक जाह जनु भोर ।
 राति अंधार गाम बड चोर ॥
 मरमहु भोरि न देश कोतबार ।
 काहु न केओ नहि करए बिचार ॥
 अधिप न कर अपराधहु साति ।
 पुरुष महने सब हमर सजाति ॥
 विद्यापति कवि यह रस गाव ।
 उफुतिहु अबला भाव जनाव ॥
 (विद्यापति की मृत्यु)

(२६५)

दुल्लहि तोहरि कतए छधि माय ।
 कहु न ओ आवधु प्यन नहाय ॥
 वृथा बुझथु संसार बिलास ।
 पल पल नाना तरहक रास ॥
 माय बाप जौं रुदाति पाव ।
 संतति कौ अनुपम सुख आव ॥
 विद्यापतिक आयु अवसान ।
 कार्तिक धमल त्रयोदसि जान ॥
 ॥ श्रुति ॥

